॥श्री॥ गणेशायनमः॥

अथजरीप्रकारलि

ख्यते

अथप्रथमआतशककी

किस्सा

जानना चाहिये कि ग कितने ही प्रकार से होता है एक तो यह कि वेश्याकेयेराग होवे और पुरुष काम देव से उन्म कर इसकी पराक्षी न करके उस्से सम्भोग करे कहावत है ज्वानी दिमानी और जब वह भोग क ता है तो कई एक दिन के पीछे यह रोग प्रगट और पेड़ वा लिंग पर वा अंड कोषों पर एक फुन्सी हो जाती है उस्में खुजली के संग जलन हो फिर मनुष्य उसे खुजा डालता है जब वो घाव के है तब अपनी मूर्खता से उस पर सेलखड़ी वा याल गा देता है जब घाव पैसे के बराबर हो जाता है लोगों से प्रकट करता है तो वे उस्को हुक्के से पीने दवाई देते हैं उस्से मुह आमयां वा वमन और हाये और कोई स्वा का दूध बताता है यद्यपि इस चि त्सा से कई दिनके लिये आराम

होजाता है परंतु रोग की जड़ जाती इस्से उचित है कि किसी विद्वान और ज्ञान जर्राह को बुला कर चिकित्सा करावे जर्राह कोभी चाहिये कि प्रथम घाव को देखे कि कितना चौड़ा है परन्तु ये घाव केवल मल्लमगाने से अच्छा नहीं होता इसकी इस भांति चिकित्सा करे॥

नुसखा मा...

जमालगोटे की मींगी · चैया सुहागा · मुनक्का इन सबको बराबर ले महीन पीस कर एक २ माशे की गोलियां बनालें तु इस गोली के खाने से पहिले ये औषधि खावे॥

नुसखा मुं...

गुलाब के फूल तीन माशे · का सान नग · सौं फ छै माशे · सूखी मकोय माशे · सनाय मक्की दो माशे इन सब को पाव जल में औटा वे जब एक उफान आजाये तार कर छानले फिर इसमें एक तोले गुल्कंद मिला कर पिला वे पीछे खिचड़ी भोजन करे फिर चौथे रोज उक्त गोली के दो टूक करके खावे ऊपर से ग रम जल पिलावै और जब फलागे तब गरमही जल पिलावे और सायंकाल को घृत डाल कर खिचड़ी दही के संग भोजन करे फिर तीन दिन यद वा पिलावे॥

नुस्खा ठंडाई का

बीहदाना दो माशे· रेसारवतमी ६ माशे मिश्री रत्तो ले· इन सब का लुआब निकाल कर उस्में मिश्री मिलावे प्रथम छै माशे इशव गोल को फांक कर ऊपरसे उस लुआव को पीवे इसी तरह तीन दिन सेवन करे फिर ये गोली खिलावे॥

भिलाये की गोली

अजवायन खुरासानी· अजवायन देशी· अकरकरा गुजराती· छोटी इलायची· ये सब नौनौ माशे भिलाये सात माशे· काले तिल दो तोले पारा छै माशे· पुराना गुड एक तोले इन सब को एकत्र करि तीन दिन खूब घोटे और माशे भर की गोली बनावे और एक गोली नित्य खिलावे और घावों पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

प्रथम गौका घृत एक तोले लेकर खूब धोवे फिर सिंगरफ एक माशे· रस कपूर तीन माशे· मुरदासंग तीन माशे रसोत तीन माशे· गुजराती अकरकरा दो माशे· सफेदा कासगरी तीन माशे· इन सब को महीन पीस कर उक्त घीमें मिलाकर लगावें और देखें कि विरेचक देने से रोगी की क्या दशा है॥

जो रोग कम है तो मरहम लगाना बंद करै

और पूर्वोक्त गोलियां सात दिन तक खिलावे जो आराम होतो दो तीन गोली और खिलावे नहीं तो औषधी को इस प्रकार बदल देवे कि रोगी को विदित न हो ॥

गोली दूसरी

रस कपूर नौ माशे· लोंग फूलदार २१नग· काली मिरच २१ नग· अजवायन खुरासानी· एक माशे· इन सब को महीन पीस· मलाई में मिला कर नौ गोली बनावे और एक गोली नित्य खवावे और खट्टी तथा वादी की वस्तुओं से परहेज करना चाहिये ॥

और कभी ऐसा भी होता है कि ये रोग होने वाला था कि अचानक बाल लेते समय उस्तरा लग कर घाव हो गया और उस्तरे का घाव समझ कर औषधियों की जब कुछ आराम न हुआ तब लोगों से प्रगट किया और उन मूर्खों नें धोया हुआ घृत आदि सुनी सुनाई दवा च लादीं तब उस्से और भी हानि हुई फिर उस की दवाई चतुर जर्राह से करावे और जर्राह को भी उचित है कि प्रथम रोगी के घाव को देखे· कि किनारे उस घाव के मोटे हैं और घाव के भीतर दाने हैं वा नहीं और घाव कितना चौड़ा है और रोगी की प्रकृति को देषे· जो उसे वि

रेचक लेने की शक्ती होतो देवे नहीं तो यह औषधि खवाना चाहिये ॥

गोली

नीला थोथा ढाई माशे· काली हर्ड डेढ माशे· सफेद कत्था दो तोले· सुपारी सात माशे· इन सब को महीन पीस कर दो सेर नीबू के रस में खरल करे फिर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और दोनों समय एक एक गोली खिलावे खटाई और बादी करने वाली चीज से परहेज करे

दूसरी दवा

अजवायन खुरासानी सात माशे काली मिरच सवा माशे काले तिल छै माशे· जमाल गोटा तीन माशे· पुराना गुड डेढ तोले इन सब को तीन दिन तक घोट कर जंगली बेर के प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली दही की मलाई में लपेट कर खिलावे ॥ मूंग की दाल· मीठा कद्दून खिलावे इस औषधि के खाने से एक दो दस्त हुआ करेंगे और जो वमन भी हो जाय तो कुछ डर नहीं है क्यों कि ये रोग बिना मवाद निकले नहीं दूर हो सक्ता प्राय देखा है कि इस रोग में सिर से पांव तक घाव हो जाते हैं ॥ इस्से उचित है कि प्रति दिन मल्हम लगाया जावे जो एक दिन भी न लगे गा तो खुरंड जम जायगा और-

जहां यह रोगी बैठता है वहां कीच हो जाती है और सफेद पानी सा निकलता है अथवा सुरखी और जरदी लिये दुर्गंधि युक्त होता है और हाथ-पावों की उंगली यों में भी घाव हो जाते हैं इन-सब शरीर के घावों के वास्ते यह औषधि करनी चाहिये ॥

मरहम

माखन आध पाव· नीला थोथा· सफेदा छै माशे· मुरदासंग छै माशे· इन दोनों दवाओं को पीस कर-घृत में मिला कर घावों पर लगावे और खाने को ये दवा देवे ॥

गोली

छोटी इलायची सफेद कत्था· तुलसी के पत्ते हरे एक एक तोले मुर्दासंग छै माशे· पुराना गुड़ डेढ़ तोले इन सब को कूट पीस कर गोलियां बनावे और नित्य प्रति सवेरे ही गोली एक खिलावे खटाई और वादी से परहेज करे और किसी वस्तु से परहेज नहीं है और ये रोग शीघ्र अच्छा नहीं होता दवा को सात दिन खिला कर देखे जो कुछ आराम हो तो इसी दवा को खिलाते रहे और जो इस्से आराम न हो तो ये गोली खिलावे ॥

गोली

सिलाजीत· काली मिरच· कावली हड़· सूखे आमले·

रस कपूर· सफेदकथा मिठी· गुलबनफ्शा· सफेद क
त्था· ये दवा चार२ माशे ले इन सब को कूट पीस
कर रोगन गुल में खरल करे फिर इस की चने प्रमा
ण गोली बनावे और एक गोली आम के अचार
में लपेट कर प्रात काल खिलावे और इसी रीति
से एक गोली सायं काल को भी खिलावे मसूर की
दाल और लाल मिर्च से परहेज करे इस दवाई से
सब शरीर अच्छा हो जायगा परन्तु उंगुली अच्छी
न होंगी और जो औषधि प्रकृति के माफिक गुण
कर जाय तो अंगुली भी सीधी हो जायगी मैंने
बहुत पुस्तकों में देखा है और हमारे मित्र डा
क्टर साहब भी यह कहा करते थे कि इस रोग
वाले मनुष्य बहुत भले चंगे देखे परंतु किसी न
किसी जगह शरीर में शेष रह ही जाता है और
हमने भी बहुत से इस रोग वाले मनुष्यों का
इलाज किया परंतु यथोचित अच्छे होते न दे
खा और इस रोग में अंतर मध्यंतर में बहुत से रो
ग उत्पन्न होते हैं एक तो यह कि मनुष्य कुष्ठी-
हो जाता है दूसरे यह कि सब सरीर पर सफेद दा
ग हो जाते हैं तीसरे नाक गल कर गिर जाती है
चौथे गठिया हो जाती है और हम को ऐसा भी
मालूम होता है कि ये रोग पहिले जमाने में नहीं
था क्योंकि हकीम लोग तथा वैद्य लोग इस की-

चिकित्सा नहीं करते और करते भी हैं तो आराम नहीं होता बड़े आश्चर्य की बात है कि बड़े बड़े हकीम और वैद्य हो गये परंतु किसीनें इस रोग के वास्ते ठीक औषधि नहीं लिखी और बहुत करिके ये रोग जरांहों की दवाईयों से जाता रहता है और एक कारण यह है कि ये रोग महा गरम है ठंडी दवाओं से अच्छा नहीं होता न जाने ये रोग क्या बला है और हमारे मित्र डाक्टर साहब भी कहा करते थे कि ये रोग कफ से होता होता है क्योंकि प्रत्यक्ष है कि रोगी के शरीर में छोटी छोटी फुनसियां रतूबत दार जरदी लियें होती हैं और बहुत से मनुष्यों का यह रोग औषधियों के सेवन से जाता रहा और दो चार वर्ष के पीछे शरीर के निर्बल हो जाने से फिर हो गया और घाव भी फिर हरे हो आये· जब दवाई करी तो फिर जातारहा इस रोगके वास्ते ये गोली बहुत उत्तम है

गोली

भुना नीला थोथा· मुरदा संग· सफेदा कासगरी· सफेद कत्था· ये सब चार चार माशे ले इन सबको नीबू के रसमें खरल करके लोहे की कढाई· में डाल कर नीम के सोटे से खूब घोटे फिर इसकी चने प्रमाण गोलियां बनाकर दोनों समय एक एक गोली खिलावे खटाई और जटी की–

चीजों से पसेव कराना चाहिये और जो इस्से भी आराम न होयतो ऐसी औषधि देवे कि जिस्से थोड़ा सा सुख आजावे जिस्से सब सरीर के जो ड़ों की पीड़ा दूर हो जावे नहीं तो अधिक मु ह आने की औषधि दें और इन औषधियों से घाव को भफारा देवे॥

नुसखा बफारे का

नरसल की जड़· रामसर· सोये के बीज· खु रासानी अजवायन· मावन· नर्मो के पते· शह तूत के पते· इन सब को बराबर ले पानी में औ टाकर घावों को वफारा दे और राति को तेल का मर्दन करै॥

अथवा भेड का दूध· गौका दूध· चार चार तोले शोरंजान कडवा तीन मासे· अफीम तीन माशे रोगन गुल आध पाव· इन सब को मिला कर गरम करके मर्दन करै॥

बफारा दूसरा

जो इन्द्री घावों के जोर से तथा इन्द्री पर पट्टी बां धने से इन्द्री सूज जाय तो उसके वास्ते ये वफारा दे छे मासे त्रिफला पानी में औटा कर इन्द्री को वफारा दे और इसी तरह एक दिन में तीनवार करें तो एक ही दिन में लिगेन्द्री की समस्त सूजन जाय और पहिले की तुल्य हो॥

और जो मुख आजाय तो उसकी ये दवा करे॥

नुसखा कुल्लों का

कचनार की छाल· महुए की छाल· गोंदनी की छाल सब एक एक छटांक चमेली के पत्ते एक तोले सफेद कत्था एक माशे· सब को पानी में औटा कर कुल्ले करे॥

अथवा

चमेली के पत्ते छटांक भर· कचनार की छाल छटांक भर इन दोनों को पानी में औटा कर दोनों समय कुल्ले करे॥

अथवा

अकरकरा· माजूफल· सिंगरफ· सुहागा कच्चा· ये चारों दवा पांच पांच माशे ले इन सब को कूट कर पानी में मिला कर चार हिस्से करे फिर सबरी राति में पहर पहर के अरसे से हुक्के में रख कर तमाखू की तरह पीना और सबरी राति जागते रहना· फिर सवेरे ही सर्द पानी से स्नान कर फिर खाने के वास्ते मुसलमान को तो मुर्ग का सोरवा और गेहूं की रोटी खिलावे और हिन्दू को मूंग की दाल रोटी खिलाना· चाहिये फिर भोजन करके सो रहे इस इलाज के करने से गरमी बहुत मालूम होती है और दस्त तथा उलटी भी होती है परन्तु इस इलाज·

के करने से एक ही दफे में घाव तक भी खुश्क हो जाते हैं ॥

अथवा

सिंगरफ· माजूफल· अकरकरा· नागोरी अ सगंध· श्याह मूसली· सफेद मूसली· गोख रू छोटे· इन सब का चूर्ण करिके जंगली बे र के कोयले पर डाल कर तमाम बदन को धू नी देना इसी तरह सात दिन सेवन करने से ये रोग जड से जाता रहता है॥

अथवा

तूतिया भुना· बडी हर्ड का वक्कल· छोटी हर्ड ये सब दवा एक एक माशे· पीली कोडी चार माशे· इन सबको पीस छान कर नीबू के अ र्क में तीन दिन घोटे फिर इसकी चने प्रमाण गोली बनावे फिर एक गोली नित्य खाय इस के ऊपर किसी चीज का परहेज नहीं है

अथवा

रस कपूर· चोवचीनी· वसचपी· ये तीनों छे छे माशे· तिवरसा गुड दो तोले इन सब को दही के तोड में खरल करे और झाडी वेर के प्रमाण गोली बना कर रोगी को दोनों समय एक एक गोली दही के संग लपेट कर खिलाना और खा ने को दोनों समय·

कल्यासफेद· सम्मलखार· इलायचीकेवीज· ख
डियामिट्टी ये सब बराबर गुलाब जल में पीस कर
ज्वार के बराबर गोली बनावे और एक गोली नि
त्य बारह दिन तक खाय और जो अजीर्ण होयतो
एक गोली बीच में देकर खाय और मूंग की दाल
गेहूं की रोटी खाय परंतु घी ज्यादा खाय और-
गरमी वाले की संधी संधी में पीडा होय तो ये द
वा करनी योग्य है ॥

नुसखा

पारा· खुरासानी अजमायन· भिलावे की मींगी·
अजमोद असपंद ये सब दवा तीन तीन माशे·
गुड २८ माशे· सब को कूट पीस कर झर बेरी के
बेर प्रमाण गोली बनाय एक एक गोली दोनों
वक्त खाय और इस गोली को पानी से निगल
जाय दांत न लगने देय खाने को लाल मिर्च
खटाई बादी करने वाली वस्तु न खाय॥

अथवा

पारा· अजवायन· मूसलीस्याह· ये दवा छै छै मा
शे भिलाये तीन माशे· गुड चार तोला· इन सब
को कूटपीसकर२२गोलीवनावेऔरएकगोलीनित्य
दहीकेसाथखायतोग्यारहदिनमेंसबरोगजायऔ
रदूधचावलका पथ्यखानेकोदेतोबहुतशीघ्रआ
राम होय॥

अथवा

मदार की लकड़ी को कोयला पीस कर २॥ माशे· ओर कच्ची खांड २॥ माशे· इन दोनों को एकत्र करि इस्मे चौदह माशे घी मिलाय सात-रोज खाय ओर मांस का भोजन करे तो सात दिन मे आराम होय॥

अथवा

बडी हर्ड की छाल· छोटी हर्ड की छाल तूतिया· पीली कोडी की राख ये सब बरा बर ले फिर नीबू का रस डाल कर कढाई में घोटे से १६ पहर घोटे फिर इस्की काली मिर्च के प्रमाण गोली बनावे ओर एक गोली नित्य २५ दिन खाय ओर थोडी सी गोली घिस कर कागज पर लगाय घावों पर लगावे ओर जो मुख आजाय तो-कचनार की छाल के काढे के कुल्ले करे॥

अथवा

तुलसी के पते हरे एक तोले· तूतिया हरा १७ माशे· इन को पीस कर बेर के बरा बर गोली बनाय एक गोली गरम पानी के संग नित्य खाय ओर मूंग की दाल की खिचडी बिना घीके-खाया करे॥

अथवा

कचनारकी छाल· आध पाव· इन्द्रायनकी जड·

आधपाव· बबूलकी फली आध पाव- छोटी कटाई जड पते समेत आध पाव· पुराना गुड आधपाव· इन सब का तीन सेर पानी में काढा करै जब चौथाई जल रहे तब छान कर सीसे में भर राखे फिर इस में से अनुमान माफिक सात दिन पीवे तो निश्चे आराम होय· और इस्में पर हेज कुछ नहीं है ॥

अथवा

सिरस की छाल सवा सेर· बबूल की छाल १। सेर· नीम की छाल सवा सेर· इन सब का सात सेर पानी में काढा करे जब एक सेर जल बाकी रहे तब छान कर सीसे में भर ले फिर इस्में से आधपाव रोज पीवे और खाने को चने की रोटी खाय तो पुरानी आत शक भी जाय ॥

अथवा

जिस कपडे को रज स्वला स्त्री योनि में रखती है उस कपड को रुधिर समेत जला कर उस की राख ले और उसी की बराबर गुड मिला कर बेर के प्रमाण गोलीयां बना कर एक गोली नित्य खाय और अलोना भात रोटी भोजन करे तो आत शक जाय ॥

अथवा

सिंगरफ· अकरकरा· नीमका गोंद· माजूफल· सुहा

गा प्रत्येक २५ माशे इन को पीस साल पुड़िया बनाले एक पुड़िया चिलम में रख बेरी की आगसे पिये तो आराम होय और इस्से वमन हो जाय तो कुछ डरनही दिन भरमें तीन दफे पीवे औ २ इस के गुल को पीस कर घाव पर बुरके खाने को मोहन भोग मीठा खाय और जो मुह आजावे तो चमेली के पत्तों का काढ़ा करके कुल्ले करे

अथवा

सिंगरफ दो माशे· अफीम दो माशे पारा दो माशे· अजवायन पांच माशे भिलाये सात माशे· पुराना गुड पांच माशे· पहिले पारे और सिंगरफ को अदरक के रस में दो दिन खरल करे फिर सब दवा बारीक पीस कर उस्में मिलावे और भिलाये की टोपी दूर करदे फिर बेरके बराबर गोली बनाले और सात दिन तक एक गोली नित्य खाय और गुड शक्कर तेल लाल मिर्च खटाई बादी करने वाली वस्तु इन से परहेज करे॥

दैव योग से जो यह उपदंश का रोग इन औषधियों से भी न अच्छा हो तो जानले कि यह रोग दूर न होगा चिकित्सा बंद करदे और हकीमोंने भी इस के इलाज कमाल्लिखेहैं और हमने बहुत सी खोज

नाकसीकेंउपरउमदा नुकसे इसमें लिखे हैं और इस रोगमें सबरे शरीर में छोटी छोटी फुनसियें सीतला के सदृश होजाती हैं उन के वास्ते ये दवा उत्तम है

दवा

सिंगरफ तीन माशे· रसकपूर छै माशे· अकर करा एक तोला· कत्था एक तोला· छोटी इलायची एक तोला· इन सब को पान के रस में मिलाकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे और सबेरेही एक गोली नित्य खाया करे और चने की रोटी घी· और दही भोजन करावे इक्कीस दिन तक सेवन करने से समस्त रोग की निश्चै शांति होती है॥

अथवा

रस कपूर· सिंगरफ· लोंग· सुहागा· ये सब एक एक तोले ले· इन सब को महीन कर सात पुडिया बनावे· फिर सबेरेही एक पुडिया दही की मलाई में लपेट कर खिलावे दूध चावल का भोजन करावे और सब चीजों का परहेज करना चाहिये॥

और जो किसी मनुष्य के शरीर में काले वा नीले दाग पड गये होंय तो तीन दिन खिचडी खिलाकर पे जुल्लाब दे॥

नुसखा

काला दाना नौ माशे आधा भुना आधा कच्चा कूट कर बराबर की सकर मिला कर तीन पुड़िया बनावे और सवेरे ही एक पुड़िया गरम जल से खिलावे और प्यास लगे तब गरम जल पिलावे और जो किसी के बार पार छिद्र हो गया हो तो यह विरेचक देवे॥

नुसखा विरेचक

पिस्ते की मींगी· बादाम की मींगी· चिलगोजे की मींगी· पुराना खोपरा· मखाने की मींगी· पुरानी दाख· जमाल गोटे की मींगी· इन सब को बराबर ले जल में पीस कर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे· और गोली के देने से पहिले तीन दिन तक अरहर की दाल और चावलों की खिचड़ी खिलावे फिर चौथे रोज दो गोली मलाई में लपेट कर खवादे· और ऊपर से गरम जल पिलावे फिर दूसरे दिन ये ठंढाई दे॥

नुसखा ठंडाई का

कौड़ दाने दो माशे· रेसा खतमी छै माशे· ईसबगोल छै माशे· मिश्री एक तोले इन सब को राति को पानी में भिगो दे फिर प्रातःकाल मल छान कर पिलावे॥

और पीछे ये दवा देवे॥

गोली

कर पिलावे॥

और जुल्लाब के पीछे ये दवा दे

गोली

मुरदासंग एक तोले गेरू डेढ तोले सात वर्ष का पुराना गुड इन सब को पीस कर जंगली बेर के बराबर गोली बना कर एक गोली मलाई में लपेट कर सवेरे ही खाय खटाई और बादी से परहेज करे और जो आतशक वाले रोगी को किसी ने सिंगरफ बहुत खवाया होय इस कारण करि के इसका सरीर बिगड गया होय तो ये दवा देना योग्य है

दवा

कुटकी कडवी एक तोला· आम की बिजली दो तोले ।जमाल गोटा तीन तोले· खीरा ककडी के बीज दो तोले· सफेद मिश्री तीन तोले सब को महीन पीस छान पुराने गुड में मिला कर चार पहर कूटे फिर जंगली बेर के प्रमाण गोली बना कर खवावे और ऊपर से ताजा पानी पिलावे जो दस्त हो जाय तो उत्तम है नहीं तो पहिले तीन दिन ये मुंजिस पिलावे॥

नुसखा मुंजिस

हरी सोंफ एक तोले· सूखी मकोय एक तोले· मुनक्का १५ नग खतमी एक तोले खुब्बाजी के बीज·

२ तोले गुल कंद दो तोले इन दवाओं को रात्रि को जल में भिगो दे सवेरे ही औटा कर पिलावे और खिचड़ी खाय फिर चौथे दिन यह जुलाब देवे

दवा जुलाब की

गुलाब के फूल दो तोले· खतमी के बीज एक तोले गारी कून छे माशे· सफेद निसोत छे माशे अ रंड के बीज तीन तोले· गल्ला एक तोले सोंठ छे माशे· करतम के बीज दो तोले· सकमूनि या छे माशे· सूखे आमले एक तोले· सनाय दो तोले विस्फायज अर्थात् कंकाली एक तोला कावली हड़ एक तोले· इन सब को पीस छा न कर पानी मिला कर जंगली बेर के समान गो ली बनावे फिर एक गोली सवेरे ही खवावे- फिर दो पहर पीछे मूंग का घाट पिलावे और सायंकाल को मूंग की दाल की खिचड़ी खवा वे इसी प्रकार से तीन जुलाब देवे जो इसी जुलाब के देने से आराम होजाय तो उत्तम है नहीं तो यह अर्क पिलावे॥

अर्क की विधि

सोंफ पाव सेर· सूखी मकोय पाव सेर· कावली हड़· छोटी हड़· सनाय मकई· पखारा· वाय विडंग पित पापड़ा· चिरायता· सिर फोका· जीरा· अम्बद डी· नक छिकनी सब पाव पाव सेर पुरानी सुपारी

बीज· जामन के बीज· बबूरकी फली ·मुंडी· कच नार की छाल· ये सब ओषधि आध आध सेर अ मल तास की फली का छिलका मेहदी के पत्ते लाल चंदन· झाऊ के पत्ते· ये सब पाव पाव सेर इन सब को जो कुट करिके दरयाव के जलमें बा रह पहर भिगोवे फिर इस का आश्राव खींचे फि र पांच तोले अर्क में एक तोले शहत मिला कर पीवे चालीस दिन सेवन करने से चार वर्ष का बिगड़ा हुआ शरीर अच्छा होगा और जो इस सेभी आराम न होयतो हार के अंतमें ये दवा करनी चाहिये॥

नुसखा

एक बड़ा मेंडका और बकरी का मांस दोनो को इकठ्ठा पका कर खिलावे परंतु मुसल मानों को एसी दवाई खिलाना नहीं है और न हिन्दु ओंको· परंतु काया रखे धर्म है और जो किसी स्त्री के ये रोग हो कर जाता रहा हो और उसे ग र्भ रह गया हो और उस काल में रोग फिर उलट आवे और ऐसी चिकित्सा करनी हो कि गर्भ भी न गिरने पावे और रोग भी जाता रहे तो ये दवा देनी चाहिये॥

दवा

मुर्दासंग· गेरू· चने एक एक तोले· अफ़्‌म दो तोले

उन को महीन पीस कर बारह वर्ष के पुराने गुड़ में गोली बनावे और एक गोली मलाई में लपेट कर नित्य खवावे जो यह गोली गरमी ज्यादा करे तो आधी गोली खिलावे तो सात दिन में रोग-जाता रहे गा और जो इस गोली से आराम न होवे तो ये औषधि करनी चाहिये

नुसखा

कंघी के पत्ते दश तोले सिंगरफ तीन माशे-इन दोनो को महीन पीस कर तीन माशे की गोली बनावे फिर एक गोली चिलम में रख-कर मिट्टी के हुक्के को ताजा करके पिलावे और फिर दूसरे दिन हुक्के को ताजा न करे पहिले दिन का पानी रहने दे केवल नेचे को ही भिगा ले इसी प्रकार से सात दिन करे और जो चाहे सो खवावे रोग निश्चे जायगा

और जब बालक उत्पन्न हो चुके तो फिर स्त्री की यथोचित चिकित्सा जैसी कि आतशक के रोगी मरदों के वास्ते वर्णन करी गई है सोई स्त्री की करनी और जो वह बालक भी पेट में से उपदंश रोग युक्त आया होतो वह भी अपनी माता के दूध पीने से अच्छा हो जायगा क्यों कि जो औषधि उस की माता की दी ती जायगी उस का असर दूध के द्वारा बालक

की माता को दोनों जायगी उस का असर दूध के द्वारा बालक में भी प्राप्त होगा और जो दैव योग से आराम न होतो ये दवा दें॥

दवा बालकों की

कुटकी दो माशे बाय बिडंग दो माशे दाषतीन माशे इन तीनों को पीस कर आध सेर जलमें औटावे जब दो तोले रहि जाय तब किसी काच के बरतन में रख छोड़े फिर इस मेंसे एक रती लेकर उस्की माता के दूध में मिला कर पिलावे परमेश्वर की कृपा से आराम होगा ये रोग तीन पीढी तक सताता है

इति श्री जर्राही प्रकार नाम ग्रंथे
पंडित रंगीलाल संग्रहीते
आतशक चिकित्सा
यां सम्पूर्णम्

अथ सुजाक की चिकित्सा

ये रोग तीन प्रकार से होता है एक तो आतशक से दूसरा स्वप्न में स्सखलित होने से तीसरा वेश्या के संग से इस प्रकार से ये रोग होता है और जब ये रोग पैदा होता है तब आठ दिन तो बहुत ही दर्द होता है फिर दर्द कम हो जाता है॥

स्वप्न में वीर्य निकलने के सुजाक का यत्न

जो किसी मनुष्य को स्वप्न में काम विलास प्राप्ति हो और वीर्य्य स्सखिलित होजाय उस समय सोते से आंख खुलजाय तो वीर्य निकल ने से रुक जाता है और सुजाक रोग को उत्पन्न करता है जिस मनुष्य को इस प्रकार से सुजाक हुआ हो उस्को ये दवा देनी चाहिये॥

दवा

दो तोले अलसी को रात्रि को आध सेर जल में भिगो दे और सवेरे ही उसका लुआब उठा कर छान कर एक तोला कच्ची खांड मिला कर पीवे और खटाई लाल मिर्च का परेज करे॥

अथवा

सोरा भुना हुआ तीन तोले ग्वार के पाठे का गूदा छै

तोले दो तोले गूदे में एक तोले सोरा मिला कर प्रात काल खाय तो तीन दिन के खाने से पुरानी सोजाक भी जाती रहे ये दवा सब तरह की सोजाक को फायदा करती है परंतु खाने में लाल मिर्च नोन उरदकी दालका परेज है

अथवा

त्रिफला डेढ तोले लेकर राति को सेर भर पानी में जो कुट करके भिगोदे फिर दूसरे दिन प्रात काल इसे छान कर इस्में नीला थोथा तीन माशे महीन पीस कर मिलावे फिर इस का तीन दिन तक दिन में तीन दफे पिच कारी लगावे तो बहुत जलदी फायदा होगा॥

अथवा

काहू· गोखरू· खीरा के बीज· भी फली· ये सब दवा छदाम छदाम भरले सोंफ दमडी भरले इन सब को पानी में पीस ठंडाई बनाले परंतु जल दो सेर जल दो सेर से कम न लें जितनी दफे प्यास लगे इसे ही पीवे इसी तरह सात दिन सेवन करे तो सुजाक आदि सब रोग इन्द्री के जांय- निमक मिर्च खटाई का परहेज करे॥

अथ वेश्या प्रसंग के उत्पन्न सुजाक का यत्न

ये सोजाक इस प्रकार से होता है कि पहले किसी

विश्या के पास रहे तो उस समय ये नहीं जाना जाता कि इ संके सोजाक है जब लिंग यो नि में पहुंचता है तो ये मा लूम होता है कि जैसे भूभल में भुरस जाता है तो म नुष्य उसी समय उस्से अलग हो जाय तो उत्तम है न हीं तो दो तीन दिन के पीछे मूत्र नहीं उतरता और बड़ी कठिनता तथा पीड़ा से बूंद बूंद आता है फि र पीव निकलने लगती है जो पीव की रंगत स फेद जरदी मिली हो तो ये दवा दे॥

नुसखा सोजाक

सिरस के बीज· बिनोले की मींगी· बकायन के बीज की मींगी· ये तीनो दवा एक एक तोले ले कर बारीक पीसे· और बरगद के दूध में मिला कर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और ए क गोली नित्य प्रात समय खाकर ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे खट्टी और बातल वस्तुओं से परहेज करना चाहिये॥

और जो पीव की रंगत सुरखी लिये होय तो यह औषधि दे॥

अथवा

कबाबचीनी· दालचीनी· गुलाब के फूल सफेद मूशली· रूसगंध नागोरी· सेलखड़ी ये समस्त दवा छै छै मासे लेना चाहिये- फिर इन सबको महीन पीस कर एक

तोले की मात्रा पाव भर गौ के दूध के साथ खावे तो और खटाई वादी लाल मिर्च इन का परहेज करे और इकीस दिन इस दवा का सेवन करे तो यह रोग अवस्य जाता रहेगा॥

और एक सुजाक इस प्रकार से होता है कि थोड़े से अरसे में मनुष्य स्त्री से तीन चार वार संभोग करै और हर वार मूत्र करिके सो रहे और व्यर्थ स्त्री से लिपटा रहे उस समय वीर्य की थोड़ी सी बूंद लिंग के छिद्र में जम जाती है और उस्में मदिरा के सदृश गुण है कि सवेरे तक घाव कर देती है यह अवस्था तो बुद्धिमानों की है और वाजे कैसे मूर्ख होते हैं कि थोड़े कालमें स्त्री से तीन चार दफे संभोग करिके भी मूत्र नहीं करते और चिपटे ही जाते हैं और फिर कहते हैं कि हम को सोजाक होगया है और वे लोग अपनी मूर्खता से प्रकट नहीं करते और सोजाकका नाम वदनाम करते है ऐसे सोजाक के लिये ये दवा उत्तम है

दवा पिचकारी की

नीला थोथा· पीलीकोडी· विलायती नील ये सब दोदो तोले ले इन को महीन पीस रक्खे फिर इस्मे से दो माशे आध सेर जल में मिला कर खूब हलावे फिर लिंग के छिद्र मे पिचकारी देवे—

परंतु जहांतक हो सके पिचकारी देना योग्य नहीं है क्यों कि इससे कई एक हानि होती हैं
एक तो यह कि अंड कोषों में पानी उतर आता है दूसरे यह कि छिद्र कुशाद हो जाता है अर्थात् लिंग का छिद्र चौड़ा हो जाता है इस सबब से जहांतक हो सके पिचकारी न दें॥

दवा

बतीरा एक तोला· लालमारवाने एक तोला· इन दोनों को बारीक पीस कर इस्में बराबर की खांड मिला कर चार माशे तथा छे माशे की फंकी ले ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे

और जो मनुष्य वेश्या के पास इस रीत से रहे कि संभोग से पहिले आलिंगन करे और जब विषय कर तब पहिले मूत्र करके उससे संभोग करे तो उस मनुष्य के कभी ये सुजाक रोग नहीं होता॥

और जो दैव योग से होभी जाय तो जानले कि इस वेश्या ही का सुजाक था ऐसे सुजाक वाले को ये दवा दे॥

दवा इन्द्री जुलाव की

शीतल चीनी· कलमी शोरा· सफेद जीरा· छोटी इलायची ये सब दवा एक एक तोले इन सब को पीस छान कर रक्खे फिर इस्मे से छे माशे प्रात काल

खाकर ऊपर से सेर भर गौ का दूध पीवे तो दिन भर मू
त्र आवेगा और जब प्यास लगे तब दूध का लस्सी
पीवे और सायं काल के समय धोवा मूंग की दाल
और चांवल भोजन करे और दूसरे दिन ये दवा खा
ने को देवे॥

दवा

खार खश्क· खीरा के बीज· मुंडी· ये दवा छे छे
माशे लेकर रात्रि के समय पानी में भिगोदे
फिर प्रात काल मल छान कर पीवे और दही
भात का भोजन करे और जो इस दवा से आ
राम न होय तो फिर उस्को यह औषधि-
देनी चाहिये॥

दवा

कतीरा· गेरू· सेलखडी· शीतल चीनी· ये स
ब दवा छे छे माशे ले और मिश्री सफेद दोनो
ले ले इन सब को कूट छान कर छे छे माशे की
मात्रा गौ के पाव भर दूध के संग खाय तो फाय
दा बहुत जलदी होगा
और ये रोग रज स्वला स्त्री से सम्भोग करने से
भी हो जाता है ऐसे रोगी को ये दवा दे

दवा

बीह दाना तीन माशे ले कर रात को जल में भि
गोदे प्रात समय उसका लुआब निकाल कर-

उस्में सवा सेर दूध मिलावे फिर सेल खड़ी और ई शाब गोल की भुसी छै छै माशे ले कर पहिलें फा क फिर ऊपर उस लुआब को पीले और खानेको मूंग की दाल रोटी खाय॥

और एक सोजाक इस प्रकार से भी होता है कि मनुष्य उस वेश्या से संग करे कि जिसने बाल क जना हो उस्में दो कारण है एक तो यह कि उन दिनों में वह गरम वस्तु बहुत खाती है और दूसरा यह कि वह बालक को दूध नहीं पिलाती है व सबब दूध की गरमी और गरम वस्तुओं की गरमी और शरीर का बुखार ये उस मनुष्य को हा नि पहुंचा कर सोजाक रोग को पैदा करता है इस रोग वाले को ये दवा है॥

दवा

बालंगू के बीज· बीह दाना· खीरे ककड़ी के बीज कुलफा के बीज· कासनी के बीज· हरी सोंफ सफेद मिस्री ए सब दवा छै छै माशे ले सब को पीस छान कर चार माशे नित्य खाया करे और इस के ऊपर यथो चित गौ का दूध पीवे औरजो इस औषधि से आराम न होय तो यह औषधि देना चाहिये॥

दवा

गौ के बछड़े का सींग पुरानी रुई में लपेट कर-

बत्ती बनावे और कोरे दीपक में रख कर उसमें रेंडी का तेल भरदेवे फिर उसे जलादे और उसके ऊपर एक कच्ची मिट्टीका पात्र रख कर काजल पाडले फिर उस काजल को दोनों वक्त आंखो मे लगाया करे खटाई और वादी से परेज करे॥

नुकसा सब प्रकार की
सुजाक का

कुलफा के बीज· पोस्त के बीज· सफेद ककडी के बीजों की मींगी· नरबूज के बीजों की मीगी· ये सब पंद्रह पंद्रह माशे ले· और छोटा गोपरू· बबूल का गोंद· कतीरा· ये छै छै माशे ले इन सब को ईशब गोल के रस में पीस कर तीन-माशे की गोली बनाले· फिर एक गोली नित्य ग्यारह दिनतक सेवन करे तो सब प्रकार की सोज़ाक जाय॥

अथवा

पथिया घांसे के छोटे पेड़ को जला कर उसकी राख-में कतीरा का पानी मिला कर चने के बराबर गोली बनाले और गुल खैरा को राति को भिगोदे सवेरे ही मल कर छानले फिर पहिलें उस गोली को खा कर ऊपर से इस रस को पीवे तो सब प्रकार की सोजाक जाय॥

अथवा

हलदी और आमले दोनों बराबर ले चूर्ण करे इसकी बराबर खांड मिला कर एक तोला नित्य पानी के साथ फांके तो आठ दिन में सोजाक जाय

अथवा

सफेद राल को पीस कर उसमें बराबर की मिश्री मिला कर नौ माशे नित्य खाय तो सोजाक जाय और पीव निकलना बंद होय

अथवा

ढाक की कोंपल· सूखे ढाक का गोंद· ढाक की छाल· ढाक के फूल· इन सब को कूट छान कर बराबर की खांड मिला कर इसमें से ७॥ माशे कच्चे दूध के साथ खाय तो सब प्रकार की सोजाक और पीव निकलना बंद होय·

अथवा

महदी के पत्ते आमले· जीरा सफेद· धनियां गोखरू· ये सब औषधि एक एक तोले लेकर जव कुट करे फिर इसमे से एक तोले रात्रि को पानी में भिगोदे प्रात काल मल छान के और तीन माशे कतीरा पीस कर पीवै इसमें एक तोला खांड मिला कर पीवे दिन ७ तो सोजाक जाक

नुसखा

धांवाहूली का काढ़ा कर पीये तो सो जाक जाय

अथवा

कलंगा के बीज ६ माशे ले कर आध सेर दूध में भिगो कर रात्रि को ओस में धर राखे फिर प्रातकाल छान कर उस्में थोडी खांड मिला कर पिये परंतु कलंगा के बीजों को पीस कर भिजो वे तो सब प्रकार की सोजाक जाय

अथवा

बबूल की कोंपल गोषरू एक एक तोला लेकर इन का रस निकाल कर थोडा बूरा मिला कर पीवे तो सब प्रकार की सोजाक जाय

इतिश्रीजराहीप्रकारनाम ग्रंथे
रंगीलाल संग्रहीते सोजाक
विरचितं संपूर्णम्

अथ तृतीय प्रकार

अथ जिर्यान अर्थात् प्रमेह का यत्न

जानना चाहिये कि ये रोग किसी को सोजाक के कारण से और किसी को आतशक के कारण से होता है जब चिकित्सा करी जाती है तब आराम हो जाता है परंतु जड से बडी कठि-

न से आराम होता है

जो प्रमेह सोजाक के कारण से हो उसकी चिकित्सा

खर बूजे के बीजों की मींगी तीन तोले खीरे के बीजों की मींगी डेढ तोले घीया के बीजों की मींगी· पिटकव्वा· अजवायन खुरासानी· वंशलोचन· इसपंद के बीज· कुलफे के बीज· गेहूं का सत· बादाम की मींगी· कतीरा· मुलहठी का सत· पोस्त के दाने गेरू· अजमोद· ये सब दवा सात सात माशे ले फिर इन सब को महीन पीस छान रक्खे· फिर बीह दाने सात माशे लेकर उसका लुआब निकाल कर उस पिसी हुई दवा में मिला कर जंगली बरके प्रमाण गोली बनावे औ र छै माशे गोखरू और छै माशे सूखा धनियां कूट कर पाव सेर जल में रात्रि को भिगो दे· फिर प्रातःकाल इस गोली को खाकर ऊपर से इस नितरे हुए जल को पीवे परंतु गोली को दांतों से न लगावे साबत ही निगल जावे तो प्रमेह जाय खटाई बादी लाल मिर्च· का परहेज करे॥

अथवा

अलसी पाव सेर· वंशलोचन चार तोले इस

व गोल· सेलषडी· इन सव को महीन पीस वराव
रकी खांड मिला कर एक हथेली भर नित्य स
वेरेही खाकर ऊपर से पाव भर गौ का दूध पी
वेतो प्रमेह जाय परंतु गुड· खटाई· तेल इन से
परहेज करना॥

और जव ये रोग सुजाक के कारण से होता है
तो उस्की परीक्षा येहै कि लिंग के छिद्रमें से पी
व निकल तीहै और प्रमेह में वीर्य वहुत पतला
होकर वहा करता है और ये प्रमेह तीन प्रकार
का होता है॥

एकतो यह कि सर्दी पाकर वीर्य पानी के समा
न हो कर वहा करता है इस प्रमेह वाले को ये
दवा देनी चाहिये॥

दवा

वर्गद की डाढी पाव सेर लेकर इस्को वर्गद
ही के पाव सेर दूध में भिगो कर छाया में सु
खावे और ववूल का गोंद सालव मिश्री सका
कुल मिश्री ये सव दो दो तोले ले और मूसली
स्याह· मूशली सफेद ये दोनो पांच पांच तोले
इन सव को कूट छान कर वरावर की कच्ची षांड
मिला कर एक तोले नित्य सवेरे खाकर ऊपर से
पाव भर गौका दूध पीवे और खटाई तथा वातल

वस्तुओं से परहेज करेतो सात दिन में निश्चयआ राम होय॥

और दूसरा प्रमेह यह है कि गरमी पाकर वीर्य पिगल कर पीला पन लिये हुए बहता है इस रोग वाले को ये दवा उचित है॥

दवा

बबूल की कच्ची फली सेमर के कच्चे फूल ढा क की कोमल कोमल कोंपल छोटी छोटी अमियों की कैरी मुंडी· कच्चे अंजीर· अनार की मुड़ मुड़ी फली· जावित्री·पच्ची ये स ब औषधि एक एक तोले ले और सब को महीन पीस कर सब से आधी कच्ची खांड मि ला कर एक तोले नित्य सबेरे ही गौके दूध के संग खाय तो प्रमेह जाय॥

तीसरे यह कि वात पित के विकार से प्रमेह होजा ताहै उसके वास्ते ये दवा दे

दवा

उर्द का आधा आध सेर· इमली के बीजों का चूर्ण आध सेर सेलखडी तीन तोले इन सब को पीस छान कर इसमें तीन पाव कच्ची खांड मिला कर पांच तोले नित्य प्रात काल के समय खाय ऊपर पाव भर गौका दूध पीवे तो सात दिनमें प्रमेह जाय॥

और कभी कभी रुधिर विकार से भी प्रमेह हो जाता है इस्में बासलीक फस्त खोले और इन्द्री जुलाब देकर ये दवा दे

दवा

भुने चने का चून पाव सेर· शीतल चीनी एक तोले सफेद जीरा छैमासे· शकरतीगाल छैमाशे इन सब को कूट छान कर इस्में तीन तोले कच्ची षांड मिला कर सवेरे ही चार तोले नित्य फांके ऊपर से गौका दूध पाव भर पीवे और यथो चित परहेज करे और जब आदमी के सोजाक पैदा होता है उस वक्त बहुत से मनुष्य औषधियों की बत्ती बनाकर इन्द्री के छिद्र में चला देते हैं इस कारण करिके इन्द्री का छिद्र चौडा होजाता है इस को बिंदु कुशाद कहते हैं इस रोगवाले को ये दवा दे॥

बिंदुकुशादकीचिकित्सा

गौका घृतदो तोले रस कपूर· सफेदा काशगरी· शेलषडी· ये दवा एक एक माशे नीला थोथा एक रत्ती पहिले घृत को खूब धोवे फिर सब-औषधि यों को पीस छान कर घृत में मिला कर मरहम बनाले और रुई की महीन बत्ती पर मरहम को लपेट कर इंद्री के छिद्र में धरे तो आराम हो॥

आतशक के कारण से हुआ जो प्रमेह उसकी चिकित्सा

जो आतशक के कारण से प्रमेह होय तो उसकी यह परीक्षा है कि इन्द्री के मुख पर एक छोटा सा घाव होता है और वीर्य भी पतला सुर्खी लिये हुए बहता है क्यों कि एक तो प्रकृति की गर्मी दूसरे आतशक की गरमी तीसरे उन दवाईयों की गरमी जो आतशक में दीनी गई इनने दोषों के मिलने से प्रमेह रोग होता है इस के वास्ते ये दवा देनी योग्य हैं॥

दवा

अकरकरा· सुपारी के फूल· मूसली सफेद· मौफली· मींठे इन्द्रजौ· गोषरू बडे· गिलोय सत· कौंच के बीज· उटंगन के बीज· अजवायन· अजमोद· शीतल चीनी· कुलीजन· शोरंजान मीठा· सालब मिश्री· सका कुल मिश्री· अलसी· सतावर· तवाखीर· बडी इलायची के बीज· दम्मुल अषवेन· ये सब दवा एक एक तोले ले· सब को कूट छान कर सात तोले बूरा मिलाकर एक तोले नित्य प्रातः समय खाय ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे तो ग्यारह दिन में प्रमेह निश्चय जड मूल से जाय ये नुसखा निहायत उमदा है॥

और जो वीर्य स्याही लिये हुए बहता हो तो उस्के वास्ते ऐसी दवा देनी चाहिये जो प्रमेह और आत शक को गुण दायक हो

नुकसा प्रमेह

अकरकरा गुंज राती· हल हुल के बीज· गोष रू छोटे· गोषरू बड़े· सुपारी के फूल· स्याह मूश ली· सफेद मूशली· सेमर का मूसला· मीठे इ न्द्रजो· गिलोय सत· लिसोड़े· कोंच के बीज उट ग़न के बीज लाल मखाने शीतल चीनी मीठा· और जान ये सब दवा एक एक तोले तज कलमी बिजोरे का सत पठानी लोध ये तीनों माशे इ न सब को कूट छान कर सब से आधा बूरा मि ला कर एक तोले नित्य गौ के दूध के संग प्रातः स मय खाय तो प्रमेह जाय और खटाई आदि से परहेज करना॥

और एक प्रमेह लाल मिर्च और खटाई औ र गरम अहार आदि के अधिक खाने से उत्पन्न होती है उस्के वास्ते ये दवा देनी योग्य है

दवा

दोनों मूसली पांच तोले कलोंजी स्याह पांच तोले सब को कूट छान कर बराबर का बूरा मि ला कर एक तोले पाव भर गौ के दूध के संग प्रात काल खाया करै॥

तो प्रमेह जाय॥

अथवा

कुदरू गोंद पंद्रह तोले लेकर पीस छान कर इस्में दश तोले कच्ची षांड मिला कर नित्य सवेरे ही एक तोले गौके पाव भर दूध के संग खाय तो यह प्रमेह रोग जाय॥

इति श्री जरीही प्रकार नाम ग्रंथे
पंडित रंगीलाल संग्रहीते
प्रथम भागे प्रमेह
चिकित्सा यां तृ
तीय प्रकार

अथ चतुर्थ प्रकार

जिस मनुष्य का वीर्य पतला होगया
हो उसकी चिकित्सा॥

मूशली सफेद· खरबूजे की गिरी· पांच पांच तोले पेठे आध सेर· घीं ग्वार का गूदा आध पाव कबाबचीनी छे माशे· इन सब को पीस कर एक सेर कंद की चाशनी करिके उस्में सब दवा मिला कर माजून बनाले फिर इस्में से एक तोला नित्य खाय तो वीर्य गाढा होय

अथवा

एक सेर गाजरों को छील कर घी में भून ले फिर

आध सेर कंद मिला कर हलुआ बनाले फिर पां च तोले नित्य खाय तो वीर्य गाढा हो और ताक त भी अधिक होय॥

अथवा

पाव सेर छुहारे गाय के दूध में पका कर पीस ले और पाव सेर गेहूं का निसासता और पाव सेर चने का बेसन इन को भूनले फिर तीन- पाव खांड और आध सेर घी डाल के सब का हलुआ बनाले फिर इस्में बादाम पाव सेर· पिस्ता पाव सेर· चिलगोजा पाव सेर· अखरो ट की की गिरी आध पाव सब को बारीक करिके हलुआ में मिलादे फिर इस्में से चार तोले नित्य खाय तो बहुत ताकत करता है· और वीर्य को गाढा करता है

अथवा

मीठे आमों का रस तीन सेर· खांड सफेद एक सेर· गौ का घी आध सेर· गौ का दूध एक शे र शहत पाव सेर· पहले इन नीचे लिखी दवा ओं को पीस कर तैयार करले बहमन सफेद बहमन सुर्ख· सोंठ· सेमर का मूशला· एक एक तोले· बादाम की गिरी चार तोले सालब मिश्री चार तोले· सिंघाडा चार तोले पीपल छै माशे· खोलंजान छै माशे पिस्ता चार तो-

ले· बादाम· पिस्ता· सिंघाड़े· पहिलें पीस कर घीमें भूनले फिर आम का रस और खांड और शहत और दूध इन को कली के बरतन में मंदी आंच पर पकावे फिर सब चीज़ें डाल कर हलुआ की तोर भूनले फिर इस्में से दो तोले नित्य खाय तो वीर्य अधिक पैदा होय और पतले से गाढा हो जाता है॥

अथवा

बबूल की छाल और फली· और गोंद और कोंपल इन सब को बराबर ले कूट छान कर सब की बराबर खांड मिला कर एक तोले रोज खाय तो वीर्य गाढा होय

अथवा

बरगद के फल को सुखा कर पीस ले फिर इस्में से अनु मान मा फिक गो के पाव भर दूध के साथ फांके तो वीर्य गाढा हो

अथवा

सालव मिश्री· दोनों मूशली· सेमर का मूसरा· काम राज· सोंठ· ये सब डेढ डेढ तोले सलजम के बीज सोया के बीज· गाजर के बीज· प्याज के बीज· मिर्च पीपल ये सब आठ आठ मा शे शहत पाव सेर· लाल बूरा पाव सेर इन स को एक त्र करि सहत बूर की चासनी में मिला—

कर माज़ून बनाले फिर इस्में से एक तोले नित्य खाय और खटाई का परहेज करै तौ ये मज्जून इन्द्री को प्रबल करे और बिगडे हुए वीर्य को सुधारती है॥

अथवा

सालब मिश्री पांच तोले · सकाकुल मिश्री-तीन तोले · अकरकरा · कुलीजन · समंदरसोष · भिलायेकी मींगी · असगंध एक एक तोले पीपल · सलंगी हालम के बीज · जायफल · सोंठ · दोनों बहमन · दोनों तोदरी · छै छै माशे · छिले हुए सफेद तिल कोंच के बीजों की मींगी · गाजर के बीज · एक एक तोले · जावित्री · केशर · तीन तीन · माशे · सब की बराबर कंदलें और तिगुने सहत में सब मिलाकर माज़ून बनावे और छै माशे · नित्य खाय तो वीर्य गाढा होय

अथवा

रेगमाही · इन्द्रजो · सफेद पोस्त के दाने तरक चूर · सफेद · चंदन · नारियल की गिरी · बादाम की मींगी · पिस्ता · चिलगोजा की मींगी · अखरोट की मींगी · मुनक्का काले तिल छिले हुए ये सब दवा दो दो तोले · प्याज़ के बीज · सलजम के-बीज · कोंच के बीजों की मींगी · हाल

म के बीज· माई असवंद के बीज· गाजर के बी
ज· मल्लगी· नागर मोथा· अगर· तेजपाते· बि
जोरे का छिलका· चीता· सोया के बीज· मू·
ली के बीज· दोनों तोदरी· दोनों मूशली· ये
सब दवा एक एक तोले· मिला जीत अकर
करा· लोंग· जावित्री· जायफल· काली मिर्च· दा
लचीनी· ये सब दवा नौ नौ माशे· सहत और स
फेद बूरा सब से दूना लेकर पाक बनावे फिर
इस्में से एक तोले नित्य खाय इस माजून के
समान इन्द्री को बल वान करने में और वीर्य
को गाढा करने में दूसरी कोई नहीं है

अथ नपुंसकता का

यत्न

जानना चाहिये कि कामदेव की प्रबलता कई
प्रकार से जाती रहती है एक तो यह कि मनुष्य
हथ रस करि के नपुंसक बन बैठता है और ह
थरस के भी कई भेद हैं एक तो यह कि जाड़े
के दिनों में सोते समय रात्रि को यह काम
करते हैं यह तो साध्य है इस की चिकि
त्सा जलदी हो सक्ती है और दूसरा यह कि बा
जे मनुष्य पाखाने में या किसी मैदान में
हथरस करते हैं एक तो हथरस करना ही
बुरा है दूसरे वे मूर्ष इस काम को करिके उ–

सोचक्रपानीसेधोडालतेहैं गरम नसों परजोसीत ल पानी पड़ाओरऊपर से हवालगी इस सवव से न में नष्ट होजाती हैं इस्पर भी कोई कोई मूर्ष नि- त्य नियम वांध कर हथरस किया करते हैं ओर- वाजे आठवे दिन करते हैं जव तक दो चार व र्ष तरुणता का वल रहा तव तक किया करे और कभी इस दुष्ट कर्म से नहीं रुकते अंत को वल हीन हो कर पछिताते हैं ओर हर ए क हकीम वो जर्राह से औषधि पूछते हैं तिस नपुंसक को ये दवा देनी योग्य है

दवा

हाथीदांत का चूरा २तोले मछली के दांतों का चूरा एक तोला लौंग आठ माशे जायफ ल गुजराती दो नग नरगिस की जड एक नग. इन सव को महीन पीस कर दो पोटली वनावे ओर आध पाव भेड का दूध हांडी में भर कर औ टावे जव उस में से भाप उठने लगे तव उस भां प पर उन पोटलीयों को गरम करिके पेडू जांघ ओर लिंग को सेके फिर इन्द्री के ऊपर वंगला पांन वांध देवे ओर पानी न लगने दे फिर इस औषधि को खिलावे॥

दवा खानेकी

खिलगोजे की मींगी सफेद पोस्त के दाने श्या

ममूशली· कुलीजन· लोंग फूलदार· सालवमिश्री जाविंत्री· भो फली· तालमखाने· बीजबंद· सितावर· ब्रह्मदंडी· तज· ये सब दवा चार चार तोले पिटकव्वा नौ माशे· इन सब को महीन पीसकर घृत में चिकना करके आध सेर सहत की चाशनी में मिलावे फिर इस्में से दोदो माशे दोनो समय खाया करे तो चालीस दिन में नपुंशकता जाय॥

अथवा

सफेद कनेर की जड· गुजराती जाय फल– अफीम छोटी इलायची· सम्मुल की जड– पीपला मूल· छै छै माशे· इन सब को महीन पीस कर एक तोले मीठे तेल में मिलाकर खूब रगडे जब मल्हम के सदृश हो जाय तब इंद्री पर लगा कर ऊपर से बंगला पान गरम करिके बांधे और जो इस के कारण से प्रमेह हो जाय तो ये दवा दे

दवा

स्याह मूशली· नागोरी असगंध· धावे के फूल भुने चने· सोंठ· जरद के बीज · केथरा· उटंगन के बीज· पिस्ते के फूल· तालमखाने ये सब एक एक तोले इन सब को महीन करके बराबर का बूरा मिलाकर इस्में से एक तोले

नित्य खावे ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे खटाई बादी से परहेज करे॥

और जो हथरस करने से इन्द्री टेढ़ी होगई होय तौ ये दवा करे॥

दवा

अफीम तीन माशे· जायफल· अकरकरा· दालचीनी· ये दवा पांच पांच माशे· प्याज नर्गिस· २ तोले सफेद कनेर की जड़ का छिलका १॥ तोले सब को दो पहर तक मदिरा में घोट कर इन्द्री पर लगावे तथा लंबी बत्ती कर राखे और समय पर मदिरा में घिस कर लगावे तो इन्द्री का टेढ़ा पन जाय॥

और बाजे मनुष्य लौंडे बाजी करने से न पुंसक हो जाते हैं और स्त्री से संभोग नहीं कर सकते उन की स्त्री यों से अन्य पुरुष आनंद प्राप्ति करते हैं और आप जर्राहों से दवाई पूछते फिरते हैं ऐसे लौंडे बाज मनुष्य की चिकित्सा करनी नहीं चाहिये क्यों कि इस की चिकित्सा करने से जब कामो दीपन होगा तो फिर भी लौंडे बाजी करेगा- और जो इस की चिकित्सा करनी ही अवश्य होतो प्रथम ऐसी दवा लगावे जिस से इन्द्री की खाल उड़ जावे क्यों कि जब कष्ट से आराम-

होगा तो फिर कभी ऐसा काम न करेगा

नुस्खा पट्टी

संखिया· जमालगोटा· काले तिल· आक का दूध ये सब एक एक माशे ले कर महीन पीस थोड़े से पानी में मिला कर इन्द्री पर लेप करे ऊपर से बंगला पान गरम करिके बांध देवे जब छाला पड़ जाय तब घी धोकर लगावे अथवा यह रोगन मर्दन करे॥

रोगन की विधि

बीर बहोटी· अकरकरा· सूखे कैंचुए· घोड़े का नख· कुलीजन· एक एक तोले लेकर सब को जो कुट करके आतशी सीसी में भरकर पाताल यंत्र द्वारा खींच कर एक बूंद इन्द्री पर लगा कर ऊपर से बंगला पान बांध देवे तो चालीस दिन में आराम हो जायगा॥

अथवा

जायफल· जावित्री· छबीला· मनुष्य के कान को मैल ये सब छैछै माशे गधे के अंड कोशों का रुधिर चार तोले इन सब को दुआतशा सराव में यहां ताई घोटे जो पाव भर सराव शोष जाय तब इस का इन्द्री पर मर्दन करे

अथवा

कड़वे घिया की मींगी दो तोले सफेद चिरामिठी

अकरकरा छै छै माशे· तेजबल· पीपरा मूल· तीन तीन माशे· इन सब को गाय के घृत में तीन दिन तक घोटे और इन्द्री पर लगा कर ऊपर से पान बांधे तो नपुंशकता जाय॥

अथवा

जमाल गोटे को गधे की लीद में औटा के सफेद चिरमिठी· कुचला की राख· अकरकरा· सफेद कनेर की जड़ का छिलका दो दो तोले सब को पीस कर गौ के दूध में इतना घोटे जो तीन सेर दूध को शोष जाय पीछे इसे चोया की तरह खींचे फिर इस का लेप इन्द्री पर सुपारी बचा के करे ऊपर से पान बांधे तो नपुंशकता जाय॥

अथवा

सफेद कनेर की जड़· लाल कनेर की जड़· इन दोनो का छिलका डेढ़ डेढ़ तोले बड़ा जाय फल· एक नग· अफीम नो माशे· सब का चूरन कर के गोह की चरबी दो तोले मिला के एक दिन घोट कर गोली बना राखे शराब दुआतशी में घिस के सब इन्द्री पर लगावे और ऊपर से पान बांधे परंतु इस दवा को इन्द्री की सुपारी को बचा कर लगावे॥

अथवा

सफेद कनेर का छिलका आधपाव· सफेद चिरमि

डी आधपाव · कड़वाकूट दोतोले · जमालगोटा दो तोले इन सबका चूरन कर २५ सेर गौके दूध में मिला कर पकावै फिर इसका दही जमा कर मातृका ल चार सेर पानी मिलाकर इस्को रई से बिलो के माषन निकाले और इस्की मठा को जमीन में गाड़ दे क्योंकि ये विष के समान है और माषन को ताय कर रखे फिर इस्में से इन्द्री पर लेप करे ऊपर से पान बांधे और एक रत्ती के प्रमाण पान में धरके खाय तो पंद्रह दिन में आराम हो जायगा ॥

और जो मनुष्य गुदा भंजन कराने
से नपुंशक हुआ होय
उस्का यत्न ॥

और जो किसी मनुष्य ने बालक पन में गुदा भंजन कराई होय और इ[illegible] का मूल वाई होय इसी कारण से नपुंशक हुआ होय तो उस्को चि कित्सा नहीं हो सक्ती और जो केवल गुदा भंजन ही क राया होय तो इस्की दवाई इस रीत से करे कि पहि ले उस नुकसे से सेक करे जिस्में हाथी दांत का चू रा लिखा है और इस पुस्तक के ४६ के पत्र में लि ख आये हैं फिर ये दवा षिलावे

दवा

गेहूं का मेदा पांच तोले · बेसन सात तोले · इन को

पांच तोले घीमें भूनले पीछें बादाम की मींगी पिस्ते चिल गोज़े की मींगी नारियल की गिरी खूबा नी छै छै माशे सालव मिश्री एक तोले ला ल बहमन सफेद बहमन तीन तीन माशे सका कुल छे माशे अंबर छे माशे असहब कल लमी दार चीनी प्रत्येक तीन माशे इन सब को कूट पीस कर बेसन मेदा में मिलावे और द श तोले मिश्री और पांच तोले सहत इन को दश तोले गुलाब जलमें चाशनी करिके उस्में-सब दवा मिला कर माजून बनाले फिर इस्में से दो तोले नित्य खाय और खटाई बादी से पर हेज़ करे॥

और एक नपुंसक इस प्रकार से भी होता है कि बहुत से मनुष्य यौवन अवस्था में स्त्री सं भोग करते हैं उस संभोग करते समय घरमें कोई आगया हो उस वक्त संभोग करते से उठ खडा हो और वीर्य स्खलित न हुआ हो और-फिर थोडी देर के बाद संभोग करने लगे इस्में इन्द्री को हवा लगने से इन्द्री की नसें ढीली हो जाती हैं ऐसे नपुंशक को ये दवा देवे

दवा

ग्वार पाठे का रस १० तोले मूंग का आटा १० तोले इन दोनो को पृथक २ घृत में भूने फिर छोटे बडे-

गोखरू· पिस्ता· तालमखाने· बादाम की मींगी· ये सब दोदो तोले कूट छान कर मिलावे और पाव भर कंद की चाशनी में सब को मिला कर माजून बनाले फिर दो तोले नित्य खाय और इंद्री पर ये दवा लगावे॥

दवा

अकर करा· सफेद कनेर की जड़· मालकांगनी· सोहन मारवी· काले तिल· सिंगरफ· हरताल· नवकिया· सफेद चिरमिठी· मूली के बीज· शलजम के बीज· बीर बहोटी· शीतल चीनी· सिंह की चरबी· ये सब दवा एक एक तोले लेकर सब को जो कुट करके आतसी सीसी में भरकर पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाले और राति को सोने समय एक बूंद इन्द्री पर मल कर ऊपर बंगला पान गरम करिके बांध देवे तो २१ दिन में नपुंशकता जाता रहेगा॥

अथवा

अकर करा· लौंग· केंचुरा· आसबच· ये सब एक एक तोले बीर बहोटी चार माशे· मुरदासंग ४ माशे· रोहू मछलीका पिता· ४ नग· सिंगरफ ४ माशे· जमालगोटा ४माशे· सांडे की चरबी तीन तोले मोम दो तोले· पारा १तोले इन सब को मिला के

खूब रगडे जब मल्हम के सदृश होजाय तो रात्रि को गरम करिके लिंग पर लेप करे और ऊपर बंगला पान गरम करि के बांधे पानी न लगावे

अथवा

धतूरे की जड का छिलका· सफेद कनेर की जड का छिलका· आक की जड़ की छाल· अकरक रा गुजराती· बीर बहोटी· गौका दूध ये सब एक एक तोले ले पीस कर दो तोले तिल के तेल में पकावे जब दवा जल जाय तब तेल को छान ले फिर लिंग पर मर्दन करे ऊपर बंगला पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दे

और एक नपुंशक इस प्रकार से भी होता है कि बहुत से मनुष्य स्त्री को इन्द्री पर बिठा के खडे हो जाते हैं और बहुत से मनुष्य आप नीचे हो जाते हैं और स्त्री को उपर रख कर काम विलास करते हैं इस प्रकार संभोग करने से भी मनुष्य नपुंशक होजाता है क्यों कि लिंगमें हड्डी नहीं है न जाने मनुष्य क्या समझ कर ऐसा अयोग्य काम करते हैं ऐसी बातें मनुष्यों की देख कर विदित हुआ कि मनुष्य युवा वस्था में काम देव की प्रबलता से अंधा हो जाता है ऐसे नपुंसक के वास्ते ये दवा दे॥

बादाम की मींगी २१ नग ताज़े पानी में पीस कर दो तोले सहत मिला कर ग्यारह दिन तक पीवे तो ...न पुंशकता जाय॥

अथवा

सफेद कनेर की जड का छिलका दो माशे माल कांगनी दो माशे कोंच के बीज सफेद प्याज अकर करा असवंद ये सब चौदह चौदह माशे इन सब को जौ कुट करिके दश तोले तिल के तेल में मिला कर औटावे जब दवा जल जाय तब छान ले फिर इसमें से थोडासा रात को इन्द्री पर मल कर ऊपर से बंगला पान गरम करके बांधे॥

और एक नपुंशक जन्म सेही होता है उस्के कई भेद हैं एक तो यह कि मनुष्य माता के गर्भ से जब उत्पन्न होता है तो उस का लिंग स्थान सब सपाट होता है यानी किसी प्रकार का कुछ भी चिन्ह नहीं होता उस्को सदली ख्वाजे सराक हते हैं और दूसरा यह कि कुछ कुछ लिंग होता है और उस्को स्त्री संग की इच्छा भी होती है और उस्के संतान भी होती है॥

और तीसरा यह कि लिंग तो पूरा होता है परंतु उस्में तेजी नहीं होती इसे तीनों की चिकित्सा नहीं होती है

चौते यह कि लिंग केवल मूतने के समय चलायमान होता है और फिर नहीं चलायमान होता ऐसे नपुंशक को ये दवा करे

दवा सेक

वीर वहोटी· सूखे केंचुए· नागोरी असगंध· हलदी· आमा हलदी· भूने चने· ये सब छे छे माशे इन सब को महीन पीस कर रोगन गुल में चिकना कर दो पोटली बनावे और किसी पात्र को आंच पर रख कर उस्पर पोटली गरम कर जाय· पेड़· और लिंग को खूब सेके और फिर पोटली यों की दवा लिंग पर बांधे॥

अथवा

अकरकरा दो माशे· वीर वहोटी दो माशे· लोंग नग २० बकरे की गरदन का मांस दश तोले इन सब को कूट पीस कर लिंग के परमाण खोली बनावे और उस्को भून कर लिंगपर चढावे और पानी न लगावे॥

अथवा

सिंह की चरवी· मालकांगनी· अकरकरा· सोंठ· जावित्री· कुचला· तज· लोहवान· कोडिया· लोंग· मीठा तेलिया· हरताल तबकिया· जमालगोटा· पारा· हाथी दांत का चूरा· गंधक आ

मलासार· कटेरी· सफेद चिरमिठी· केचुआ जायफ
ल गुजराती· सफेद कनेर की जड अजवायन
खुरासानी· प्याज के बीज· असपंद सफेद
सारिवया· रेंडी के बीजों की मींगी कालीजी
री· ये सब एक एक तोले मुरगी के अंडे की
जरदी पांच नग इन को कूट कर आतशी
शीशी में भर पाताल यंत्र द्वारा तेल निकाल
ले फिर इस में से एक बूंद नित्य लिंग पर मर्द
न करे और ऊपर से बंगला पान गरम कर
के बांधे और पानी नहीं लगने दे और
और खटाई तथा बातल वस्तुओं से परहेज-
करे चालीस दिन तक इसी प्रकार सेवन कर
ते रहें और षाने को ये दवा है

दवा

ग्वार पाठे का रस· गेहूं की मेदा· बिनोले की मीं
गी· घृत· कंद· ये सब एक एक सेर पहिले ती
नों को पृथक् पृथक् घी में भूने फिर कंद की
चासनी करिके गोषरू एक छटांक जायफ
ल· पिस्ता· खोपड़ा· चिलगोजा की मीं-
गी अषरोट की मींगी· ये सब पाव सेर इन
को कूट कर उस्में मिला कर हलुआ बना पां
च तोले नित्य खाय तो निश्चै नपुंशक
ता जाय ॥

और जो किसी मनुष्य नें अपनी स्त्री तथा वेश्या से विषय बहुत किया हो इस सबब से उस का काम देव कम जोर हो गया हो तो उस्को ये माजून खवाना चाहिये॥

माजून

कुलीजन दो तोले सोंठ २ तोले· जायफल रूमी मस्तगी· दाल चीनी· लोंग· नागर मोथा· अगर· ये सब एक एक तोले ले महीन पीस छान कर तिगुने बूरे में चासनी कर माजून बना ले फिर इस्में से छै माशे नित्य खाय तो कामदीपन बहुत होय॥

और जो वीर्य पतला पड़जाने के कारण से काम देव कम होगया होतो ये दवा करे

दवा

ताल मखाने आध पाव· ईशब गोल आध पाव· इनको बरगद के दूध में भिजो कर छाया में सुखाले फिर चालीस छुहारे की गुठली निकाल कर उनमें ऊपर लिखी दवा भर कर गौ के सेर भर दूध में औटा वे जब खोये के सदृश होजाय तब उतार कर चिकने बासन में रख छोड़े फिर एक छुहारा नित्य ४० दिन तक खाय और दूध रोटी भोजन करे और लिंग पर ये दवा इ लगाया करे॥

दवा लगाने की

अकर करीदघनी· लोंग फूलदार· बीरबहोटी निर्विसी· सखे केंचुए· सब एक एक तोले ले इन सब को पाव सेर मीठे तेल में मिला कर मिट्टी की हांडी में भरकर उसका मुख बंद कर चूल्हे में गढा खोद कर उसमें इस हांडी को दाब कर ऊपर से सात दिन बराबर राति दिन आग जलावे फिर आठमें दिन निकाले और इस्में से एक बूंद लिंग पर मले ऊपर बंगला पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दें॥

इतिश्री जर्राही प्रकार नाम ग्रंथे नपुंशक भेद चिकित्सा नाम चतुर्थः प्रकारः

अथ पंचम प्रकारः

इस प्रकार में बाजीकरण के वास्ते बहुत अच्छी २ अजमाई हुई दवा लिखी हैं परन्तु बहुत से मनुष्य यों कहते हैं कि ये दवा झूंठी हैं सो उनका कहना सत्य है क्यों कि ये कसूर हकीम लोगों का तथा वैद्य लोगों का है क्यों कि ये लोग अच्छी तरह से प्रकृति का निश्चै नहीं करते इसी सबब से उन लोगों की दवा फायदा नहीं करती क्योंकि दवा जब गुण करेगी तब दवा की प्रकृति और रोगी की प्रकृति एक मिल जावेगी· इसी कारण पहिले बुद्धिवान हकीम और वैद्योंने एक एक रोगी पर

कई कई दवा लिखी हैं ये बात प्रत्यक्ष है कि जो प्रकृति भेद न होता तो एक एक रोग के वास्ते एक ही दवा लिखी जाती काहे को हकीम लोग अपनी अपनी किताबों में अपनी अपनी समझ के नुकसे लिखते बस हमारा इस बात के लिखने से प्रयोजन येहै कि वैद्य हो या हकीम या जर्राह हो पहले रोगी की प्रकृति को देखे फिर उसी के माफिक दवा देवे जो मनुष्य इस प्रकार से रोगी का इलाज करेंगे तो ये दवा सब राम बाण के समान काम देंगी और जो बिना विचारे रोगी को दवा देंगे उनके वास्ते ये दृष्टांत है कि लगा तो तीर नहीं तुक्का ही सही अर्थात् जो दवाई प्रकृति के माफिक बैठ गई तो आराम हो गया तो कहने लगे कि ये दवा सही है और जो प्रकृति के माफिक दवा न मिली तो उसने कुछ फायदा न किया तो कहने लगे कि ये दवा झूठी है परंतु वे मूरख दवा को तो दोष देते हैं परंतु अपनी मूर्खता को दोष नहीं देते इस लिये हकीम तथा वैद्य या जर्राह को मुनासिब है कि पहले प्रकृति को पहिचान कर रोगी का इलाज करेंगे तो उनको मेरी लिखी दवाओं का गुण मालूम होगा और फायदा उठावेंगे॥

अथवाजी करणम्

दवा १

सिंगरफ एक तोले· सुहागा एक तोले· पारा छे माशे· इन तीनो को महीन पीस कर मुर्गी के अंडे की सफेदी में राखे फिर ढाई सेर ढाक की राख ले कर एक मिट्टी की हांडी में आधी राखभर करउस अंडे को उस राख पर रख कर आधी राख को ऊपर से रखदे और हांडी का मुख बंद कर कपरोटी करके सुखादे जब सूख जाय तब चूल्हे पर रख कर ढाक की लकड़ी की चार पहर आंच उसके नीचे जलावे फिर सीतल हो जाय तब सिंगरफ को निकाल ले फिर इस्में से एक रती पान में धरके खाय तो काम विलास अत्यंत करे परंतु इस दवा को जाड़ों में खाना योग्य है

दवा २

सिंगरफ· कापूर· लोंग· अफीम· उटंगन के वीज इन को महीन पीस कर कागजी नीबू के रस में मिला कर मूंग के प्रमाण गोली बनाले फिर एक गोली खाकर ऊपर से पाव भर गो का दूध पीकर काम विलास करे तो स्तंभन होय ये दवा अजमाई है॥

दवा ३

सूखा तमाखू· और लोंग दोनों बराबर ले महीन·

पीस के सहत में मिला कर उर्द के प्रमाण गोली बनावे फिर एक गोली खा कर भोग करे॥

दवा ४

एक तोले पोस्त के डोडों को पानी में भिगो दे जब खूब भीग जाय तब उसको नितरे जल में गेहूं का आटा गूंद कर उस्का एक गोला बना कर गरम चूल्हे में दवा दे जब सिक कर लाल हो जावे तब निकाल कर कूट ले फिर थोड़ा घी बूरा मिला कर मसीदा बना रखे जब एक पहर दिन बाकी रहे तब उसे खाय और राति को काम विलास करे तो काम देव की इतनी प्रबलता होगी कि एक स्त्री से मन तृप्त न होगा॥

दवा ५

थूहर का दूध और गौ का दूध इन दोनों को बराबर लेके मिला कर चार पहर धूप में सुखावे फिर पांव के तलुओं में लेप कर स्त्री से भोग करे पांव को धरती में न धरे॥

६

कोंच की जड़ एक पोस्ता की बराबर लेके मुख में राखे जब तक मुख में रहेगी तब तक वीर्य न निकलेगा॥

दवा ७

चछूंदर का अंडा चमडे के पत्र में धर कमर में बांध कर स्त्री संग करे जब तक पत्र कमर से न हो खु

लेगा तब वीर्य निकले॥

दवा ८

सिंगरफ़ मोचरस अफ़ीम ये चार २ माशे सुहागा २ माशे इन सब को पीस कर मिरच प्रमाण गोली बनावे फिर २ गोली खाकर भोग करे तो स्तंभन होय॥

दवा ९

अज मायन ४ माशे धतूरा के बीजों की मींगी ६ माशे इस पंद नो माशे भांग के बीज ५ मा० खिले चने ७ मा० भांग के बीज ५ मा० पान की बोंडी २॥ नग इन सब को पीस छान कर पान की बोंडी के रस में बेर के बराबर गोली बंधे एक गोली खाकर एक घड़ी पीछे मैथुन करे तो स्तंभन होय॥

दवा १०

खरगोस के पिते का रस अपने लिंग पर मर्दन करके स्त्री के काम विलास करे तो वह स्त्री उस पुर्ष पर आशक्त होय॥

दवा ११

चितकबरे बिलाव के लिंग को सुखा पीस कर लिंग पर मले फिर स्त्री से भोग करे तो वो स्त्री बांदी हो जायगी

दवा १२

गधे का भेजा तेज में जला कर उसको इन्द्री पर मर्दन करे तो इन्द्री इतनी मोटी होगी कि स्त्री पर सहारी न जावेगी और रुकावट भी ख

धिकहोगी॥

दवा१३

सिंह की चरबी को तिल के तेल में मिला कर इ द्रीपर मर्दन करे तो स्त्री संग करने में ताकत अ धिक होय॥

दवा१४

ऊंट के दोनों नेत्रों को भुजा पर बाध कर संभोग क रेतो वीर्यस्तंभन होय॥

और जो कोई मनुष्य चाहे कि ये स्त्री किसी दूसरे पुर्ष के पास नजाय तो ये तंत्र करे

दवा१५

ककरोंदे की जड कंघी इन दोनो को बराबर लेके जल मे पीसे और इन्द्री पर लगाके स्त्री से भोग करे तो वह स्त्री फिर दूसरे पुर्ष की चाहना नहीं करेगी॥

दवा१६

और जो उसे खोला चाहे तो एक तोले ककरोंदे की जड कूट कर खवावे तो फिर वह स्त्री पर पुर्ष की चाहना करेगी॥

इतिजराही प्रकार नाम ग्रंथे रंगीलाल संग्रहीत बाजी करणचिकित्सायां पंचम प्रकार:

अथ गठिया को यत्न

ये रोग उपदंश और सोजाक और ज्वर के अंत में अवस्य होता है उपदंश रोग में पारा भिलावा सिंगरफ आदि के खाने से और शरीर को धूनी देने से अथवा सोजाक में शीतल औषधियों के सेवन करने से गठिया हो जाती है और ज्वर में पसीना या रूखा आवे और उसमें बायु लग जाय तो तमाम बदन के जोड़ों में पीड़ा हो जाती है अर्थात् दर्द हुआ करता है तो उसके वास्ते अक्सर तेल का मर्दन करते हैं परंतु ज्वर में तेल मलना सूजन करता है इस लिये गठिया की चिकित्सा जब करै कि बदन में कोई दूसरा रोग मालूम न हो तो इसकी दवा इस प्रकार से करनी योग्य है

दवा गठिया

पहले मुर्गी के चालीस अंडों को औटावे फिर उन की सफेदी दूर करिके जरदी को लेवे फिर अकरकरा दालचीनी जायफल लौंग ये सब दवा एक एक तोले समुद्र खार एक माशे इन सब को महीन पीस कर अंडे की जरदी में मिला के एक हांडी में भर कर फिर उसमें दो तोले मीठा तेल छिड़क देवे और उस हांडी को पेंदे में एक छिद्र करै फिर एक गढ़ा खोद कर

उस के ऊपर हांडी को रख दे और इस हांडी के नीचे उस गढ़े में एक प्याला चीनी का रख और हांडी के चारों तरफ कंडे लगा कर आंच लगा देवे तो उस हांडी के छिद्र द्वारा तेल प्याले में टपक आवेगा फिर इस तेल को जोड़ों पर मर्दन करे और हवा न लगने दे तो ईश्वर की कृपा से एक सप्ताह भर में बिलकुल दर्द जाता रहेगा यह दवा बहुत सही है और इस दवा के लगाने से कितने ही रोगियों को आराम हो चुका है

अथवा

धतूरे के पत्ते, अमलतास के पत्ते, सहजने के पत्ते ये तीनों पत्ते सूखे हुए दो दो तोले लेना और सोये के बीज, अजवायन खुरासानी, बीरजान कडवा, गेरू, सेंधा नोन ये सब दवा छै छै माशे इन सब को पीस कर छान ले और जोड़ों पर मालिश करे॥

अथवा

एक बादिया रोग इस प्रकार से भी हो जाता है कि कोई मनुष्य मार्ग में चला जाता है और मार्ग में उसको प्यास लगे उस वक्त प्यास के समय पहिले यह हाथ पावों को धोता है और फिर जल पीता है और विशेष करिके मार्ग में नहीं चले—

निकले हैं जो मनुष्य अपनी मूर्खता से उसमें
पड़ा रहता है और गर्मी में व्याकुल होकर सि
र पर पानी डालता है जो किसी की प्रकृति निर्बल
होती है तो उसी समय बीमार हो जाता है और
अंत में उस को गठिया बस लेती है फिर जो घो
ड़े पर चढ़ कर चलने से हाथ पांवों पर सूजन हो
जाती है ऐसी गठिया के वास्ते ये दवा है

दवा

बेद अंजीर के पत्ते खुरासानी अजवायन को
ये के बीज हींग के फूल बाय विडंग ये दवा
एक २ तोले सेंधा नोन खारी नोन छै २ मा
शे इन सब को पानी में औटा कर बफारा दे औ
र जो जोड़ों पर सूजन भी होवे बफारे के पीछे
ये औषधि मले

दवा

भुने मूंग का आटा छोटी माई बड़ी माई दो २
तोले कालीजीरी भांग सोंठ जायफल अजवान
देशी ये दवा एक एक तोले इन सब को महीन
पीस कर मले जो मनुष्य गरम जल से स्नान क
रते हैं उन को यह रोग कम होता है और यह
रोग इस प्रकार से भी होता है कि दो चार
[illegible] हुआ कि मनुष्य [illegible]
[illegible]

से नीचे गिर पड़ा हो और सम्प पाकर माही से वा पूरब की वायु के लगने से चोट कसक आये और मुद्दी पाकर गठिया हो जाय तौ उसके वाले ये दवा देवे

दवा

एक रेंडी नित्य प्रति खाया करे और इस तेल की मालिस करे

तेल की विधि

माल कांगनी दो तोले कायफल पकायन मों ठ जायफल अकरकरा लोंग आंबाहलदी समुद्र खार दारुहलदी कुचला बादाम की मींगी कंजा के बीज कुलीजन सिरमोर काले धत्तूरे का रस आख का दूध सहजने की छाल गोमा का रस हरी मकोय का रस इमली की छाल भांगरे का रस ये सब दवा एक एक तोले क डवा तेल पंद्रह तोले मीठा तेल पंद्रह तोले रेंडी का तेल पांच तोले इन सब को मिला कर औटावे जब तेल मात्र रह जाय तब छान कर सीसी में भर रखवे फिर इस तेल की मालिस करै तो दर्द जाता रहेगा॥

अथवा

पहिलें तिलों का तेल पाव भर गरम करे फिर उस्में मोम सफेद एक तोले बनाव की बत्ती

एक तोले माल कांगनी दो तोले सफेद संखिया छै माशे इन सब को तेल में डाल कर औटावे और खूब रगड़ फिर छान कर ओड़ों पर मालिश करे और खाने को मूंग की धोवा दाल और गेहूं की रोटी दे और मुसलमान को मांस रोटी खवावे ॥

और जो गठिया आतशक के कारण करिके हो गई हो तो पहिले विरेचन देवे फिर यह तेल मर्दन करे ॥

तेल की विधि

मदिरा दो सेर कूट दो तोले तज दो तोले सोंग दो माशे काली मिर्च पांच माशे जायफल एक माशे दरियाव का पानी एक सेर इन सब को चार पहर भिगो कर औटावे जब पकने लगे तब उसमें एक सेर कड़वा तेल मिलावे और आंच कम कर देवे जब और का तेल मात्र रहिजाय तब छान कर इस की मालिस करे और खाने को ये दवाई

दवा

मुरदा संग दो माशे कंजा की मींगी सात माशे घी दो माशे सफेद चूना छै रत्ती इन सब को महीन पीस कर गुड़ में मिला कर तीन गोलियां बनाले पहिले दिन

एक गोली खिलावे और भुने चने का पथ्य देवे दूस
रे दिन दो गोली खिलावे और गेहूं की रोटी औ
र मूंग की दाल भोजन करावे इस के सिवाय औ
र कुछ न देवे जो इस दवा से आराम होजाय
तो और कोई पुष्टि कारक माजून बनाकर खि
लावे और इस तेल का मर्दन करते रहें

तेलकीविधि

भिलाये सोंठ मालकांगनी कडुवा ये तीनों द
वा दो दो माशे इन सब को आध पाव मी
ठे तेल में मिला कर जलावे जब ये सब दवा
जल जांय तब तेल को छान कर कांच की
शीशी में धर रक्खे फिर इस तेल का सोते स
मय मर्दन करावे ऊपर से धतूरे के गरम पत्ते
गरम करि के बांध देवे इसी प्रकार से सात
रोज तक सेवन करे तो सब जोड़ों का दर्द
दूर होय॥

दवा

कंकोदन चार माशे नकछिकनी चार
माशे अफीम तीन माशे मीठा तेल तीन
तोले इन सब को मिला कर जलावे जब
सब दवा जल जाय और तेल मात्र रहजाय
तब छान कर जोड़ों पर मालिश कराय तो
गठिया जाय॥

[illegible]

और जो जोड़ों में दर्द ज्यादा होते हों तो ऐसा चा हिये कि दस्तों के द्वारा निकाल देना चाहिये॥

दस्तावर दवा

सोरंजान मीठा. [illegible]. छै छै माशे [illegible] निसोत [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] ए के [illegible] तीन तीन माशे [illegible] [illegible] [illegible] इन सब दवा [illegible] [illegible] [illegible] धो ले इस सब को [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] लाल बूरा मिला कर पीवे इस के पीने से थो ड़े थोड़े दस्त होंगे॥

अथवा

और जांघ तथा पीठ में पीड़ा होती हो तो उ सको ये दवा देनी चाहिये॥

[illegible] पांच माशे [illegible] पांच माशे. [illegible] पांच माशे. सोरंजान चार माशे. [illegible] की जड़ चार माशे. [illegible] की [illegible] [illegible] का चार माशे. [illegible] के [illegible] की छाल चार मा शे. मुनक्का दश माशे. [illegible] दश माशे इन सब को [illegible] कर [illegible] नौ माशे [illegible] [illegible] मिलाकर पीवे तो दस्त होंगे इस दवा के [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होगा॥

अथवा

सीरंजान· सोफ· सौंफ की जड़ का छिलका· अ जमोद· अनेसू· ये सब दवा पांच पांच माशे· हंस राज चार माशे· गाजवां चार माशे· विसी खोपन चार माशे· गुलाब के फूल सात माशे बड़ी हड़ छै माशे· मुनाय मक्की सात माशे गुलाब की गुलकंद डेढ़ तोले ले कर औटावे फिर इसको छान कर इसमें एक तोले गुलकंद को घोट कर मिलाके पीवे तो दस्त होंगे दर्द क म हो जायगा॥

और जो किसी मनुष्य के कूल्हे की हड्डी की जड़ में और जांघ से लेके नलुआ पर्यंत दर्द हो उसके वास्ते ये दवा देनी

दवा

मलंगी पांच माशे अनेसू पांच माशे· सोंठ तीन माशे· अजवर की जड़ तीन माशे· मजीठ ४ मा शे· चीता चार माशे· सोरंजान चार माशे· पूदीना चार माशे· अजमोद चार माशे· मेथी चार मा शे· सोंफ चार माशे· अन्जीर के २१ दाने· इन सब को औटा कर एक तोले अंडी का तेल मिला कर प्रा तःसमय पीवे तो इस के पीने से दस्त हों गे और पथ्य वैद्य अपनी मत के अनुसार देवे॥

और जो सब सरीर में वादी से दर्द होता हो तोये दवा करनी चाहिये ॥

दवा

महूआ तीन भाग· खाने का नमाख एकभाग· इन दोनों को पीस कर गरम करके जहां सरीर मे दर्द होता हो वुहां बांधे ये दर्द गाठिया का न हीं होता है इस्को साधारण वादी का दर्द कहते हैं ॥

और गाठिया के वास्ते जोग राज गूगल बहुत गुण करता है और दूसरी माजून चोवचीनी भी बहुत फायदा करती है और हमने ये दोनों नुस्खे इस वास्ते नहीं लिषे क्यों कि ये दवा अम्रत सागर आदि ग्रंथो में लिषी है सो समझ कर बना लेना लेकिन इस्में इतनी बात करनी चाहिये कि जो गठिया थोडे दिन की होयतो के वल जोग राज गूगल के खाने से आराम होजा यगा और जो बहुत दिन का रोग होतो उस रोगी को एक वक्त गूगल खवावे और वक्त माजून चोव चीनी खवावे इस प्रकार के इ लाज करने से बहुत दिन की गाठिया होगी तोभी बहुत शीघ्र आराम हो जायगा और बहुत से मूरख जराह वो हकीम अपने लेने की खातर रोगी को भिलाये आदि की गोली

खिला देते है और उस गोली के खाने से रोगी को मुंह आजाता है उस वक्त वह रोगी बड़ा दुख पाता है बस हमारा इन बातों के लिषने से ये प्रयोजन है कि इन गोलियों के देने से आराम तो हो जाता है परंतु एक यह बड़ी हानि होती है कि उस रोगी के दांत किसी काम के नहीं रहते और दांत बहुत जल्दी गिरजाते हैं तो वह बिना दांतों के जन्म भर दुख पाता है और उसको सता है इस वास्ते जहां तक बने वहां तक इस को मुख आने की दवा न देनी चाहिये

और जो साधारण छाती और पीठ और हाथ पांव में वायु का दर्द होने लगे तो उन के वास्ते दो चार दवा नीचे लिषते है कि जिन के लगाने से ये दर्द बहुत जल्दी आराम होता है

दवा

वनपसा का तेल· पांच तोले आंच पर धरके उस्में सफेद मोम दो तोले कतीरा नौ माशे मिलावे और जहां दर्द होता हो वहां मर्दन करावे तो इस लगाने से बहुत जलदी फायदा हो जाता है॥

दवा

वनपसा के पता· सफेद चंदन· खतमी के बीज· नाखूना· जौ का चून· गेहूं की भुसी -

ये सब दवा बराबर लेके कूट छान के इन सब को मोम रोगन में और कलस्मा के तेल में नया गुलरोगन में मिला कर पकावे जब रोगन मात्र रहजाय तब उतार कर इस का मर्दन दर्द के मुकाम पर लगावे तो दर्द बहुत जलदी रफे होगा

अथवा

खतमी के बीज अलसी मकोय के पतों का रस अमल तास का गूदा इन सब को पीस कर छाती पर लेप करना॥

अथवा

मीठे तेल में थोडा मोम औटा कर उस का-लेप करना॥४॥

अथवा बारह सींगे का सींग सोंठ अरंड की जड इन को पानी में घिस कर लगाना॥

अथवा मीठे तेल में अफीम औटा कर मलवाना अच्छा है

अब जानना चाहिये कि इन रोगों के वास्ते बडे बडे हकीमों नें हजारों नुस्खे और लेप आदि लिखे हैं जो सब को हम लिखते तो एक बडा भारी ग्रंथ हो जाता इस वास्ते जो दवा हमारी अजमाई है वही दवा इस पुस्तक में वर्णन करी गई है

और अब सबरे शरीर के फोड़ो और घाव तथा
शस्त्रा दिकों के घावो की चिकित्सा मय
तसवीरों के इस पुस्तक के दूस
रे भाग में बिस्तार पूर्वक
लिखे गये है और
समस्त नेत्रों के
यत्न इसके
तीसरे भाग
में लिखे
हैं

इति श्रीजर्राही प्रकार नाम ग्रंथे पंडित रंगी
लाल संग्रहीते प्रथम भाग सम्पूर्णम्
सम्वत्
१९४५

सूचीपत्र

इस से सिवाय जो और भी पुस्तकें हमारे यहां मौजूद हैं सो उन के नाम और कीमत नीचे लिखे हैं सो जिन महाशयों को लेने की इच्छा हो वे सहर मथुरा नया बजार लाला श्यामलाल की दुकान से मंगा ले

नाम पुस्तक	की	डा.	नाम पुस्तक.	की.	डा.
जर्राही प्रकार दूसरा-			किस्सा तोता मै		
भाग	।)	-॥	नाका जिस्में च		
तथा तीसरा भाग	॥)	-॥	हुनउमदा उमदा		
अनो पान चिंतामनी			तच्छेदार खती		
मदीक	।)	-)	फे लिखे हैं आठों		
स्त्री चिकित्सा प्रथम			भाग	॥।)	।)
भाग	=)	-॥	ब्रज विहार का		
योग चिंतामणि भाषा			री भाग जिस्में रा		
टीका	१)	=)	सधारियों की वा		
करावादीन सिनानी	॥=)	=)	त पर बहुत सी		
अर्क प्रकाश	=)	-॥	लीला श्री कृस्न		
रिसाले ग्यान शाक	-)॥	-॥	राधिका की ललि		
नाडी प्रकाश	-)॥	-॥	त ललित पदों में		
अजीर्ण मंजरी	-)॥	-॥	मयन सवीराल		
मीजान तिब्ब हिंदी	॥।)	=)	लिखी है	२॥)	
औषधि कल्पद्रुम प्र			तथा पतले काग		
थम भाग	-)॥	-॥	ज का	॥।)	=)

इश्तिहार

प्रकट हो कि यह पुस्तक जरीहो प्रकार तीन हिस्सों में पंडित रंगी लाल मथुरा निवासी ने संग्रह करि के बनाया और इसके छापने का हक मुसन्न फी लाला श्यामलाल मुहत मिम मतवे श्याम काशी प्रेश को दिया और लाला श्याम लाल ने इस के छापने का हक लाला हरि प्रशाद मह्तोत मिम मतवे काशी समान प्रेश को दिया अइस वास्ते कोई साहव विना इजाजन मालिक मतवे के छापने का यत्न न करै और अब अपनी मरजी से लाला हरि प्रशाद ने लाला श्याम लाल को एक वार छापने की इजाजत दी है

फकत

सन १८८९ ईशवी

जर्राहीप्रकार

दूसराभाग



पंडितनंदी लालकृत

श्रीमथुराश्यामकाशीयंत्रमेंलाला श्यामलालकेप्रबंधसेछापागया-

निघंटभाषा	७	७	मुत्फर्कात		
वैद्यमंजरीभाषा	७	७	ब्रजविहारचारोंभाग		
वैद्यमनोत्सवभाषा	७	ा॥	जिस्में श्रीकृष्णलीलारा		
अमृतसागरछापाम			श धारियोंकी रीति		
शूरा	॥)	७	परललित पदोंमें		
शालहोत्रजिस्में घो			लिखो हैं मोटाकाग		
ड़ोंके इलाजहैं	७	ा॥	ज मोटा अक्षर	२॥)	०
इलाजुलगुरबा	॥)	७	तथा	॥)	७
करावादीनसफाई	॥)	७	किस्सा तोतामैना		
औषधिकल्पद्रुमप्र			का आठ भागोंमें पं		
थमभाग	आ	ा॥	डितरंगीलालकृत		
औषधिसार	आ	ा॥	जिस्में तोता और मैना		
मुजरबातवसीर	७	ा॥	के बहुत उमदा उम्दा		
इलाजिस्मानी	७	७	जवाबसवाल इश्क		
योगचिंतामणिस			में बहुतहीदिलचस्प		
टीक	॥)	७	लच्छेदार दोहा· सो		
मदनसुधाकर	७	ा॥	रठा· कवित्त चौबोला		
बाजीकरणप्रकाश			गज़ल आदि रागिनी		
सटीक	७	ा॥	योंसहितललितफों		
विरेचनकल्पलता			मेंवर्णनहै	॥)	७
सटीक	७	ा॥	मजमेउलअसार हिं		
माधवकृतकूटस			दीजिस्मेंहरेकशायरों		
टीक	७	ा॥	कीगज़ललिषी हैं	७	आ

॥श्रीगणेशायनमः॥

अथजर्राहीप्रकार दूसराभागलिख्यते॥

मंगलाचरण

दोहा

श्रीधन्वंतरिकेचरणरजनिजमस्तकधार॥
जर्राहीपरकारयेरच्योग्रंथसुखकार॥१॥
मुनिगुरुचरणसरोज [illegible]
रोगिनकेउपकारहितपूरणाकियावनाय॥२
नानाग्रंथनकोरतनअरुनिजमतिअनुसार
लिखीचिकित्सादेहकीसुखपावेसंसार॥

अथमाथेकेफोडेका

यत्न

जाननाचाहियेकिएकफोडासिरकेतालूपरहोताहै सूरतउसकीयहहै किपोस्तकेदानेकीवरावरहोताहै औरउसकेआसपासहथेलीकेवरावरस्याहीहोतीहै औरयहस्याहीहवाकेसदृशदौडतीहै औरजहरवादसेसंबंधरखताहै यहांतकयेस्याहीफैलतीहैकिसबसरीरस्याहहोजाताहै औरवहरोगीचारपहरयाआठपहरकेपीछेमृत्युकेसमीपपहुंचजाताहै

परंतु परमेश्वरके अनुग्रहसे कोई अच्छा जर्राह चिकित्सा करनेवाला मिलजाताहै तो निस्संदेह आराम होजाता है और चिकित्सा करनेवालेको चाहिये कि जो यह स्याही कंठसे नीचे न उतरी होय तो चिकित्सा करनेसे आराम होजाताहै और जो स्याही कंठसे नीचे उतर आई होय तो इलाज करना नहीं चाहिये और इस फोड़ेके निसान नीचे लिखीत सबीर में देखलेना और जो इसकी चिकित्सा करे तो इस प्रकारसे करे कि पहिले सेरू नसकी की फस्त खोले और पंद्रह तोले रुधिर निकाले और फस्तके बाद वमन करावे क्योंकि ये रोग दिल अर्थात हृदयका हानि करनेवाला होताहै ऐसा नहो कि फेर यह नीचे उतर आवे -



इससबबसेवमनकरानाउचितहै॥

नुकसावमनका

सिरका १० तोले लालचूरा ३ तोले मैनफल ६ माशे इन सबको दोसेरजलमें औटावेजबआधाजलबाकीरहिजाय तबठंडाकरखले फिरइसको दोतथातीनवारमेंपिलादे तौवमनहोजायगी औरउस फोडे परतथाउसप्याहीपरते जावलगावेंतथापत्नास्टररक्खैजबछाला पडजावेतोदूस रेदिनप्रातःकालकेसमयकाटडाले फिर ऐसामल्हम लगा वे किजिसमें घाव भरजावे औरखूबमवादनिकलजावे॥

नुकसामल्हम

नीलाथोथा १ तोले जंगारन हरा १ तोले नव कियाहर ताल ६ माशेइनसब दवाइयोंकोमहीनपीस करसुहागाचौ कि या १ तोले विरोजातर ४ तोले फिटकरी १ तोले आंवा हलदी १ तोले इन सबकोभीपीस कर फिर सबको विरोजेमें मिला वे फिरउस्में गौका घृत ४ तोले थोडा थोडा करके मिलावे फिरवरांडी शराब तथानेजाशिरकेसे इस मल्हम कोखूब धोकर घाव परलगावेजबघावसुरखी परआजाय तब यह दूसरी मल्हमलगानाचाहिये॥

दूसरीमल्हम

काले तिलोंकातेल ३ सेरलेकरगरम करे फिर आदमीकी सिर कीहड्डी २ तोले नीम के पत्ते २ तोले इनदोनोंकोतेल मेंडालकरजलावेजबजलजायतब निकालडाले पीछे ६ तोले मोम मिलावे और मुरदासंग ६ माशे सफेदा का

शकारी ६ माशे इनसबको पृथक पृथक उस तेलमें डाले और आंच मंदी करदे कि चासनी मल्हमकी खूब होजावे जब उस चासनी का तार बंधने लगे न व अफीम छै माशे मिलावे जब अफीम उसमें मिलजावे तब उतार कर ठंडा करके रख छोडे। फिर इस मल्हमको उस घाव पर लगावे और देखे कि किसी नफ़ेकी सूजन तो नहीं है और जो सूजन होवे तो उस सूजन पर यह लेप लगावे॥

लेपकी विधि

मोरंजानकडवा ६मा० नाखूना १ तोले अमलतास का गूदा २ तोले बाबूनेके फूल एक तोले अफीम २ माशे इन सबको हरी मकोयके रसमें पीस कर गुन गुना करके लगावे फिर दो चार दिनके पीछे फिर उसको देखो कि उस घावमेंसे पीव निकलती है या पानी निकलता है जो पानी निकलता होतो यह मल्हम लगावे॥

मल्हमकी विधि

पहिले गुलाबके फूलोंका तेल गरम करे १२ तोले और पीला मोम दो तोले उसमें डाल कर पिघलावे फिर मेलखडी दो माशे रस कपूर दो माशे सफेदा काशकारी २ माशे मुरदासंग २ माशे मुरगीके अंडेके छिलकेकी भस्म ३ माशे नीला थोथा जला हुआ २ रत्ती इन सबको पीस छान कर उस तेलमें मिलावे जब थोडी सी चासनी हो जाय तो नीचे उतार रक्खे और ठंडा करके घाव पर लगावे और जो यह फोड़ा मुसलमान के माथेमें होय तो उसको हलवान

के मांस का शोरवा और रोटी खिलाना चाहिये और हिंदू को मूंग की दाल रोटी खिलावे और खटाई लाल मिर्च व गैरह सबसे परहेज करना चाहिये और जो इस दवा के लगाने से पानी निकलना बंद न होतो इसकी चिकित्सा करनी छोड़दे और जान ले कि ये फोड़ा जहर बाद् का है आदि में छाला प्रगट होवे तो उस्में चीरा देवे और दो तीन दिन तक नीम के पते बांधे पीछे ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

पहिलें २२तोले गुलाब के फूलों का तेल गरम करे फिर उस्में नीम के पतों का रस ४माशे बकायन के पतों का रस ४माशे बेरके पत्तों का रस ४मा· हरे आमलों का रस ४मा· इन सब रसों को उस तेल में मिलावे जब सब रस जल जाय और तेल मात्र रहिजाय तब पीला मोम २तोले सफेद मोम २तोले डाले फिर सफेदा २तो· मुरदासंग ४मासे दम्मुल अखवेन ४मा· नीला थोथा चार रती इन सब को महीन पीस कर उस तेल मैं मिलावे जब चासनी हो जाय तब उतार ले फिर इसको घाव पर लगावे॥

और एक फोड़ा माथे पर तथा कान पटी पर तथा गुदी पर ऐसा होता है कि उस्में कुछ भय नहीं होता या तो वे आपही फूट कर अच्छे हो जाते हैं या चीरने से या मल्हम लगाने से अच्छे हो जाते हैं ऐसे सब प्रकार के फोड़ों के वास्ते बहुत अच्छी अच्छी दो चार मल्हम इस ग्रंथ के अंत

में लिखेंगे सब प्रकार के फोड़ा और घावों को बहुत जल्दी अच्छा कर देती है और एक रोग सिर में यह होता है कि बहुत सी छोटी छोटी फुनसियां सिर में होजाती है और उनमें से पानी निकलता है और जहां वह पानी लग जाता है वहां छतासा होजाता है और वह पानी चेपदार गोंद के पानी के सदृश होता है इन फुनसियों का स्थान इस नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना और इसरोग की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि नीचे लिखा मल्हम लगावे ॥

मल्हम की विधि



गोका घृत धोया हुआ ७ आधपाव कथेला ६ माशे काली मिर्च दो माशे सिंगरफ २ माशे इन सब को पीस छानक र उस घी में मिलावे फिर उस घी को एक रात भर ओस में धर रक्खे दूसरे दिन उन फुनसियों पर लगावे परंतु इस दवा के लगाने से पहिले उस स्थान को गरम जल में सांभ र नोन मिला कर धो डाले फिर उस मल्हम को लगावे इ सी तरह सात दिन तक मल्हम लगावे तो आराम हो जाय गा और जो इस से आराम न हो तो पारा ६ माशे अजवाय न खुरासानी पान बंगला मसाले समेत चार नग और प- हिले मल्म की दवाइयां उसमें मिलावें फिर सांभर नो न और गरमजल से धो कर यही मल्हम लगावे और यह औषधि पिलावे ॥

दवा पीने की

गुलाब के फूल ४ माशे मुनक्का ७ दाने बनपसा के फूल ६ मा- सुरवीमकोय ६ मा- इन सब को रात को पानी में भिगो दे और सबेरे ही औटा कर छान ले फिर इसमें २ तोले मिश्री मिलाक र पिलावे और चौथे दिन यह दवा देवे ॥

दवा दूसरी

रेवतचीनी का सत २ माशे ले कर एक तोले गुलकंद में मि लाकर पिलावे इस के पीने से वमन होगी और दस्त भी आ वेंगे और दो पहर के बाद ऐसा भोजन करावे कि जो अव गुण न करे फिर दूसरे दिन ये दवाई देवे ॥

दवा तीसरी

बीदाना २ माशे रेसाखतमी ४मा· मिश्री १तोले इनकाश र्बत तथा लुआब बना कर पिलावे जब मवाद निकल जा वेगा तब आराम हो जायगा ॥

गलेके फोडे का यत्न

एक फोडा गले पर होता है सूरत उसकी यह है कि पहिलेतो सूजनसी मालूम होती है उस वक्त उसके घरके माता पिता तथा अन्य पुर्ष अपनी मतके अनुसार सुनी सुनाई दवा तथा सेका दिक करते हैं जब ये पांच चार दिन का होजा ताहै तब उस्में पीडा और जलन पैदा होती है तबहाकीम के पास जाते हैं जब उस पीडा के कारण करके ज्वर होजा ताहै तब बहुत से मूर्ख हकीम उसको अमल देते हैं जब उ स्से कुछ नहीं होता तब जर्राह को बुलाते हैं और कोई जर्राह भी ऐसा मूर्ख होताहै कि उस सूजन पर तेल लेप लगा देता है तौउस्से भी रोगी को कष्ट पहुंचताहै और जबये सूजन पैदा होती है उस वक्त इस्की सूरत कद्दुए कीसी होती है फिर भिंडके छतेके समान होजाताहै इस का निशान इस आगे लिषी तसवीर में समझ लेना इस रोग पर ऐसा लेप लगाना चाहिये जो इस सूजन को नर म करे और इस्को फोड कर मवाद को निकाले वो दवा ये है

लेप

बालछड १तोले नागर मोथा ६माशे रेवंद खताई- ६माशे· नारबूना ६माशे उष्ठक रूमी ६माशे अमल तास का गूदा २तोले इन सब को हरी मकोय के



के अर्क में पीस कर गुनगुना लेप करै और मरेरोनसु की फस्द खोलै जब उस फोड़े की सूरत बदल जावे तब वो मल्हम लगावे जो पहिले वर्णन किया गया है और घावों पर ये दवा लगावे ॥

दवा

नान पाव का गूदा ५ तोले लेकर बकरी के दूध में भिगोदे फिर उसको निचोड़ कर खरल करे और उसमें दम्मुल अखवेन केशर अंजरूत अफीम ये सब दवा छै छै माशे ले और शहत ४ तोले मुर्गी के अंडे की जरदी ३ नग इन सब को एकत्र कर खरल करै और फोड़ा जहां तक फैला हो उससे नाहीं बड़ा एक फाया बनाकर उसपर इस दवा को लगाक

र इस फाये को फोड़े पर लगादे जब उसमें चीक हुई दीखे तो नश्तर करा निकाल देवे जब फोड़ा लाल होजाय और उसमें से दुर्गंधि न आवे तब इस दवा को बंद करे और ये मल्हम लगाना सुरू करे॥

मल्हम की विधि

गुलाब के फूलों का तेल गरम करके उसमें रतनजोत २ तोले डाले जब उस का रूप्पर रंग कबूतर के रुधिर के समान होजावे तब उसको छानले फिर उसमें मोम २ तोले नीला थोथा २ रत्ती मिलावे और इसमें एक तोले जैतून का तेल मिलाकर रख छोड़े और उस घाव पर लगावे और इस रोग वाले मनुष्य को धोवा मूंग की दाल और रोटी खिलाना चाहिये फिर एक सेर पानी को औटावे जब आधा पानी जलजावे तब ठंडा करके रख छोड़े फिर प्यास लगे जब इसी पानी को पीवे कच्चा पानी न पीवे॥

कान की लो के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा कान की लो के नीचे होता है और यह फोड़ा भी पहिले मालूम नहीं होता केवल सूजन की गांठसी होती है पीछे पकफर फोड़ा होजाता है इस फोड़े का निशान आगे लिखी तसवीर में समझलेना इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार करनी चाहिये कि पहिले इसपर सीद वा लगावे जिससमय ये फोड़ा नरम होजावे क्योंकि जो इस कच्चे फोड़े में चीरा लगाया जावे तो अपयश होता है अर्थात् रोग बढ़जाता है इस लिये चार दिन की देरी होजाय

तो कुछ डर नहीं परंतु पके पर चीरा देने से रोग की बहुत काल
शीघ्र शांति होती है और पकने में दवा लगावे॥

दवा

सहतूत के पत्ते २ तोले नीम के पत्ते २ तोले सफेद प्याज २
तोले सांभर नोन ६ मासे इन सब को महीन पीस गरम कर
के लगावे जो इस दवा के लगाने से फूट जाय तो बहुत
अच्छा है नहीं तो इसको नश्तर से चीरा देवे अथवा
जैसा समय पर उचित समझे वैसा करें और ये मल्हम
लगावें॥

मल्हम

सरसों का तेल सात तोले लेकर इसको आंच पर गरम-



करे फिर इस्में पीला मोम एक तोले खपरिया ॰ तोले उड़द का आटा दो तोले इन सब को उस तेल में मिलाकर खूब गड्ड और ठंडे करिके फोड़े पर लगावे और जो इस मल्हम से आराम न हो तो वह मल्हम लगावे कि जिस्में रसलजोति मिली है और इस पुस्तक के ३१ के सफे में वर्णन कर आये हैं और जब मांस बराबर हो जावे तब ये काली मल्हम लगावे॥

कालीमल्हमकीविधि:

कड़वा तेल १० तोले सिंदूर ४ तोले इन दोनों को कढ़ाई में गेर कर आंच पर पकावे और नीम के घोटे से घोटे जब इसका तार बंधने लगे तब उतार कर ठंडा कर रख छोड़े फिर समय पर लगावे और फोड़े में चीरा दे उस वक्त चोड़ा चीरा देवे क्योंकि कम चीरा देने से इस्में चीरा रह जाता है इसवास्ते चोड़ा चीरा देना अच्छा होता है

नेत्रकेफोड़ेकायत्न

एक फोड़ा आंख के कोने में होता है और यह आपही फूट जाता है इस फोड़े का निसान इस तसवीर में समझ लेना॥



इस फोडे की चिकित्सा यह है कि पहिलें तो वह मल्हम लगा
वै जिस में तेलिया थोथा और जंगाल पड़ा है जब इस का मवा
दा निकल जावे तब यह मल्हम लगावै॥

मल्हम की विधि॥

ऊंट के दाहने घुटने की हड्डी २ तोले घुटने जला कर निका
ल डाले और मोम सफेद ६ माशे सिंदूर ४ माशे मिलाक
र खूब रगड़े और लगावै और नाक में ये दवा सुंघावे॥

सूंघने की दवा

नकछिकनी एक तोले सूखा नमक ६ माशे काली मि
र्च ३ माशे सब को पीस कर सुंघावे क्योंकि माद्दा ऊपर की
ओर झुक जायगा तो शीघ्र आराम होगा किस वास्ते कि
यह स्थान नासूर का है और जो इस दवा से आराम न हो
तो ऊंट के दाहिने घुटने की हड्डी बासी पानी में घिस कर
उस की बत्ती रक्खे और उस में का फाया बना कर रक्खे क्यों
कि यह चिकित्सा नासूर की है और यह फोडा भी नासूर
ही के भेदों में से है दूसरे उपाय से कम आराम होता है

नेत्रों की बाफनी का यत्न

एक रोग पलकों में ऐसा होता है कि यह तमाम पलकों
के बालों को उड़ा देता है और पलक लाल पड़ जाते हैं
इस का इलाज इस प्रकार से करै॥

दवा

तिलों का तेल पौने छै छटांक लेकर उसे इमरतबान में
करै और उस में गुलाब के फूल ४ तोले ताजा मिलाकर-

४० दिनतक धूपमें रक्खे और जो मस्से फूल होयतो बोकेर पनीमें औटावे जब आधा पानी रहे तब छानलेवे फिर उस मेतिलका तेल डालकर औटावे जब पानी जलजाय और तेल मात्र रहिजाय तब ठंडा करिके सीसी में भरर क्खे इसको हकीम लोग गुलरोगन बोलते हैं और अक सर बना बनाया अतारोंकी दुकान पर मिलता है ऐसा गु लरोगन दो मासे मुर्गीके अंडे की सफेदी दो मासे कुल फाके पत्ते दो मासे इन सबको मिलाकर पलकों पर लेप करै

दवादूसरी

बादामकी मींगी स्त्री के दूधमें घिसकर लगाया करै अथवा अजमोद को मुर्गी के अंडेकी सफेदीमें घिसक रलगाया करै २ अथवा धतूरे के पत्तोंका अर्क और भांगरे के पत्तोंका अर्क इन दोनोंको मिलाकर इस में सफेद वा कपड़ा भिजोकर सुखाले और गौके घीमें इस कपड़े की बत्ती बनाकर जलावे और मिट्टी के बरतन में उसका का जल पाडकर नित्य प्रति लगाने से सब पलक ठीक अप नी असली सूरत पर आजावेंगे॥

और दूसरा रोग यह होताहै कि नेत्र की ऊपर की वा पलीमें खपटासा जमजाताहै इस रोगके होनेसे पल क भारी होजाते हैं और भेंडे आदमी की तरह दीखने लग ताहै ऐसे रोग की यह चिकित्सा करै कि इसको आंखों में सलाई का फेरना बहुत गुण करता है॥

॥२॥

नेत्रकेनासूरकायत्न

एक फोड़ा आंखके कोनेमें जिसजगहसे गीड़ निकलती
है उस मुकाम पर होता है और परीक्षा इस फोड़े की यह
है कि पहिलें तो इसकी रगत सुर्ख होती है फिर इसका मु
ख सफेद होजाता है फिर पककर घाव होजाता है फिर
घावके होनेपर नेत्रोंको बड़ा दुःख दाई होता है इसको
पहिले हकीमोंने नासूर वर्णन कियाहै और इस फोड़े
में और पहिले आंखके फोड़े में जो वर्णन पहिले कर आ
ये हैं इतनाही भेदहै कि इसका मुख सफेद होता है और
पहिले फोड़ेका मुख लाल होता है इस रोगका निसान
नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना॥



औरये फोड़ा कभीतो बहने लगता है और कभी फिर भर
आता है इसकी चिकित्सा यह है॥

इलाज

अलसी और मेथी का लुआब निकाल कर आंखों में टप काने से ये रोग जाता है १ अथवा मुर्गी के अंडे की जर्दी और केशर इन दोनों को पीस कर घाव पर लगाना॥ अथवा अफीम केशर इन दोनों को पीस कर नेत्रों के ऊपर लगाना॥ और जो ये रोग बहुत ही दुष देने लगे तो कुत्ते की जीव जला कर उसे मनुष्य की लार में घिस कर नेत्रों में लगाने से नासूर बहुत जलदी अच्छा होता है॥ और पहिले जो आंख के कोने में फोड़ा का इलाज हम लिख आये हैं वे भी इसको फायदा करते हैं अथवा एलुआ · लोवान · अनार के फूल · सोहन मारवी · दम्मुल अखवेन · फिटकरी ये सब दवा तीन तीन माशे ले और इनको महीन पीस कर गुलाब जल में मिला कर इस की लंबी गोली बनाले फिर नासूर के मुख को पोंछ कर उसमें टपकावे तो सात दिन के लगाने से बिलकुल आराम हो जायगा॥

नेत्रों के घाव का यत्न

एक फोड़ा इस प्रकार का होता है कि नेत्रों में गेहूं के आकार का एक घाव हो जाता है उसका निशान इस नसवीर में समझो इस रोग की चिकित्सा ये है

गोली

सोना माषी को गधी के दूध में आठ पहर भिगो कर छाया में सुखावे और अफीम ३॥ माशे कतीरा ३॥ माशे-



शो दरयाई २॥। माशे कुदरू गोंद २॥। माशे सफेदा २ तोले चार माशे बबूल का गोंद २४ माशे सब को कूट छान मु र्गी के अंडे की सफेदी में मिला कर गोली बनावे औ र एक गोली को पानी में घिसकर नित्य आंखों में लगा या करै तो यह घाव अच्छा होय॥

पलकों की सूजन का यत्न

एक रोग यह होता है कि नेत्रों के किनारों पर सूजन हो ती है इस की चिकित्सा यह है॥

दवा

मोम को गरम कर के लगावे १ अथवा किसमिस को ची र कर उसे गुनगुनी करि के सूजन पर लगावै २ अथवा ब ड़ी कोड़ी पानी में पीस कर पलक की सूजन पर लगावै मक्खी के सिर को काट कर सूजन पर मले तो सूजन अ च्छी होय अथवा रसौत को पानी में घिस कर पलक

की सूजन पर लगाया करै तो सूजन जाती रहै ५ प्रकट हो कि नेत्रों के रोग तो बहुत हैं इस वास्ते उन सब नेत्र रोगों के इलाज विस्तार पूर्वक इस के तीसरे भाग में लिखेंगे यहां तो केवल घाव और फोडों का इलाज लिखा ग या है॥

नाक के फोडे का यत्न

एक फोडा नाक में होता है उसको नाकडा कहते हैं इस फोडे का निशान नीचे लिखी तसवीर में सम झ लना इस रोग की चिकित्सा हकीमों ने इस प्रकार लिखी है कि पहिले यह सूघने की द वा सुंघावै॥



सुंघनीदवा

सेंधानोन चौकिया सुहागा फिटकरी कच्ची जंगालजला हुआ इन सब को बराबर ले महीन पीस कर नाक में नास देवे जब वह फोड़ा चारों तरफ से नाक की त्वचा को छोड़ देवे तो उस बुरे मांस को सुई से छेद कर निकाल डाले फिर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

गौ का घी २ तोले नीला थोथा २ माशे जंगाल दो माशे पीली राल २ माशे सफेदा कासगरी ६ माशे इन सब को महीन पीस कर उस घृत में मिला कर पानी से खूब धोके लगावे ईश्वर की कृपा से बहुत जलदी आराम होगा॥ अथवा नाक के भीतर घाव होय तो येदवा लगाना चाहिये मोम पीला १ तोले गुल रोगन २ तोले लेकर इस्में मोम को पिघलावे फिर उस्में मुरदासंग २ माशे थंग ४ मा० मिलाकर नाक में भरे तो घाव अच्छा होय अथवा बनपसा के फूल ६ मा० बीहदाने ६ मा० इन दोनों को पानी में औटावे फिर इन को मसल कर छान ले फिर इस्को दो तोले गुल रोगन में मिलावे और एक तोले सफेद मोम मिला के मल्हम बना के घाव पर लगावे॥

नाक के दूसरे घाव का यत्न

एक घाव नाक के भीतर ऐसा होता है कि उस्में से कभी तो राधि निकलती है और कभी बंद हो जाती है इस घाव के वास्ते ये दवा बहुत फायदा करती है॥

मुरगे की चर्वी और मोम दोनों को बराबर ले कर घी में पकावे जब ठंडा होजाय तब उस्में सफेद कपडे की बती बनाकर उसे नाक में रक्खे अथवा कत्था सफेद मुरगी की चर्वी इन दोनो को पीस कर नाक के भीतर लेप करे॥ अथवा मुरदा संग भेंस के सींग का बूदा मुरगे की चर्वी इन सब को गुल रोगन में पकावै जब मल्हव होजाय तब रुई की बती भिगो कर नाक में रक्खे॥

अथवा मोम कपूर ३॥ माशे शफेदा २॥। तेले गुल रोगन २६ माशे पाहिले गुल रोगन को गरम करे फिर उस्में मोम को मिलावे और सफेदा को पानी में धोकर मिलावे फिर इसे गरम कर खूब घोटे जब मल्हम के सदृश हो जाय तब रख छोडे फिर उस घाव को देखे जो घाव नाक में बहुत भीतरा होवे तौ इस्को बती बना कर नाक में रक्खे और जो घाव पास होतो वैसे हीं लगादें इन घावों का निसान नीचे लिखी नसवीर में समझ लेना चाहिये॥



नकसीरकीचिकित्सा

औरजोनाकसेरुधिरबहाकरताहै उसेनकसीरकहतेहैं येदोप्रकारकीहोतीहै एकतोबोहरानसे दूसरी खून की गरमीसे जो नकसीरबहुरानके कारणसे होती उस्के लक्षणयेहैं कि चौथे सातवें नवें ग्यारवें और चौदमे दिनगरमीकेदिनोंमें उत्पन्नहोतीहै उसे वंदन करें क्यों कि इस के वंद करने सेजानका भय है औरजो बोहरान के कारण से नहोती कुदरू गोंद से वंद करदें॥

विधि

कुदरूगोंद कोम्हीन पीसकरनासलेवे॥ अथवाधनियेकेसीरमें कुदरू गोंदको पीस कर मिलावे और धनियेकेसीरमें मिला कर नाकमें डाले २ अथवा इस्कीवती बनाकर नाकमें डाले॥ अथवा जूफा अफीम कुदरू गोंद· काही· मसूर· अनार के फूल· बवूलकी पतियोंका सत· कपूर इनसब को पीसकर ललाटमें तथा कनपटी परलेप करै॥इति॥

और दूसी नकसीररोगसी होती है कि उस्कारवूनवंदनहीं होता उस रोगमें मनुष्य मृत्यु के समीपपहुंचजाता है· जराह को चाहिये कि इसरोगवाले मनुष्यकी सेरे रो नस की और बासलीक नस की फस्त खोले ये लगावे॥

दवा

मुंडी ६ माशे खुरवा धनियां ६ माशे· गाजवां ४ माशे सफेद चंदन ४ माशे इन सब को रात्रि के समय जल में भिगोदे

मेंभिगोवे और सवेरेही मल छानकर उसमें अनार का शर्बत मिलाकर पीवे और नाक ये यह दवा ईसूंघे॥

नुसखा

खारे के अंडे की भस्म अंडे के छिलके की भस्म जंगाल ज महुआ इन सब को पीस कर सुंघावे॥ और जो इससे बंद नहीं तो यह नास दे॥

दवा

जहर मोहरा खताई वंशलोचन सफेद कत्था बड़ी इलाय ची के बीज सेलखड़ी इन सब को समान ले पीस कर सुंघा वे और माथे पर तथा कनपटी पर ये दवा लगावे॥

दवा

बबूल की फली १ तोले बबूल के पते १ तो हरी महदी १ तो खरे आमले १ तो सफेद चंदन १ तो इन सब को पीस क र लगावे जो इस्से भी न बंद हो तो यह लगावे॥

दवा

नाज के बीज सफेद चंदन एक एक तोले कपूर ६ मा इनको महीन पीस हरे धनिये के अर्क में मिलाकर लेप करै ये चि कित्सा याद रखने योग्य है॥

पीनस का यत्न

और एक रोग नाक में ये होता है और उसे पीनस कहते हैं ये उपदंस रोग से संबंध रखता है जो रोग उपदंश को प्रकट न करे और वो कहे कि मुझे उपदंश नहीं हुआ तो कभी विश्वास न करे क्यों कि उपदंश की नासी बापदादे से भी

हुआ करती है क्योंकि बहुत से हकीमोंने और डाक्टरोंने लिखा है और कोई २ कहते हैं कि पीनस गरम न जलेमें भी होती है और अपनी आंखों से भी देखा है सूरत उस्की यह है कि पहिले तो सुगंध और दुर्गंधि कुछ नहीं आती जाती फिर मस्तक और ललाट में पीड़ा हुआ करती है और वाणी में भी कुछ विक्षेप होजाता है और उस्की चिकित्सा यही है उस रोगी को जुलाब देवे और फस्त खोले और वमन करावे और ये दवा सुंघावै॥

दवा

पालास पापड़ा· कंजा की मींगी· लाल फिटकरी· नकछिकनी स्यखातमारव· इन सब को बराबर ले पीस छान कर सुंघावे जो छींकें बहुत आवें तो शीघ्र आराम होगा॥ नहीं तो नाक के बीच की हड्डी जाती रहती है उस्के लिये देवदारू का तेल और नारवीन का तेल अंग्रेजी बहुत गुणदायक होता है अथवा कद्दू का तेल वा काहू का तेल वा मीठे बीजों का तेल गुण करता है और जो सामर्थ्य होतो चोव चीनी का या उस्की माजून का सेवन करे अंत को हड्डी बैठकर नाक बैठ जाती है और वाणी बदल जाती है - ऐसी दवाओं से घाव अच्छा होजाता है परंतु रूप तो बिगड़ होजाता है और जो रोग उपदंश के कारण से होवे तो उस्की चिकित्सा यह करै कि पहिले तो जमाल गोटे का जुलाब देवे फिर वे गोली खिलावे जो उपदंश की चिकित्सा में लिखी है और यह गोली देवे॥

गोली

कालीमिर्च · पीपल · सूखे आमले एक एक तोले ले और सब को कूट छानकर सात वर्ष के पुराने गुड में मिला कर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और प्रात काल के समय एक गोली मलाई में लपेट कर खिलावे और ऊपर से दही का तोड पिलावै और दाल मूंग की रोटी खवावे और ओटाहुआ जल पिलावै इस गोली के सेवन करने से नाक के सब रोग अच्छे होंय॥

नाक की नोक के फोडे का यत्न

एक फोडा नाक की नोक पर होता है और रंगत उसकी काली होती है और वो जोंक के सदृश बढ जाता है परंतु काटना उसका कठिन है क्यों कि इसका रुधिर बंद नहीं होता है ॥ और ये रोग मैंने एक बार एक मनुष्य के देखा है और उसकी चिकित्सा को देषी और अपने हाथ से करी परंतु ठीक नहीं बनी अंत को मैंने और हमारे मित्र डाक्टर बाबू जमना परशाद साहब ने उसके कुटुंब के लोगों से खून क्षमा करा लिया और फिर उसकी चिकित्सा बहुत प्रकार से अपनी बुद्धि माफिक करी परंतु कुछ बस नहीं चला ये बातें इस लिये वर्णन करी है कि यदि कोई सज्जन मनुष्य इस फोडे वाले मनुष्य को देषे तो एक ही बार इसकी चिकित्सा का म यत्न न करे क्यों कि मेरी बुद्धि में यह रोग असाध्य है और सब रन इसको इस न सर्वार में समझ लेना ॥

और एक फोडा मुख के भीतर काग के पास होता है ॥



उस्को रवुनाक कहन हे उस्की चिकित्सा यह हे कि पहिले सरो नसकी फस्त खोले फिर ये जुलाब दे॥

दवा

शहतूत के पत्ते ४नग कोकनार ४ नग इसपंद २तोला मक्खरसावत २तोले इन सव को दो सेर पानी में औटा वे आधा पानी रहे तव इस्के कुल्ले करै पीछे यह दवा दे॥

दवा

गेहूं की भुसी ६मा॰ नारवूला १तो॰ खतमी के फूल एक तोले॰ तूंभर १तो॰ सरवाजूफा १तो॰ सेंधानोन ६ मासे इन सव को तीन सेर पानी में औटावै जव एक सेर पानी रहे तव कुल्ले करै॥

और जो इस दवाई करने से फोड़ा फूट जावे तो उत्तम है नहीं तो इस दवा के कुल्ले करै

दवा

अनार की छाल ६मासे॰ मूली के वीज छै मासे स

सफ़ेद जाज छै माशे नौसादर दो माशे इन सब को आ धसेर तेज सिर के में औटा कर कुल्ले करावे जब फो डा फूट जावे तो ध्यान रक्खे कि घाव है या मिल गया जो मिल जाय तो ये दवा करे॥

दवा

कोकनार २नग· गेहूं की भुसी ६माशे खतमी के फूल ६माशे· गुलनार ६मा· इन सब को पानी में औटा कर कुल्ले करावे जो घाव होय तो ये दवा करे

दवा

खतमी १तो· खतमी के फूल १तो· बनपसा के फूल १तो लिसोडे १तो· मेथी के बीज १तो· इन सब को जो कुट करके सेर भर नदी के जल में औटावे पहिले भिगो कर फिर काले तिलों का तेल मिला कर औटा वे जब पानी जल जाय और तेल मात्र रहि जाय तब छान कर उस घाव पर लगाया करे॥

एक फोडा मुख में जीभ के नीचे होता है और उस की सूरत छाले कीसी होती है और एक फोडा कोने की ओर झुका हुआ होता है और उस्के कारण करिके बाहर की ओर एक गुठली सी हो जाती है उस गुठली पर यह लेप लगावे॥

निर्विसी हरी मकोय इन दोनो को पीस कर गरम करके लगावे॥ और जो छाला सा होता है उस्की चिकित्सा बहहै॥

दवा

वायविडंग· माईछोटी· माईबडी· माजूफल हरा· सेंधनो न· बराबर ले पानी में ओटा कें कुल्ला करे और फूटजा वे तव ये दवा करे

दवा

धनियां सूखा· कत्था सफेद· माजूफल· इनको बराबर ले महीन पीस कर लगावे और इन्हीं को जल में ओटा कर कुल्ले करे और उसमें बुरा मांस उत्पन्न होजाता है और सवरी जीभ पर छा जाता है तो उसको बीस बाईस वर्ष के उपदंश का मवाद जानो इस की दवा बहुत क ठिन है और बहुत से फोडे इसी के कारण करि के हो ते हैं इसी सवव से कोई मनुष्य रोग की चिकित्सा क री जाती है कि उस बुरे मांस को जीभ परसे काट डाले तव उसमें से रुधिर निकलने को ये दवा करे॥

दवा

वनात की भस्म· सीप की चूना सरवूका कोयला· से लखली· रूमी मस्तगी· खरगोश की खाल· गोमा का रस छुयांटके पत्तों का रस· इनको पीस कर लगावे जव रुधिर वंद हो जाय तव जुलाव देवे और प्रकृति के अनुसार दवाई खिलावे घाव पर ये लगावे

दवा

फिटकरी कच्ची ४मा· नीलाथोथा भुना· ४मा शे गौका घृत ४ तोले इन दोनो दवाओं को पीस कर घी में मिला वे और जल में खूव धो कर लगावे और जो

रोगी माने तो यही चिकित्सा करे औरजो नमाने तो कभी उस्की चिकित्सा न करे जैसा सुना सिवहो करे और दूसरा फोड़ा जो मुख के कोने की ओर फोमु का हुआ होता है और बाहर की ओरउस्की गुठली होती है उस गुठली परतो यह लेप करे जो वर्णन करचुके हैं और भीतर ये दवा लगावे॥

दवा

रूमी मस्तंगी सफेद कत्था माजूफल भुना वंशलोचन गाजवांकी भस्म ये सब दवा चार २ मा॰ इन को महीन पीस कर लगावे और मुंग की धोवा दाल और बिना चुपड़ी गेंहूं की रोटी खाय॥

होठके फोड़े का यत्न

एक फुनसी होठों पर होती है उस पर मुद्द करने वाला मल्हम लगावे जिससे मवाद शीघ्र ही निकल जावे और केले के पते घत में चिकने कर गले में बांधे कि सूजन को गुण करता है और इस्की चिकित्सा शीघ्र करे क्योंकि ये फोड़ा पेट मे उतर जाता है और उस्के बाहर फूटने का यह मल्हम है॥

दवा

बिरोजा २तो॰ रेवतचीनी २मा॰ अंजरूत ४मा॰ इनको पीस बिरोजे में मिला जलसे खूब धोवे कि मल्हम होजाय तब लगावे जब फूटजाय और मवाद निकल जावे तब ये लगावे॥

दवा

रसोत २मा· तगरकी लकडी १मा· इन सबको पीसकर गौके घीमें मिलाये और ओरजो कढाई में डाल कर खूब घोटे तो बहुत उत्तम है इस दवा के दस पांच बार लगाने से आराम हो जाय॥

डाढके फोडेका यत्न

एक फोडा दाढ में होता है उसकी दवाई यह है

दवा

नीमके पते बकायन के पते· संभालू के पते· नर्मा के- पते इन चारों को बराबर लेकर जलमें औटावे और बफा रादे और उसी को बांधे और उसी के जलसे कुल्हे करे औरजो भीतर ही फूट जावे तो उत्तम है और बाहर फूटे तो बिनादांत के उखाडे आराम न होगा औरजो यह फोडा बाहर हुआहो और बाहर ही फूटे तो उसको चीर- डाले और चार फांक करे और नीम के पते तथा नोन बांधे औरजो मल्हम ऊपर वर्णन किये गयेहैं उनमें से कोई सी मल्हम लगावे॥

अथवा

काले तिलों का तेल पांचतोले मोम सफेद एक तोले लोहबान एक तोले मुरदा संग पांच माशे नीला थोथा एक माशे पहिलें तेल को गरम करे फिर मोम डालकर पिघलावे पीछें सब दवाई यों को पीस कर मिलावै- जब पकजावे तब खूबगाढे ठंढाकर काम में लावे औरजो भीतर फूटेतो वह कुल्ले करावेजो रवुनाकरोग में वर्णन कर

आये हैं और जो घाव भीतर से शुद्ध हो जाय तो तेल भर दें जो जो ऊपर कह आये हैं और यहां भी लिखते हैं कि वह तेल नारवीन या जल पाई का तेल है और जो मुख के भीतर छोटे २ छाले होंय तो बरफ के पानी से कुल्ले करावै तो निश्चै आराम हो

ठोडी के फोडे का यत्न

एक फोडा ठोडी पर होता है और उस के पास लाल सूजन होती है इस फोडे का निसान आगे की नसबीर में लिखा है

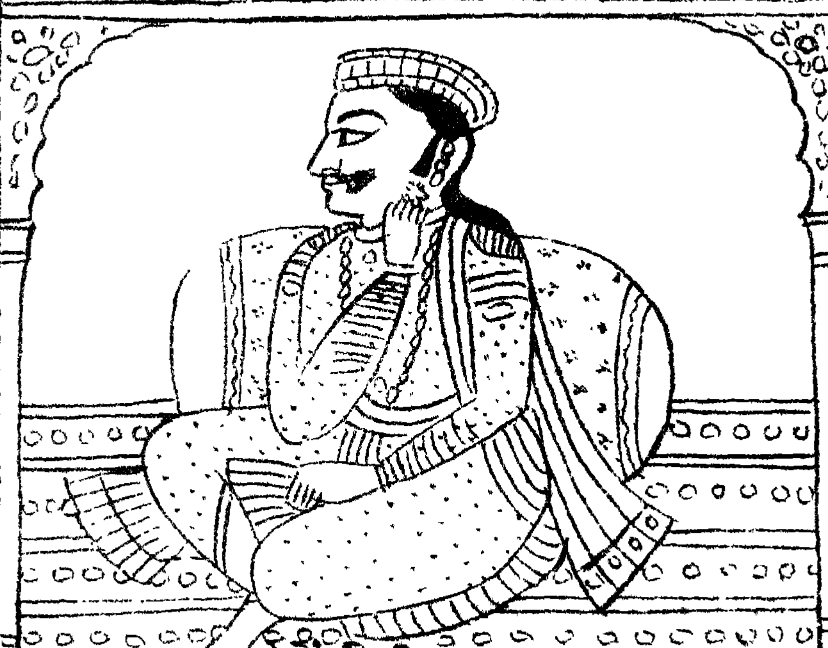
इलाज

इस फोडे पर जंगाली मल्हम लगाना चाहिये और जंगाली मल्हम वह है जिस्में रेवत चीनी और विरोजा मिला है जब मवाद निकल जावे तब इयाह मल्हम लगावे और जो उस के नीचे गुठली हो जाय तो उस पर नीम के पत्ते और नोन पीस कर बांधे जब वो पक जावे तब वे मल्हम लगावें जो अभी वर्णन किये हैं ॥



कानके फोडेका यत्न

एक छोटासा फोडा कानके भीतर होता है उस्की सूरत येहै फिटकरी सफेद तथा समुद्र फेन पीसकर कानमें डाले- और ऊपर से कागजी नीबू का रस डाल देवे जब मवाद बंद होजाय और पीडा शांति होजाय तौ मूलीके पत्ते मीठे तेल में जलाकर छानले और उस तेल को कानमें डाले तौ आराम हो और इस का निसान इस तसवीर में देषो॥



दांतोंकी पीडाकायत्न

जो दांतों में पीडा हो अथवा दांत हिलते होंय या दांतों से रुधिर बहता हो तथा दांतो से दुर्गंधि आती हो तौ ये दवा करे॥

दवा

माजूसफेद तीनमाशे अनारका छिलका तीनमाशे इन दोनों को एक सेर पानी में औटा कर कुल्ले करावे

औरजमीरीके पत्तदांतोंपरमले अथवाहरा धनिया ने जासिरकेमें पीसकरमले अथवानाड़केवृक्षका छिल का खजूरका छिलका कचनारकी छाल महुएकी छाल इनसबको एक२तोले लेकरजलावे अथवा इनसबकी राख एक२तोलेले औररूमीमस्तगीचारमाशे सफेदमूंगे कीजड़छेमाशे माजूफल भुनाहुआछे माशे मायासफेद कत्थाछेमाशे सोनामाखी तीनमाशे इनसबको पीस कर मिस्सी के सदृश दांतो पर मले॥

अथवा

सफेद कत्था एक तोले फिटकरी सफेद छेमाशे माजू-फल छे इन तीनों को जौकुट करके एक सेर जल में औटा वै जब आधा पानी जलजाय तब कुल्ले करावे॥ अथवा लोह चूरा ८ तोले हरा माजूफल ४ तो· लीला थोथा भुना हुआ १ तोले सफेद कत्था २ तोले छोटी इलायची के दा ने ६ माशे इनसबको महीन पीसकर मिस्सीकी तरह दां तों परमले अथवा

लोह चूरा ।सेर विना छेदके माजूफल ।= पाव छोटी इला यचीछिलके समेत एक तोले लीला थोथा १तोले लाल कत्था २तो· रूमीमस्तगी ४मा· हीराकसीस ४मा· सोना माखी ४ माशे सबको महीन पीस कर दांतो पर मले अथवा तांबे का बुरादा १छटांक अनारका छिलका ।- माजूफल २॥ तो· फि टकरी १तो· इन सबको महीन पीसकर दांतों पर मले अथवा रूमी मस्तगी माजूफल- हीराकसीस मई

वड़ी हड़ई का छिलका· फिटकरी भुनी· नीला थोथा भुना मौलसिरी के पेड़ की छाल· सब को बराबर लेके महीन पीस कर दांतो के मले और मुख को नीचा करके लार टपकावे फिर पान खाकर लार को बंद करे

अथवा

कपूर को गुलाब जल में और सिरके में मिला कर गौ के दूध में मिला कर कुल्ले करे॥

अथवा

फिटकरी भुनी एक भाग· सहद दो भाग· सिरका एक भाग· इन तीनों को आंच पर पकावे जब गाढा होजावे तब दांतो पर मले

अथवा

सुपारी की राख· कत्था सफेद· काली मिर्च· रूमी मस्तगी· सेंधानोन इन सब को बराबर ले महीन पीस दांतों के मले॥

अथवा

माजूफल· कुलफा के बीज· इन को पानी में पीस कर कुल्ला करे तो मसूड़ों से खून बहना बंद होय॥

अथवा

बारह सींगे के सींग की भस्म और सेंधा नोन महीन पीस कर मले तो मसूड़ों से खून निकलना बंद होय अथवा कुदरू गोंद मस्तगी· इन को महीन पीस मसूड़ों के घाव पर लगाना॥

गंजेका इलाज

जो सिर में गंज होतो काली मिर्च ६मा· कलोंजी १तो· दो नो को गोके घीमें जलावे और घोटे जब मल्हम के सदृ श होजाय तब पानी में धोलेफिर निताल ले पहिले इस केजल से सिरको धोवे फिर इस इस मल्हम को लगा वे॥

अथवा

कालीमिर्च छे माशे कवेला हरा छे माशे महदी के पते हरे छे माशे· सूखे आमले छे माशे नीम के पते छे माशे· नीला थोथा छे मा· सरसोंका तेल ५तो· ८ सब दवाओंको तेलमें जलाकर घोट कर ठंडा करलगावे

अथवा

हालम दो तोले लेकर जलावे जबजल कर राख हो जाय तब पीस कर कडवे तेल में मिलावे फिर इ सको दो पहर तक धूप में धर रखे फिर इस को- लगावे तो गंज मिटजाय॥

हाल

जानना चाहिये कि सिर के फोडों के भेद तो बहुत हैं जो सबों को वर्णन करता तो ग्रंथ बहुत बढ जाता इस लिये संक्षेप से लिषा है परं तु जो फोडे सिरमें होते हैं उन सबों का इलाजइ न्ही मल्हमों से करना चाहिये क्योंकि ये सब मल्हम बहुत ही गुण दायक हैं॥

कंठके फोडे का यत्न

एक फोड़ा कंठ में होता है उसे कंठमाला भी कहते हैं इसकी सूरत पहिलें ऐसी होती है कि बाईं ओर वा दाहिने ओर गले में गुठली सी हो जाती हैं फिर बढ़ कर बड़ी गांठ हो जाती है इस फोड़े का निशान इस तसवीर में समझ लेना ॥



इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि पहिलें तो बैठाने वाली दवाई लगाना चाहिये क्योंकि जो ये बैठ जावे तो बहुत ही अच्छा है। बैठाने की दवा येहै॥

खूब कला पांच तोले और जान कड़वा एक तोले कुन्दरू गोंद एक तोले इन सब को हरी काशनी के रस में पीस कर लगावे और उसके पते या मकोय के पते गरम करके बांधे जब गुठलीयां न बैठें तो फस्त खोले और वमन करावे पीछे ये दवा लगावे

कि उक्त दवाईयों को सोये के अर्क में पीस कर लगा वे और जो वर्णन करी हुई दवा ओंसे गुठलियां न बै ठे तो यह लेप करे॥

लेप

गुलाब के फूल गेरू गुलनार सखी मकोय दम्मुल अखवेन मूरिद के बीज· इन सब दवाओंको एक एक तोला ले महीन पीस मुरगी के अंडे की सफेदी में मिला कर गोलियां बना कर छाया में सुखा वे फि र एक गोली अंगूर के सिरके में पीस कर लगावे औ र जो इस्के लगाने से भी न बैठे और पक जावे तो ये दवा करे॥

अथवा

कडवा तेल ।=आधपाव और एक गिरगट रवि वार वा मंगल वार को मार आक के पते नग ७ मिलाये नग ७ इन सब को तेल में जला कर खूब घोटे और ठंडा क रके लगावे और कदाचित इस घाव के आस पास-स्याही आजाय और घाव में से पानी निकल्ता हो तो बहुत बुरा है॥

और जो स्याही न हो और गांठ फूटी भी न हो तो उ सके बठाने को और दवा लिपते हैं॥

छुहारे की गुठली· इमली के चीयें· महदी के पते इनको पीस गुनगुना पतला लेप करे अथवा मूसे को मीठे तेल में पका उस तेल को लगावे॥

अथवा दो मुहडे के सांप को मार कर जमीन में गा-

दे जब उस का मास गल जावे तब हड्डी को डेरे में बांध ग लेपर बांधे॥ अथवा वृदार चमड़ा बांधना अच्छा है॥

धुकधुकी का यत्न

एक घाव कंठ में होता है उस्को लोकीक में धुकधुकी कहते हैं उसमें से दुर्गंधि आया करती है और कंठ से लेकर छाती के नीचे तक घाव होता है जो घाव में गढ़े हों तो ये इलाज न करे क्योंकि महान वैद्यों ने लिखा है कि यह फोड़ा अच्छा काम होता है और जो दवा करनी अवश्य होतो ये करे और इस घाव का निशान इलनसवीर में लिखा है॥

दवा

समुद्र फेन २० तोले को पास छान कर एक तोले नित्य फकावे और उस्के ऊपर जामुन के पते पानी में पीस कर पिलावे और उस घाव पर ये दवा—



मनुष्य के सिर की हड्डी बासी जल में पीस लगावे॥

अथवा

सूअर की विष्ठा कन्या के मूत्र में पीस कर लगाया करे

अथवा

एक घूंस को मार कर शुद्ध करे और छछूंदर मार कर शुद्ध करे फिर इन को आध सेर कडवे तेल में जलावे फिर इस तेल को छान कर लगावे॥

कखलाई का यत्न

एक फोड़ा बगल में होता है उसे कखलाई कहते हैं बगल में एक या कई गुठली सी होती हैं और एक उन में से पक जाता है जब तक वह अच्छी नहीं होने पाती तब तक दूसरी पक जाती है इसी प्रकार से कई बार करिके छै सात हो जाती हैं और एक लक्षण ये हैं कि एक गुठली सी होकर पक जाती है फिर वह पक कर शीघ्र ही फूट जाती है तो अच्छी है नहीं तो बिना चीरा देने के अच्छी नहीं होती जो रोगी बलवान होतो फोड़े की वो सूरत होती है जो ऊपर कहि आये हैं और जो बल हीन होतो ये सूरत होती है कि पहिले बगल में सूजन सी होती है और बहुत सखती होती है वह बहुत दिनों में पकती है देर होने के कारण कोई नस्तर या तिजाब लगाते हैं तो रुधिर निकलता है घस यही हानि है जब नीम के पत्ते बांध चुकते हैं तो मल्हम लगाने के पीछे पानी निकला करता है सो इसी प्रकार से रोग बढ़ जाता है

इस फोडे का निशान नीचे की तसवीर में समझ लेना इस फोडे का यत्न यह है कि पहिलें वे पत्तियां बांधे जो हाद के फोड़े के वास्तें लिख आये हैं जब नरम हो जाय तब यो मल्हम लगावे जिस्में बान पाव का यह लिखा है अपना ये दवा लगावे॥



गेहूं का मैदा· सहत· मुरगी के अंडे की जरदी तीनों को मिलाकर लगावे इस दवा के लगाने से फूट जावेगा और जो नरम होतो चीर देवे फिर नीम के पत्ते मेंन सहत बांधे और ये मल्हम लगावे।

नीला थोथा ३ मा· कोकनार जला हुआ १ तो· इन दोनों को पीस थोडा सहत मिला कर रगडे जब मल्हम के समान हो जाय तब लगावे॥

अथवा

खच्चर की हड्डी और सूअर के बाल जला कर खच्चर की चरवी में मिला कर खूब रगडे और लगावे॥

और घाव सूखा नहो तो सूअर की हड्डी तथा बालों की भस्म बुरके तो घाव सूख जाय॥

और जर्राह को चाहिये कि घाव पर निगाह रक्खे कि घाव पानी न देवे जो घाव में से पानी निकलता हो तो उस्के कारण को जाने कि किसी कारण करिके उस में से पानी निकलता है मनुष्य की प्रकृति चार प्रकार की होती है पानी तो रतूबत के कारण से निकलता है और रुधिर पित्त के कारण से और पीली पीव कफ के कारण से और असल पीव खुस्की के कारण से निकला करती है और उचित है कि जो मल्हम योग समझे सो लगाया करे॥

छाती के फोडे का यत्न

एक फोडा छाती में तीन चार अंगुल होता है उस्की सूरत यह है कि प्रथम तो दर्दोडासा होता है फिर बढ़ जाता है फिर अपना विकार बहुत फैला देता है इस फोडे को बैठाना अच्छा नहीं क्योंकि दाहिनी ओर को होता है तो इस्में बड़ा भय रहता है कि फोडा पेट में न उतर जावे और जो बाई ओर होवे तो कुछ डर नहीं और जो आदि में बैठि जाय तोभी कुछ डर नहीं॥

और पक जावे तो चीर डाले और नीम के पत्ते बांधे फिर उस्के घाव पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

सफेदा ल २ तोले नीला थोथा १ रत्ती विलायती साबन

एक माशे इन सबको पीसकर गौ के पाव तोले घी में मिलावे फिर इसको पानी से धोकर घाव पर लगावे इसी सूरत का फोडा बालक के हो वा तरुण के तो शुद्ध मर्मो से चिकित्सा करे और इस फोड़े का पीव सफेद पीलापन लिये निकले तो शीघ्र आराम हो और जो पीव पुलाबी हो तो इसी मल्हम में कासपारी सफेदा चार माशे मिलावे और घाव पर लगावे तो घाव अच्छा होय ॥



स्त्री की छाती के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा स्त्री की चूंची पर होता है उसकी चिकित्सा - भी इसी प्रकार हो सकती है जैसा कि ऊपर छाती के फोड़े में अभी लिख चुके हैं और उस फोड़े पर पहिले कीमल्हम लगावे जिसमें ऐट फौजदारी लिखी है अथवा जो मल्हम लगावे जिसमें पान घाव का यहां लिखा है इन

मल्हमों के लगाने से फोड़ा फूट जाता है अथवा जो म
ल्हम लगावे जिस में आगा हलदी लिखी है इनके लगा
ने से न फूटे तो चीरा देवे और जो फूटे फोड़े के घाव का
मुख ऊपर को हो और दबाने से पीव निकलती हो तो उ
सके नीचे नमल लगावे वा पुड़ी के नीचे बांधे और बालक
को दूध पिलाना बंद न करे और जो दूध पिलाने में हानि
समझे तो न पिलावे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

सुपारी अधभुनी छै माशे कत्था सफेद अधभुना छै मा
शे सिंदूर गुजराती छै माशे सफेदा कासगारी छै माशे -
गौ का घृत सात तोले पहिले घी को गरम करके उसमें
एक तोला पीला मोम पिघलावे फिर सब दवाइयों को
पीस कर मिलादे और खूब घोंट जब ठंढा हो जाय तब छै
माशे पारा मिलाकर खूब रगड़े फिर इसको लगावे तो घा
घाव शीघ्र अच्छा होय॥

और एक फोड़ा बिना दूध की चूंची में होता है उसकी
सूरत यह है कि पहिले एक फुन्सी मसूर की दाल की बरा
बर होती है और भीतर एक गुठली चने के प्रमाण होती
है वह दिन प्रति बढ़ती जाती है और वो फुन्सी अच्छी हो
जाती है और वो गुठली तरुणस्त्री के होतो एक अथवा
दो वर्ष के पीछे आम की बराबर होजाती है और जो वृद्ध
स्त्री के होय तो आठ वा माहने के पीछे आम की बराबर
हो जाती है जब गुठली इतनी बढ़ जाती है तब उसमें पीड़ा

होतीहै औरज्वरभीहोजाताहै यपाषाणकेभेदोंमेसेहै इसको फकर बेल कहतेहैं औरकाटसे भीनहीं कटती इसकीचिकित्साकरनेवालेको उचितहैकि हकीमकी सम्मतिभीलेतारहै क्योंकिदवाइयोंकीप्रकृतिकोवे लोगखूबजानतेहैं उनकीसम्मति औरअपनीसम्मति मिलीहुईरकेजोदवाईकोलोगशंकानहींरखते इसी लियेहकीमकीसम्मतिलेनाअच्छाहै कि वोप्रकृतिके अनुसारचिकित्साकरेगा पीने औरलेप करनेकी येभी विधिहैं पहिले ये बफारादेवे॥

बफारेकीदवा

संभालूकेपते· महूएकेपते· इनदोनोंकोपानीमेंऔटा करबफारादेवे औरइन्हींपत्तोंकोबांधे अथवा सोये कासाग औटाकरबांधे अथवा ये लेपकरे॥

लेपकीविधि

नाखूना एकतोला· खुब्बाजीके बीज एकतोला खतमीकेफूलएकतोला· खतमीके बीजएकतोला· अमलतासकागूदा दोतोला· बारंजान कडवा छैमाशे· बनफ्शाकेफूलछैमाशे· अकलकरा छैमाशे· अलसी छैमाशे· इन सबको पीसगरमकरकेलगावे॥ अगर इसकेलगानेसे आराम न होतो इसरोगीको जुलाब देवे तथा फस्त खोले औरजो आराम नहोतो वे दवाई लगावे किजिससे खराबलोहू औरहालउसका ऊपर कहागयाहै औरएकनुसखालेपकायहहै॥

लेपकी विधि

मुरदासंग· सोरंजान कड़वा· गेरू· मुलीम्कोय· लव बराबर ले इन सब को पानी में पीस कर लगावे और फोड़े को देखे कि कहां से नरम है उस्पर जैत के पत्ते और नीम के पत्ते और सांभर नोन पानी में पीस कर बांधे और आस पास वोह लेप लगावे जो ऊपर कह आये हैं और जो इनसे न फूटे तो नीम की छाल पानी में घिस के लगावे और जो किसी से आराम न होतो ये फाया लगावे॥

फायेकी विधि

लाल मैन फल· बबूल का गोंद· लौंग· विलायती साबुन भैंसा गूगल· सब को बराबर ले पानी में पीस कर कपड़े पर जमा कर रख छोड़े फिर समय पर फोड़े को बराबर फाया कतर कर लगावे जब फूट जाय तो जैत के पत्ते और नीम के पत्ते बांधे जब फोड़े में सख्ती न रहे तो ऊपर कहे हुए मल्हमों में से कोई तेज सा मल्हम लगावे। और जो फोड़ा के फूटने के पीछे उस्में बुरा मास उत्पन्न होजावे तो चिकित्सा न करे और जो करे तो सब वो चूंची कट वा डाले और हकीम को चाहिये कि दवा प्रकृति के अनुसार करे और वो मल्हम लगावे जिस्से घाव पानी न देवे और जो चूंची न कटी जावे वो मल्हम येहै॥

मल्हम

जमाल एक तोले· शाहत एक तोले· गिरका दो तोले· इन सब को मिला कर पकावे जब कार बंधने लगे नबंठा

करकेलगावे और घावको देखे कि घावमें रुधिर निकल
ताहै या पानी निकलता है और असाध्यका लक्षण यहहै
कि घावके चारो ओर स्याही होती है और दुर्गंधि आती है
और पीवकाली निकलती है और फफोंदीके सदृश स
फेदी होती फिर उस घाव घावकी चिकित्सा न करे क्यों
कि उस्को कभी आराम नहीं होगा और साध्यका यह ल
क्षण है कि घाव चारों ओर से लाल होता है और पीव गा
ढ़ी पीलापन लिये निकलती है जो घाव की सूरत ऐसी हो
तो निस्संदेह चिकित्सा करे परमेश्वर के अनुग्रह से नि
श्चै आराम होगा॥
एक फोड़ा छातीपर कोंडोके पास अथवा कोंडोके स्था
न पर होता है उस्को तेज मल्हमों पकाकर फोड़े अथवा
चीर डाले उस्के भी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये क्यों
कि ये फोड़ा रहजाता है॥ और जो घावमें सामान्य वर्ता ज
वे तो चिकित्सा न करे और जो दाहीन या बाहीं ओर ब
नीजावे तो इसी प्रकार से चिकित्सा करे जैसी कि ऊप
र वर्णन कर आये हैं॥
और एक फोड़ा पेटपर होता है उस्की चिकित्सा
इस प्रकार से करनी चाहिये जैसी छाती के ऊपर
के फोड़े की वर्णन कर आये हैं और वह मल्हम
लगावे जिस्में जला हुआ कांकनार लिखा है
और एक फोड़ा नाभि के ऊपर होता है उस्की
चिकित्सा वैसी करनी उचित है जैसी कि पेट के-



फोड़े की वर्णन करी है और वह मल्हम लगावे जि
स्में रसोत और तगर की लकड़ी लिखी है इनदो
नों फोडों की एकही चिकित्सा करी जाती है

और एक फोडा पेट के ऊपर होता है उस्का
चौडाव और लंबाव बहुत होता है यहां तक बढ
ना है कि तरबूज की बराबर हो जाता है इस की
चिकित्सा भी शीघ्र करनी चाहिये कि स्याही न
आने पावे और जब स्याही आजावे तो चिकित्सा
न करै क्योंकिये असाध्य है परंतु जो चिकित्सा
करनी अवश्य होतो इस प्रकार से करै और ये म
ल्हम लगावे ॥

मल्हम

नीमके पत्ते एकसेर आंबाहलदी आधपाव हलदी क
च्ची आधपाव कालेतिलों का तेल सेरभर पहिले
तेल को तांबे के बरतन में गरम करे फिर उसमें नी
मके पत्ते डाले जब नीम के पत्ते जल कर स्याह हो
जावें तव उन को निकाल कर दोनों हलदियों को
जौ कुट करिके तेल में डाले जब वोभी स्याह होने
लगे तब तेल को छान कर रक्खे और फोड़े पर
लगावे और जो इस के लगाने से कुछ आराम न
होतो वही करे जो ऊपर बर्णन किया है और सम
य पर जैसी सम्मति हो वैसा करे परंतु मेरी सम
झमें तो यह बात आती है कि इस रोग की चिकि
त्सा करनी योग्य नहीं है

और बहुत से फोड़े आगे की ओर को होवे हैं
और ये फोड़े जो कहे हैं उनकी चिकित्सा करने से
अच्छे हो जाते हैं और ये फोड़े पेट के जो कहे हैं उ
नकी चिकित्सा बहुत ही कठिन है जैसा मेरी बुद्धी
में आया वैसा तो मैंनु लिखा आगे जराह अपनी स
म्मति के अनुसार करे॥

और एक फोड़ा पेडू और जंघा के बीच में हो
ता है वहभी फंदमाला के भेदों में से है और लोकि
क में उसका नाम वद्धावरध्यान है उसकी सूरत यह है
कि पहिले एक गुल्ली सी होती है और लोग उसको उ

पदंसकेसंदेहमें छिपातेहैं यद्यपि वो बालकों कूभी हो जातीहै और जोउसको नछिपावेतो शीघ्र आराम होसक्ता है और फिर इसकी चिकित्सा कठिन पडजातीहै और इसके इलाज बहुतसे हकीमोंने अपनी अपनी किताबों में लिखेहैं अपनी बुद्धिके अनुसार अबहमभी लिषते हैं बुद्धिमानोंको चाहिये कि पहिलेंवे दवा लगावें जिससे बैठजावे बैठालनेवाली दवा येहैं

दवा

एकतोले चूनेको लेकर मुर्गीके अंडेकी सफेदी में मिला करलेपकरे॥

अथवा मनुष्य के सिर की हड्डी को पानी में घिस कर लगावे॥

अथवा ईसबगोल को पानी में पीस कर बद पर लेप करे॥

अथवा सफेद कत्था कलमीशोरा कबेला बबूल का गोंद छै छै माशे इन सबको पीस पानी में पीस गाढा गाढा लेप करे॥

और जो नहीं बैठे तो पकाने वाली दवाई लगावे-वो दवाई यह है

दवा

एक अंडे की जरदी निसवालिस सहत एक तोले गेहूं का मैदा एक तोले इनको मिलाकर लगावे॥

औरजो न फूटे तो नश्तर देवे जो नश्तर देनेसे बचाना चाहे तो नि-

कच्चे तो नीम के पत्ते और हरी मकोय और नर्मा के पत्ते औ रजैन के पत्ते और घकायन के पत्ते इन सब को पानी में औटा कर भपारा देवे और इन्हों को बांधे सात दिन तक यही करते रहें इससे खूब नरम होकर मवाद को निकल जावे फिर ये मल्हम लगावे

मल्हम

प्रथम आध पाव गौ का घृत लेकर गरम करे फिर उस्में दो तोले पीला मोम पिघलावे फिर सफेद राल सात तोले मिलावे जब खूब मिल जावे तब एक सकोरे में रख कर पानी से धोवे और चार तोले भागरे का रस मिला कर घाव पर लगावे और एक लेप यह है कि आदि में फोड़े को तहलील करता और पके हुए को फोड़ देता है और कच्चे को पका देता है॥

लेप

हालों · तज · अलसी · मेथी के बीज · ये सब एक एक तोले एलुआ कमंगरी · साबन · भैंसा गूगल · रेवतचीनी · गुलाबी सज्जी · ये सब छै छै माशे इन सब को पानी में पीस गरम कर गाढा गाढा लेप करे और ऊपर से चग ला पान गरम करके बांध देवे और इस लेप के बहुत से गुण है और जो इस लेप को चोट पर लगावे तो सज्जी न डाले किंतु सज्जी के बदले सेंधा नोन मिलावे और जो चोट से हड्डी टूट गई हो तो आंबा हल्दी और बढा कर लगावे॥

एक फोड़ा अंडकोषों के नीचे होता है उस्को भगंदर कहते हैं उस्में सजन होती है और ज्वर भी हो आता है उस्की चिकित्सा वद की चिकित्सा के अनुसार करनी योग्य है और वन्हीं पत्तियों का काथ फारा देवे और वो मल्हम लगावे जिस्में अलसी और मेथी लिखी है जब नरम हो जावे तो चीरने में देरी न करै पीछें नीम के पते और नोन बांधे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

पहिलें सात तोले गौ का घृत गरम करो फिर तोले भर सफेद मोम उस्में पिघलावे फिर गुजराती सिंदूर दो तोले सिंगरफ रूमी· सफेद जीरा· खिलखडी· काली मिर्च· कत्था सफेद सुपारी· ये सब एक एक तोले ले और तीला थोथा· एक माशे· इन सब को महीन पीस कर उसी घृत में मिलावे और आंच पर रक्खे जब खूब चासनी हो जा तो ठंडा कर के लगावे और जो इस्से आराम न हो तो वह मल्हम लगावे जिस्में वेर के पते हैं और जो रह जावे तो तेजाव लगावे जिस्में गिरगट है॥

गुदा के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा गुदा में होता है उस्को ववासीर कहते हैं वो फोड़ा कई भेद का होता है एक भेद उस्का यह है कि घाव हो और उसे आराम न हो वह फिर पकेगा और फटेगा और इसी प्रकार से रहैगा और जो वहुत से घाव हों तो सब को अच्छा करदे और एक

क घावको रहने दे जिस्से मवाद निकलता रहे इस फोड़े को हकीम और डाक्टर असाध्य कहते हैं और इसी से इस पर ये मल्हम लगाना सुना सिद्ध है॥

मल्हम

काले तिलों का तेल छै मासे कच्चा मोम चार मासे सूअर की चरबी दो तोले राल विलायती एक तोले इन सब की मल्हम बनाले और मूत्र से धोकर लगावे॥ अथवा सांप का सिर नग १ छछूंदर नग १ सूअर की विष्ठा सात तोले-सूअर की चरबी दो तोले हुक्का नारियल पुराना २ काले तिलों का तेल एक सेर इन सब दवाईयों को तेल में जला कर तेल को छान कर लगावे जब इस ओर से मल और अपाना वायु निकलने लगे तो चिकित्सा न करे इस घाव में से पीव नहीं निकलती है किंतु पानी निकला करता है और जर्राह को उचित है कि कोई बात ऐसी निकाले कि चिकित्सा करनी छूट जावे

गर्दन के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा दोनों कंधों के बीच में होता है और बड़े बड़े ग्रंथों में उस्को खंजर वेग लिखा है और सुना भी है और सूरत उस्की यह है कि पहिले सूजन के साथ सख्ती होती है जब वह फूटता है तो बुरा मांस हो जाता है उसकी दोनों ओर से पुंछ एक जंतु के सदृश होता है और उस्को न्योला कहते हैं और ये रोग रोगी के कलेजे को खाता है परंतु निश्चै किया गया तो मालूम हुआ कि ये

घात झूठ है जब उसको गौर करके देखा तो बुरा मांस मालूम हुआ परंतु इस फोड़े को अच्छा होता कहीं नहीं देखा है और किसी को चिकित्सा करता देखा कि बुरा मांस कट जावे तो कुछ आराम होना कठिन नहीं परंतु उस मांस को जहां तांई बने वहां तांई दवा से काटना चाहिये काटने वाली दवा यह है ॥

दवा

सांखिया सफेद· नीला थोथा· नोसादर· फिटकड़ी भुनी· कच्चा सुहागा· गुलाबी सज्जी· हलदी जली हुई· इन सब को पीस कर लगावे॥

अथवा सहत तीन तोले· जंगाल दो तोले· सिरका तेज सात तोले· इन सब को मिला कर औटावे जब तार बंधने लगे तब उतार ले और ठंडा करके लगावे॥

अथवा कास्टिक की वती लगावे कास्टिक एक अंग्रेजी दवाई है और इस फोड़े को छुरे से काटना अच्छा नहीं क्यों कि नित्य घटता बढ़ता है इसी लिये नैस्तर से नहीं काटते हैं और सब जर्राह इस फोड़े को छुरे से ही काटते हैं इसी कारण वह फोड़ा खराब हो जाता है और अच्छा नहीं होता है इसी से सबको सुनासिब है कि इस फोड़े को दवा के जोर से काटना चाहिये और उस के आस पास यह लेप लगाना चाहिये ॥

लेप॥

त्रिवीखताई· जहरमोहराखताई· मूरिदकेवीज· गुलनार· गुलावके फूल· दब्बुल अखवेन। इनसवको वरावर ले हरीमकोयमें पीस करलगावे परंतु इस रोगवाले की फस्त अवश्य खोले और वमन भी करावे और ये रोग मुसलमान के होयतो वकरी के मांस का सोरवा और रोटी खिलावे और हिन्दु के होयतो हकीम अपनी मतके अनुसार पथ्य दे॥

कंधेके फोडेकायत्न

एक फोडा कंधे पर होताहै और येभीनासूरकास्थान है उस्कोभी चीरडाले अथवा तिजाब लगावे और फोडझ ले इस फोडेका निसान नीचे लिषी तसवीरमें समझो॥ और वो तसवीर इस फोडे के इलाज के अंत में लिखी है और जो ये फोडा आप ही फूट जावे तो वह मल्हम लगावे जिस्में सुहागा और नीला थोथा है जववो घाव अच्छा होजाय और वत्तीजाने के माफिकस्थान रहि जावे तो चीर डाले वा तिजाव लगावे और जो चारों ओर से वरावर अच्छा हो जाय तो सुखाने के वास्ते यह मल्हम लगावे॥

मल्हम

पहिले सीसे की गोली का कुस्ता करे उस्की भस्म ६माशे और सफेदा काशगरी ६माशे· सिंदूर ६माशे राल सफेद २माशे गिका घी ६माशे· इनसवको पीस कर गरम करके मिलावे फिर पीला मोम ६ माशे मिलाकर रखछोड़ दे और लगावे॥



बांह के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा बांह पर होता है इसका निशान आगे कौन से थी
र में समझो और चिकित्सा इसकी इस प्रकार से करो जैसी
कंधे के फोड़े की वर्णन की गई है और कंधे से घुटने तक सा
त फोड़े होते हैं और एक फोड़ा कोहनी पर होता है उस्में से
पानी निकलता है उस्पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

काले तिलों का तेल पाव भर· सफेद मोम दो तोले नीला-
थोथा दो माशे· सोनामाखी दो माशे· मस्तगी रूमी छै·
माशे· थिरोजा हरा छै माशे· माजूफल दो तोले· फिरोजा सू
खा एक तोला· नौसादर पांच माशे· मुर्दासंग पांच माशे·
सेलखड़ी तीन माशे· मूंगालाल दो माशे· सुहागा चौकि
या भुना दो माशे· जंगाल एक तोले· प्रथम तेल को गरम क

र फिरउसमें मोमकोपिघलावे फिरयेसबदवामहीनपीस करडालेजब मल्हमके मद्दश होजावे तब ठंडा करके लगा वै और घुटनेसे नीचे सात फोड़े होते हैं इनके निशान आगे कीतसवीर में समझो॥



उंगली के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा अंगुलीमें होताहै उसकोविसभरीकहतेहैं और बहुतसेमनुष्यइसकोविसारा कहतेहैं जोउसमेंबुरामांस होतो चीरडालेऔरजोनचीरेंतोतिजावलगावेतब मांसक टजावेतबवो मल्हमलगावे जिस्में शीशेका कुश्ताहै॥

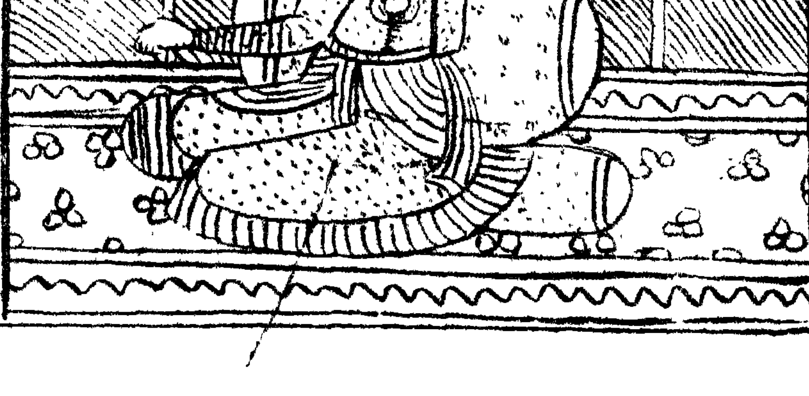
हथेलीके फोड़ेकायत्न

एक फोड़ाहथेलीमें होताहै उसकोभी चीरडालनाचाहि ये और जो फूटनेकी राहदेषेंगेतो अंगुलियां जाती रहेंगी- औरजो अंगुलियां सीधीनहोतो भेड़ाकी [illegible] पानीमें

ओटाकरवफारादेवे और भेडीकेदूधका मर्दनकरे अथवा दो आतशी शरावमले और कंधेसे अंगुलीतक चौदह फोडे होतेहैं जिनकी चिकित्साकठिनाईसे होती है और वह नसोंसे फोडहोतेहैं वे शीघ्रही अच्छे होजाते हैं॥

पीठके फोडेका इलाज

और एक फोडा पीठमें होताहै उस्को अदीठ कहते हैं और उसके आस पास छोटी छोटी फुन्सियां होती है और वह फोडा पीठके बीचमें होताहै वह केकडेके सदृश होताहै और लंबाव तथा चौडावमें बहुत बडा होता है और उस फोडेमें पकजानेके पीछे एक छिद्र होता है और उस्में पानी निकलता है अथवा पकी पीव निकलती है और छीलडा नहीं निकलताहै उस फोडेका निसान नीचा लिखी तसवीरमें समझो इस फोडकी चिकित्सा इस प्रकारसे करनी चाहिये कि उसकी चार फांककरके चीरडाले और उसपर सांभर नोंन



नीम के पते · फिटकरी · और सहत बांधते रहें कि मलादि से भुद्ध रहे परंतु ध्यान रक्खे कि इसकी सूजन बांई ओर को न आजावे और जो दैव योग से सूजन बांई तरफ को हो आवे तो दाहिने हाथ की वासलीक नाम नस की फस्त खोले और पंद्रह तोले रुधिर निकाले और जो इतना रुधिर न निकले तो चार दिन के पीछे बायें हाथ की भी वासलीक नस की फस्त खोले और फोड़े पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

चूक · चूना · सज्जी · नीला थोथा · साबुन · राई · सुहागा · आख का दूध ये सब दवा एक एक तोले गौ का घी बारह तोले प्रथम घृत को गरम करि के साबुन मिलावे जब खूब चाशनी होजाय तब ठंडा करि के लगावे और जो घाव भर आने के पीछे सूजन होआवे और सूजन के पीछे पेचश हो जावे तो चिकित्सा करना छोड़दे अथवा ये दवा पिलावे॥

दवा ·

खतमी के बीज · कनमी का रसा · छै छै माशे इन को रात्रि को पानी में भिगोदे और सबेरे ही छान कर फिर पहिले चार माशे नाजबूके बीज फका के ऊपर से उसे पिलादे और जो इन चारों फोड़ों में से जेमनी ओर को फोड़ा होवे तो भी इसी प्रकार से चिकित्सा करे जैसा कि अभी वर्णन किया है और जो फोड़ा बांई ओर हो तो उसी के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये और ये तीन फोड़े कुछ बहुत भयान क नहीं हैं जैसे चाहें तैसी चिकित्सा करे॥

पसलीके फोड़ेका यत्न

एक फोड़ा पसली पर होता है इस का निसान नीचे की नस वीर में समझो क्योंकि ये भी स्थान नासूर का है और बाई ओर की पसली का फोड़ा पेट में उतर जाता है उस्में से आ - हार निकलता है और ये फोड़ा बड़ी मुसक्किल से अच्छा होता है वरन अच्छा नहीं होता॥

कोषके फोड़ेका यत्न

एक फोड़ा कोष पर होता है उस्की चिकित्सा उसी प्रकार से करनी योग्य है जैसी कि ऊपर वर्णन करी गई है और इन दोनों फोड़ों का निसान इसी नस वीर में समझ लेना



नाभिके फोड़ेका य॰

एक फोड़ा नाभि पर होता है इसका निशान भी आगे की नस वीर में समझ लेना और चिकित्सा इसकी यों करे

किपहिलेउनपतियोंकावफारा देवेजोऊपर अंडकोषोंके फोडेकीचिकित्सामेंकहीगईहै और नीमके पते · सफेद प्याजकेपते खानीनोन इनसवकोपीसकर गरमकरके लगावे औरजो फोडाठीकठीक पकजावे तो चीरडाले औरजो आपही फूटजावे तो भीनस्तर देना अवश्यहै क्योंकि विनानस्तरलगाये इसकामवादनिकलना नहीं किंतुगुदाकेद्वाराहोकर निकलने लगताहै इसलिये नस्तरसेचारखांपकरिकेयेमल्हमलगावे

मल्हम

कालेतिलोंका तेल आधसेर · सफेदमोम १तोले · मुरदासंग छैतोले · सफेदकत्था एकतोले कपूर छैमाशे नीलाथोथा चाररत्ती अरंडके पतोंकारस चारतोले प्रथम तेलको गरम करे फिर मोमडालकर पिघलावे फिर इनसव दवाओंको मिलाकरजलावे फिर सवकोपीसचासनीकर ठंडाकरकेलगावे और गादी युरी पीवनिकले तो ये दवा पिलादे॥



दवा

पितपापडेकेपते·सफेदचंदन·रक्तचंदन·गांजवां·मुलेठी·छिलीहुई·खतमीके फूल·वनफ्साके फूल·येसवछेछे माशे·और इनसवकोरातकोपानीमेंभिगोदे फिरसवेरेही मलछानकर उस्मेंगेहूंकासत·वंशलोचन·जहरमोहराखताई·दम्मुलअखवेन·ये सव एकएकमाशे-लेकर·महीन पीस पानीमें मिला कर पिलावे और फोडेके आस पास ये लेप लगावे॥

लेप

पित पापडे के पते· चिरायते के पते· पित पापडे के बीज· ये सव एक तोले निर्विशी छे माशे रक्त चंदन एक तोले सफेद चंदन एक तोले अफीम एक तोले मिश्री एक तोले नीम की छाल एक तोले· वकायन की छाल एक तोले इन सव को पानी में पीस कर गरम कर के लगावे औ राजितने फोडे पीठ की ओर होते हैं उन सव की चिकित्सा बहुत कठिन हैं उन सव पर लेप लगाना गुण करता है॥

चूतड के फोडे का यत्न

एक फोडा चूतड के ऊपर होता है वो दाई ओर हो वा वांई ओर हो उस्की चिकित्सा भी इन्ही मल्हमों से करनी चाहिये क्योंकि कुछ डर का स्थान नहीं है और जो इन मल्हमों से आराम नहो तो यह मल्हम लगावे॥

मल्हम

काले तिलों का तेल पंद्रह तोले विलायती सावुन तीन तो

तोले सफेदा कासगरी दो तोले सफेदा गुजराती दो तोले ·
प्रथम तेल को गरम कर उस्में साबुन को पिघलाकर चास
नी करे जब मल्हम ठीक होजावे तब ठंडा करके लगावे ॥

अथवा

सफेद राल दो तोले महीन पीस छानकर चार तोले तेल में
मिलावे और नदी के जल से धोवे जब खूब सफेद होजाय
तब कत्था सफेद चार माशे · नीला थोथा दो माशे · रस
कपूर तीन माशे · सब को पीस कर मिला कर लगाया करे

चूतड़ के नीचे के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा चूतड़ से नीचे उतर कर होता है लोग उस्को
भी बवासीर कहते हैं परन्तु ये फोड़ा बवासीर के भेदों में
से नहीं है लेकिन ये स्थान नासूर का है उस्की सूरत ये है
कि पहिले गुठली सी होती है और अपने आप रिसने ल
गती है उस्का चिकित्सा इस प्रकार से करे कि पहिले उ
स्में चीरा देकर उस्की चार फांक करे क्योंकि उस्के भीत
र एक छीछड़ा होता है सो बिना चीरा देने के वह नहीं
निकलता इस वास्ते इस्में चीरा देकर छीछड़े को नि
काले फिर ये मल्हम लगावे ॥

मल्हम

पहिले काले तिलों का तेल पांच तोले गरम करे फिर उ
स्में छै माशे मोम डाले और सोफ · गेरू · मुर्दासंग · नीला
थोथा · ये सब एक एक तोले लेकर महीन पीस कर मिला
वे और मंदी आंच से चासनी करे ठंडा करके लगावे ॥

जांघके फोड़ेकायत्न

एक फोड़ा जंघा में होता है उस्को गम्भर कहते हैं इस्में भी एक बड़ी गुठली सी होजाती है और वो सात मास के पीछे प्रगट होती है और इस फोड़े में डर है इस फोड़े का निसान आगे लिषीतसवीर में समझ लेना और चिकित्सा उसकी यह है कि उस्को चीर डाले और सब मवाद निकाल देवे पीछे उस्के बुरे मांस को इतना काटे कि चार अंगुल गाढ़ा होजावे फिर उसपर नीम के पत्ते· सफेद बूरा· फिटकरी· इन सब को सात दिन तक बांधे फिर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

राल सफेद दो तोले· नीला थोथा एक रती· इन दोनों को महीन पीस कर छै तोले घृत में मिलावे फिर उस्में एक माशे साबुन डाले फिर उस्को नदी के जल से अथवा वर्षा के जल से तथा बरफ के पानी से खूब धोकर लगावे और एक फोड़ा जंघा के नीचे की ओर को होता है वो भी इन्ही मल्हमों से अच्छा होता है॥

घोंटे के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा घुटने के जोड़ पर होता है उस्की चिकित्सा बहु नही कठिन है क्योंकि पहिले एक पोली फुनसी होती है जब वह फूट जाती है तो उसके चेपसे बहुत घाव हो जाता है अंत को सब में वही जाने लगती है फिर यह असा-ध्य होजाता है और जो मनुष्य उस्की चिकित्सा करे तो पाहिले निजाब लगाकर घाव घटादे और उस्में एक-

सफेद सा मांस होता है उसको निकाल डाले जब घाव कडा हो जावे तो वह मल्हम लगावे जिसमें रत्नजोति है और जो उसके लगाने से आराम न होतो ये मल्हम लगावे॥



कुंदरू गोंद एक तोले पारा छै माशे कालेतिलोंका तेल दो तोले इन सब को कढाई में डाल कर खूब रगड़े जब मल्हम के सदृश होजावे तब लगावे॥



पिंडली के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा पिंडली पर होता है इस्का सूरत ये है कि पहिलें सो
थ होता है इस का निसान नीचे लिषी तसवीर में समझ
लेना इस्की चिकित्सा यह है कि तहलील करने वाला ले
पलगावे तो तहलील होजावे और वासलीक की फस्त षो
ले॥

लेप

अमलतास दो तोले· बाबूने के फूल एक तोले· स्वतमी
के फूल एक तोले· सूखी मकोय एक तोले नारवूना एक
तोले गेरू एक तोले मूरिद के बीज छै माशे· अफीम दो
माशे औरंजान कड़वा छै माशे निर्बसी छै माशे इन स
वको पानी में पीस कर गरम करके लगावे और अंड
के पत्ते बांधे और जो घाव लाल होजाय तो वह मल्हम
लगावे कि जिस्में नान पाव का गूदा है और जो वह फूट
जावे तो देषे कि घाव के नीचे सख्त तो है या नरम जो नरम हो
तो नस्तर देवे और जो सख्त हो तो नरम करके नस्तर देवे-
और वो मल्हम लगावे जिस्में बर्षा का पानी लिखा है और
दूसरी सूरत उस फोड़े की यह है कि पहिले एक छाला सा
होता है और उस घाव से दो अंगुल नीचे मवाद होता है
जब वो छाला फूट जावे और मवाद निकले या स्वान से नि
कले तो नस्तर दे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

पहिलें काले तिलों का तेल पाव सेर लेकर गरम करे फि
र सफेद सलगम दो तोले मिलाय गुजराती नग—

नीमके पत्तोंकी टिकिया दो तोले उस्में जलाकर फेंक दे अ
रसिंदूर मिलाकर मंदी आंच पर ओटावे परन्तु सिंदूर पांच
तोले डाले जब चासनी हो जाय तब ठंडा करिके लगावे ॥

पिंडली के दूसरे फोड़े का यत्न

एक फोड़ा पिंडली से छै अंगुल नीचे होता है और वह बहु
त काल में पकता है एक वर्ष वा दो वर्ष के पीछे फूटता है
उस्में से पानी निकलता है और कभी कभी रुधिर भी नि
कला करता है उस्पर वो मल्हम लगावे जिस्में सफेदजी
रा है अथवा यह मल्हम लगावे

मल्हम की विधि

लाल मैनफल· बबूर का गोंद· लोंग फूलदार· विलाय
ती साबुन· भैंसा गूगर· इन सब को बराबर ले जल में म
र्दन पीस कर एक कपड़े पर जमावे और मोमजामा बना
रखे और समय पर फाया कतर कर लगावे। ये लेप बहु
त ही उत्तम है और इस फोड़े को बांदा कहते हैं जब वो
पक जावे तब उस्पर मल्हम लगावे जिस्में साबुन है अ
थवा ये मल्हम लगावे ॥

नुसखा

जंगाल· तौतिया सुहागा कच्चा· आंबाहल्दी· तीन २
माशे फिरोजा पांच तोले साबुन छै माशे· इन सब
को मिलाकर और पानी से धो कर समय पर लगाया
करै ॥

गद्दे के फोड़े का यत्न·

एक फोड़ा पाव के गद्दे पर होता है जो वो शीघ्र अच्छा होजाय तो उत्तम है नहिं तो उस्मे से हड्डियां निकला करती हैं और हमने अपनी आंखों से भी देखा है कि एसा फोड़ा वर्षों में अच्छा होता है और इस फोड़े की वही चिकित्सा करे जो अभी ऊपर वर्णन करी है॥

पाव के तलुओं के फोड़े का य०

एक फोड़ा पांव के तलुओं में होता है इस्की भी यही चिकित्सा है जो अभी ऊपर कह आये हैं॥

पाव की अंगुली के फोड़े का य०

एक फोड़ा पाव की अंगुलीयों पर होता है ध्यान करे कि वह उपदंश के कारण करके तो नहीं है जो उस कायका रोग न होतो वही चिकित्सा करे जो हाथ की अंगुलियों के फोड़े की है और जो उपदंश के कारण करि के होतो उस्की यह सूरत होती है कि अंगुलियां पाव की गल कर गिर पड़ती है और चिकित्सा करने से घाव होजाता है पाव निस्फल होता है॥

अब जानना चाहिये कि शरीर में बहुत से फोड़े होते हैं उन सब की व्यवस्था वर्णन करूं तो ग्रंथ बहुत बढ़ जायगा इस लिये दो चार नुस्खे मल्हम और तेल के लिखे देता हूं जो सब प्रकार के फोड़ों को गुण दायक हैं

नुस्खा १

गुलाब की पतीयों को गुलाब जल में पीस गरम करके

गाढा गाढा लेप करे और ऊपर से बंगला पान बांधे तो स
ब प्रकार के फोड़े को तहलील करे और जो मवाद
तहलील होने के योग्य न होगा तो पका देगा

अथवा

बबूल का गोंद· कबेला· कुचला· एक एक तोले
इनको पानी में पीस कर लगावे और ऊपर से बंगला
पान गरम करिके बांधे॥

अथवा

रूई की गुठली· अलसी· बनारसी राई· ये दवा एक २
तोले इनको पानी में पीस कर लगावे और ऊपर से बंग
ला पान गरम करके बांधे॥

अथवा

पहिले घृत को गरम करके उस्में काली मिर्चों को पी
स कर डाले और कलौंजी चार माशे· और मिर्च भी
चार माशे ही ले सब को मिला कर पकावे जब दवा
जल जावे तब लोहे के घोटे से खूब घोटे जब म-
ल्हम के सदृश होजावे तब लगावे॥

अथवा

कड़वा तेल पांच तोले कबेला· काली मिर्च· महदी के
पते हरे· नीम के पत्ते· सूखे आमले· ये सब छै छै माशे
नीला थोथा चार माशे· इन सब को तेल में जला कर
लोहे के दस्ते से खूब रगड़ कर लगावे॥

दाद का यत्न·

जो दाद रोग थोड़े दिनों का होय तो ये दवा लगाना चाहिये

दवा

सूखे आमले · सफेद कत्था · पवार के बीज · इन तीनों को बराबर लेकर दही के तोड़ में पीस कर महदी के सदृश लगावे ॥

अथवा

पलास पापड़ा · नीला थोथा · सफेद कत्था इन सब को बराबर ले कागजी नीबू के रस में पीस कर दाद पै लेप करे और थोड़ी देर धूप में बैठे

अथवा

कपास के बीजों को कागजी नीबू के रस में पीस कर रक्खे पहिले दाद को कंडे से खुजा कर फिर इस लेप को लगावे ॥

अथवा

अफीम · पमाड़ के बीज · नौसादर · खैरसार इन सब को बराबर ले नीबू के रस में पीस दाद पर लेप करने से दाद बहुत जल्दी अच्छा होगा

अथवा

राल · माजूफल · नीला थोथा · इन तीनों को बराबर लेके हुक्के के पानी में तथा कागजी नीबू के रस में खरल करके दाद पर लगाया करे तो शीघ्र गुण करे ॥

अथवा

राई २२॥ माशे. कूट छान कर सिरके में मिला कर लेप करे तो दाद जाय॥ ये दवा उस वक्त करनी उचित है कि जब दाद खाल के नीचे पहुंच गया हो और जो खाल के नीचे न पहुंचा हो तो ये लेप करे॥

लेप

पीली गंधक छै माशे ले कर कूट पीस कर उस में थोड़ा पारा कपड़े में छान कर गंधक को बराबर ले और गौ-का घी और बकरे की चरबी तीन बार जल से धोई-हुई इन दोनों को साढ़े सोले सोले माशे ले इन सब को मिला कर खूब मथे कि पारा मर जावे फिर इसके दो भाग कर ले और इसका एक भाग धूप में या अग्नि के सामने बैठ कर मले फिर एक घड़ी पीछे गरम जल से-स्नान करे ये दवा खुजली को भी दूर करती है॥

और जो किसी मनुष्य के दाद बहुत दिन के हो गये हों तो उसको ये दवा करे॥

नुसखा

पवाड़ के बीज एक तोला. पानी में पीस कर और तीन माशे पारा मिला कर खूब खरल करे जब मल्हम के सदृश हो जावे तो दाद को खुजा के इस को लगावे॥

अथ खुजली का यत्न

जानना चाहिये कि खुजली रोग दो प्रकार का होता है एक सूखी: दूसरी तर अब हम पहिले तर खुजली का यत्न लिखते हैं॥

नुसखा

खाल कवेला एकतोले · चौकिया सुहागा भुना एकतोले फिटकरी एक तोला इन तीनों को महीन पीसकर दो तोले कड़वे तेलमें मिलाकर शरीरमें मर्दन करे इसी तरह तीनदिन सेवन करे फिर तीन दिनके पीछे लोनी-मिट्टी शरीरमें मलकर स्नान करडाले तो तरखुजली को आराम होय॥

अथवा

कवेला · सफेद कत्था · महदी · येतीनों दवा एक एक तोले भुना सुहागा तीनमाशे · कालीमिर्च एकमाशे इन सबको महीन पीस छानकर गौके धुलेहुए घृतमें मिलाकर चार दिनतक मर्दन करे फिर लोनीमाटीको शरीरपर मलकर स्नानकरे तो खुजलीजाय

और जो खुजली सूखी होतो हम्माममें स्नान करना गुण करताहै और जुल्लाब लेना फायदा करताहै और करूतका लेप करनाभी फायदा करता है॥

करूतके लेपकी विधि

करूतको पीसकर दो घड़ीतक गरमजलमें भिगो रक्खे फिर इसको खूब मलें जब मल्हमके सदृश होजावे तब उसमें खहा दही वा सिरका १२ तोले और गंधक आमलासार ३॥ तोले कूट छानकर सबको २२॥ माशे तिलके तेलमें मिलाकर तीनभाग करे और सवेरेही एकभागको शरीरपर मले फिर हम्माममें जाकर गे

हूंकी भुसी और सिरका बदन पर मल के गरम जल से - स्नान कर डाले तौ खुजली निश्चे जाय ये लेप दोनों तरह की खुजली को गुण करता है॥

अथवा

पित के उत्पन्न करने वाली वस्तु पिस्ता मदिरा और सहत न खाय- और नित्य हम्माम में स्नान करे और जुल्लाव लेवे और मुंजिज के बाद नित्य रात को नींबू का रस वा अंगूर का रस अथवा सिरका थोड़े गुलाब जल और रोगन अथवा मीथे तेल में मिला कर गुन गुना कर मालिश करे तौ सूखी खुजली जाय॥

और जो खुजली थोड़े दिन की होय तौ ये दवा लगावे

दवा

सिरसों चार तोले लेकर जल में महीन पीस गुन गुनी करिके उबटना करै फिर गरम जल से स्नान करै तौ सूखी खुजली जाय॥

अथ घावों का यत्न

अब हर प्रकार के घावों का यत्न लिखते हैं जानना चाहिये कि मनुष्य के शरीर में घाव बहुत प्रकार से होते हैं जो सबों का यथा क्रम से नाम लिखूं तौ ग्रंथ बहुत बढ़ जायगा इस सबब से सूक्ष्म घावों का नाम लिखता हूं॥

घावों के नाम

अग्नि से जला १ तेल घृत आदि से जला २ चोटल

गने का ३ लाठी आदि की चोट का ४ पत्थर ईंट की चोट का ५ तलवार का ६ बंदूक की गोली का ७ तीर का ८ इत्यादि आठ प्रकार के घाव हैं और बहुत से हिन्दुस्तानी ग्रंथों का यह मत है कि घाव और सूजन ६ प्रकार की हैं वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर के दुष्ट पने का ५ किसी तरह की लकड़ी आदि की चोट लगने का ॥६॥

वायु के घाव का लक्षण

वायु का घाव और सूजन विषम पके ॥ पित्त का तत्काल पके ॥ कफ का देर से पके ॥ रुधिर और चोट लगने का भी तत्काल पकता है ॥

और जो घाव शोथ पका नहीं होय उस्का लक्षण लिखते हैं

जिस व्रण में घाव और गरमी और सूजन थोड़ी होय और कड़ा होय और उस्का त्वचा के सदृश रंग होय और उस्में दर्द कम होय इतने लक्षण होंय उस व्रण को कच्चा जानिये और यह भी जानना चाहिये कि व्रण उस्को कहते हैं कि प्रथम शरीर के किसी मुकाम पर सूजन होय और फिर वह पके फिर फोड़े के सदृश हो जाय फिर फूट कर घाव हो जाय उस्को व्रण कहते हैं ॥

जिस मनुष्य की सूजन अग्नि की तरह जले और खार की तरह पके और चेंटी की तरह काटे और चव का होय और जो हाथ से दाबे तब दर्द अधिक हो मानों-

कोई सुईसे वेधता है और उस्में दाह वहुत होय उस्का रंग व दल जाय और सोने के समय शांति हो और उस्में विच्छू के काटने का सा दर्द होय और सूजन गाढी होय और जित ने उस्के पकने के यत्न करे तोभी पके नहीं और उस सूजन में तृषा ज्वर अरुचि होय ये लक्षण जिस्में होंय तो जानि ये कि यह सूजन पक गई है और जो सूजन पक जाती है तो उस्की पहिचान ये है कि उस्में पीडा होय नहीं ललाई थो डी होय वहुत ऊंची न होय और सूजन में तह पड जाय औ र पीडा होय खुजाल वहुत चले सब रे उपद्रव जाते रहे पी छें वह सूजन न जाय खाल फटने लगे और उस्मे अंगुली लगाने से पीडा होय राद निकले इतने लक्षण होंय तो जा नियें कि सूजन पक गई है इन कच्चे पके व्रणों को जराह भली प्रकार से पहिंचान कर यत्न करैं और जो जराह क च्चा सूजन को तथा फोडे को चीरे और पके को जानन हो ऐसे जराह से यत्न नहीं कराना चाहिये ये तो व्रण की सू जन के लक्षण कहे आव और मत से व्रण रोग लिख ते हैं वहुत से हिन्दुस्तानी वैद्यों ने घाव ८ प्रकार के लि खे हैं वायु · कफ · पित · इनके दोषों का · शस्त्रादिक के लगने का · वायु पित · कफ का ३ रुधिर का ४ वायु पित का ५ वायु कफ का ६ कफापित का ७ सन्निपात का ८

घावों का यत्न

अब जो हिन्दुस्तानी ग्रंथों को देषता हूं तो अकल वडी हैरान होती है क्यों कि जिस जिस किताव को देखाउ

सीउसी किताबमें हरकिस्मकी न्यारी न्यारी बात पाई जाती हैं इससबबसेमैंनेहरेक ग्रंथ कार का मत नहीं लिया क्योंकि उनमें क्रम ठीकठीक नहीं लिखा इसवास्ते अपने और अपने उस्ताद के आजमाये हुए नुकसे लिखताहूं कि जिन के लगाने से हजारों रोगियों को आराम किया है॥

अग्निसेजलेकायत्न

जो मनुष्य अग्नि से जलजाय तो उसको उसी वक्त अग्नि से तपावे तो शीघ्र अच्छा होय॥

अथवा

अगर को आदिले गरम वस्तुओं का लेपकरे॥ अथवा औषधियों के घृत को अथवा घृत को गरम करै फिर ठंडा करकेलेप करे॥

अथवा

नवासीर · बडकीजड · रक्तचंदन · रसौत · गेरू · गिलोय - इनको महीन पीस घृतमें मिलायलेप करे

अथवा

बुरेमांसकोदूरकर पीछे मोठाचांवल लेंदु · इन्हे महीन पीस घृत में मिलायलेप करे॥ अथवा मोम · महुआ लोध · राल · मजीठ · रक्तचंदन · मूर्वा इनको बराबर लेकर महीन पीसगौके घीमें पकावे और लगावे॥

अथवा

पटोलका पंचांगलेकर उसे पानीमें औटावे जब -

पानीजलकर चौथाहिस्सा रहिजावे तव कडुवे तेलमें मिलाकर पकावे जव पानीजलजाय और तेलमात्र रहि जाय तव ठंडा करके लगावे॥

अथवा

पुरानाखानेका गीला चूनालेकर दहीके तोड में मिला के लेप करे॥ औरजो तेलसे जला हो तो उस्के फफोले दूर होजायगे॥ अथवा॥ जौको जलाकर इसकी राख को ति लोंके तेलमें मिलाकर लगावे॥ अथवा॥ भुने जीरे को म हीन पीस-कर उस्की वरावर मोम-राल-घृत मिलाय लेप करे॥

तेल आदिमे जलेकायत्न

तिलोंका तेल पाव भर-खाने का चूना पुराना ४पैसे भर-उस्को हाथमें तीन घंटे तक मसले जव मल्हमके सह श होजावे तव रूईके फाये से जले हुए स्थानपर लगा वे तो अच्छा होय॥

तलवार आदिके घावका यत्न

जिसमनुष्य के तलवार को आदिले शस्त्रों की अनेक प्रकारकी धारलगनेसे खाल फटजाय अथवा त्वचा की नाना प्रकारकी आकृति होजाय तो जर्राह को उचि त है कि ऐसे रोगी को ऐसे मकानमें रक्खे जिस्में हवा न लगे फिर पाट के सूत से लिवावे पीछे उन टांकों के घाव के स्थानमें गेहूं की मैदा में पानी और घृत मिलाय पका वे जव पानीजलजाय घृतमात्र रहिजाय तव उस्की -

लोई बनाकर सुहाता सुहाता सेक करै तो घाव तत्काल अच्छा होय॥

अथवा

कुटकी· मोम· हलदी· मुलैठी· कणगच की जड· और कणगच के पते· और कणगच के फूल· परोल· चमेली· नीमके पते· इन सबको बराबर लेके घृत में पकावे जब सब दवा जल जांय तब इस घृत का सुहाता सुहाता लेप करै॥ अथवा

शस्त्र के लगने से जिस मनुष्य का खून बहुत निकल गया हो और उस्के वायु की पीडा होय आवे तो उसके दूर करने के वास्ते उस रोगी को घी पिलाना चाहिये॥

और जिस मनुष्य का शस्त्र लगने से शरीर कट जाय उस्के घाव में गंगेरन की जड का रस भरदे तो घाव तत्काल भरजाय इस घाव वाले का शीतल यत्न करे

और जो घाव का रुधिर पेट में उतर जाय तो जुल्लाब देना चाहिये॥

बांस की छाल· अरंड का बक्कल· गोखरू· पाषाणभेद· इन सबको बराबर लेकर पानी में काढा करै फिर इसमें भुनी हींग और सेंधा नोन मिला कर पिलावे तो कोठेका रुधिर निकल बहै॥

अथवा

जव· कुलत्थ· सेंधानोन· रूखा अन्न· इनका खाना भी बहुत फायदा करता है॥

अथवा

चमेलीके पते· नीमके पते· पटोल· कुटकी· दारूहलदी· गोरीसर· मजीठ· हडकीछाल· मोम· नीलाथोथा· शहत· कणगच के बीज· येसब बराबर ले और सबकी बराबर गौका घृतले और अठगुना पानीले सबको इकठा कर मंदीआंचसे पकावे जब पानी जलजाय और घृत मात्र रहिजावे तब उतार ठंढाकर इसकी बती बना कर लगावै॥

अथवा

चमेली· नीम· पटोल· किरमाला इन चारोंके पते· मोम· महूआ· कूट· दारूहलदी· पीली हलदी· कुटकी मजीठ· पयारव· हरकीछाल· लोधतज· कमलगट्टे· गोरीसर· नीलाथोथा· किरमालाकी गिरी· येसबदवा बराबर ले इनको पानी में औटावे फिर इन के पानी में मीठा तेल मिला कर मंदी आंचसे पकावे जब पानी जल जावे और खालिस तेल रह जावे तब इस तेल की बतीब नाकर घाव पर लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होय॥

अथवा

चीता· लहसन· हींग· सरपोखा· कलिहारीकीजड़· सिंदूर· अतीस· कूट· इन औषधियों पानी में औटावे जब चौथाई पानी रहिजावे तब उस्में कड़वा तेल मिला कर मंदी आंच से पकावे जब पानी जलजाय और तेल रहजाय तब इस तेल को रुई तथा कपडे की बती आदि

कि सीनरहं से घाव पर लगावे तो शीघ्र अच्छा होजाय

अथवा

गिलोय · पटोल की जड़ · त्रिफला · वायविडंग · इन स बको बराबर ले महीन पीस सबकी बराबर गूगल मिलाय एकजीव कर धर रक्खे फिर इसमें से १ तोले पानी के साथ नित्य खाय तो घाव निश्चय भर आवेगा॥

अब ये तो हमने शास्त्रादिकका मिला हुआ यत्न लिखा इसमें कुछ स्थान भेद नहीं लिखा चाहे सब शरीर में किसी अंग शस्त्र लगा हो तो इन्हीं दवा ओंसे यत्न करना चाहिये अब हम स्थान स्थान के घावों का यथा क्रम से यत्न लिखते हैं॥

जिस किसी मनुष्य के सिर में तलवार लगी हो और घाव गहरा होगया हो और हड्डी तक उतर गई हो और चोट से कई टुकड़ होगये हों तो सब टुकड़ों को असल के अनुसार मिलावे और जो चूरा हो तो निकाल डाले और उस घाव पर गोमा का रस लगावे फिर घाव में टांके लगादे और इस दवाई से सेके॥

सेक की दवा

आमा हलदी · मेदा लकड़ी · काले तिल · सफेद बूरा · गेहूं की मेदा · घी इन सबका हलुआ बना कर सेक और उसी को बांधे॥

और जो तलवार आड़ी पड़ी हो और सिर की खोपड़ी जुदी हो जावे तो इसकी चिकित्सा इस प्रकार से करें

कि प्रथम दोनोंको मिलाकर बांधे और पूर्वोक्त रीत से सेंक केये मल्हम लगावे॥

मल्हमकी विधि

सफेदा कासगरी मुर्दासंग रसकपूर अकरकरा गुजराती माजू ये सब दवा एक एक तोले सिंगरफ चारमाशे इन सबको पीसकर चार तोले घृतमें मिलाकर नदीके जलसे धोकर घाव पर लगावे और ध्यान रक्खे कि घावमें स्याही न आने पावे

और जो किसीके गले पर तलवार लगे और उसके लगने से घाव बहुत होजावे तो जर्राह को उचित है कि पहिले रुधिर से घावको शुद्ध करे फिर टांके लगावे और केवल आवाहलदी से अथवा हलुए से सेंके और पहिले वह मल्हम लगावे जिसमें चौकिया सुहागा लिखा है जब पीव गाढ़ी और सफेद निकले और पीलापन लीये हो तो वह मल्हम लगावे जो अभी ऊपर इसी पत्र में वर्णन कर चुके हैं॥

और जो तलवार कांधे पर पड़े और हाथ लटक जाये तो उसको मिलाकर टांके भरदेवे और उसमें भी यही मल्हम लगावे जो अभी ऊपर कहि आये हैं॥

और एक सांचा लकड़ी का बना कर कांधे पर बांधे तो आराम हो जायगा॥

और जो किसी मनुष्य के गले से लेकर कटि तक तलवार लगे और घाव चार अंगुल गहरा हो तो डरना न चा

हिये और उस रोगी को मन लगा कर चिकित्सा करे जो टुकड़े होगये हों तो देखे कि रोगी में सांस है या नहीं - जो सांस हो तो चिकित्सा करे और जो स्वास बल के साथ आता हो तो और घायल की बुद्धी और ओसान ठीक हों तो समझना चाहिये कि ये रोगी की केवल धीरता है और कोई क्षण मात्र का मह मान है और संसार के बीच कोई पल की हवा पानी है और उसको जीतू का घाव बोलते हैं परंतु यहां मेरी बुद्धी यह कहती है कि जो हृदे में गुर्दे में और कलेजे में घाव न आया हो तो निस्सं देह टांके लगा कर चिकित्सा करे जो परमेश्वर अनुग्र ह करेगा तो घायल मृत्यु से बच जायगा और जो हृदे गु र्दे कलेजे में घाव होगा तो उस घायल की चिकित्सा न करे और जो इन में घाव न हो तो चिकित्सा करे और उक्त मल्हम को बना कर लगावे अथवा जैसा समय पर उचित जाने वैसा करे अथवा ये तेल लगावे॥

तेल की विधि

दारू हलदी आमा हलदी भड़ भूजे की छान का धूम ये तीनों दो दो तोले इन सब को जो कुट करके नदी के जल में अथवा वर्षा के जल में भिगो दे और सवेरे ही का ले तिलों का तेल पाव सेर मिला कर मंद मंद आंच पर औटाय जब पानी जल जाय तेल मात्र रहि जाय तब छा न कर धर राखे और उसमें पुराना कता का कपड़ा भिगोक र घाव पर रक्खे और जो कतां का वस्त्र प्राप्त न हो सके

तो बिलायती सूत काम में लावे और खूब बांधे और मकोय का अर्क पिला वे वा गीमा का साग पका कर कभी कभी कभी खिलाया करे और यथोचित पथ्य करावे और घाव पर ध्यान रक्खे कि पीव पीव ही के सदृश हो और स्याह न हो और ऐसे घायल को ऐसे एकांत में रक्खे कि जहां किसी का शब्द भी न पहुंचे ॥

और जो किसी मनुष्य के हाथ पर तलवार लगी हो और दो घड़ी बीत गई हों तो वह घायल अच्छा न होगा और जो दो घड़ी से कम हुआ हो तो आराम हो सकता है और जो हड्डी बराबर कटि गई हो तो उसी समय चिकित्सा करे तो आराम होगा और जो कुछ भी विलंब हो जायगा तो आराम न होगा किस वास्ते कि जब तक कटा हुआ हाथ गरम है तब तक साध्य है और ठंडा होने पर असाध्य है और जो तलवार से अंगुलियां कटि जावे और गिर न पड़ें तो अच्छी हो सक्ती हैं और जो किसी के चूतड़ पर तलवार लगे तो उस को चिकित्सा जर्राह की सम्मति पर है क्यों कि ये स्थान कुछ बहुत भयानक नहीं है और जो किसी के अंड कोशों पर ऐसी तलवार लगे कि अंडे तक कटि जावें तो जर्राह को उचित है कि भीतर दोनों टुकड़े मिला कर ऊपर से शीघ्र ही टांके लगा दे और इस प्रकार से बांधे कि भीतर से अंडे का मिला रहे और उस पर वो रोगन लगावे जो अंग्रेजों के यहां लड़ाई पर लगाते हैं और जो समय पर वह प्राप्त न हो सके

केतो देवदारु का तेल वा छिपूटा का तेल लगावे और
और जो कूल्हे से पांव के नख तक घाव हो तो उसकी चि
किसा उसके अनुसार करनी चाहिये और जो सिर से
पांव तक कोई घाव बहुत कठिन हो तो उसकी वह चिकि
त्सा करे जो कमर वा हाथ के घावों की वर्णन की गई है
और इन स्थानों के सिवाय शरीर में किसी जगे पर त
लवार के लगने से घाव हो तो सब जगे की चिकित्सा
इसी तरह इन्हीं औषधों से करनी चाहिये और तल
वार· सेल· फरसा· चक्र इतने शस्त्रों के घावों का इ
लाज इन्हीं दवाओं से होता है॥

अथ तीर के घाव का

यत्न

जो किसी मनुष्य के बदन में तीर लगा हो और घाव के
भीतर अटक रहा हो तो घाव को चारों ओर से दवा कर
निकाल ले वा घाव को चौड़ा करो कि हाथ से तीर निक
ल आवे और भीतर के तीर की यह परीक्षा है कि वो
घाव दूसरे तीसरे दिन रुधिर दिया करता है और ती
र जोड़ की जगह जाता है
और जो मांस में लगता है तो पार हो जाता है उसके
घाव पर दोनों ओर मल्हम लगावे और बीच में एक
गद्दी बांधे इस प्रकार की चिकित्सा में परमेश्वर अप
ने अनुग्रह से आराम कर देता है॥

अथवा

किसीकी छातीवा नाभिमें तीर लगे और पार होजावे वा भीतर अटक रहै जो तीर लगकर अलग निकलजावे तो पूर्व रीतिसे चिकित्सा करै और जो भीतर अटक रहै तो औजारसे निकालकर ये रोगन भरे॥

रोगनकी विधि

भांगरेका रस·गोमाका रस·नीमके पतोंका रस·छिवृक्षका रस ये चारों रस दोदो तोले गेरू·अफीम·एक एक तोले सबको पावभर मीठे तेल में मिलाकर चालीस दिवस तक धूपमें रक्खे और समय पर काममें लावै और ये तेल सब प्रकारके घावोंको फायदा करताहै॥

अथवा किसीके पेटमें तीर लगाहो तो बहुत बुद्धिमानीसे चिकित्सा करै क्योंकि ये स्थान बहुत कोमल है जो इस स्थानमें तीर लगकर निकलगया हो तो उत्तम है और जो रह गयाहो तो कठिनतासे निकलता है क्योंकि ये स्थान न तो घाव चीरनेका है और न तिजाब लगानेका है घस जो वहां मकनातीस पत्थर को पहुंचावै तो उत्तम है क्यों कि लोहा व मकनातीस का अनुरक्त है और जो तीर निकल गया हो तो वह चिकित्सा करै जो ऊपर वर्णन करीगई है और घाव में वह तेल भरे जिस्में भांगरेका रस लिखाहै॥

अथवा

किसीकी जंघामें तीर लगे तो वह स्थान भी तीरके भीत

रहजानेका है क्योंकि मांस और हड्डी यहांकी गंदी है उ
चित है कि घावको चीरकर नीरको निकाले इसमें कुछ
डर नहीं है परंतु इतना डर है कि जो घाव रहिजाय जो व
हुत कालमें अच्छा होता है और जोडोंकी व्याख्या ऊ
पर वर्णन हो चुकी है इस लिये घावको चौडा करके
नीर निकाले तो हड्डीका हाल जाना जावे कि हड्डी में
कुछ हानि पहुंची था नहीं जो हड्डी पर हानि पहुंची हो
तो हड्डीकी किस्चे निकालकर चिकित्सा करे॥

अथवा

किसीके घुटनेमें तीर लगे तो उसकी भी यही व्याख्या
है जो जंघाके घावमें वर्णन की गई है और मैंने तीरके
घाव घुटने से पांव तक में देखे हैं यदि दैव योग से तीर ल
ग भी जाय तो उसी प्रकार से चिकित्सा करे जैसा कि ऊ
पर से वर्णन करते आये हैं॥

घावकी परीक्षा

जिस घावमें तीर आदि किसी शस्त्रकी नोक रहि जा
य उसकी पहिंचान यह है कि घाव काला और सूजन
संयुक्त हो फुनसियों को लिये हो और उस घाव का
मांस बुदबुद समान ऊंचा हो य और उसमें पीडा होय तो
उस घावको शस्त्रसमेत जानिये॥

कोठेकी परीक्षा

जिस मनुष्यके कोठेमें तीर रह गया हो उसकी पहिंचान
यह है कि शरीरकी सातों त्वचा और शरीरकी नसोंको

नांघकर पीछें उन नसों को चीरकर और कोष्ट के विषे रहा जो वह शस्त्र सो अफरा करे और घाव के मुख में अन्न और मलमूत्र को ले आवे तब जानिये कि इस के कोष्ट में शस्त्र रहा है॥

गोली के घाव का यत्न

जो किसी मनुष्य के सिर पर गोली लगती हुई चली गई हो और दूसरा यह कि गोली दूर से लगी हो ऐसी गोली शिर की त्वचा में रह जाती है इस कारण कर के सिर में सूजन आ जाती है और मूर्ष लोग कहते हैं कि गोली सिर के भीतर से निकाल लावे परंतु ठीक व्यवस्था तो यह है कि जो गोली पास से लगी हो तो दोनों ओर की हड्डी को तोड़कर निकल जाती है और जो कुछ दूर से लगी हो तो भेजे के भीतर रह जाती है और निकालने के समय रोगी के बल को देखना चाहिये कि गोली निकालने में वह मर न जायगा और जो उस का मर जाना संभव हो तो चिकित्सा न करे और जो देखे कि रोगी इस कष्ट को सह सका है और उसके भाई बंधु लोग प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देते हैं तो निःसंदेह भेजे में से गोली को निकाले और सिर के घाव को कम सकते हैं और चिकित्सा के समय-पहिलें यह मल्हम लगावें जिस से जला हुआ मांस निकल जावे॥

मल्हम की विधि

अंगरून हरा· निस्वा लिस शहत· एक एक तोले सिरका

सिरका दो तोले इन सब को मिला कर कड़ही में पकावेज
ब चासनी होने पर आवे तब ठंडा कर के लगावे

अथवा

मुरगी के अंडे की सफेदी दो आतशी सराब चार तोले
दोनों को मिला कर लगावे॥

अथवा

जो गोली गले में लगी हो तो उस्की भी चिकित्सा इसी प्र-
कार से करे जैसा कि ऊपर वर्णन कर चुके हैं

अथवा

जो किसी की छाती में गोली लगी हो तो उस्की व्यवस्था
यह है कि जिस ओर को रोगी फिरता है तो गोली भी उसी
ओर को फिर जाती है यदि कोई बलवान होगा तो गोली
निकल जायगी और निर्बल होगा तो रह जायगी इस पर
खूब ध्यान रखना चाहिये क्योंकि उसका घाव टेढ़ा हो
ता है और छाती की बराबर में दिल यानी हृदय उपस्थि
त है उस का ध्यान भी अवश्य रखना चाहिये और वाजी
गोली कपड़े से लिपटी हुई होती है तो वह गोली निकल
जाती है और कपड़ा रह जाता है और जिस ओर को गोली
निकलती है उस ओर का घाव चौड़ा हो जाता है उचित है
कि घाव को चीर कर वा पका कर पहिले कपड़े को नि
काल लेवे और कपड़े रह जाने की यह पहिचान है
कि घाव में से पतली और काली पीव निकला करती
है पहिले घाव को शुद्ध कर ले क्योंकि जब घाव शुद्ध-

होजायगा और जला हुआ मांस निकल जाता है तो घाव शीघ्र अच्छा होजाता है और धीरज से उस की चिकित्सा करै घबराहट को काम में न लावे॥

अथवा

जो किसी की छाती से पेड़ू तक गोली लगी होतो उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करनी योग्य है जैसी जैसी कि ऊपर वर्णन करी गई है

अथवा

किसी के अंडकोषों में वा जंघा से पिंडली तक कहीं गोली लगी होतो चिकित्सा के समय देषे कि गोली निकल गई वा नहीं निकल गई है जो निकल गई होतो उत्तम है और जो रह गई होतो गोली को निकाल कर घाव को देषे कि हड्डी तो नहीं टूटी यदि हड्डी टूट गई होतो छोटे टुकड़ों को निकाल डाले और बड़े टुकड़े को वहीं जमादे और उस्में विलायती रसोनभरदे और स्टिकिन एक अंग्रेजी दवा है उस्का फाया लगादेवे और खूब कस कर बांधे और तीन दिन के पीछे खोल कर देषे कि हड्डी जमी वा नहीं जो जम गई होतो उत्तम है नहीं तो उसको भी निकाल डाले अथवा समय पर जैसी सम्मति हो वैसा करै और देषते रहें कि घाव में सफेदी और उसके आसपास स्याही तो नहीं है और घाव में से दुर्गंधि तो नहीं आती और पीव पानी सा तो नहीं निकलता है क्योंकि ये लक्षण बहुत बुरे होते हैं और गोली जो हर एक

घावमें वह दवाई लगावे जो सिर के घाव में वर्णन की नी है अथवा उस दवाई को लगावे जिसमें अंडे की सफेदी है उस दवाई में रूई को भिगो कर घाव पर रखना चाहिये और सब रे शरीर में किसी मुकाम पर गोली लगी हो इन सब अंगे के घावों का इलाज इन्हीं औषधियों से होता है॥

अथवा

किसी के विष की बुझी तलवार तीर बरछी कटार फरसा चक्र आदि शस्त्र लगे हों तो उसकी यह परीक्षा है कि घाव तो ऊपर बढ़ता जाता है और मांस गलता जाता है और दुर्गंधि आती है और प्रति दिन घाव का रंग बुरा होता जाता है और वहां का मांस तथा रुधि स्याह पड़ जाता है व सउचित है कि पहिले सब स्याह मांस को काट डाले जो रुधिर जारी हो जाय तो रुधिर बंद करने वाली दवाई करे और दूसरे दिन गेरू नोन फिटकरी गुनगुनी करके बांधे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

पहिले गौ का घी आध पाव लेकर गरम करे फिर उसमें एक तोला मोम डाल कर पिघलावे पीछे कबेला एक तोले राल सफेद एक तोला रतनज्योति एक तोले इन तीनों को भी पीस कर उसमें मिला दें फिर थोड़ा सा औटावे फिर ठंडा करके एक फाया घाव के अनु

साग्थनाकरउस्परइसमल्हमकोलगाकरघावपररक्खे औरजोकोई कहे कियेजहरवाद हैतोउत्तरदेवे कियेसत्य है परंतुउस्मेंसेमेलामेलापानीनिकलताहै औरलालीलिये-हुए जिस्कोकच्चीलोहू वोलतेहैं औरजहरवादकाघाव शीघ्रवढता है औरयह घाव देरमें बढताहै औरजहरवाद शीघ्रगलताहै औरयहदेरमें जहरवादके घावमें मनुष्य शीघ्रमरजाताहै औरइस्में देरमें मरताहै औरजहरवाद केरोगीको किसीसमयकल नहीं पड़ती औरऐसे घायलकोजितनी पीड़ा होतीहैउस्में न्यूनाधिक नहीं हो सक्ती-उचितहै कि चिकित्सा वुद्धिमानोंसे करे औरजो सूषाजानेकेपीछे कोई किरच हड्डीकी फिरदोष पड़ेतो फिर नेजावलगावे कि घावचौड़ा होजावेतबहड्डीकोनिकालडाले

तिजाव की विधि

लहसनकारस · कागजीनीवूकारस · चारचारतोले सुहागाचौकिया एकतोला इन दोनोंकोमहीनपीस कर पहिले दोनोंअर्कोंमेंमिलाकर चारदिवसपर्यंत धूपमें रक्खे औरएकवूंद घावपरलगावे॥ फिरकिसी मल्हमकाफाया रक्खे॥

अथ हाड टूटे का यत्न

जानना चाहिये कि हड्डी टूटनेके बारह भेदहैं सो यथा-क्रम लिखतेहैंतो ग्रंथ बहुतबढजाताहै औरकुछमतलबका मिलन नहीं होताहै इसवास्ते बहुतसा बखेडा नहींलिखा केवल जोजो मतलबकी बातहै सोई लि

खतेहैं॥

हाडटूटेकीपहिचान

अंगसिथिलहोजाय और उसजगेस्पर्शसुहावेनहीं औरवहांशरीरफडके और शरीरमें पीडा और भूलहोय तवजानियेंकि इसमनुष्यकाकिसीप्रकारसे हाडटूटगयाहै॥

हाडटूटेकाकष्टसाध्य

जिसमनुष्यकीअग्निमंदहोजाय और कुपथ्यकरा करैवायुकाशरीरहोय औरउसमेंज्वरअतीसारादिक भीहोय ऐसेलक्षणोंवालारोगीकष्टसेबचे और जिसमनुष्यकामस्तकफटगयाहो कमरटूटगईहो य और सांधिखुलजाय औरजांघपिसजाय ललाट काचूर्णहोजाय हृदय·गुदा·कनपटी·माथा·फटि जाय जिसरोगीकेयेलक्षणअसाध्यहै और हाड कोअच्छेप्रकारबांधेपीछेकडाबांधे औरवहबुरी तरहबंधजाय औरउसमेंचोटआजाय औरमैथुन आदिकरतारहेतोउसरोगीकाटूटाहाडभीअसा ध्यहोजाताहै अबशरीरकेस्थानस्थानकेहाडोंमें चोटलगीहोउनकेलक्षणकंठ·तालू·कनपटी·कं धा·सिर·पेर·कपाल·नाक·आंख इनस्थानोंमेंकि सीतरहकीचोटलगजावैतोउसजगेकेहाडनवजाय और पहुंचा पीठ·आदिकेसबहाड हैसो टेढेहोजा य कपालकोआदिलेजोगोलहाडहैसोफटिजाय

और दांत वगैराजो छोटे हाड हैं सो टूटजाय इनसब हा डों का यत्न लिखता हूं औ किसी मनुष्य के चोट आदि किसी तरह से हाड और संधि टूटजावे तो चतुर जर्राह कोचाहिये कि उसी समय उस जगह चोट पर शीत लपानी डाले पीछे उस्पर औषधियों का सेक करे॥ अथवा पट्टी बांधे और उस जगह जो लेप करे सो सीत ल इलाज करे और बुद्धिमान जर्राह को चाहिये कि उस मुकाम पर जो पट्टी बांधे तो ढीली न बांधे और बहुत कड़ी भी न बांधे साधारण पट्टी बांधनी योग्य है क्यों कि जो पट्टी ढीली बंधेगी तो हाड जमेगा नहीं और बहुत कड़ी बांधने से शरीर की खाल में सूजन हो आवेगी और पीड़ा होगी और चमड़ी पक जायगी इस कारण पट्टी साधारण बांधनी अच्छी होती है व स जिस मनुष्य के चोट आदि हो उस के यह लेप लगा ना चाहिये॥

लेपकी विधि

मेदा लकडी · आंवले · आंबा हलदी · पवार के बीज · साबन · पुरानी ईंट · येसब बराबर लेके महीन पीस थोड़ा तिलों का तेल मिला कर आंच पर रखकर गर म गरम लेप करे॥

अथवा

मुगास · गेरू · खतमी के बीज · उड़द · गलुआ · येसब द वा एक एक तोले और हलदी छे माशे · सोयाके

लोवानछेमाशे· इनसवकोपीसकरलेपकरे॥

अथवा

गेरूछेमाशे· झाऊकेपतानौमाशे· गुलावकेपता ६ माशे· वेरकपतानौमाशे· इनसवकोमहीन पीसकरलेपकरनेसेलाठीआदिकीचोट गिरपडनेकीचोट ओरपत्थरआदिसेकुचलजानेकी चोटको आराम होसक्ताहै॥

अथवा

हलदी· हरीमकोयकेपते· गेरू· येतीनोदवाएक एकतोले खिलोसरसोंदोतोले इनकोमहीन पीस करलेपकरनेसेसवप्रकारकी सूजनको अत्यंत फायदाहोताहै॥

अथवा

गेरू कालेतिल· आवाहलदी· हालोंकेबीज· ये सवबरावरलेके थोडाअलसीकातेलमिलाकेलेपकरनेसेसवप्रकारकीचोटअच्छीहोतीहै

अथवा

मटरकोचून· चनाकोचून· छडीलो· अलसीकेवीजयेसवदवानोनोमाशे लालवूराछेमाशे· कालीमिरचतीनमाशे· इनसवकोपीस करथोडे सिरकेमे मिलाकरलेपकरे॥

अथवा

गेरू एकतोले· सुपारीएकतोले· सफेदचंदनएक

तोले· रसौतछैमाशे· मुर्दासंग छैमाशे· एलुआछैमाशे इन सबको हरीमकोयके रसमें पीस कर लगावे तौस व प्रकार कीचोटजाय॥

अथवा

एलुआतीनमाशे· खतमीकेवीजछैमाशे· वनफ्शा के पतेछैमाशे दोनोचंदनबारह माशे· भटवासछै माशे· नारखूनाछैमाशे· इन सबका चूरन करिके मुर्गीके अंडेकीसफेदी में मिलाके गुनगुना करके लेप लगावे॥

अथवा

खिले काले तिल· खिली सरसों· गेरू एक एक तोले सभालूके पते डेढ तोले· मकोयके पते डेढतोले· इन सबको पानीमें महीन पीस कर गरम गरम लेपक रे तौसव प्रकारकी चोट अच्छी होय॥

अथवा

बारह सींगके सींगकी भस्मतीन माशे· लोवान तीन माशे· भटवासका चूनदो माशे· वाकलाका चून दो माशे· नौसादरछैमाशे· बबूलका गोंदछै माशे· कडवे वादाम कीमींगी एक तोला इन सबको पानी में पीस कर लगावे तौसव प्रकार की चोटजाय॥

अथवा

कडवे वादाम कीमींगी· पुरानी हड्डी एकएक तोला सीपकीभस्म· समुद्रफेन पीलीफिटकरी· छै छै माशे·

इनसबको पानीमें पीसकर लगावे तो सब प्रकारकी चोट को फायदा होता है॥

अथ हड्डी टूटे का यत्न

इस हड्डी टूटी जानेकी चिकित्सा इस रीतिसे करै जैसा कि पट्टी वगैरा पहिले लिख आये हैं सो करै और चोटकी जगह गीली प्याज लगावे तो टूटा हाड अच्छा होय

अथवा

मजीठ महुआ इन दोनोंको ठंडे पानीमें पीस टूटे हाड पर लेप करै तो अच्छा होय॥

अथवा

बेर पीपलकी लाख गेहूं काहूका दरख्तका वक्कल इन सबको महीन पीस घृतमें मिलाय २॥ डेढ तोले नित्य खाय तो और ऊपर से दूध पीवे तो टूटा हुआ हाड अच्छा होय॥

अथवा

लाख काहूका वक्कल असगंध खरेटी गूगल ये सब बराबर ले इन सबको कूटपीस कर एक जीव कर २॥ डेढ तोले दूधके साथ नित्य खाय तो टूटा हाड अच्छा होय॥

अथवा

गेहूंओंको ठीकरेमें धरकर अधजले करले पीछे इन्हे महीन पीस तीन तोले ले कर उसमें छै तोले सहत मिलाकर सात दिन तक नित्य चाटे तो टूटा हाड जुडे

अथवा

मैदालकडी·आमला·तिल·इनसबको बराबर लेके ठंडे पानीमें महीन पीस उस जगे लेप करे और इसमें घृत भी मिलावै तौ टूटा हाड अच्छा होय॥

अथवा

मनुष्यके मांसकी चोषी मिमाई अनुमान माफिक ले और शहत मिलाके उसे चटावै तौ टूटा हाड अच्छा हो।

अथवा

चोटवाले मनुष्यको मांसका सोरवा दूध·घृत·पुष्टाईकी औषधि देना अच्छा है और चोटवाले मनुष्य को इतनी चीजोंसे परहेज कराना चाहिये॥

नोन·कडवी·वस्तु·खार·खटाई·मैथुन·धूपमें बैठना·रूखे अन्न का खाना·इनचीजोंसे परहेज रक्खे॥

बालक और तरुण पुरुषके लगी चोट जलदी अच्छी होतीहै और वृद्ध मनुष्यकी और रोगी मनुष्यकी और क्षीण मनुष्यकी चोट जलदी अच्छी नहीं होती

अथवा

लाष १॥ तोले·लेकर महीन पीस गौके दूधके साथ पंद्रह दिन पिये तौ टूटा हाड अच्छा होय।

अथवा

पीली कौडियोंका चूना २ तथा ३ रत्ती औटाय दूधमें पीये तौ टूटा हाड जुडे॥

अथवा

अथवा बेरकाबक्कल·त्रिफला·सोंठ·मिरच·पीपल·
इन सबको बराबर ले और इन सबकी बराबर गूगल
डाल सबको एकजीव कर १एक तोले नित्य २५ दिन तक
दूधके साथ लो तो शरीर वज्र के समान होय और सरीर
की सब कसक जाय॥

अथवा

बेरका बक्कल·एक तोला·महीन पीस कर सहत मिलाय
एक महीने तक चाटे तो शरीर की सब प्रकार की चोट
टूटी हड्डी अच्छी होय·

अथवा

जो किसी मनुष्य के मुगदर आदि किसी तरह की चोट
लगी होय उसके वास्ते ये दवा बहुत फायदा करती है॥

दवा

मेदा लकड़ी·मेथी·सोंठ·आवले·इन सबको मही
न पीस गोमूत्र में मिलाय जहां चोट लगी होय तहां ले
प करे तो चोट अच्छी होय और जो किसी मनुष्य को
किसी पसु ने मारा हो तथा किसी ऊंचे मुकाम से गिर
हो तथा भीत आदि के नीचे दब जाय और इस कारण
करके दब गया होय और घायल होगया होय तौ उस
के यह लेप लगावे॥

लेपकी विधि

पुराना खोपड़ा·आंबा हलदी·मेदा लकड़ी·काले तिल
सफेद मोम·ये सब दवा एक एक तोले ले और पीस कर

चोट पर लेप करे और जो उस पर घाव आगया हो तो पहिले कहे हुए मल्हमों में से कोईसा बना कर लगावे

अथवा

प्याज एक तोले · गेंहूं की मैदा दो तोले · प्रथम प्याज को छील उसकी मींगी निकाल कर तेल में छोंक ले फिर उसमें मैदा को डाल थोड़ा पानी मिला कर लपरी बनावे और चोट को सेके फिर इसी को बांधे तो चोट अच्छी होय

और जाड़े के दिनों में शीतकाल में घी वासन में जम जाता है और उसके निकालने से हाथ के नखों में घी की फांस लग जाती है और हाथ पक जाता है तो उस की चिकित्सा यह है कि पहिले हाथ को आग पर खूब सेके फिर ये दवा लगावे॥

दवा

अजवायन खुरासानी · भैंसा गूगल · विलायती साबुन · सेंधा नोन · गुड़ · ये सब बराबर ले पानी में महीन पीसे जब मल्हम के सदृश [illegible] दे तब उस घाव पर लगावे और जो इससे आराम न हो तो ये मल्हम लगावे

नुसखा

साबुन · गुड़ · गेंहू की मैदा · एक एक तोले पानी में पीस इसका फाया बनाकर लगावे और इस के ऊपर एक पान गरम करके बांधे और सेके जो घाव सब अच्छा हो और पानी निकलना बंद होता हो तो ये तिजाच लगाकर घाव को चौड़ा करे॥

नुस्खमातिजावका

गंधकदोतोले· नीलाथोथादोतोले फिटकरीसफेद दो तोले· नौसादरदोतोले· इनसबको महीनपीसकरआ धपावदहीमें मिलाकरएकहांडीमें भरकर चोवाके सदृशातिजावखेंचे और एकबूंदघावपरलगावेतोघा वगहराहोय पीछे इस परवही मल्हम लगावे जो ति· आवके नुसखेसे पहिले लिखा है

अबक्रमसेतोसबघावोंकाइलाजलिखचु के परंतुअबदोचारनुस्खेमल्हमके यहां लिखता है येमल्हमसब प्रकारके घावोंको फायदा करतीहैं

मल्हम १

रालएकपैसेभर· सफेद मोमदोपैसेभर· मुरदासंग ए कपैसेभर· इनसबकोमहीन कररक्खे प्रथमगौका घृतछैपैसेभर लेकर गरम करे फिरउसमें मोमडालेज बमोमपिघलजाय तब सबदवाईयोंको मिलावे फि रइसको कांसीकी थालीमें डालकर १०८ वार पानी मे धोवे पीछे इसको घाव परलगावे तो सबप्रकारकाघा व अच्छा होय इसको सफेदमल्हम कहते हैं॥

मल्हम २

सोधापाराएकतोले आंवलासारगंधकएकतोले मुरदासंगदोतोले· कबेलाचारतोले· नीलाथोथा चारमाशे· गौकाघृतपावभर· औरनीमकेपतोंका रस अनुमानमाफिकडालकरइनसबको मिला·

करदोदिनतकखूब पीसेजबमल्हमकेसदृशहोजापत ब घाव परलगावेतौसब प्रकार के घावअच्छा होंय

मल्हम ३

सफेदमोम · मस्तगी · गोंद · मेंदल · नीला थोथा · सुहागा सज्जी · सिंदूर · कबेला · मुरदासंग · गूगल · कालीमिर्च सोन · गेरू · इलायची · बेर · सफेदा · सिंगरफ · मोधीगंधक ये सब दबा बराबरले और मोम को छोड़ कर सब दवाओं को न्यारीन्यारी महीन पीस कर रक्खे प्रथम - घृत को गरम कर उस्में मोम पिगलावे फिर सब औषधियों को मिलाय खरल में गेर दो दिन तक खूब घोटे जब एक जीव होजाय तब धर रक्खें और घावों पर लगावे ये मल्हम चोट के घाव शस्त्रादिक के घाव फोड़े आदि के घाव और सब प्रकार के घावों को फायदा करता है॥

मल्हम ४

नीला थोथा · मुरदासंग · सफेदा · खैरसार · सिंदूर - सिंगरफ · मोम · के... ...ा घृत ये सब बराबर ले फिर घृत को गरम कर नीचे उतार इस्में पहिले नीला थोथा पीस कर डाले पीछे उसी समय उस्में मोम डाल कर पिघलायले फिर इस्में सब औषधि महीन पीस कर डाले इन सबको एक जीव कर कांसे की थाली में डाले और उस्में ज्यादा पानी डाल कर एक दिन भर हथेली से रगड़े फिर घावों पर लगावे तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय॥

मल्हम ५

सिंगरफ तीन पैसे भर· सफेद मोम तीन पैसे भर· सज्जी एक पैसे भर· नीम के पतों की टिकिया तीन पैसे भर· मुरदा संग एक पैसे भर· प्रथम घृत को औटाय उस्में नीम की टिकिया पका कर उन टिकियों को जला कर फेंक दे फिर उस घृत में मोम को पिघलावे फिर सब औषधों को महीन पीस कर मिलावे जब मल्हम के सदृश हो जावे तब लगावे तो घाव मात्र अच्छे होंय॥

मल्हम ६

जिस मनुष्य के हाथ पावों में बिवाई फटी होय उस के वास्ते य मल्हम बहुत अच्छी है

राल एक पैसे भर· कत्था एक पैसे भर· काली मिर्च एक पैसे भर· गौ का घृत दो पैसे भर· चमेली का तेल चार पैसे भर· इन सब औषधों को महीन पीस लोहे के पात्र में मल्हम बना ले पीछे इस को लगावे तो हाथ पावों की बिवाई अच्छी होय॥

मल्हम ७

नीम के पतों का रस एक सेर ले और गौ का घृत पाव सेर ले प्रथम घृत को लोहे के बरतन में गरम करे और उस्में नीम के पतों का रस मिलावे जब ये दोनों खूब गरम हो जाय तब उस्में राल चार पैसे भर डाल कर पिघलावे जब वो पतों का रस जल जाय और गाढ़ा हो जाय - तब कत्था एक पैसे भर· नीला थोथा एक पैसे भर·

मुरदासंगएकपैसेभर· इनसबकोमहीनपीसकरउसमें डाल एकजीवकर पीछे कपड़ेमें लगाय घावके ऊपर लगावे तो घाव निश्चय अच्छा होय॥

मल्हम ८

रांगकी भस्मछेमाशे· सफेद मोम एक तोले· गुलरोगन दोतोले· इनसबको पीसकरगुल रोगनमें मल्हम बनावे और घावपरलगावेतो बहुतजल्दीअच्छा करे

मल्हम ९

जिस घावमेंसे पानी निकला करे उसके वास्ते ये मल्हम बहुत अच्छीहै॥

गूगल चारमाशे· रसोनएकमाशे· इन दोनोंको पानी में खूब घोटे पीछे चार माशे पीला मोम मिलाके घोटके मल्हम बनाले औरलगावेतो अच्छा होय।

मल्हम

उस्कलागर गूगल पांच माशे· इन दोनोंको चारतोले सिरसोंके तेलमें घोटके एकतोला पीला मोम मिलाके आंचपर धरे और राई· समुद्रफेन· जरावंद तवीजि· गंधक आंवलासार· पांच पांच माशे चूरन करके मिलावे और जिस स्थान पर फोड़ाकोतुरतपकाया चाहे वहां पर इसी मल्हम में गुलखतमी और उस्केपत्ते दोदो तोले लेकर महीन पीसकरमिलावे और गुनगुना करके फोड़े परलगावेतो फोड़ेको बहुत जल्दीपकाकर फोड़देगा॥

मल्हम ११

मीठा तेल और कूए का पानी पांच पांच तोले मिला के कसकुट के बासन में हाथ से खूब घोटे कि मही के तुल्य हो जावे पीछे। फिटकरी नीला थोथा लाल कत्था सफेद राल सवा सवा तोले महीन पीस कर उस्में मिलावे और हथेली से खूब रगड़े जब मल्हम के सदृश हो जावे तब चीनी के बासन में धर राखे और जब इस मल्हम को काम में लावे तब नोन की पोटली से घाव को सेका करे ये मल्हम बंदूक की गोली के घाव को और नासूर के घाव को और छुरे बुरबादी आदि के घावों को अच्छा करती है।

मल्हम १२

आध पाव कडवे तेल में पांच तोले पीला मोम पिघला के उस्में एक तोले बिरोजा मिला के पीछे दो तोले सफेद राल फिटकिरी भुनी छै माशे मुरदासंग छै माशे इनको भी चूरन करके मिलावे और खूब घोट के मल्हम के सदृश बनाकर लगावे तो सब घाव अच्छे होंय

अंड कोषों के छिटक जाने का यत्न॥

जानना चाहिये कि फतक रोग अंड कोषों के बढ़ जाने को कहते हैं और ये रोग अंड कोषों में तीन प्रकार से होता है एक तो यह कि किसी कारण करिके चोट लग जाती है इस कारण से भीतर अंडा बढ़ जाता है दूसरे क्योंकि किसी में बहुत मेल पड़ और वफार काम में आते हैं और

और इस रोग के वास्ते ये दवाई बहुत श्रेष्ठ है॥

दवा

हरीसोंफ· सूखी मकोय· खुरासानी अजवायन· बा
बूने के फूल· मूरिद के बीज· गेरू· ये सब दवा एक एक
तोले इन सब को पानी में पीसकर राखे और इस के
पहिले अंड कोषों को सोये के साग का वफारा देकर
ये लेप जो बना रक्खा है लगावे ऊपर से वही साग बांधे
जिस्का वफारा दिया गया है पानी न लगने दे॥

और एक कारण इस रोग के होने का यह है कि प
हले किसी की प्रकृति में तरी और शरदी की विशेषता
होती है इस कारण करि के हर एक जोड में बादी उत्पन्न
होजाती है और पेट के सब अवयवों को बादी अंड को
षों में भर पूर कर भीतर से अंडे को बढा देती है तो अज्ञा
नी लोग उस्की चिकित्सा पूछते फिरते हैं और किसी
जर्राह से नहीं पूछते कि ये वह फस्त या जुलाब बतला
वे वा कोई लेप तथा वफारा बतावे॥ और बहुत मूर्
ख लोग उस को तमाखू का पत्ता तथा आटे सूके फूल बत
ला देते हैं उन दवाओं के करने से रोग और भी बढ जाता है
उचित है कि हकीम हो या जर्राह जो रोगी की प्रकृ
ती के माफिक इलाज करे और पहिले फस्त खुल
वावे अथवा जुलाब देवे पीछे उस्पर ये लेप करे॥

लेप की विधि

नाखूना· सूखी मकोय· कछुए के अंडे की जरदी-

चार२नग ह्मीमोफ मूसेकीमेंगनी एकतोले इनसबको पानीमें पीस कर गरम् करिके लगावे और जो जराह की सम्मति होतो पहले बफारा देवे और बफारे की येदवा है॥

नुसखा

सोयेकेबीज सोयेकी पती चमेलीकीपती इमली की पती हरीमकोय पितपापड़ा येसबदवादोदो तोले इन सबको पानीमें औटाकर भफारा देवे और इसी का फोक बांधे जो कुछ आराम दीखे तो यही क रते रहे और जो इसमें से आराम न हो तो यह बफारा देवे॥

नुसखा

संभालूके पते सूखे महुए दोदोतोले इनदोनो वस्तुओं कोजल में औटाकर भफारा देवे॥ और ऊपर से इसी का फोक बांधे॥

और तीसरा कारण इस रोग का यह है कि बहुत से मनुष्य जल पान करिके दौड़ते हैं और यह नहीं जा नते कि इस्में क्या हानि होगी यह काम बहुत ही बु रा है और इसके सिवाय एक बात यह है कि किसी की प्रकृती में रतूबत अर्थात् तरी अधिक होती है और ज्वर की विशेषता में बाज मनुष्य पानी रुक कर पीते हैं और कोई २ बहुत जल पीते हैं इस बहुत जल पी नेसे दो वा तीन रोग उत्पन्न होते हैं एक तो यह कि नले बढ़ जाते हैं और दूसरा यह कि अंडकोषों में पानी उतर

आता है तीसरा यह कि तिल्ली फूल जाती है ऐसा करने से कभी कभी अंडकोष वढजाते हैं और इसकी चिकित्सा हकीमोंने बहुत पुस्तकों में लिखी है और हमारे मित्र डाक्टर साहवने इस की चिकित्सा इस प्रकार से लिखी है कि पहिले इसमें नस्तर लगावे और उसका सब पानी निकाल कर घावमें कोई ऐसी वस्तु लगावे कि घाव वहता रहे और सात आठ दिन के पीछे अच्छे होने का मल्हम लगावे और यह दवाई खिलावे क्यों कि भीतर से पानी का विकार दूर होवे तो घाव सूखकर जलदी अच्छा होजाता है और फिर कभी रोग उभरने नहीं पाता और वह खाने की दवा यह है॥

नुसखा

कुदरू गोंद· वंशलोचन लीला· जहरमुहरा खताई· केशर· रीठा· मुलेठी· ये सब दवा एक एक तोले ले अलसी छै माशे· खतमी के बीज छै माशे· इन सब को पीस कर चार माशे सवेरे खिलावे और ऊपर से एक तोले सहत और चार तोले पानी मिलाकर नित्य पिये और यह रोग इस कारण करि के भी होता है कि किसी मनुष्य के सोजाक होता है और यह इन्द्री में पिचकारी लगवाता है तो अंडकोषों में पानी उतर आता है तो वह पानी अंडकोषों में भीतर निजाव के समान मांस को काटता है जब वो मनुष्य सीधा सोता है तो पानी पेट की ओर ठहरता है तो इस कारण करि के

भीतरके मांस के कटिजाने करिके आंतें उतर आती हैं फिर ये रोग असाध्य होजाता है॥
और ये रोग इस कारण करके भी होता है कि कोई मनुष्य भोजन करिके और जल पीकर बल करे वा किसी से कुस्ती लडे अथवा दीवल पर चढे और कूदपडे इन के सिवाय और भी कितने ही कारण हैं कि जिन से आंतें उतर आती हैं पहले पेडू पर एक गुठली सी होती है फिर मनुष्य के चलने फिरने से कुछ दिनों के पीछे वह आंत अंड कोषों में रहती है जब वह मनुष्य सोता है तौ वही आंत पेट में चली जाती है और उठते समय लोटते समय तथा बैठते समय उसका शब्द होता है उस रोग की चिकित्सा यह है कि एक लंगोटा वा अंग्रेजी कपडा बांधा करैं अथवा वे उपाय करैं जो पानी के कारण के अंड कोषों के प्रकर्ण में वर्णन कर आये हैं कुछ आश्चर्य की बात नहीं है परमेश्वर की कृपा हो तो आराम होजावे॥

अथ सफेद दाग का यत्न

जिस मनुष्य के शरीर में फोडा तथा शस्त्रादि के घाव हुए हों और वे मल्हम आदि के लगाने से अच्छे होगये हों फिर उन घावों के निशान सफेद होगये हों तो ये दवा लगाना चाहिये॥

दवा

मैनशिल· मजीठ· लाख· दोनों हलदी· ये सब दवा बरा

घरलेमहीनपीस घृतऔरसहतमिलायदागकेऊपरलेप करेतौ घावकादाग मिटकर शरीरकीत्वचा के शदृश होजावेगा॥

सीपऔरझाईंका
यत्न

जो किसी मनुष्यके सुखपैतथा छातीपरया शरीरप र किसी जगहपरसफेदीलिये दाग होतौ बहुत सेमनु ष्य उसको बंदरफ कहतेहैं इसका यत्न येहै॥

दवा

सफेदसनाय· ककरोंदाकीजड· मूलीकेबीज· चौकि या सुहागा· इन सबको पीसकर जलमेंलेप करेतौ सरीरके दाग अच्छे होंय॥

अथवा

मूलीके बीजोंको पानी में पीसकर लगावे और धूप में बैठे इसीप्रकारसात दिन करे

विदितहो कि इस पुस्तक में मैंने फोडाफुनसीशस्त्रा दिकके घावआदिअनेकरोगोंके यत्न यथा क्रम से लिखे परंतु औखध बनानेकी विधि और हड्डीजोडने की विधि और तल वारकेउस घावकीजोचार अंगुल गहराहो और उस घावकीजो सवेरे हुआ और सामको अच्छा हो गया और गोलीके लगनेको वह विधि कि जिस्में घाव चीरा नजावे और गोली निकल आवे ये इ लाज मैंने इसवास्ते नहीं लिखे कि बिना उस्तादसे सीखे

नहीं आनेक्योंकिये काम बहुत कठिन है उसमें रन लिख नेका कारण ये है कि इस पुस्तकमें हरेक प्रकारके फोडोंका इलाज लिखा है इस वास्ते मुझको यकीन है कि इस पुस्तकको हरेक गृहस्थी गरीब तथा अमीर अपने घरमें जरूर रक्खेंगे क्योंकि इसमें बहुत फायदा होगा और जो कदापि इसमें वे रोग जो हमने कर चुके हैं उने लिख देते और कोई मनुष्य उन इलाजों को लिखा देख विन समझे इलाज करता और उस रोगीको नुकसान पहुंचाता तो पापका भागी मुझको भी होना पडता क्यों कि ये नेत्रादिकके स्थान बडे नाजुक होते हैं और इस के सिवाय यह भी बात प्रत्यक्ष है कि इस शरीरमें नेत्रों हीं सुखके दाता हैं

फस्तका प्रकरण

अब फस्तका वर्णन किया जाता है मनुष्यों को उचित है कि जिस दिन निराहार हो उस दिन फस्त खुलवावे अब फस्त खोलनेकी तारीखोंके गुण औगुण लिखते हैं दूसरी तारीख को फस्त खुलवानेसे मुखका पीलापन दूर होता है॥२

तीसरी तारीखको फस्त खुलवानेसे मुख पर पीलापन छा जाता है॥३

चौथी तारीखमें शरीरके दाग धब्बे दूर होते हैं॥४

पांचमी तारीखमें मनुष्य प्रसन्न रहता है ५

छठी तारीखमें मुखकी ज्योति तेज होती है॥६

सातमी को शरीर मोटा होता है ७
आठमी को निर्बलता उत्पन्न होती है ८
नवी को शरीर में खुजली होती है ९
दशमी में बल होता है १०
ग्यारवी में कंपन वायु दूर होती है ११
बारवीं तारीष में फस्त खोलना निषेध है १२
तेरमी में पीड़ा उत्पन्न होती है १३
चौदमी में नींद नष्ट हो जाती है १४
पद्रमी को बीमारी नहीं होती १५
सोलमी को बाल सफेद नहीं होते १६
सतरमी को मन अप्रसन्न नहीं होता १७
अठारमी को हृदय बलवान नहीं होता १८
उन्नीसमी को मस्तक प्रबल होता है १९
वीसमी को सब प्रकार के रोग दूर होते हैं २०
इक्कीसमी को प्रसन्नता प्राप्ति होती है २१
बाईसवी को कंठ पीडा और दंत पीड़ा दूर होती है २२
तेईसमी को निर्बलता अधिक होती है २३
चौवीसमी को शोकत नहीं होता है ॥ २४
पच्चीसमी को खफकान रोग दूर होता है २५
छब्बीसमी को गुरदे की तथा पसली की पीड़ा दूर होती है
सत्ताईसमी को बवासीर आती है २७
अट्ठाइशवी को सब प्रकार की पीडा नष्ट होती है २८
उनतीसमी को रक्त भजाना २९

तीसवींको मनको भ्रम औरवेकलीहोतीहै ३०
या प्रकारतीसों तारीषमें फस्त खुलवानेका शुभाशुभ
फल कह्या ये तारीष मुसल मानी जाननी ॥
अथवार फलानि
शनिवारको फस्त खुलवाना जनून आदि रोगों को दूरकरताहै ॥
रविवारको सब प्रकारके रोगों को दूर करताहै
सोमवारको रुधिर विकार को शांति करताहै
मंगलवारको शरीर की खुजली को शांति करताहै
बुधवारको निषेध कहाहै
बृहस्पतिवारको खपकान रोग को पैदा करताहै और
शरीर में वादी बढाताहै
शुक्रवारको जनून रोग को पैदा करताहै
फस्तोंके नाम्
जिन नसों की फस्त खोली जातीहै उन प्रसिद्ध नसोंके
नाम लिखतेहैं ॥
कीफाल १ बासलीक २ अकहल ३ हबलुलजरा ४
असीलम ५ साफन ६ अर्कोन्निसा ७ ये सात नस हैं
प्रकटहो किजो लोग प्रतिवर्ष फस्त खुलवाते वा
जुल्लाव लेतेहैं उनको अभ्यास वैसाही पडजाताहै औ
र ये अभ्यास अच्छा नहीं और फस्त का न खुलवाना उ
त्तम है क्योंकि वर्ष की असल ऋतु तीन है और रुधिर भी तीन
प्रकार परहोताहै और जो फस्त खुलानेकी अवश्यक

ताहोतो शीतकाल में मध्यान्ह के समय खुलवावे किउ
स ऋतु में रुधिर उसी समय चक्कर में होता है फिर ठहर
जाता है और कोई कोई हकीम यों भी कहते हैं कि रुधि
र जमजाता है सो बात झूठ है क्योंकि जो मनुष्य के शरी
र में रुधिर जमजावे तो मनुष्य जीवे नहीं किन्तु अंतर ग
भी होती है और रुधिर निकलने में ये परीक्षा नहीं हो
ती कि यह रुधिर अच्छा है या बुरा और उस समय में फ
स्त खुलवाने से मनुष्य दुर्बल हो जाता है क्यों कि बुरे
रुधिर के साथ अच्छा रुधिर भी निकलता है और ग्री
ष्म काल में रुधिर पृथक् २ होना होता है इस ऋतु
में संध्या के समय फस्त खुलवाना उचित है और सवे
रे खुलवाने में रुधिर कम होजाता है किन्तु खुश्की भी
अधिक होती है और बाज मनुष्यों के फस्त का अभ्या
स पड़जाता है और फिर वे फस्त न खुलवावें तो उनको
एक न एक रोग सताता रहता है और वर्षा काल में रु
धिर माइल होता है उस ऋतु में फस्त खुलवाना योग्य
नहीं और जो हकीम की सम्मति हो वैसा करे और जिन दि
नों में रुधिर कम होता है तब खुश्की के कारण करिके
कई रोग होजाते हैं और पीड़ा भी हरेक प्रकार की हो
ती है और जब फस्त लगवाने की बहुत ही आवश्यक
ता होती है उस वक्त दिन तारीख ऋतु और समय का कु
छ विचार नहीं किया जाता॥

इति दूसरा भाग जर्राही प्रकार संपूर्णम्

इश्तिहार

प्रकट हो कि इस पुस्तक जर्राही प्रकार को तीन हिस्सों में
पंडित रंगीलाल ने अपनी बुद्धी बल से बनाया और इस
के छापने का अधिकार मुझ श्यामलाल मुहतमि
म श्याम काशी प्रेस को दिया परंतु अब इस जर्रा
ही प्रकार तीनों हिस्सों का हक्क मुसन्नफी मुझ
श्यामलाल ने लाला हरि प्रशाद महतमि
म छापखाने काशी समान सहर मथुरा के
को दिया इस्से बिना आज्ञा लाला ह
रि प्रशाद के कोई साहब छापने व
छपवाने का प्रबंध न करें ॥+॥
अब लाला हरि प्रशाद ने अप
नी खुशी से एक बार छाप
ने की इजाजत मुझ श्या
मलाल को दी है फ
कत सम्बत +॥
१९४५
विक्रमी
सन
१८८८
ईसवी

सूचीपत्र

किस्साहीररांझा	-)	-)॥	रागमाला	=)	-)॥
किस्सागोपीचंद	-)	-)॥	राधाफाग	-)॥	-)॥
दीनवचनका	-)	-)॥	फागचमन	-)॥	-)॥
लावनीमनोहरबाग			वसंतबहार	-)॥	-)॥
प्रथमभाग	-)॥	-)॥	जुगल फाग	-)॥	-)॥
दूसराभाग	=)	-)॥	नगमेंदिलकश	।)	-)
किस्साजाहरपीर	=)	-)॥	भजनमुक्तावली	।)॥	-)
सिंहासनबत्तीसी	।)	-)	पावसप्रमोद	=)	-)॥
बैतालपचीसी	=)	-)॥	वीणारसमंजरी	।)	-)॥
शुकबहत्तरी	=)	-)॥	मनोजमंजरीतीनों		
किस्साछबीलीभटि			हिस्से	।-)	=)
यारी	-)॥	-)॥	भजनरामायण	-)॥	-)॥
प्रह्लादसांगीत	-)॥	-)॥	बूंदेमुहमुहांसे	=)	-)॥
किस्साढोलामारू	।-)	।)	कलिकौतुकनाटक	=)	-)॥
सांगसौदागर	-)।	-)॥	जैनारसिंहकीनाटक	=)	-)॥
विनयपत्रिकातुलसी			महाअंधेरनगरीनाटक	।)॥	-)॥
दासकी	।)	-)	हिंदीउर्दूकीलडाई	=)	-)॥
विनैपत्रिकासूरदास			लावनीगुलजार		
जीकृत	=)	-)॥	शकुनतुर्राचारोंभा		
षटऋतुप्रकाश	-)॥	-)॥	ग	।॥)	=)
रागमनोहर	-)॥	-)॥	बुढियाबखान	-)	-)॥
हरिवंशचौरासी	-)॥	-)॥	मनहरसागर	-)	-)॥
भजनसूरा राग	=)	-)॥	ज्ञानभाग	-)॥	-)॥

विज्ञापन

प्रकटहोकिआजकेजमानेमेंहमदेखतेहैंतोहरएकमनुष्यकोअनेकप्रकारकेरोगोंसेग्रसितदेखाक्योंकिकिसीकोज्वरादिकऔरकिसीकोफोडेफुन्सीऔरघावादिकरोगोंसेपीडितदेखाओरजोसौ१००मनुष्योंमेंसेदसमनुष्यविनारोगवालेहुएतोउनकीकुछगिनतीनहींहै सोमेंजानताहूंकिउनमनुष्योंकेभीकोईनकोईरोगजरूरहोताहैक्योंकिरोगवहुतप्रकारकेहैं औरइन्हीरोगोंकीशांतिकरनेकोवडे२मुनीश्वरऔरऋषीश्वरोंनेंअनेकग्रंथवैद्यककेरचनाकियेउन्हीग्रंथोंकीसहायतालेकरवैद्यलोगअनेकरोगियोंकेप्राणवचानेहैंपरन्तुजिसहिन्दुस्तानीवैद्यकोदेषाउसकोज्वरादिकरोगोंकाइलाजकरतादेषा परंतुआजकलकेजोप्रचंडरोग-आतशक-शोजाक-फोडा-फुन्सी-घावआदिकाइलाजकरतेनदेषाक्याजानियेंयेरोगउनलोगोंकीसमझमेंक्योंनहींआतेहैंऔरइसकेउपरांतयहभीवातहै किंयेरोगसुश्रुतआदिवडे२ग्रंथोंमेंलिखेहैसोउनकोकोईदेषतानहीं इसीलियेंमुझरंगीलालनेंसंस्कृतवोउर्दूकीवहुतसीपुस्तकोंकीसहायतालेकरयेजर्राहीप्रकारनामग्रंथरचाजोमहाशयमेरीमूढताकोक्षमाकरइसग्रंथकोदेखेंगेवेइससमयमेंअवश्यफायदाउठावेंगे यहग्रंथसर्वसुखदाईहै॥

इति

गार्हाप्रकाश

तीसरा भाग



श्यामकाशीयंत्रमें लाला
श्यामलालके प्रबंधसे छपा

आसाधरभाषा	।)	-)	यारियोंकी रीति पर		
वैद्यकसारभाषा	।)	=॥	ललितललित पदों		
वैद्यकसारसूचनी	।)	=॥	में लिखा है	।॥)	।)
वैद्य रत्नभाषा	।)	=॥	तथा मोटा कागज़ पो		
दिव्यगनभाषा	।)	=॥	डाकमहसूल का	।॥)	
वैद्यजीवनभाषाटी०	।)	-)	किस्सा तोतामैना के		
रामविनोदभाषा	।॥	=॥	आठोंभागजिसमें तो		
निघंटभाषा	।)	-)	ताऔर मैना के जवा		
वैद्यमंजरीभाषा	।)	-)	बसवाल इश्क में		
वैद्यमनोत्सवभाषा	।)	=॥	हुये हुए दिलचस्प		
अमृतसागरभाषा			लच्छेदार लती फों	।॥)	।)
मथुरा	॥)	-)	में वर्णन है		
शालहोत्र	।)	=॥	मजमें उल अशार जि		
इलाजुलगुरबा	।॥)	-)	समें हरेक शायरों की	।)	-॥
करावादीनसफाई	।॥)	।)	उमदा उमदा गजल		
औषधिकल्पद्रुम			लिखी हैं		
प्रथमभाग	।)	=॥	किस्सा हीररांझा	।)	=॥
औषधिसार	-॥	=॥	गोपीचंद	।)	=॥
मुजरबातवसीर	।)	=॥	दीनवचन का जिसमें		
इलाजुलइंसानी	।)	-)	दीनता के बहुत अ		
पुस्तककोतन			च्छे अच्छे दोहे लिखे		
वजावेदारवानीभा			है	।)	=॥
जिसमें १२ लीलारास			मनोहरवाग्यमय		

जर्राही प्रकाश

तीसरा भाग



श्याम काशी यंत्र में लाला श्याम लाल

के प्रबंध से छपा॥

मथुरा नया बाजार में॥

॥श्रीगणेशायनमः॥

अथजर्राहीप्रकार तीसरा भाग लिख्यते

जानना चाहिये किनेत्रोंमेंसातपरदे और तीन रतूबत होती है और एक असवा है इसी असवा को मनुष्य पुतली और तिल कहते हैं ये एक के सदृश बीच में सेरवाली है और इसीमेंसे सबको दिखाई देता है और बीचोंबीचमें आकर रतूबत जलादियातक पहुंची है इस रतूबत जलादियामें सब दिखाई देता है और असवेमें निकलकर दृष्टी की इन्द्रीतक पहुंचती है वह इनको पहिंचान सकती है और इसी रतूबत और असवे के बचाव के लिये और सब परदे और रतूबतें आस पास हैं॥

नेत्र के सातों परदों के नाम

मुलतहिमा १ करनिया २ इनबीया ३ अनकबूतिया ४ शबकिया ५ मसामियं ६ सलबीया ७

तीनों रतूबतों के नाम

बैजिया १ जलादिया २ जजाजिया ३

अब जिस तरह से नेत्रों में ये सात परदे और तीन रतूबत लगी हैं उनका बयान विस्तार से किया जाता है नेत्र का परदा जो बाहर की ओर हवा से मिला हुआ है अर्थात् नेत्रों में जो सफेदी दिखलाई देती है वह मुलतहिमा नाम पहिला परदा है और नेत्रों में जो गोल स्याही की चिन्ह दिखाई देता है अर्थात् जिसको पुतली कहते हैं वह करनियां नाम दूसरा-

परदा है और ये दोनों परदे आपस में मिले हुए हैं और इन के पीछे क

ो तीसरा परदा है उस का नाम इनबीया है यह परदा रंग दार है और

करनिया नाम जो परदा है ऊपर कह आये हैं उस में जो रंग है सो इसी

का है इस परदे के बीच में एक छिद्र है रोशनी के और चित्रों के नि

कलने के लिये और नेत्रों में पानी उतरने की जगह भी यही है॥

इस परदे के पीछे रतूबत बैज़िया है इस का रंग अंडे की स

फेदी के समान है इस रतूबत के पीछे परदा अनकबूतिया पा

यों मकड़ी के जाले के समान है॥

इसके पीछे रतूबत जलादिया है और इसके पीछे रतूबत ज़जा

जिया है जो पिघली हुई काच के सदृश है॥

और इसके पीछे परदा शबकीया है जो जाल के अनुसार है औ

र इन दोनों रतूबतों को घेरे हुए हैं॥

और इस के पीछे परदा मसीमिया है॥

और इसके पीछे परदा शलबीया है जो नेत्रों के ढेले से लगा

हुआ है ये सात परदे और तीन रतूबतों से नेत्रों का समस्त बना

व बना है सो इन परदों को एक के पीछे एक क्रम से जानना चा

हिये और हर परदों और हर रतूबतों में अलग अलग रोग हो

ते हैं उनका वर्णन आगे करूंगा॥

अथ रमद अर्थात् आंख दूखने की चिकित्सा

मुलतहिमा जो पहिला परदा है उस पर जो सूजन आजाती है उ

सको रमद कहते हैं और ये रोग पांच प्रकार का होता है वायका

१ पितका २ कफका ३ रुधिरका ४ रीहका ५

जो येरोग रुधिर से होतो उस्के लक्षण येहै कि नेत्र लाल और भा
री होजायगे और दर्द होगा और कीचड़ अर्थात् गीद इनसे बहु
२६
त निकलेगी॥

और जो बलग़म अर्थात् कफ़ से होतो रंग इसका सफ़ेद-
होगा आंखे फूल जायगी और कीचड़ आंसू इनसे बहु
त निकलेंगे॥

और जो ये रोग सौदा अर्थात् वात से होतो सूजन बहुत हो
गी परंतु कीचड़ नहीं निकलेगी और पलक नहीं चिपकें
गे और नेत्र बोझल होंगे और सिर में दर्द भी होगा॥

और जोये रोग रीह के कारण से होगा तौन कीचड़ निकलेगी औ
र न बोझल होंगी॥

उपाय इस रोग का यह है कि मवाद के अनुसार उसे साफ़ क
रे और फ़स्त और जुल्लाब से पहिले कोई औषधि नेत्रों में न डा
ले परंतु जब यह रोग हलका होतो दो तीन दिन पीछे बिना फ़-
स्त और जुलाब के दवा डालनी फायदा करती है॥

और दूसरे हकीमों का मत है कि इस रोग में शीरू नस की फ
स्त खोले कि सब प्रकार के रमद को माफ़िक आती है और जों
क लगाना भी गुण करता है इस रोग में मांस और मिष्टान्न
खट्टा- खारा- न खाय रमद रोग की आदि में नेत्रों को शीतल
जल लगाना नहीं चाहिये और हरदी में कपड़ा रंग करके
अथवा नीला कपड़ा नेत्रों के सनमुख लटकाना बहुत फ़ा
यदा करता है॥

अब इस रमद रोग के वास्ते अनेक प्रकार के अंजन व गोली

वो लेप आदि लिखता हूं॥

इलाज

जो ये रोग गरमी से हो तो अमीतकोल्ड की कीमा को दूध में घोलकर नेत्रों के ऊपर और भीतर लगाना अति लाभ दायक है और जो नेत्रों में पीड़ा ज्यादा हो तो थोड़ी सी अफ़ीम भी इसमें मिलानी अच्छी है॥

गोली

हकीम जालीनूस ने लिखा है कि आंख दूखने के वास्ते यह गोली बहुत फ़ायदा करती है फिटकरी भुनी हुई ३॥ तोले हलदी ७ माशे अफ़ीम ४ माशे इन सब को पक्के कागज़ी नीबू के रस में मिला कर लोहे की कढ़ाई में मंदी आंच से पकावे जब गाढ़ा हो जाय तब गोलियां बनाले फिर इस गोली को पानी में रगड़ कर नेत्रों के ऊपर पतला लेप करे और नेत्रों के किनारों पर आंजे-

सफ़ेदा का फाया

धोया हुआ सफ़ेदा १॥ तोले निशास्ता कतीरा बबूल का गोंद अफ़ीम ये चारों दवा दो दो माशे ले इन सब को महीन पीस कर इसका फाया बनाकर नेत्रों पर बांधे॥

अथवा

लोध · गेहूं की मैदा · घी ये सब चौदह २ माशे ले सबों का मोया बनाकर चार गोली बनावे और एक ठीकरा आंच पर रखकर उसमें एक गोली रखदे जब थोड़ी गरम हो जाय तब ठंडी कर नेत्रों पर बांधे इसी प्रकार चारों गोलियां बांधे तो बहुत जलदी फ़ायदा होय॥

लेप

हरड़की छाल· सेंधानोन· गेरू रसौत ये सब बराबर ले बने जलमें पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे तो सर्व नेत्रों के रोग जाय

अथवा

लोहे के पात्र में नीबू का रस डाले पीछे उस रस को कुछ के गा दा करे पीछे नेत्रों के ऊपर लगावे तो सर्व नेत्र पीड़ा जाय॥

अथवा

अफीम १माशे फूली फिटकरी १माशे लोध १माशे इन सब को नीम के रस में पीस लोहे की कढ़ाई में थोड़ा सा गरम करिके पीछे नेत्रों पर लेप करे तो नेत्रों का दुखना अच्छा होय॥

अथवा

मुलेठी गेरू सेंधानोन·दारुहलदी· रसौत ये सब बराबर ले इन्हें जल में महीन पीस नेत्रों पर लेप करे तो नेत्र पीड़ा जाय॥

पोटली

पठानी लोध १मा· फूली फिटकरी १मा· रसौत १मा· मुलेठी १मा· इन सब को महीन पीस ग्वार पाठे के रस में अथवा पोस्त के डोडे के पानी में वा जल में १माशे की पोटली करिके पीछे नेत्रों पर बार बार फेरे तो नेत्र पीड़ा जाय

अथवा नेत्रों में हवा लगने से शूल चले उसका यत्न

पठानी लोध को सेंक कर महीन पीस कपड़े में छानकर घ न में भूने पीछे उसे गरम पानी से सेंक करे तो नेत्रन का शूल बंद होय॥

अथवा

ग्वारपाठेकागूदा १मा॰ अफीम १ रत्तीभर पीसकर ग्वारपाठेके गूदेमें मिलाकर पोटलीवांधकर पानीमें भिजोकर नेत्रोंपर फेरे और एकबूंद नेत्रके भीतर टपकावे तौ नेत्र पीड़ा जाय॥

अथवा

लोध १मा॰ भुनीफिटकरी १मा॰ अफीम ५ रत्ती इमलीकी पती ४मा॰ इनसव को पीसकर पोटलीवनाकर वारवार नेत्रों पर फेरे॥

अथवा

इमलीकीपती॰ सिरसकीपती॰ हलदी॰ फिटकरी ये सव दवा पोनेदो माशेमहीन पीसकर पोटलीवनाकर पानीमें भिगोकर वार वार नेत्रों पर फेरे और थोड़ासा पानी इसका नेत्रों के भीतर जाने दे तौ नेत्र पीड़ा जाय॥

अथवा

पोस्तकाडोडा १नग अफीम १रत्ती लौंग २नग भुनीवेलगिरी ४माशे चनेकी वरावर हलदी थोड़ीसी इमलीकीपती इनसवकी पोटली वांधकर पानीमें भिगोकर नेत्रोंपर फेरे॥

अथवा

कपूर तीनभाग॰ पठानीलोध १भाग पीसकर पोटली वांधे और दो घड़ी पानीमें भिगोकर नेत्रोंपर फेरे और टपकावे॥

अथवा

लोध॰ फिटकरी॰ मुरदासंग॰ हलदी॰ सफेदजीरा॰ येसव चार २ माशे अफीम चनावरावर कालीमिर्च नग ४ नीलाथोथा उड़दप्रमा

णइनसबकाकूटछानकरपोटलीबांधकरनेत्रोंमेंफेरे॥

अथवा

बड़ीहर्डकाबक्कल·बहेड़ेकेबक्कल·आमला·रसोत·गेरू·इ मलीकीपती·अफीम·भुनीफिटकरी·सफ़ेदज़ीरायेसबब राबरलेकपड़ेमेंपोटलीबांधकरगुलाबजलमें·अथवापानीमें भिजोकरनेत्रोंपरबारबारफेरेतोनेत्रपीड़ाजाय॥

अथवा

सफ़ेदज़ीरा·लोधपिसाहुआ·भुनीफिटकरीपिसीहुईइनस बकोबराबरलेथोड़ेस्वारपाठेकेगूदेमेंमिलाकरपोटलीबां धकरपानीमेंभिगोकरनेत्रोंपरफेरे॥

अथवा

अफीमएकमाशे·फिटकरीभुनीदोमा·इमलीकीपती१मा इनसबकोमहीनपीसकरपोटलीबांधकरनेत्रोंमेंटपकाना भीबहुतगुणकरताहै॥

अथवा

फिटकरीएकमाशे·अलसीदोमाशे इनदोनोंकीपोटली बांधकरबारबारनेत्रोंपरफेरे॥

अथवा

इशबगोलाकालुआबनेत्रोंपरलगानेसेगर्मीकीपीड़ाजाय॥

जिसदिनमनुष्यकेनेत्रमेंपीड़ाहोयउसीदिनधतूरेकेपतों कारसगुनगुनाकानमेंटपकावेपरंतुजोदाहिनीआंखमेंपीड़ होयतोबायेंकानमेंरसडालेऔरबाईआंखमेंदर्दहोतोबायें कानमेंरसटपकानाफायदाकरताहै॥

और जो पच्चों की आंख दूखनी आवे तो नीम की पतीयों का रस ऊपर लिखी रीत के अनुसार कान में टपकावें॥
और जो दोनों नेत्रों में पीड़ा हो तो दोनों कानों में टपकावे॥

अथवा

निराग्वार पाठे का गूदा पीस कर सोते समय कान में टपकावे॥
ये दवा गरमी की नेत्र पीड़ा को शान्ति करती है चांदनी की पती मल कर उसका रस निचोड़ कर नेत्रों में टपकावे॥
अथवा हलदी पानी में पीस कर उसी प्रकार कान में टपकावे तो नेत्र पीड़ा जाय॥
दवा जो गरमी की नेत्र पीड़ा को फायदा करे वो हदाने का लुआब और धनिये के पतों का रस लड़की की मा के दूध में मिलाकर छानकर नेत्रों में टपकावे॥
अथवा नीबू का रस लोहे के खरल में लोहे के दस्ता से घोटे जब उस का रंग काला होजाय तब नेत्रों के आसपास पतला-पतला लेप करे॥
अथवा लोध आमले गाय के घी में भून कर ठंडे पानी में पीस पतला पतला लेप करे परंतु नेत्रों के भीतर न जाने पावे॥
अथवा बड़ी हर्ड़ का वक्कल गेरू रसोत छोटी हरड़ घिस कर लेप करे
अथवा सूखी इमली के चीयां निकास कर पानी में भिजो कर मसल छान कर तोन रती अफीम पाच रती फिटकरी इन दोनो को उसी इमली के पानी में डाल कर लोहे के बासन में पकावे जब रस गाढा होजाय तब सीप में धर कर पतला लेप करे और जो किसी समय में इमली न मिले तो उसके पतों का रस ले कर पतला लेप करे

अथवा सोंठ ३॥ माशे बबूर का गोंद ३॥ माशे इन दोनों को कूटछानकर पानी में पीस कर लेप करै॥

अथवा अमचूर लोहे के तवे पर लोहे के दस्ते से थोड़ा थोड़ा पानी के संग खूब पीस कर पतला लेप करै और नेत्र में टपकावै॥

अथवा बड़ के दूध को नेत्रों में आंजे॥

अथवा नीम के पत्ता और सोंठ बराबर लेके अलग अलग पीस कर छानकर चने प्रमाण गोलियां बांधे पीड़ा के समें पानी में लगावै

दवा जो नेत्रों की सुरखी और थपलगंध को गुण करै काली मिर्च ३॥ नग थोड़ी सी चूल्हे की माटी लाल जली हुई बांस के चोंगे अथवा चीनी के प्याले में खूब पीसे जब काली हो जाय तब नेत्रों में आंजे

अथवा अडूसे के पत्ते पीस कर टिकिया बना कर तीन दिन नेत्रों पर बांधे॥

अथवा कपास की पत्ती दही में पीस के नेत्रों पर लगावै॥

अथवा

अनार की पत्तियों को पीस कर उसकी टिकिया बनाकर सोने के समय नेत्रों पर बांधे॥

अथवा

गोभी को पीस कर उसकी टिकिया बनाकर नेत्रों पर बांधे॥

और जो इस रोग में नेत्र छाती और पेट में जलन होतो ये दवा करै मकोय· आमले· मुलेठी· नागरमोथा· खस· खीरा ककड़ी के बीज ये सब साढ़े तीन २ माशे मिश्री दो तोले ढाई माशे इन सब को कूटछान कर सात माशे नित खाय तो जलन मिटे॥

दवा· जो कफ को नेत्र पीड़ा को फायदा करै सहजने के पत्तों का

थोडासा रस सहत में मिला कर नेत्रों पर लगावे तीन दिन में आराम होय॥

दवा· जो बच्चों की नेत्र पीडा को गुण करे चाकसू रुइ ७ माशे- लाई १॥ माशे मिश्री १॥ माशे इन तीनों को महीन पीस छान कर छिडके और लाई न मिले तो ममीरा डालने ना उचित है॥

दवा· थोडी मेथी का लुआब थोडे से कनीर के संग टपकाना विशेष पीडा को आराम करता है॥

दवा· कटेरी के पत्ता पीस कर नेत्रों पर बांधे और पत्तों का रस नेत्रों में निचोडे तो भी गुण करता है॥

अथवा कच्चे आम को पीस कर नेत्रों पर बांधे॥

अथवा छिली हुई मुलेठी को कूट के थोडे पानी में पीस कर उस में रुई भिगो कर नेत्रों पर रक्खे तो नेत्रों की सुर्खी जाय

अथवा लोध १॥ तोले· बडी हडे का बकल ७ मा· इन दोनों को अनार के पत्तों के रस में पीस कर इस में रुई भिजो कर नेत्रों पर रक्खे इसी प्रकार तीन रात्रि पर्यंत करने से सब प्रकार की नेत्र पीडा को फायदा करे॥

अथवा

ये दवा नेत्रों की गरमी और खुजली को मिटावे और रमद के रोग को दूर करे त्रिफला का बकल जौ कुट करके रात्रि को पानी में भिजोवे फिर प्रात काल उस पानी से नेत्रों को धोवे जो यह औषधी एक दिन करे तो एक वर्ष पर्यंत पीडा न होय परंतु इतना ध्यान रखना चाहिये कि आंख दूषने नहीं होय॥

अथवा

जो मनुष्य बीस मुंडी निगल जाय तो एक वर्षतक ये रोग न होगा और जो मनुष्य चालीस मुंडी निगले उसको दो वर्ष न होगा और बहुतसे हकीम यह कहते हैं कि जो बुद्धी को दिन सूर्य्य उदय के समय एक अनारकी कली जो फूली हो उसे पेड़परसे मुंहसे तोड़कर निगल जाय तो एक वर्षपर्यंत आंख न दूखे और जो दो कली निगले तो दो वर्षतक न होगी॥

रतोंधका यत्न

जिस मनुष्यके रतोंदका रोग हो वो ये दवा करे कालीमिर्च - कचेला पीपल इन सबको बराबर ले महीन पीसनेत्रोंमें आंजे

अथवा

छोटीहर्ड सोंठ कालीमिर्च इन सबको बराबर लेकर पीस छानकर गोली बनाकर पानीमें घिसकर नेत्रोंमें आंजे॥

अथवा

ये दवा हकीम बूअलीसीनाकी ईजाद की हुई है सो लिखते है बकरीके कलेजका कबाब बनावे उसका जो पानी टपके उस को नेत्रोंमें लगावे तो भारी भी रतोंध जाय॥

अथवा

प्या जका रस नेत्रोंमें आंजे॥

सिरसके पत्तोंका रस नेत्रोंमें लगावै॥

अथवा

समुद्रफलकी गुठली बकरीके मूत्रमें घिसकर लगावे अथवा सेंधानोनकी सलाई नेत्रोंमें फेरे॥

अथवा दही केतोड मे थूक मिलाकर नेत्रों में आंजे॥

अथवा अदरक को पीस कर उस का रस निकाल कर नेत्रों में टपकावे॥

अथवा सोंठ को पानी में घिस कर नेत्रों में आंजे॥

अथवा काली मिर्च थूक में घिस कर लगावे॥

अथवा रोहू मछली का पित्ता नेत्र में लगावे॥

अथवा कसोंदी के फूलों का रस नेत्रों में लगावे॥

अथवा सहजने की नरम नरम डालियों का मात माशे सहत में मिला कर नेत्रों में टपकावे॥

अथवा सिरस के बीज चार तोले आठ माशे पीस कर चून में मिला कर रोटी पकावे इसी तरह तीन दिन रोटी पका कर खाय॥

अथवा हड़ और लाल मिर्च शहत में घिस कर आंजे॥

अथवा काली मिर्च रोहू मछली को पित्ते में भिजो कर सुखा लेजब सब पित्तों को मिर्चे सोख लें तब उन मिर्चों को घिस कर नेत्रों में लगावे॥

अथवा गधे का रुधिर तुर्त का निकला हुआ नेत्रों में लगावे

अथवा मनुष्य के कान का मैल और बडी हड़ का बकल बराबर पीस कर गोली बनावे पानी से घिस कर नेत्र में लगावे॥

अथवा सरकंडे को गांठ पर से तोड़ कर उस का खोखला जलावे जब चार अंगुल जलने रहे उस के दो टुकड़े करे वह लाल लाल तर जो उस में इकट्ठी हो गई हो उस को नेत्रों में लगावे वह धा तेजी के कारण करके पीड़ा और जलन पैदा करेगी परंतु दो घड़ी को आंसुओं के संग बहा कर रोग को शांति करती है॥

अथवा

हुक्केकेनैचेकीकीटअर्थात्नेचेकेभीतरजोकालीकीचड निकलतीहैउसकोनेत्रोंमेंआंजे॥

फसल्जहरअर्थात्दिनौं धीकीचिकित्सामें

दिनोंधीउसरोगकानामहैकिमनुष्यकोदिनमेंतोकुछदी खेनहीं औररात्रिमेंदीखे इसरोगकाउपाययहहैकिलड़की कीमाकादूधसिरपरमलेऔरनाकमेंभीटपकावेऔरठंडे पानीमेंगोतालगाकरनेत्रोंकोखोले॥

अथवा उन्नावकाशरबतपीवे उन्नावकेशरबतबनानेकी यहरीतिहै किउन्नाव एकहिस्सेचार हिस्से पानीमेंभिगो केऔटावेजबचौथाईजलजावेतबछानले फिरउसमेंदुग नीखांडालकरचासनीबनाले॥

अथवा उड़दकीदालखायाकरे कि इसकेखानेसेरुधिर गाढ़ाहोजाताहै॥

पलकोंकेरोगोंका बयान

इसरोगमेंनेत्रोंकेपलकमोटेहोजातेहैंऔरउनमेंखुजली औरखुषकीभीहोतीहै औरपलकोंकेबालगिरजातेहैं इ सकीचिकित्सायहहै किसरूनसकीफस्तखोले और मस्तककोपिछाडीपछनेलगानाउसकेपीछेऔषधिकाम मेंलाना॥

दवा जोआककेदूधमेंरूईभिगोकरसुखालेऔरदीयेमें

मीठा तेल भर कर उस रूई की वत्ती बना कर उस तेल में दीपक जोर का काजल पाडे फिर उस काजल को नेत्रों में लगावे और बाजी कि तावों में तेल के बदले घी लिखा है॥

अथवा धतूरे और भांगरे की पत्तियों का रस ले कर उस में रुई भिजो कर छाया में सुखा कर उस की वती बना कर मीठे तेल में जला कर काजल पाडे फिर इसे पानी से नेत्रों में लगावे॥

अथवा पुराने ढोल की खाल को कोयलों की आंच पर जला क र पीसे फिर गाले की रुई में रख कर वती बनावे और सरसों के तेल में जला कर काजल पाडे और नेत्रों में लगावे॥

अथवा आक की जड जला कर उस की राख पानी में मिला कर नेत्रों के आस पस पतला २ लेप करे तो नेत्रों का खुजली और खुश्की और पलकों के फूलने को दूर करे है बाजी पुस्तकों में लिखा है कि नीम के पतों का रस नेत्रों में लगावे तो भी यही गुण करते हैं॥

दवा· जो परवालों और बाफनी गल जाने को और नेत्रों से आं सू बहने को और आखों की खुजली और सुर्खी को गुण क रे है जस्त दो तोले चार माशे लोहे के बासन में कोयलों की आंच पर पिघला कर थोडा २ उस पर बथुए के साग का रस ट पकावे कि पीला वा सफेद भस्म हो जावे उसे महीन पीस कर नेत्रों में आंजे॥

अथवा ये दवा पलकों को गिर पडने को और बाफनी गल जा ने को गुण करे च कचूंदर की बीठ आधी कच्ची आधी पकी दो नों को पीस कर सहत में मिला कर पतला २ लेप करे॥

अथवा

सफेद विसखपरा की जड छाया में सुखाकर पानी में घिस कर नेत्र में लगावे॥

अथवा

मारवी का सिर जुदा करके सुखाकर पानी में पीस कर पतला लेप करै॥

अथवा

सीप जलाकर उसे पीस कर नेत्रों में लगावे॥

अथवा फटेरी के फलको पानी में औटाकर वफारा दे॥

अथवा कबूतर की वीठ को सहत में मिला कर पलक पर ले पलगावे॥

अथवा सांप की कांचली जलाकर तिल के तेल में मिला कर पलक पर पतला लेप करे॥

जिस मनुष्य की वाफनी गल जाय और पलक गिर पडें और किनारे लाल पड जांय उस मनुष्य के ये दवा लगाना उचित है॥

वबूल की पती एक सेर लेकर पांच सेर पानी में औटावे जब चौथाई पानी रह जाय तब छानकर दोनों वक्त नित्य पलकों पर पतला लेप करै थोडे दिनों में बिलकुल आराम हो जायगा॥

अथवा गधे की लीद को सुखा कर उसका पाताल यंत्र की राह से तेल खेंच ले और उस तेल को पलकों पर मल ले-

अथवा कदू अर्थात् घीया को जला कर उसकी राख सुर्मे की तरह नेत्रों में लगावै॥

अथवा पुराना कपड़ा लत्था रुई तीन वेर हल्दी में रंगकर सुखा कर फिर इसी प्रकार विनोले के पूद में तीन वार भिजोकर सुखा लें फिर इसकी वत्ती वनाकर सरसों के तेल में काजल पाड़कर उस काजल को नेत्रों में लगावे॥

अथवा

खपरिया · लीलाथोथा · कपूर · मिश्री इन सबको बराबर लेकूट छान कर पानी में खरल करके गोलियां बनावे फिर जब काम पड़े तब एक गोली पानी में घिसकर नेत्रों में लगावे

अथवा

कुदरू गोंद को काजल के समान पीसकर नेत्रों में लगाने से नेत्रों की जोति को बढ़ावे और नेत्र के घाव और जमे हुए रुधिर को और आंसू बहने को और याफनी गलजाने को और नेत्रों की सफेदी और खुजली को गुण करे और धुंध को भी दूर करता है और जो कुदरू गोंद का काजल बना कर लगावें तो भी यही गुण करता है इसके काजल बनाने की विधि यह है कि कुदरू गोंद को दीये में धरके जलावै और वाके ऊपर एक सरैया औंधी धरदे कि उसमें काजल पड़जाय तब उसको नेत्रों में आंजे ये दवा पलकों के झड़जाने को भी फायदा करती है॥

अथवा कुहारे की गुठली २ मासे वालछड़ ७ मासे इन दोनों को पानी में महीन पीस नेत्रों में लगावै तो पलकों का आना बंद होय॥

मोतियाबिंदकीचिकित्सा॥

जिसमनुष्यकेनेत्रोंकेआगेमच्छरतथामक्खीकेसदृश उड़तेहुए मालूमपड़ें दिनप्रतिदिनविशेषता होती जायतोजानियेंकि इसमनुष्यकेमोतिया बिंद होगा और इससे पीछे पुतलीबदलजाय औरनेत्रोंकीजोतिजातीरहे॥

औरबहुतसेहकीम इसप्रकारबयानकरतेहैंकि यहनजलाहैकि थोड़ा थोड़ा या एकहीबारनेत्रोंमेंउतरता है औरअबन्त्यानामजोपरदाहैउसकोछिद्रमेंठहररहता है जो यहगाढ़ाहोतो दृष्टिबिलकुलजातीरहतीहै औरजोपतलाहोगातो धुंधलादिखाई देगा इसकोहकीमलोगमुन शिरकीकहतेहैं जोनजलापूराछागयाहोगातोनेत्रों में कुछभीदिखाईनदेगा और पुतलीबदलीहुईदिखाई देगी परंतु मोतियाबिंदसेपहिलेखयालातकारोगअवश्यहोगा॥

खयालातकावर्णन

खयालातउसरोगकोकहतेहैंकिनेत्रोंकेआगेभुनगेसे उड़तेमालूमहोतेहैं येरोगतीनप्रकारकाहै एकतोमोतिया बिंदकेहोनेसेपहिलेहोताहै दूसरापेटकेबिगड़नेसे तीसरे दृष्टिकेतीव्रहोनेसे॥

मोतियाबिंदकेहोनेसेपहिलेजोहोताहै उसकीपहिंचान यहहैकि भुनगेसेहरदमदिखाईदेंगे और प्रतिदिनबढ़ते जायगे औरवह थोड़ेकनेत्रमेंहोंगे उपायइसकामोतियाबिंदकेइलाजमेंलिखेंगे॥

औरजोयेरोगपेटकेबिगड़नेसेहोतोपेटकेखालीहोने औरभरेहोनेपरअधिकादिखाईदेऔरजोनेत्रोंकेपदों औररतूबतोंकेबिगड़नेसेहोतोनेत्रमेंनहोंमेंक्योंकिउससेप हिलेकोईरोगहुआहोगाउपायइनदोनोंरोगोंकायहहैकि भंजेऔरपेटकोमवादसेसाफकरेऔरइसकेपीछेनेत्रके परदोंपरतूबतोंकामवादकारणकेअनुसारनिकालेऔर जोदृष्टिकेतीव्रहोनेसेहोतोउसकाचिन्हयहहैकिदृष्टिठी कहोगीऔरभंजेकीइन्द्रीसबतीव्रहोगीयहकोईरोगन हीहैवदनसेजोधुआंऔरहवामेंछोटीछोटीवस्तुउड़ती हुईदिखलाईदेतीहैं

मोतियाबिंदकायत्न

हकीमोंकोचाहियेकिइसरोगमेंप्रथमकनपटीपरगुल लगावेंजिससेघोरगजलजायऔरगुललगानेकेपीछे तीनदिनतकउसपरहरामसफजमलेंफिररोटीकोतिली केतेलमेंभिगोकरउसपररक्खेंऔरगुललगानेसेजितना पानीबहेउतनाहीअच्छाहैऔरभारीवस्तुकेखानेसेऔर मैथुनकरनेसेबचेऔरपानीउतरआनेकेपीछेजबएक बरसव्यतीतहोजायतबदेखेकिआंखमलनेसेपानीफै लकरफटजाताहैयानहींजोफटजायतोफस्तखोलेऔ रजुलाबदेपीछेदस्तकारीकरे॥

दस्तकारीउसकोकहतेहैंकिजोसलाईआदिकोआंखोंमें फेरकरजालानिकालेऔरनेत्रोंमेंचीराआदिकालगानाद स्तकारीकहतेहैंसोयेदस्तकारीकाइल्मऔरइसकीतर-

पीस करलगावे॥

अथवा कोआका पिना आधे सहद में मिलाकर खूब रगड़े फिर नेत्रों में लगावे॥

अथवा

निर्मली · हींग · फिटकरी · सफेदा · खपरिया · नीलाथोथा चौदह २ माशे इन सबको महीन पीस कर दहीमें घोटे कि आठ सेर दही उस्में समा जाय पीछे उसकी गोली बनावे और समय के ऊपर गोली को स्त्री के दूध में घिस कर लगावे॥

और जब जाने कि इस मनुष्य के मोतियाबिंद होने वाला है तब पहिले ही से यह दवा करे तो मोतियाबिंद को नहीं होने देता हई की मींगी को निर्मल पानी में पीस तीस पहर घोटे और गोलियां बना कर नित्य प्रति नेत्रों में आंजा करे॥

अथवा

दो नग कागजी नीबू का रस लेकर चार तोले गऊ के मक्खन में खूब मसल मसल के माखन में थोड़ा पानी डाल कर दो दिन राति धर दे फिर मक्खन को पानी से धोकर वाही प्रकार दो नीबू के रस में घोट कर पानी डाल कर के चीनी तथा सीसी में रक्खे और रवस २ के दो दानों की बराबर नेत्रों में लगाया करे तो मोतियाबिंद जाय॥ ऊपर लिखी रीति से माखन को पचीस दिन करे॥

अथवा काले सांप के मांस का घृत और शंख की नाभि नि र्मली इन्हे महीन पीस नेत्रों में अंजन करे तो मोतिया विं द का रोग जाय॥

अथवा मुर्गी के अंडे का छिलका मैनशिल· कांच· शंख की नाभि· चंदन· सेंधानोन· ये सब बराबर ले इने महीन पीस अंजन करे तो मोतिया विंद फूला आदि सब रोग जांय॥

अथवा काली मिर्च २ माशे· पीपल दो माशे· समुद्र फेन दो माशे· सेंधानोन दो माशे· सुरमा ३ माशे· इन्हे मही न पीस चित्रा नक्षत्र के दिन इस का सेवन अर्थात अंजन करे तो फूला खाज· काच से आदि ले सब नेत्र रोग जांय॥

अथवा खापरे को महीन पीस उस को जल में डबोय दे पीछे उस का पानी लेता जाय उसे जुदा राखे बारबा र का पानी ले और नीचे रहा जो खापरे का चूर्ण उसे ले नहिं और उस खापरे के पानी को जुदे पात्र में सुखा य दे जब उसकी पापड़ी होजाय पीछे उस पापड़ी में त्रिफले के रस की तीन पुट दे पीछे इस पापड़ी का दशमा भाग· कपूर मिलावे फिर इसको महीन पीस नेत्रों में अंजन करे तो नेत्रों के समस्त प्रकार के रोग जाय॥

अथवा सुरमे को अग्नि में गरम कर त्रिफले के रस में सात बार बुझावे पीछे स्त्री के दूध में इसी प्रकार सा

नवार वुभावे पीछे गौके मूत्र में सात वार वुभावे इसी प्रकार सुरमे को तपाय तपाय स्त्री के दूध में पांच वार वुभावे फिर इस को महीन पीस कर नेत्रों में अंजन करे तो सर्व रोग जांय॥

अथवा सीसे को अग्नि गलाय गलाय त्रिफले के रस में १०० वार वुभावे पीछे इसी तरह जल भांगरे के रस में ५० वार वुभावे पीछे इसी तरह सोंठि के रस में ५० वार वुभावे पीछे इसी तरह घृत में ५० वार वुभावे पीछे गोमूत्र में २५ वार वुभावे फिर सहत में २५ वार वुभावे फिर बकरी के दूध में २५ वार वुभावे फिर इस सीसे की सलाई बनावे फिर इस सलाई को जो मनुष्य नेत्रो में फेरे तो नेत्रों के सब रोग जाय॥

अब थोड़ा सा बयान इस मोतिया बिंद का और भी करते हैं नेत्र के तिल के ऊपर दही या मठे के समान बूंद आजाय और वह बूंद नेत्र के तिल को ढकले फिर उस मनुष्य को कुछ भी दीखे नहीं और उन नेत्रों में पीडादिक कुछ भी नहीं होय तब उस नेत्र का सलाई आदि से जल को उतारे परंतु जो मोतिया बिंद का आलाक च्चा होय तो शलाई से न उतारे जब जाला पक जाय तब शलाई नेत्रों में गेरनी उचित है और हकीम को तथा सतिये को चाहिये कि इतने मनुष्यों का जाला न उतारे सो लिखते हैं पीनस के रोग वाले का और जिस के कान और नेत्रों मे सूल चलता होय और श्रावण को

लिक और वैद्य इन तीन महीनों में जाला उतारिये नहीं और साधारण काल होय तब जुलाब दें शरीर को शुद्ध करै भोजन करे अच्छे निर्मल स्थान में रोगी को बैठावै जहां पवन का हिक नहीं होय मध्यान्ह के पहिले नेत्र के रोग को दूर करने वाले प्रवीण वैद्य तथा हकीम के निकट नेत्र का जाला शलाई से लिवावै वैद्य है सो रोगी को पालथी मार कर बैठावै और रोगी के पीछे चतुर मनुष्य को बैठावै वह मनुष्य दोनों हाथों से रोगी को पकड़े और हलने नहीं दे इस तरह उस को बैठावै पीछे उस रोगी के नेत्र में हकीम सलाई डाले चतुरता से अत्यन्त उसको आंखमें शलाई को फेरे सलाई से नेत्र के आन भाग में जाले को फोड़ सब नेत्र के जाले को दूर कर उस जाले में से नेत्र को तिलके ऊपर को वह विकार की बूंद ढल पड़े तब उस रोगी को सब वस्तु ठीक ठीक दिखाई दें शलाई के फेरने से पहिलें नेत्र को मुख की भाप से फूंक दें प्रस्वेद युक्त करलें और हकीम अपने अंगूठे से उस रोगी के नेत्र को मसल कर कोमल करले पीछे शलाई से जाले फोले और हकीम को भी चाहिये कि जाला उतारती वक्त अपने हाथ को हलने न दे इस विधि से नेत्र का जाला उतार पीछे रोगी को अच्छी बातों से प्रसन्न कर सुलाय दे पीछे उस रोगी की आंख के ऊपर घृत का फोहा बांधे और उस रोगी को सूधा सुलावे ऐसे स्थान में जहां पवन का चोंध आवे नहीं और रोगी का माथा आदि शरीर हिलने न दे और रोगी को

छींकखांसी डकार थूकना बहुत पानी दांतन करना स्नान करना खेद आदि इतने कर्म न करने दे और उस रोगी को अधोमुख सोने नहीं दे अत्यन्त हलका भोजन करावै॥

और घृतादि कगारिष्ठ वस्तु न खाने दे इस विधि से ७ दिन करे पीछे थोडा सा घृत डाल पतला हलका अन्न का हरीरा खवावै इसी तरह २ मंडल तक रक्खे कुछ कुपथ्य नहीं करने दे पवन तेज और महीन वस्तु आदि को देखे नहीं और जिससे नेत्रों में सीतलता होइ ऐसी दूब आदि वस्तु देखने दे तौ मोतिया बिंद आदि ले नेत्र के सब रोग जाय पीछे इस्को सीतल चस्मा लगावै तौ यह रोग फिर कभी नहीं होय॥

यह मैने थोडा सा सलाई का प्रकार लिखा है

अथ नेत्र और पलकों की खुजली का यत्न

जब मनुष्य की आखों में या पलकों में खुजली अत्यंत चलैतौ उस मनुष्य के रोग के आदि में शरू नस की फस्त खोले बाद उस्के खुजली दूर करने वाली औषधि करनी चाहिये॥

माजूफल·जवाहर्ड· इन दोनों को पीस कर नेत्र पर लेप करै तौ खुजली जाय॥

अथवा मनुष्य के मस्तक के बाल जलाकर महीन पीस कर नेत्रों में लगावै॥

अथवा अंडे का छिलका जलाकर महीन पीस लगावै॥

नीमकातेल

बहुधा करिके नेत्रों के खाज आदि रोगों को गुण करता है नीम के पत्तों को माटी के बरतन में धरकर कपरोटी कर इतनी देर आंच पर रक्खे कि जलकर भस्म हो जाय फिर उस भस्म को नीबू के अर्क में खरल करके नेत्रों में लगावे तो खुजली रोग जाय॥

अथवा सीसे का मैल नेत्रों में लगावे और सीसे का मैल उस कलाम से प्रयोजन है कि सीसे के टूक को जूती की तथा बांस की चोंगली पर गड़ने से दृष्टि में आवे उस कलोस को अंगुली में ले कर नेत्रों में लगावे॥

नेत्रोंकीजोत घटजानेकी चिकित्सा

पूर्वरूप इस के विशेष हैं बहुधा नेत्रों की जोति वृद्धावस्था में घट जाती है मस्तक के क्षीण और निर्बल पड जाने के कारण करिके इसमें आराम नहीं होता परंतु चिकित्सा करना उचित है क्यों कि बढ़न जाय इसकी चिकित्सा मस्तक की सफाई और बल प्राप्ति करना है॥

और जो कारण इस का रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोलनी चाहिये और तूतिये को कच्चे और खट्टे अंगूर के रस में भिजो कर आंख में लगावे॥

और जो बलगम के कारण से हो तो उसके पकाने के पीछे बलगम का जुलाब दें और वासलीकून नेत्रों में लगावे॥

वासलीकूनबनानेकीविधि

चांदी का मैल २॥ माशे समंदर फेन २॥ माशे शफेदा कलई नमक सुरको कालीमिर्च नौसादर पीपल प्रत्येक आधा-जला हुआ तांबा ३॥ माशे लोंग छडीला अर्थात् छारछबी ला प्रत्येक १॥। माशे कपूर नोरती तेजपात जुन्दविदस्तर-बालछड सुरमा प्रत्येक ३॥ माशे इन सब को पीस कर सुरमा बनाले॥

और इसका कोई और कारण होतो उपाय उसका-करे अथवा कच्ची पक्की सलगम खाना नेत्रों की जोति बढाती है॥

और बालों में कंघी करना बूढ़ों के नेत्र की जोति बढजा नको गुण करता है नित्य कांघी को दिन में पांच चार द फे मस्तक में फेरना नेत्रों की गरमी को हरती है॥

और शेख रईश अपनी किताब में यह वर्णन करता है कि निर्मल जलमें फेरना और उस्मे नेत्रों का खोले रहना भी गुण करता है और थोडी सी उलटी करना और पांव दबाना और मसलवाना भी कम जोत को गुण करता है और विशेष रुदन करना और गले के पिछा री पछने लगाना और अत्यन्त भूखा रहना और अति मैथुन करना और सूया मसूर और जोजो अजीर्ण कर ने वाली वस्तु हैं वहसब औगुण करती है॥

अथवा गुल मुंडी का शरबत पीवे तो नेत्रों की जोति घटजाने को और मस्तक की नरी को गुण करता है और ऊपरको गरमी नहीं चढने देता है॥

गुलसुंडी का शरबत की विधि:

मुंडी के फूल पाव भर ॥ तीन पाव बूरा सफेद गुलमुंडी को राति को डेढ़ सेर पानी में राति को भिजो कर प्रात काल औटावै जब तीसरा भाग रहे तब छान कर बूरा मिला कर चाशनी करै फिर इसमें से चार तोले नित्य पीवै और मुंडी का अर्क भी नेत्रों को बल प्राप्ति करै है॥

अथवा

सात माशे सोंफ को कूट छान कर उसमें सात माशे सफेद बूरा मिला कर नित्य राति को खाकर सो रहे इसी प्रकार नित्य खाकर सो रहे और सोंफ का अतर सोंफ के अर्क में से निकाल कर नेत्रों में लगावे तो नेत्र की कम जोति को गुण करता है॥

चमेली की गोली

चमेली के फूलों की डंडी तोड़ कर बराबर की मिश्री मिला कर खरल करके नेत्र में लगावे नेत्र की कम जोति को गुण करती है॥

अथवा

खपरिया छे माशे टूक टूक करिके दो तीन नीबू के रस में भिजोवे और माटी के बासन में धर कर कपरोटी करि के आरने कंडों में धरकर आंच लगादे फिर निकाल कर सीतल कर महीन पीस कर नेत्रों में लगावे तो कम जोरी जाय॥

अथवा रीठा की गुठली की मींगी नीबू के रस में घोटे

और गोली बनाले फिर नित्य प्रातःकाल थूक में घिस के नेत्रों में आंजे॥

अथवा जवाहर्डे और मिश्री दोनों को बराबर ले कर पीस कर गोली बनावे फिर इस गोली को घिस कर नेत्रों में आंजे तो नेत्रों की जोति को और लाली को गुण करे

सलाई

सीसे को आंच में गला कर त्रिफला के पानी में बुझावे फिर मेह के पानी में बुझावे फिर सहत में बुझाकर सलाई बनाकर नित्य प्रातःकाल नेत्रों में फेरे तो नेत्रों के सब प्रकार के नेत्र रोग जाय और नेत्रों की जोति को बढावे यह दवा बहुधा करि के नेत्रों के रोग मात्र को गुण करती है और जो इसे हमेशा करता रहे तो अत्यंत चैन रहै जिस समय सोते से उठे उस समय अपने थूक को नेत्रों में आंजे तो उस मनुष्य के नेत्रों में कभी रोग नहीं होय॥

अथवा हींगोटा की मींगी पानी में पीस कर नेत्रों में लगावे तो जोति बढे॥

अथवा निर्मली पानी में घिस कर नेत्रों में लगावे तो जोति बढे॥

अथवा सिर्स के पत्तों के रस में गजी भिगो कर सुखावे याही प्रकार तीन चार करि के फिर उस कपडे की बत्ती बनाकर चमेली के तेल में काजल पाड राखे इस काजल को नेत्रों में लगाया करे तो जोति बढे॥

अथवा प्याज के रस में शहद मिला कर नेत्रों में लगावे
तो नेत्रों की जोति घट जाने को और नजले आदि नेत्र रो
गों को गुण करै॥
सुरमा॥ जो नेत्रों की जोति की कमी को गुण करै मिरच
२६ नग और पीपल ६० नग और चमेली की कली ५०
नग तिल के फूल ८० नग इन सब को महीन पीस खर
ल करके सुरमा बनाकर लगावे॥
अथवा काली मिरच १ माशे बड़ी हरड़ का बक्कल-
दो माशे हलदी छिली हुई तीन माशे इन सब को गु
लाब जल में तथा पानी में घोट कर सुरमा बनाकर-
आखों में लगावे तो जोति बढ़े॥
अथवा अखरोट दो नग हड की गुठली तीन नग इन
दोनों को जला कर पीसे और चार नग काली मिर्च मि
ला कर खरल करि के सुरमा बना कर नेत्रों में लगावे
तो नेत्रों की जोति को बढ़ावे॥
काजल॰ जो नेत्रों की जोति को बलवान करै नीम के
फूलों को छाया में सुखा कर उन की बराबर कलमी-
सोरा लेकर सुरमा सा करि के आखों में लगावे तो फू
ली और नेत्रों की सुर्खी को भी गुण करे
अथवा धुनी हुई रुई आक के दूध में भिगो कर छाया
में सुखावे फिर इस की बाती बना कर सरसों के तेल में
जलाकर धीरज ताई से काजल पाडकर नीम के सोटे
से जिसमें तांबे का पैसा जड़ा हो फूल कांसी के बरतन में

गुलाब जल के साथ घोटे फिर सलाई से नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति बढ़े॥

मांडा-फूली-नाखूना-जाला इनका यत्न॥

जानना चाहिये कि जाला और फूली ये दोनो एक पर दा हैं जो नेत्रों में मवाद भरजाने से उत्पन्न होते हैं और नाखूना नेत्र के पडे कोए की तर्फ उत्पन्न होता है और जाला सफेदी है जो नेत्र की स्याही पर उत्पन्न होती है और बाजे हकीमों ने इस तरह से बयान किया है कि करनिया नाम जो परदा है उसपर कोई वस्तु उत्पन्न हुई होगी और यह नेत्र के तिल पर होकर फिर नेत्र की सबरी स्याही पर फैल जाता है इस का उपाय यह है कि समंदर फेन को पानी में घिस कर आंख में लगावे तौ थोडे दिनों के बाद अच्छा हो जायगा और जो म वाद पुष्ठ होतो भेजे को मवाद से साफ करे और उसजा ले को नाहर की तरह जीभ से चाटना अति गुण दा यक होता है॥

और बाजे हकीम कहते हैं कि इस रोग में शरू नस की तथा ललाट देश की नस की फस्द खोले पी छें नेत्रों की जोति बढाने वाली दवा लगावे॥

गोली- जो नेत्र की पीडा और नाखूना और बहुत आंसुओं का बहना इतने रोगों को गुण करती है और हर्र के फलों का रस २४ माशे ले कपडे में छान नीम के घोटे से जिसमें पैसे

गढा हो उस से घोटे और उस्में दस कागजी नीवू का रस मिलाले फिर उसे खूब खरल करे फिर जब गाढा हो जाय तब उस की गोली बनाके नेत्रों में लगावे॥

गोली

ये गोली मांडा और फूली तथा जाले को गुण करे सिरस के बीजों की मींगी खिरनी के बीजों की मींगी इन दोनों को सिरस के पत्तों के रस में मिला कर खरल करै फिर इस की गोली बनाकर स्त्री के दूध में घिस कर लगावै॥

गोली

जो फूली और जाले को गुण करै जंगी हर्ड़· पलासपापड़ा सेंधानोन· लालचंदन· इन सब को कूट छान कर गोली बनाकर पानी में घिस कर नेत्रों में लगावे॥

गोली

जो फूली और चाफ निगल जाने और मोतिया विंद को गुण करै॥ समंदर फल की मींगी रीठा की मींगी खिरनी के बीजों की मींगी और काली हर्ड की गुठली की मींगी इन सब को बराबर ले पीस छान नीवू के रस में घोट गोली बना नेत्रों में लगावै॥

गोली

लाल चंदन एक तोले भुनी फिटकरी इन दोनों को बराबर ले पीस छान ग्वार के पाठे में खरल कर गोली बनावे और समय पर उस गोली को पानी में घिस कर नेत्रों में लगावै॥

गोली

जो नाखूने और सफेदी नजले के पानी उतरने आदि को गुण करे॥ सावन पांच तोले दश माशे नीला थोथा ३॥ माशे राल ३॥ माशे सावन के छुरी से टूकटूक करिके लोहे के वासन में रख कर आंच पर गलावे उसके पीछे नीला थोथा पीस कर मिलावे फिर राल को महीन पीस कर सावन में मिलावे और उस वासन को आंच पेही रहने दे फिर उसको लोहे के दस्ते से घोटे जब काला होजाय तब उतार ले फिर इसमें से एक खसखस के दाने की बराबर सीपी में साड़ कर नेत्र में लगावे फिर इसी प्रकार इसको तीन दिन बीच में देकर नेत्रों में लगावे

अथवा

हलदी·दालचीनी·आंबा हलदी·येसब चौदह २ माशे ले नीम के पत्ते पौने दो तोले कूट छान कर छः महीने के बछड़े के मूत में दो पहर साड़ कर गोली बनाले और छाया में सुखाले फिर गुलाबजल में घिस कर लगावे॥

दवा

हलदी लंबी चौडी एक गांठ ले उसमें छेद कर के गेहूं की दो कच्ची रोटियों में बीच में उस गांठ को रख कर तवे के ऊपर आंच पर पकावे जब रोटी जल जाय तब हलदी को बाहर निकाल ले फिर इस हलदी को फिटकरी के संग घिस कर नेत्रों में लगावे

गोली॥ बारहसींगे के सींग को प्रथम पानी में पीसे फिर नीबू

केरसमैंरखूबपीसकरकालीमिर्चकेप्रमाणगोलीयनावे
फिराघिसकरनेत्रोंमेंलगावे॥

सुरमा

जोजालेकोदूरकरेऔरमोतियाबिंदकोखोवे मिश्रीदोभ
रा सेंधानोनएकभागउनदोनोंकोमिलाकरपीसेऔरसु
रमासमानकरकेनेत्रोंमेंलगावे

अथवा

कबूतरतथामुरगीकीबीठकोनीबूकेरसमेंखरलकरिके
तांबेकेबासनमेंरक्खेफिरनेत्रोंपरलगावै॥

अथवा

अबाबीलकीबीठशाहदमेंमिलाकरनेत्रोंमेंलगावेइस
दवाकोतिब्बफरेदीवालेनेउतमलिखीहैइससेजालाजाता

अथवा

बारहसींगेकासींगदूधमेंपीसकरनेत्रोंमेंलगाना॥
अथवा सेंधेनोनकीसलाईबनाकरदिनमैंकोईबारने
त्रोंमेंफेरेतौजालाजाय॥
अथवा चिड़िया की बीठ पीस कर नेत्रों में लगावे तौना
खूना दूर होय॥
अथवा कटेरीकीजड़कोनीबूकेरसमेंघिस करनेत्रोंमें
लगावैतौखुधजाय॥
अथवा अरहरकीजड़कोघिसकरनेत्रोंमेंलगावे
अथवा बड़कादूधनेत्रोंमेंआंजे
अथवा बैंगनकीजड़पानीमेंघिसनेत्रोंमेंलगावेजालाजाय॥

अथवा कडवीतोरई केबीजोंकीमींगी मीठेतेलमेंघिसकर लगावेतो फूलीजाय॥

अथवा समुद्रफेन पीसकर लगावे और वाजे समुद्रफेनको तेलमेंलगाना लिखते हैं॥

अथवा पुत्रवती स्त्रीकेदूधमें मिश्री पीसकर लगावे तो वच्चोंकी फूलीजाय॥

अथवा सोंठ फिटकरी सेंधानोन इनतीनों को वरावर लेकूटछानकर नित्यप्रतिनेत्रोंमेंलगावेतोफूलीजायऔ रजाला मिटे।

अथवा गधीकेखुरको आगमेंजलाकरमहीन पीसकर लगावेतोजालाजाय॥

अथवा चमेली के फूलोंकी गोलीजोजोतिघटजानेकेइला जमेंलिखआयेहैवहजालेकोभीदूरकरतीहै।

अथवा लाल प्याज का रस नेत्रों में लगावे तो नाखू नादूर होय॥

अथवा तेजपातमहीनपीसनेत्रोंमेंलगावेतोनेत्रोंकाजा लाजाय॥

अथवा अत्यंतकलमीसोरामहीनपीसकरउस्में थोडीसी हलदी मिलावेकि जिससेरंगतआजावे फिरउसकोने त्रोंमेंलगावेतोनेत्रोंकीजोतिवढे औरनाखूना औरजालेआ दिवहुतरोगोंकोगुणकरै॥

अथवा विसखपरेकीजड औरसफेदाये दोनोंपीसक रलगावेतोनाखूनाजाय॥

अथवा रेंडी एक नग मिश्री ३॥ मासे चाकसू शुद्ध दश मासे इन सबको महीन पीसकर आखों में भरै तौ फूली जाय

अथवा

जंगाल · बबूर का गोंद · सफेदा काशकारी इन सबको बराबर ले महीन पीसकर पानी में लंबी गोली बनाकर पानी में घोलकर लगावे तौ फूली जाय॥

अथवा

आमले दो तोले चार माशे जोकुट करिके दो घंटे पानी में औटावे और फिर छानकर नित्य तीन बेर नेत्रों में टपकावे तौ जाला दूर होय॥

सुर्मा

जो फूली जाले नाखूने आदि को गुण करे हरी चूरी १४ माशे महीन पीसकर नीबू के रस में खूब घोट सुखाय नेत्रों में लगाया करे॥

अथवा

नौसादर · फिटकरी · इन दोनों को पीस महीन कर नेत्रों में लगावे तौ जाला · फूली · रतोंधी जाय॥

अथवा प्याज आध सेर ले उसे कूटकर उसका रस निकाल उसमें कपड़ा भिगोवे फिर सुखावे और धूल मिट्टी का बचाव रक्खे फिर उसकी बत्ती बनाकर पाव सेर मीठे तेल में जलाकर उसका काजल पाड़ रक्खे फिर इसको नेत्रों में लगावे तौ जाला जाय॥

दवा ये मिश्र नि वैद्यों की बनाई हुई जो इस पंद्रह दिन काम

मेंलावेतो फूलीदूरहोवे जायफलकावकल नीमकीछाल गिलोय कडवाचिरायता· लालचंदन पित्तपापडा रवस गुलमुंडी ये सवदवाएकएकतोलाले फिर इनको पानीमें औटाकरछानले फिरइसमें चौदहमाशे निर्मल शहद मिलाकरपीवे॥

अथवा लालचंदन हाउवेर· नीमकीछाल· आमाहलदी· त्रिफला· अडूसा ये सवदोतोलेचारचारमाशे कुटकी ३॥तोले अमलतासका गूदा चारतोले आठमाशे कडवा चिरायता पौनदोतोला सोंठि २४माशे गीलोय २४माशे नागरमोथा चौदहमाशे सवको कूटकर नित्य दोतोले चारमाशे लेकर तीनपाव पानीमें औटावे जव आधपाव रहजाय तव छानकर दोतोलेचार माशे निर्मल शहद मिलाकर पीवे इसी प्रकार चौदह दिन सेवन करे तो फूलीजाय

मुंडीपाक

येपाक नेत्रके रोगोंको अतिगुणदायक है त्रिफला कावकल १तोले जवाहड १तोले कावलीहड का वकल १तोले पित्तपापडा १तोले मुलेठी १तोले औरसवकीवरावर गुलमुंडीले औरहड आदिको घीमें भूनले फिर सवको कूटपीसतिगुने कंद की चासनी कर उसमें सवदवा मिलाकर पाक वनाले फिर इसमें से दो तोले नित्यखाय औरऔर अत्यंत गुणकारी है॥

अथवा सोंठि· हडकीछाल· कुलत्थ· खापरा· फिटकडी· माजूफल ये सव औषधि वरावरले और भीमसेनी

कपूर कस्तूरी अफीम मोती ये एक ओषधि की तोल से आधी ले पीछे इनसब को खरल में महीन पीस नीबू के रस में पांच दिन खरल कर पीछे इसकी गोली बना कर गोली को पानी में घिस अंजन करे तो तिमिर जाय और इस गोली को स्त्री के दूध में घिस अंजन करे तो फूला पटल जाय और सहत में घिस अंजन करे तो नेत्र से जल गिरना बंद होय और गोमूत्र में घिस अंजन करे तो रतोंधी जाय और केले के रस में घिस अंजन करे तो नेत्र के मास की वृद्धि जाय॥

अथवा

नीला थोथा ४ टंक फूली फिटकरी ४ टंक भिगोयी पीपल के बीज ४ टंक मिश्री आधा सेर इन सब को महीन पीस का जल समान कर नेत्रों में अंजन करे तो फूला ढलका जाय

अथवा

शंख की नाभि बहेडे की मींगी हरड की छाल मैनसिल पीपल मिरच कूठ बच ये सब ओषधि बराबर ले महीन पीस बकरी के दूध में खरल कर गोली बनावे फिर इस गोली को घिस अंजन करे तो तिमिर नेत्र की मास वृद्धि पटल कांच रतोंधी फूला इतना रोग जाय॥

अथवा हलदी नीम के पत्ते पीपल मिरच बायविडंग नागर मोथा हड की छाल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस बकरी के मूत्र में तीन दिन खरल करे फिर इसकी गोली बना छाया में सुखा गोमूत्र में घिस अंजन करे तो तिमिर को दूर करे और पानी में घिस अंजन करे तो कांच को दूर करे और सहत में घिस

अंजन करैतौ पटलजाय ओर स्त्री के दूधमें घिसकर अंजन करैतौ फूलाजाय॥

अथवा हडे की छाल १भाग बहेडे की छाल दो भाग आमले ४भाग सितावर दो टके भर मुलैठी दो टके भर तज दो टंक में धानीन ४टंक इनसब की बराबर मिश्री ले फिर इनसब को एकत्र करि महीन पीस दो टंक सहत ओर घृत के साथ ७८ दिन खाय तौ तिमिर पटल कांच रतौंधी फूला नेत्रों से जल बहना सबल वाय आदिरोगजाय॥

अथवा त्रिफला का रस एक सेर जलभांगरे का रस एक सेर अडूसे का रस एक सेर सितावर का रस एक सेर बकरी का दूध एक सेर गिलोय का रस एक सेर आमले का रस एक सेर कमलगट्टा· मुलैठी· त्रिफला· पीपल· मुनक्कादाख· मिश्री· कटेली इनसब का रस आध सेर ले इनसब में दो सेर गौ का घृत डालकर मधुरी आंच से पकावे जब सब रे रस जलजांय ओर घृतमात्र आय रहै तब इस घृतको किसी अच्छे बासन में धर राखे फिर इस घृत में से दो टके भर नित्य खाय तौ नेत्र का तिमिर· कांच· फूला· सबल वायु आदि सब रोग नेत्रों के जाय यह नुसखा तिब्ब अकबरी वाले ने बहुत सही करके लिखा है ओर लिखता है कि मैंने इस दवा को कई दफे अजमाया है॥

अथ बच्चों के नेत्र दूखने आमें उनका यत्न

इनका निदान तौ वही है जो पहिले हम रन्दरोगका कह आये हैं

जब बच्चों की आंख दुखने आवें तो तीन दिन तक कुछ दवा न
लगावें बाद उसके ये दवा करे॥

दवा

फिटकरी को पानी में पीस उसमें रुई भिजो कर फाया बना
वे और उस फाये को करछी या बेली में घी गरम कर के उसमें
पकावै जब उस फाये का चटकना बंद हो जाय तब ठंढा क
र के रक्खे और पोतनी माटी को पानी में भिगो कर उसकी टि
किया बनावे प्रथम उस टिकिया को फाये से चार घड़ी पहि
ले बना कर किसी पानी भरे माटी के बरतन के चिपका दे
जब उसमें तरी पहुंच जावे तब उतार ले प्रथम उस फिटक
री के फाये को नेत्र पर रक्खे बाद उसके उस माटी की टिकि
या को फाये पर रख ऊपर से कपड़े की पट्टी बांधे इसी प्रका
र तीन चार दिन करने से बच्चों का रमद रोग जाय

अथवा

गेरू को पानी में घिसे और उसमें थोड़ी फिटकड़ी भी डार ले
फिर इस गेरू में रुई को भिगो कर फाये बनावे और उन फा
यों को ऊपर लिखी रीति के अनुसार नेत्रों पर रखे और ऊप
र से वही टिकिया माटी की धरे जो ऊपर की दवा में वर्णन
कर आये हैं फिर कपड़े की पट्टी बांध दे इसी तरह तीन-
चार दिन करे तो नेत्र अच्छे होंय॥

अथवा

दूध की मलाई को रुई के फाये पर रख नेत्रों पर बांधे और
ऊपर से वही माटी की टिकिया बांधे तो नेत्र अच्छे होंय॥

दवा

रसोत में थोडी फिट करी डाल पानी में घिस नेत्रोंके ऊपर पतला लेप करे तो फायदा करे॥

दवा

बबूल की कोमल पतियां लाकर उन्हे महीन पीस कर उस की टिकिया बनाकर माटी के बासन के जो पानी से भरा हो उसके चिपका दे बाद दो घंटे के उस टिकिया को दूषती आंख पर बांधे तो सब प्रकार का रुदजाय॥

जानना चाहिये कि हमने जो फायों के ऊपर माटी की टिकिया बांधना लिखा है उसका कारण यह है कि जब बच्चों की आंख दुखने आती हैं तो आंखे फूलजाती हैं तो इन टिकियों के बांधने से आंख फूलने नहीं पाती॥

और जब बच्चों की आंख चिपक जाय तो उसका उपाय यह है कि सवेरे के समय हथेली पर थोडा सा तेल और पानी रख कर दूसरी हथेली से खूब रगडे जब यह गाढा हो जाय तब उसे नेत्रों के मले फिर नेत्रोंको कपडे से पोंछ दे परंतु पानी से न धोवे क्योंकि दूषती आंख में पानी लगाना हानि करता है॥

दवा

ये दवा बालक और जवान सबको फायदा करती है और शाह हजरी का अजमाया हुआ नुसखा है रसोत और बडी हर्ड इन दोनों औषधियों को पानी में घिस कर नेत्रों पर लेप करें तो वात पित कफ इन तीनों प्रकार के दोषों

की आंख दूषनी को फायदा करै॥

दवा

हड़की छाल सेंधानोन गेरू रसोत ये सब बराबर ले फिर इन्हे जलसे महीन पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे ये दवा बालक और जवान सबको मुफीद है॥

अथवा

नीबू के रस को लोहे के पात्रमें डाले पीछे उस को लोहे के घोटे से घोट कर गाढा कर नेत्रों पर लेप करै तो सब प्रकार के नेत्र दूषते अच्छे होयं॥

और ये लेप कई दफे अजमाया है और बालअवस्था-से लेकर सब अवस्था वालों को फायदा करता है॥

लेप

अफीम एक माशे फूली फिटकरी एक माशे लोध एक माशे इन तीनों को नीबू के रस में पीस लोहे के पात्र में थोड़ा गरम करे पीछे इस का नेत्रों के ऊपर लेप करे तो-नेत्रों का सब प्रकार से दूषना बंद होय॥

अथवा

पठानीलोध एक माशे फूली फिटकरी एक माशे रसोत एक माशे मुलेठी एक माशे इन्हे महीन पीस ग्वारपाठे के रसमें अथवा पोस्त के पानी में एक माशेभर की पोटली करै फिर इस पोटली को नेत्र पर वार वार फेरे।

अथवा

और जो दूषते हुए नेत्रों में वायु भरजाय और नेत्रों में शूल

चले तौ उसके वास्तें ये दवा लगावे पठानी लोध को मही
न पीस कपड़े में छान कर घृत मैं भूने पीछें उस का गरम
पानी से सैंक करे तौ नेत्र का शूल मिटे॥

अथवा

खाने का सूखा चूना महीन पीस कर घृत में मिला कर
दोनों कन पटियों पर लेप करे तो शूल बंद होय॥

अथवा

जिस मनुष्य का सौदा अर्थात् बादी से नेत्र दूषने आय
हो उस को यह दवा है नीम के पतों का रस पानी डाल
काढे फिर उस्में लोध को पीस गरम करे पीछें उस का-
आंखों पर लेप करे तौ नेत्र अच्छे होय॥

दवा

जो रक्त पित और वायु से आंख दूषे तौ ये दवा करे कि
स्त्री के दूध की आठ बूंद नेत्र में नित्य प्रति डाले तौ ग
रमी सरदी सब प्रकार की नेत्र पीड़ा जाय॥

अथवा

जो वायु से नेत्र मैं शूल चले और दवा करने से आराम
न होय तौ उसके ललाट की नस की रुधिर कढावे अ
थवा भौं के ऊपर दाग दे तौ शूल बंद होय॥

अथवा

सहंजने के पतों की पींडी नेत्रों के ऊपर बांधे तौ कफसे
उत्पन्न नेत्र शूल बंद होय॥

अथवा

नीमकी हरी हरी पतियों की पींडी बनाकर नेत्रों पर बांधे तो कफ जनित शूलबंद होय॥

और जो गरमी से नेत्र में शूल चले सो ये दवा करे आमलों को पानी में पीस उसकी पींडी अर्थात् टिकिया बनाकर नेत्रों पर बांधे तो गरमी का शूल जाय॥

अथवा

त्रिफला लोध इन्हें कांजी के पानी में पीस पीछे घृत में तले फिर इस की पींडी बनाकर नेत्रों पर बांधे तो गरमी का शूल मिटे॥

और जो कदापि नेत्रों में रूले चले और सूजन होय और खुजली भी चले तो उस के वास्ते ये दवा करनी योग्य है॥

सोंठ नीम के पते इनमें थोड़ा सेंधा नोन मिलाय महीन पीस इसकी पींडी नेत्रों के बांधे तो नेत्रों के रूले खुजली सूजन आदि रोग जाय॥

निरोग नेत्रोंकी पहिंचान

नेत्रोंमें कुछ भी पीड़ा न रहे और कुछ भी खाज और सूजन नहीं होय और आंसू आदि आवे नहीं नेत्रों का वर्ण अच्छा होय और सब महीन वस्तु भी यथार्थ दीखने लगें तो उस मनुष्य के नेत्रन का रोग गया जानिये यह परीक्षा है और जब तक नेत्रों में रोग रहे तब तक इतनी वस्तु नहीं करिये सो लिखते हैं नेत्र रोग वाला सुरमा

और काजल आदिका लगाना घृत और कसैली वस्तु और खटाई आदि कुपथ्य का त्यागन करे और स्त्री संग न करे

और बाजे बाजे हकीम कहते हैं कि नेत्र रोग वाला मनुष्य पान और गरिष्ठ करने वाली वस्तु भी न खाय औ रस्नान भी न करे इतनी वातों का मनुष्य का जरूर त्याग करना योग्य है॥

ढलके का इलाज

जो यह रोग गरमी से होतो सुरमा लगावे और सरदी से हो तो वासली कून लगावे और जो आखों की कमजोरी से होतो जली हुई पीली हर्ड और सेंधा नमक ओर माजूफल बराबर कूटछान कर आंख में लगावे॥

और जो थोडी थोडी देर में आंसू वहकार थम रहा करें तो उस्को हिंदी में मतना कहते हैं उपाय उस्का यह है कि पहिले मवाद को निकाले और उस्के पीछे आंसू वहाने वाली दवा लगावे जैसें वासली कून और सियाफह अहमर लगाना उत्तम है

वासलीकूनवनानेकीविधि

चांदी का मैल २॥ माशे समंदर फेन २॥ माशे सफेदा कलई जोद नमक तुरकी काली मिर्च नौसादर पीपल ये सब दवा साढे चार चार माशे जलाहुआ तांवा३॥ माशे लौंग २॥ माशे बड़ीला २॥ माशे कपूर ६ रत्ती तेजपात ३॥ माशे जुंद विदस्तर ३॥ माशे वालछड़ ३॥ माशे इन सबको महीन पीस सुरमा बनाले और लगावे॥

स्याफहअहमरकीविधि

धुलाहुआसादना २१ माशे ववूलकागोंद १७॥ माशे जला हुआतांवा ७ माशे जंगालजलाहुआ ७ माशे अफीम १॥ माशे एलुआ १॥ माशे केशर १॥ दांग सुरमकी १॥ दांग इन सवको पीस करलंवी गोली वनाले और वक्तजरूर तपैपानीमेंघिसकरनेत्रोंमेंलगावै॥

गोली

येगोलीनेत्रकीखुजली और ढलकेकोगुणकरै वडीहर्डकीगुठलीकीमींगी दोभाग वहेडेकीमींगी तीनभाग आमलेकीगुठलीकीमींगी तीनभाग इनतीनोंकोमहीनपीसकररखे और समयपरपानीमेंघिसकरनेत्रोंमेंलगावैतो नेत्रोंसेपानी वहनावंदहोय॥

गोली

सिरसकेवीज· कालीमिर्च· वनफ्सा· इनसवकोवरावरलेअलग अलग कूटपीसकर सहदमें मिलाकरगोलीवनावेअोर घिसकरनेत्रोंमेंलगायाकरै तो नेत्रोंसेपानीवहनावंद होय॥

गोली

जवाहर्ड· माजूफल· वालछड़· वडीहर्डकावकल· इनसवकोवरावरलेकर पानीमेंपीसकरगोलीवनाकर नेत्रमेंलगावैतो ढलकावंद होय॥

रिगड़ा

येरिगड़ाकोयेकीसुर्खी और ढलका और नैत्रोंकी लाली

और खुजली को गुण करे समुद्र फेन सफेद कत्था भुनी फिटकरी बडी हर्ड का वक्कल रसोत अफीम नीलाथोथा सब बराबर लेकर निर्मल जल में घोटकर गाढा बनाले॥

सुरमा

जो ढलके को बहुत जलदी फायदा करै बडी हर्ड की गुठली की भस्म दश माशे माजूफल सेंधा नोन ये पांच पांच माशे इन सबको महीन पीसकर सुरमा बनाले फिर नेत्रों में आंजे तो ढलका बंद होय॥

और बाजे हकीमोंने बडी हर्ड की भस्म की जगह छोटी हर्ड की भस्म लिषी है॥

सुरमा

कालानोन काली मिर्च ये दोनों एक एक भाग पीपल दो भाग समुद्र फेन आधा भाग सुरमा सबसे तिगुना लेकर महीन पीस कर नेत्रों में लगावे तो ढलका बंद होय॥

दवा

घोडे का ऊपर का दांत पानी में पीस कर नेत्र में लगावे तो ढलका बंद होय॥

दवा

ये दवा ढलके को विशेष गुण करती है भुनी हुई रुई की तीन बत्ती बनाकर दो तोले धतूरे के रस में दो बार भिगोके सुखावे और फिर आक के दूध में भिगोकर छाया में सुखा कर रेंडी के तेल में चिराग भर कर उसी उन्ही बतियों को भिगोकर जलावे और काजल पाड कर उसमें थोडी भुनी फिट

करी मिलाकर थोडा नीला थोथा मिलावे और नित्य प्रति नेत्रों में लगाया करे॥

अथवा

कुदरू गोंद को गुलाब जल में मिला कर उस्में नेत्रों को धोवे और गुलाबजल न मिले तो पानी ही ले लेवे तोभी ढलके को फायदा करता है॥

अथवा

आबनूस की लकडी को घिस कर नेत्रों में लगावे तो ढलका बंद होय॥

अथवा

बडी हर्ड का वक्कल और चाकसू दोनों बराबर ले पीस कर नेत्रों में लगावे॥

अथवा

बबूल के पत्तों का काढा कर रस काढे पीछे रस को और गाढा करे फिर इस्में सहत मिलाय अंजन करे तो नेत्र से पानी बहना बंद होय॥

अथवा

निर्मली के फल को पानी में घिस अंजन करे तो नेत्र का पानी बहना बंद होय॥

अथवा

निर्मली के फल को सहत में घिस थोडा कपूर मिलाय अंजन करे तो नेत्र निर्मल होय॥

॥२॥

कंजेकाइलाज

जो ये रोगजन्म सेही होय तो इस का इलाज नहीं है औ
र जो किसी रोग के कारण से होय तो इस को वरसुल
एन कहते हैं इस के उपाय कारण के अनुसार करें॥

जो यह रोग तरीकी अधिकतासे होयतो देह को-
और आखों में जो मवाद है उसे साफ करे और जो खु
स्की से हो तो तरी पहुंचावे॥

और जो यह रोग खुस्की से होतो उस्से दिखाई
नहीं देता इस्मे और मोतिया विंदमें इतना ही अंतर
है कि मोतिया विंद में पहिले भुनगे से उडते दिखाई-
देते हैं और इस्में यह वात नहीं होती आंख दुवली हो
जायगी और दस्त कारी से लाभ न होगा यह रोग जो वचों
की आंख में हो जायतोजवान होने पर जाता रहेगा॥

और एकडाक्टरने अपनी किताव में लिखा है कि
जो वालक जन्म लेते समय ही कंजी आखों वाला हो
तो मनुष्य को चाहिये कि उस लडके को उसी वक्त से
काली स्त्री का दूध पिलावे॥

अथवा

शेख रईसनें अपनी किताव में लिखा है कि इन्द्रायन
के ताजा फलों में सलाई डुवोकर नेत्रों में फेरे और इ
सी प्रकार गाजर का छिलका महीन पीसकर लगाना
अति गुण करता है॥

और इसरोग का इलाज हिंदुस्तानी पुस्तकों में

तो कहीं लिखा नहीं है परंतु यूनानी ग्रंथो में लिखा है सो हमने भी अपनी इस किताब में लिख दिया है परंतु हम को तो इसमें विश्वास नहीं हैं॥

नासूर का इलाज

ये रोग नाक के कोए की तर्फ होता है जब उसे उंगुली से दबे तो उस्में से राध और लोहू निकलता है उसका उपाय हम इस किताब के दूसरे भाग में भी लिख चुके हैं और कुछ यहां भी लिखते हैं

प्रथम इस रोग में फस्त वो जुलाब देना उत्तम है उस के पीछे स्याफह गर्व घाव पर लगावे परंतु दवा लगाने से पहिले घाव को रुई से पोंछिले॥

और घाव को साफ कर डाले और औषधि के प्रभाव के लिये मुर्दार मांस को काट डाले और जो इससे आराम न होतो दाग दें और मरहम अस्फेदाज लगावें॥

स्याफेगर्व की विधि

गुलुआ· कुंदर· इंजरूत· दम्मुलअखवैन· गुलनार· सुरमा· फिटकरी· ये सब दवा एक एक तोले ले और जंगाल तीन माशे ले इन सब को महीन पीस कर खड बनाले और वक्त पर घाव में टपकावे और ये स्याफे की विधि किसी किताब में तो लंबी गोली बना कर रखना और वक्त जरूरत के पानी में घिस कर काम में लावें और बाजी किताबों में रिगड़ा को स्याफा लिखा हैं॥

मरहमसफेदाजकिविधि

रोगनगुलचारतोले मोमएक तोले ले प्रथम मोम को रोग न गुल में पिगला ले फिर इसमें इतना सफेदा मिलावे कि वह रोगन और मोम दोनों को उठाले फिर इसमें अंडे की सफेदी मिलावे और कभी थोड़ा सा कपूर भी मिला लेते हैं और इस की मरहम बनाकर काम में लावे

और दूसरी रीति यह है कि फकत सफेदा और सफेद मोम और रोगन गुल इन तीनो को ही मिलाक र मरहम बनाले॥

और बहुत से हकीम येभी लिखते हैं कि ये नासूर बंद होकर फूलजाता है तो उस वक्त कनौंचे के बीज स्त्री के दूध में या गधी के दूध में पकाके थोड़ी सी केसर मिलाकर लगावे इस से फूट कर फिर बहेगा-

अथवा

सेलखड़ी को रेंडी के तेल में घिसे जब वह गाढा होजाय तब उसमें रुई की बती भिजो कर नासूर में रखना फायदा करता है।

अथवा

रीये की कीचड़ को कपड़े में लगा कर नासूर पर रक्खें

अथवा

बथुऐ के साग के पत्ते तबासुर का फूल इन दोनों को लेकर घी में घोट कर नासूर पर लगावे॥

अथवा

हुक्के के नेचे में से जो कीचड़ निकलती है वह और अफीम लोनो बराबर लेकर पीस कर बती बना नासूर पर रक्खें

अथवा

समुद्र सोख नरम पीस कर पानी में मिला कर बती बना कर नासूर पर रक्खें॥

अथवा

नीम के पत्ते और पैमंदी बेर के पते पीस कर कपड़े में लगाकर नासूर पर रखना फायदा करता है

अथवा

सफेद कत्था एलुआ इन दोनों को पीस कर नासूर पर लगाना अत्यंत गुण करता है॥

अथवा

कुत्ते की जीभ काट कर जलावे और उस की राखको मनुष्य के थूक में सान कर लगावे॥

अथवा

मिलोय हल्दी इन दोनों को कूट कर मीठे तेल में औटावे फिर छान कर नासूर पर लगावे॥

अथवा

सहद को औटावे जब गाढ़ा हो जावे तब थोड़ा समुद्र फेन मिलाकर उस्में रुई की बती भिगो कर नासूर पर रक्खे॥

अथवा

मसूर को बीनले और अनार का छिलका इन दोनों-को बराबर ले पीस छान कर लगावे॥

अथवा

रसौत गेरू जवाहर्ड पोस्त के डोडे इन सब को पीस कर नासूर पर लेप करने से शीघ्र फायदा होय॥

अथवा

असल हीरा हींग को सिरके में घोट कर नासूर पर गुनगुना लेप करै तो नासूर जाय॥

अथवा

पुरानी कच्ची भींत का कोयला गरम पानी में पीस कर नासूर पर लगाना अति गुण करता है॥

परवाल का यत्न

जो वाल पलक के उलटे हो कर आंख में जा लगें और चुभा करें उसे यूनानी हकीम शरमुनकलिब कहते हैं और जो वाल पलक के सिवाय अपनी जगह के भीतर की तरफ निकलें और उन के चुभने से आंख खटका करै उसको शरज़ायद कहते हैं॥

उपाय उसका यह है कि पहिलें मवाद को साफ करे फिर वह वाल जो नये आगे हैं उनको चीमटी से उखाडे और उस ठौर पर नौसादर रगड दें तो फिर कभी परवाल न होंगे॥

अथवा

चेंदी के अंडे और इंजीर का दूध और उस कलीली का रुधिर जो कुत्ते या ऊंट के वदन में होती है या हरे मेंडक का रुधिर या हुदहुद जानवर का पित्ता उस जगे पर मलै तो परवाल जाय॥

अथवा

ये कोई वस्तु न मिले तो केवल चेंटी के अंडे ही मलना काफीहै

अथवा

समंदर फेन को ईशव गोल के लुआब में पीस कर लगाना बाल उत्पन्न होने की जगह को भस्म कर देना है

अथवा

बालों को उखाड़ कर उस जगह खटमल का रुधिर लगावे॥

अथवा

बालों को उखाड़ कर नौसादर को बकरी के पित्ते में मिला कर पतला लेप करै॥

फकी

ये दवा नेत्रों के बहुत से रोगों को गुण करै है मुंडी की जड छाया में सुखा कर उसकी बराबर बूरा मिला कर सात मा शे नित्य पंद्रह दिन तक खाय॥

तुरफा का यत्न

तुरफा उस रोग को कहते हैं कि मुल्तहिमा जो पहिला परदा है उस्पर रुधिर की फुटकी सी पड़ जाती है उपाय-उस्का यह है कि कबूतर या बतक का पखा पर उखाड़ कर उस्के रुधिर की बूंद अकेली या गिले अरमनी के संग नेत्र में टपकावे॥

अथवा

कुन्दर को जलाकर उस्की धूनी आंखों को देतो ये रोग जाय॥ और जो उस्का कारण अति पुष्ट हो तो पहिले फस्त करै औ र फछने लगावे और जुल्लाब दे॥

सबल का यत्न

सबल रोग उसका नाम है कि जिस रोग में आंखों की रगें लाल और मोटी हो जाती हैं और खुजली होती है जो इसमें आंसू भी निकलें और पलकों में पानी भरा रहे तो उसको सबल रत्व कहेंगे और जो ऐसा न हो तो सबल यावित कहेंगे उपाय इसका यह है कि शरीरू नस की फस्ल खोले पीछे माथे की रग और कोए की रग की फस्ल खोले और जो ये रोग थोड़ा हो तो स्याफ़ेदीनार आंख में लगावे और जो रोग भारी हो तो स्याफ़े अहमर और वासलीकून लगावे और सबल याबिस में सुरमा और औषधों के लगाने से पहिले और पीछे गरम स्थान में बैठ कर स्नान करना अवश्य है जबरमद और सबल दोनों मिले हुए होंय तो दोनों के चिन्ह पाये जायंगे ऐसे रोग में न गर्म औषधि न ठंडी औषधि देना चाहिये परंतु मवाद को निकाले और अंडे की सफेदी आंख पर मले तो इन दोनों प्रकार के मिले रोग को फायदा करै और स्याफ़े अहमर की बनाने की विधि पहिले कहि आये हैं॥

स्याफ़ेदीनार की वि॰

जर्दचोबा· धोया हुआ सादना· एलुआ· स्याफ़े मामीरा· बराबर लेके सबको पीस रगड़ा बनाले॥

और वासलीकून बनाने की विधि पत्रा २७ में पहिलें लिख आये हैं॥

और स्याफ़े अहमर की विधि सफे ५५ में पहिलें लिख आये हैं॥

मुल्तहिमाकीसूजनका
यत्न

मुल्तहिमाजोनेत्रकापहिलापरदाहै वह फूलजावेतोउस्का उपाय यह है किजो यहसूजन रीहकेकारणसेहोयतो चिन्ह उस्कायहहै किअचानकउत्पन्न होगा और पहिले आंखके कोनेमें मक्खी या मच्छर के काटनेकीसीजलन होगी और जोबलगम अर्थातकफसे होतो होलेहोले उत्पन्न होगा औ रपीडा बहुत नहोगी और अंगुलीके दवाने से चिन्हरहिजा यगा और जो मवाद बहुत और पतला होगा तो वह चिन्ह देरतक न होगा उपाय उस्का यह है कि जैसा मवाद होवे साही जुलाबदें और ठंडी रमद रोग की औषधें काममेंला वे और जोये रोग रीहसे होतो तीन दिन तक उपाय न करें क्यों कि विना औषधिकियेही आपसे आप आराम होजाता है ये इसरोग का निदान कहा॥

मुल्तहिमाकीखुजलीका
यत्न

इस रोग में बहुधा पलकें लाल और घायलहोजाती है उ पाय उस्का यह है कि नमकीन और चरपरा भोजन न खा य और फस्त खोले तथा जुलाव दें और जस्त को नर कुल पर रगडकर नेत्रों में लगावे और गर्म पानी से मुख धावे॥

दोकतुलमुल्तहिमाकायत्न

जिस मनुष्य की आंख में कोये की ओर बडे और लाल और काले दाने पड जाते हैं उस्को दोकतुल कहते हैं और जो का

ले दाने पड़जाते हैं उस्को दोकतुलकहते हैं
उपाय उस्का यह है किजो मवाद अधिक होतौ उसे साफ करे नहीं तो गुलाब में कपड़ा भिगो कर आंख पर रखना अच्छा है और अइससे अधिक उपाय की आवश्यकता इस रोगके वास्ते और कोई नहीं है॥

नेत्रों में जलन होने का य०

जोये रोग मवाद के कारण से हो तो उस मवाद को निकाले और जो कोई मवाद नहीं होय तो त्रुलिया को कच्चे आरख हे अंगूर के रस में भिगो कर सलाई से आंख में लगावे॥

अथवा

हरी कासनी के पत्ते कूटकर उस के रस को तेल में मिलाकर लगावे और जो इस्में थोड़ा कपूर भी मिला लेय तो अति लाभ दायक है॥

अथ आंख में किसी वस्तु के पड़जाने से आंस्व कड़के उसका यत्न॥

जिस मनुष्य की आंख में कोई वस्तु गिर पड़े तो उस मनुष्य को चाहिये कि आंख को मले नहीं क्योंकि जो कोई कड़ी वस्तु हो तो आंख में मलने से चुभ जाय तो बड़ी हानि करती है॥

उपाय उस्का यह है कि आंख को गरम पानी से धोवे और स्त्री का दूध नेत्र में डाले॥

और जो वह वस्तु दिखाई देती हो तो उसे रुई के फाये से-

यानर्मकपडेसेउठासे॥

अथवा जोवस्तुभीतरचिपटीहुईहोयतोऔर वह छूटन सकैतोनिशास्तेकोपीसकरआंखमेंभरदेऔरथोडीदेर तकवैठरहैंइससेवहवस्तुनिशास्तेमेंलिपटजायगीफिर उसेअलगरुईसेउठाले॥

और जोकोईभुनगायामच्छरआदिआंखमेंगिराहोयतो मुलतानीमाटीयागेरूपीसकरआंखमेंडाले॥

और थोडीदेरतकआंखकोबांधदेवहउसमेंलिपटआवेगा फिरउस्कोरुईसेउठाले॥

अथवा

जवमनुष्यकीआंखमेंभुनगायामच्छरआपडेउससम यमनुष्यकोचाहियेकिदसवीसकदमउलटाचलेतो तोभुनगायामच्छरनिकलजायगा॥

अथवा

औरजोशीशेकाचूराआदिआंखमेंजापडेउससमयव हुविमटीजोपरवालआदिउखाडनेकेवास्तेवनवाईजा तीहै।उससेनिकालेंया।जिसप्रकारसेवनेनिकालडाले औरनिकालनेकेपीछेंस्त्रीकादूधऔरअंडेकीसफेदी मिलाकरआंखमेंडालेइससेपंदकरनेमेंआंखनहींचि पटेगी॥

आंखमेंकिसीप्रकारकीचोट लगजायउसकायत्न॥

जोचोटकेलगनेसेआंखपैलालीयासूजनहोतोउपायउस

का यह है कि फस्त खोले और मुलैयन अनुकूल फंचा का पिलावे

इस के पीछे अंडे की सफेदी रोगनगुल में मिला के आंख पर लगाये और जो पीडा जाने के पीछे चोट का चिन्ह अथवा मिलाहट रहिजाय तो धनियां पोदीना और काला पत्थर जो काली मिरचों में निकलता है और हरताल इन को पीस कर लेप करे इस्से नीला हट जाती रहैगी॥

अथवा

तलवार या पत्थर की चोट मुल्तहिमा नाम नेत्र के परदे पर लगी होय तो उस्का उपाय यह है कि फस्त खोले और कई वार जुल्लाब दे और अंडे की जरदी आंखों पर लेप करे इसके पीछे वह उपाय करे जो आंख के घाव का उपाय आगे लिखा जायगा॥

आंख के घाव का यत्न

ये घाव नेत्र के सब परदों में होता है परंतु जो घाव केवल मुल्तहिमा पर लगा हो और सब परदे बचे हों तो उसे सालिम कहते हैं इस्में पीडा कम होती है॥

मुल्तहिमा करनिया अवनिया इन तीनों परदों को घाव को तो आंखों से देख सकते हैं परंतु और परदों के घाव में केवल पीडा ही अधिक मालूम होती है और जब तक पीप न हो पडती और कोई चिन्ह घाव का नहीं मालूम होता उपाय उस्का यह है कि सरूलस की फस्त तुरंत खोले और रोसी-

औषधें देते रहें जिनसे कब्ज न होवे और जो पीड़ा होय तो स्त्री का दूध टपकावे और जो वह घाव जल्दी न पके तो धोई हुई मेथी का लुआव टपकावे अर्थात् मेथी के बीजों को दो पहर तक पानी में भिगो रक्खे फिर निकालकर चौगुने पानी से पकावे जब वह पानी आधा रह जाय उसको हिलाकर निकाल ले इसी को धोई मेथी का लुआव कहते हैं

अथवा

जब घाव पककर बहने लगे तब दूध और सहत मिलाकर आंख में डालें इससे घाव साफ होजायगा इसके पीछे स्याफ़ा कुन्दर काम में लावें॥

स्याफ़े कुंदर की विधि

कुन्दर ३५ माशे उश्क २७॥ माशे अञ्जरूत २७॥ माशे फ़शार ७ माशे इन सब को महीन पीसकर मेथी के लुआव में पीसकर रगड़ा बनाकर आंख में लगावें और जो घाव और फुन्सियों को पकाना होय तो इसको लगाकर पट्टी बांधना अति योग्य है॥

अथवा

जो असर घाव भर जाने पर भी रह जाय तो जो उपाय फूली व लाल के दानों के घाव दूर करने को है वही काम में लावे

अथ कमना का वर्णन

यह कई रोगों का नाम है ... पहलो यह कि जब पलक रोग से भारी होजाय और फूलजाय और सोये के जगने के पीछे ऐसा मालूम होवे की आंखों में धूल पड़गई है॥ २॥

दूसरा रोग यह है कि करनिया नाम परदे के पीछे पीव इकट्ठा होजाय॥

तीसरे मुल्तहिमा पर लाली होइससे कम दिखाई दे और सब वस्तु धूंधली मालूम हों॥

और वह जो केवल पलक का रोग है उस्का उपाय पलकों के रोगों में अगाडी लिखेंगे॥

और करनियां के रोग का यत्न कहे हैं कि मेथी और अलसी का लुआब आंख में डालकर मवाद को पकावे और कईवार गरम पानी से स्नान करे इसके पीछे साफ करने के लिये रूपा मक्खी पीस कर आंख में लगावे और जो इस्से लाभ न हो तो दस्त कारी करे और नहीं तो इसे छोडे नहीं ऐसा न हो कि कोई और रोग उठ खडा हो॥

और जो मुल्तहिमा को रोग है उस्का वही उपाय करे जो बादी के रमद रोग का लिख आये है॥

और अकेले मेथी और बाबूना और अकेले लौक मुल्क को औटा के आंख को टारें॥

आंख में धमक होने का यत्न

यह वह रोग है कि बाजे मनुष्य की आंख में अंदर धमक सी मालूम होती है और नकुआ से छिदते हैं और ऐसा मालूम होता है कि कोई दवोचता है और कभी पीडा जाती रहती है और कभी फिर होआती है जैसे आधासीसी और इसका कोई चिन्ह नहीं होता है॥

उपाय इसकायहहै कि इतरीफलकमनीजीखवावे तो धमकवंदहोय॥

इतरीफलकमनीजी की विधि

वडीहर्डकावकल कावलीहर्ड· कालीहर्ड· धनियां ये सव दवा एक एक तोलेले कूटछानकर घीमें मकरोय कर तिगुने सहदकी चासनी में मिलाकर माजून अर्थात पाकवनाले और दोतोले नित्यखावे॥

अथवा

इसरोगमें इतरीफलमुलैयनकाखानाभीगुणकरताहै

इतरीफलमुलैयन की विधिः

कावलीहर्डकावकल· वडीहर्डकावकल· आमलेका वकल· वहेडेकावकल कालीहर्ड·येसवदवातीन-तीन तोले गुलावके फूल मनाप· निसोत छिलीहुई-ये सवदवाचौदह चौदहमाशे सोंठ पौने दो माशे इन सवको कूटछानकर वदाम रोगन में मकरो कर तिगुने शहद या कंदकी चासनी में मिलाकर माजून वनावे और मात्रा प्रकृति के अनुसार खवावे॥

पासोया

खारीनोन दो तोलेचारमाशे· गेहूंकी भुसीदोमुठी वेर की पती· खतमीकीपती· मकोय के पते·येसव आध आध पाव खतमीकेवीजचारतोले आठमाशे इनसवको पा

नीमें आटा वेजव आधा पानी रहेतव गुनगुना पाशोयाक
रं और जो ये सम्पूर्ण औषधि न मिलें तो जितनी मिल सकें
उतनी ही उतम हैं और जो ये दवा कोई भी न मिलें तो गरम
पानी और गेहूं की भुसी और खारा नमक इन तीनों ही से -
पासोया करें ॥

पासोया करने की विधि

लिखी हुई दवाइयों को पानी में औटा कर उस पानी को
घंटी की तर्फ से पावों पर गेरे और दूसरा आदमी दोनों हाथों
से उस पानी को पांव की पिंडली की तर्फ सूंते इसी को ह
कीम लोग पासोया कहते हैं इसके करने से मगज की ग
रमी दूर होती है॥

अथवा

पांव को दवाना मलना और तलुओं को मलना अत्यंत गुण
करने वाला है॥

अथवा एक तगार में पानी भर कर अपने आगे रक्खे और अपने
शरीर पर चारों ओर से दोहर ओढ कर एक मिट्टी का डेला गरम
करके उसमें पटके और मस्तक को भुका कर उसके धुएं का वफा
रा ले॥ अथवा

काकजंगा के टूक टूक करिके पानी में औटाकर वफारा
ले पीछे दो भाग चंदन और एक भाग गेंदी पीस कर पतला
पतला लेप करे

अथवा

...ले चने दो तोले आठ माशे महीन पीस कर तीन-

तोले आठ माशे बादाम रोगन में भूने और निशास्ता दो तोले आठ माशे सफेद पोस्त के दाने दो तोले आठ माशे इन सब में चौदह तोले कंद मिला कर गाय के दूध में हरीरा बना कर दो तोले आठ माशे घी का भंगार देकर गुन गुना गुन गुना पान करै॥

अथवा

धनियां साढे तीन माशे काहू साढे ३॥ माशे इन दोनों को पानी में पीस छान कर थोडासा मीठा मिला कर और तोले भर ईशब गोल उसमे बुरक कर पान करैं

अथवा

सीप को सिरके में घिस कर कानों की लौ पर नित्य लगावे

अथवा

कद्दू · काहू · हरा धनियां · कासनी · ताजा मकोय की पत्ति सब को अथवा एक एक दो दो जैसें जानों निचोड छान कर थोडी थोडी बूंद कान में टपकावे

अथवा

काली मिरच पीपल लौंग इन सब को अथवा दो एक जैसा मुनासिब जानें सौफ के अर्क में पीस नाक में डाले॥

अथवा

काली मिर्च १ नग और उसी की बराबर माखी की विष्ठा इन दोनों को लडकी की मा के दूध में पीस कान में टपकावे और थोडा नेत्रों में भी लगावे॥

और इन औषधें के सिवाय जो इलाज आधासीसी के हैं

यही इसका है॥

अथ करनियांके उभर आने

का यत्न

जिस मनुष्य का करनियां नाम परदा उभर आवे उसकी पहिचान यह है कि कड़ी होती है और सलाई से नहीं दबती और आंसू नहीं बहते और उस्में पीड़ा नहीं होती और फुनसी जो करनियां में हो जाती हैं वह नर्म होती है और दवाये से दब जाती है और उनमें पीड़ा भी होती है उपाय इसका यह है कि मवाद गाढ़ा हो तो उसे साफ करे और जरूर अफसर को सलाई से आंख में लगावे और गर्म पानी से मोंह धोया करे और उस्की भांफ आंख को दें॥

जरूर अस्फर के बनाने की

विधि

इजरूत सात माशे गल्कुआ सात माशे रसौत सात माशे केशर ३ माशे मुर ३॥ माशे पीस छान कर आंख में लगावें

करनियां की फुनसियों का

यत्न

जानना चाहिये कि करनियां के चार परदे हैं कभी तो सब में फुन्सी होती हैं और कभी एक में परन्तु फुन्सी पड़ने की जगह सफेद दिखाई देती है और किसी में नहीं उपाय इस का यह है कि प्रथम फस्त और जुलाब दे और पहिले ऐसी ठंडी औषधे लगावें जो मवाद को इधर गिरने से रोके और पीछे स्याफे अहमर लीन लगावे फिर स्याफे अवियज-

कुंदरीलगानाचाहिये॥

स्याफेअहमरलीनकीविधि

धुलाहुआसादना ३२मा॰ जलाहुआतांवा २४मा॰ ववूलका गोंद ७माशे कतीरा ७मा॰ मुरमक्की ७मा॰ वुसुद १८मा॰ तेजपात १४मा॰ दम्मुलअखवैन ३॥माशे केशर ३॥माशे इनसवकोमहीन पीसकररिगड़ावनाकरलगावे॥

स्याफेअवियजकुंदरीकीविधि

कतीरा १०॥मा॰ ववूलकागोंद १०॥मा॰ निशास्ता ३॥मा॰ कुंदर ५जौ इनसवको पीसछानकेंईशवगोलकेलुआव मेंरिगड़ावनाले॥

मोरासिरचकायत्न

मोरासिरचउसरोगको कहतेहैं किमनुष्यकीआंखकाक रनियानामजो परदाहै वह फटजाय औरउसकेनीचेसेअ वनियांनामजो परदाहैसोऊपरकोऊभरआवेतोअफसोस उसका उससे पहिलेंकरे जवाकिकिनारेकरानियांकेमोटे नपड़जांय औरऐसाउपायकरैजो अधिकउभरनेको रोवे अर्थात्ज्यादाउभरनेनदे औरअवनियाकोभीतरकीन फेंदवावे॥

इसरोगकेरोकनेवालीदवायेहैं

धोयाहुआसादना औरचांदीकीडलीमियां जलीहुई सीपी पीसकरआंखोंमेंलगावे॥

अथवा

धोयेहुएसादनेकासुरमाआंखमेंभरे औरअसरमेगरी

कपड़ेकीरखकर पट्टीसेबांधदे॥

अथवा

सीसेकाटुकड़ा आंखकीबराबरखवाकेयासीसेकाचूरा दाछोटीसी थैलीमेंभरकर आंखपररखदेऔरकपड़े की पट्टीसेकसदे॥

अथवा

पिसाहुआसुरमाछोटीसीकपड़ेकी थैलीमेंभरके आंख परधरकर कपड़ेकी पट्टीसेकसदे इन औषधोंकेकरने सेभीतरकापरदा बाहरकोआनेसेरुका रहेगा॥

औरजबकिनारे करनियांके मोटे होजांयगेतो फिर किसी प्रकारसे अच्छा नहोगा इसीसे इसरोगका उपा य जलदी करना चाहिये॥

और इसरोग वाले मनुष्य को हमने भी अपनी आंखोंसे देखाहै कि इस रोगके बढजाने पर आंख बिगड़जातीहै॥

भेंगाहोनेकायत्न

भेंगाउसरोगका नामहै कि मनुष्यको एकवस्तुकीदोदि खाईदेतीहैं जो यहरोगजन्म सेही होयतो इसका इला जनहींहै परंतु बच्चोंके मृगीकेरोगसे औरएककरवट सुलानेसे याभयानक शब्दसुनकर अचानकचौंकप डनेसेभीयेरोगहोजाताहै उपाय उसकायहहैकि कोईला लया चमकदारवस्तु आंखके किनारे रखदे जिधरकी आंखको फिराना चाहतेहैंजब बच्चाउसे हरदम देखे गा इससेआंख उसकीसीधीहोजायगी॥

ओरजोयेरोगजवानीमेंउत्पन्नहोयतोकारण इसकानज न्तुजइमतलाईयाविसहोगा पहिंचान नसन्नुजयाविमकी यहहै कि इससे पहिलेगर्मरोग हुआ होगे उपाय उस्का यहहै॥

कि आंखको तरी पहुंचावे और लड़की की माका दूध सिर परदारे और पहिंचान इमातिलाई की यहहै कि पहले इम रोग वालेको मृगी आई होगी और नसन्नुज इसतिलाई के चिन्ह पाये जायगे उपाय उस्का मवाद को साफ करना और निकालना है॥

ओरजोये रोग आंख के ढीले होजाने से होय तो इसके चिन्ह और उपाय यही हैं जो इस्तरखामें लिखेगये

ओरजो रोहके कारणसे कोई परदा यारतूवतजानीरही होयतो आंख फड़केगी उस्का उपाय यह है कि भेजे से बलगमको निकाले और हब्ब अयारज खिलावे ये दवा अतारोंके वनीवनाई मिलती है और वद हजमी को दूरकरती है॥

इत तिसा और इंतसार रोगका यत्न

असवके चोड़े होनेको या अनबीया के छेदके बढजाने को इतनिसा कहते हैं और आंख में रोशनी फैलजाने को इन्तसार कहते है॥

जानना चाहिये कि इतनिसा रोगके साथ इन्तसार का रोग अवश्य होना है परंतु ऐसा होसक्ता है इतनिसा

अवनियाके साथ इन्तमार न हो और कभी कभी इतनि सा असवा और इतनिसा अवनिया दोनों साथ होते हैं इ नानिसा असवे का अच्छा होना बहुत कठिन है परंतु इत निसाय अनवीया का उपाय कारण के अनुसार हो सक्ता है इसवास्ते इसके कारण जानके उपाय करै जैसे किसी प्रकार की चोट लगजाने से होय तो फस्त शरेरू नस की खो ले और पिंडलीयों पर पछने लगावे॥

और जो किसी मवाद की अधिकता या रतूबत बेजि या की अधिकता से हो जैसा कि बच्चों को हुआ करता है या अनवीया की सूजन से हो तो फस्त और हुकना करे

और जो अनवीया की खुश्की से होय तो चिन्ह और उपाय इस्के यह है कि हुलिया की कच्चे और खट्टे अंगूर के रस में भिगो कर आंख में लगावे और जो यह बलगम के कारण से हो तो उस्के पकाने के पीछे बलगम का जुलाब दे और बासली फस्त आंख में लगावे॥

और हरेक प्रकार के जुलावों की विधि इस की ताब के अंत में लिखेंगे॥

अवनिया के छेद के सकड़ा होजाने का यत्न

ये रोग जन्म से ही होय तो अच्छा है इस्से दृष्टी तीक्ष्ण होती है और जो किसी रोग से हो तो दृष्टि कम हो जाती है पहि ले इसको देखे कि कारण इसका अनवीया की तरी है या खुश्की या रतूबत बेजिया की कमी खुश्की और तरी

केचिन्हसहजमेंमालूमहोजायगे॥ औररतूवतवोजिया की कमीकाचिन्हयहहैकिआंखछोटीहोजायगी और वस्तुभलीभांतिदिखाईनदेगी औरकैमूसअनबीयाके कड़ेहोजानेको औरबिगड़जानेसेभीयहरोगहोजाता है उसकाउपाययहहै किपुतलीनदिखाईदेजबकिअनबीयाकीखुश्कीयारतूबतवोजियाकीकमीकेकारणसेयहरोगहोयतोचाहियेकिआंखकोतरीपहुंचावे औरजबरतूबतअनबीयाकीअधिकतासेहोतोउस तरीकोदूरकरे औरकैमूसकेबिगड़जानेमेंमवादको साफकरे औरतरीभीपहुंचावेयेमवादकोसाफकरने वाली औरतरीपहुंचानेवालीदवाइसकिताबके अंत मेंलिखीजायगी॥

चसारतकायत्न

यहरोगवहहैकिअंधेरीजगहमेंवहुतबैठनेसेदृष्टिधुंधलीहोजातीहै औरसबचीजधुंधलीमालूमहोतीहैं यारतूबतवोजियाकालीपड़जातीहै इससेयहरोगउत्पन्न होता है॥

अथवा एसेरोगमें आंखमेंवासलीकूनजोसफे २७मेंवर्णनकरआयेहैंउसेनित्यलगावे॥

और हलकी हलकीदवालगावे और हलका ही भोजनखानेकोदे॥

औरजोअचानकअंधेरेकेबाहरनिकलनेके कारणसेयहरोगउत्पन्नहोतोनीलाअस्मानीरंग का

कपड़ा आंखों पर डाले रहे या आस्मानी रंगकी ऐनक लग ना बहुत फायदा कारती है॥

और हलका भोजन का भोजन करे और भूखा रहना और मैथुन करना इस रोग में बुरा है और इस रोग वाला मनुष्य रात्रि में कुछ न खाय॥

अन्धा होने का यत्न

इस रोग में दिन में कम दिखाई देता है यह रोग जो जन्म से हो यतो इस्का उपाय कोई नहीं है परंतु तोभी मनुष्य को चाहिये कि नेत्र के परदों को और पलकों को काला करने का उपाय करें वो इस प्रकार से है कि बनपसे और बादाम के तेल के काजल बना कर नेत्रों में लगाया करे इस्से दृष्टि पुष्ट हो जायगी॥

दृष्टि के थक जाने का यत्न

यह रोग सफेद और चमकीली वस्तु के देखने से जैसे सूर्य और बरफादिक के ऊपर दृष्टि जमाने से उत्पन्न हो जाता है उपाय इसका यह है कि काला कपड़ा लेकर आंखों पर लटकावे और जहां तक हो सके वहां तक पहरने और बिछाने के कपड़े भी काले ही रक्खे

अथवा

दूध में कपड़ा भिगो कर आंखों पर रक्खे या स्त्री के स्तनों की धार नेत्रों में लगाना॥

अथवा कड़वे बादाम को पीस के या कुचले के आंखों पर बांधे॥

अथ चकाचौंधी का विषय

इस रोग में धूप और रोशनी की तरफ देखना बुरा लगता है उपाय इसका यह है कि जो ये रोग गरमी से हो तो ठंडी दवा करिके आंखों को तरी पहुंचावे

अथवा

इलायची का इतर दोनों कनपटियों पर तथा पलकों पर लगाने से नेत्रों में से गरमी का पानी निकल जायगा इस दवा का तीन दिन सेवन करे और इस दवा को हमने केई दफे अजमाई है इसके लगाने से नेत्रों में तरी पहुचती है

अथवा

जो रम्द आदि के कारण से होय तो वह दवा करे जो रम्द के वास्ते लिख आये हैं॥

आंख के मिजाज पहिचानने की विधि

जानना चाहिये कि आंखों का मिजाज गर्म और तर है और जो इसके विपरीत हो तो जान लो कि कोई रोग होगा

ऊपर से छूने में आंख गर्म मालूम हो और डोरे रंगीन हों और आंख जल्दी जल्दी फड़के तो आंख में गरमी का चिन्ह जानियें॥

और जो इससे विपरीत चिन्ह पाये जाय उन्हे शरदी के जानो और जो आंख में गीड आंसू बहुत निकलें और फूली हुई मालूम हो तो ये चिन्ह तरी के हैं आंख खुश्की के चिन्ह इससे विपरीत पाये जायगे॥

कान्ती पुतलीकी श्रांख व सब मकानकी श्रांखोसे श्रधिक गर्म श्रोरतर होती हैं इसीलिये ऐसी श्रांख में जोतियाबिंद श्रोरगर्मीकेरोग बहुधा होतेहैं परंतु बहुत से हकीम यह कहते हैं कि बाजी श्रांखसे मोतियाबिंद ज्यादा होता है॥

इसजगेतकतीनेंबीं के परदों के रोगों का वर्णन किया श्रब श्रागें पलकों के रोगों का वर्णन करते हैं॥

पलकोंके रोगोंके विषयमें॥

श्रथकेमनाकायत्न श्रोरचिन्ह

श्रथकेमनाउसरोगको कहते हैं कि मनुष्य जब सोय के जागे तो श्रांख में खटक होजेसे रेतके पड़जाने में होती है श्रोर थोड़ी देर के पीछे यह खटक जाती रहती है ऐसे रोग वाले मनुष्यके वास्ते पहिलें जुलाब दें श्रोर पीछें स्याफ श्रहमरलीन श्रोर स्याफे श्रहमर लगावे इनदोनों स्याफोंके बनानेकी विधिपहिलें लिख श्राये हैं श्रोर इसरोगमें गरमजलसे स्नान कराना श्रतिलाभदायक है

पपोटेके ढीले होजाने कायत्न

पहिलें मवादको निकाले पीछे एलुश्रा· श्रकाकिया· सुरमकी इनतीनोंको पीसकर पलक श्रोर माथे पर लगावै॥

श्रोरजोइससे लाभनहो तोपलककाटनीपड़ेगी इसपलकके काटनेकी रीति दस्तकारजानते हैं श्रोर इसरोग

वालेमनुष्यकोनाककीमांकोफस्तखोलना अच्छाहै॥

पलकोंकेचिपकजानेका
यत्न

ये रोगरम्दके पीछे या पलकके कांटे के पीछे या सबल या नाखूनेमें होताहै उपाय उसका यहहै किसलाईसे दोनों पलकोंको छुड़ावे और फिर जीरा और नमक चबाकर पानी उसका आंखमें डाले॥

औररूईकोरोगनगुलमें भिगोकर पलकोंकेबीचमें रक्खे और अंडेकीजरदीमें रोगनगुल मिलाकर आंखके ऊपर लगावे तो यहरोग निश्चय होजाताहै॥

पलकोंकेछोटहोनेका
यत्न

इसरोगमें ऊपरकी पलक सुकड़जातीहै और नीचेकी पलक बाहर पलटही आतीहै और दोनों पलकें बराबर बंद नहीं होतीं इसरोगका कारण पपोटेके ढीले होजानेके कारणोंसे विपरीतहै और अधिक मांस जो पपोटेमें होजाताहै उसे काटकर निकालनेसे भी यहरोग उत्पन्न होताहै जो ये रोग किसी मवादसे होतो पहिले उसमवादको निकाले फिर कारणके अनुसार उपाय करै और जो दस्तकारी होसकै तो उसे भी करै॥

शिरनाकका यत्न

इसरोगमें पलकपर नरम मांस उत्पन्न होजानेसे पलक मोटीहोजातीहै और आंखोंमें पानीभरारहताहै उपाय

इस्का यह है कि पहिलें मवाद को निकाले और फिर आंसू ब हाने वाली औषधें आंख में डाले और जो इससे भी लाभ न होतो दस्तकारी करना उचित है॥

पलकों के झड़जाने का यत्न

जो ये रोग बुरा भोजन खाने से या पित्तों के तथा बादी के अधिक होने से होय तो उस मवाद को निकाले और जो पलक की कमजोरी से होय तो जैसा करानी तम और गर्म लेप के पीछे होता है तो उस जगह को पुष्ट करना और तरी पहुंचाना चाहिये॥

और बासलीकून जो पहिले लिख आये हैं उस को और सुरमा रोशनाई आंख में लगावे॥

सुरमा रोशनाई की विधि

तुहास जला हुआ २॥ मा० शादना २॥ मा० गोल मिर्च ३॥ माशे पीपल २॥ मा० केशर २॥ मा० बकायन २॥ मा० जंगार ३॥ मा० सलूआ ३॥ मा० नमक अर्मनी ३॥ माशे इकली मियां ७ माशे इन सब औषधों को महीन पीस कपड़ा में छान कर घोट कर सुर्मा बनाले और समय पर काम में लावे॥

और जो यह रोग बलगम के जोर से होतो बलगम को निकाले और पुष्ट करने वाली दवा काम में लावे॥

पलकों के सफेद होजाने का यत्न॥

उपाय उसका यह है कि पहिले बलगम को दूर करै फिर जंग
लीलाले के पते जैतके तेल में मिलाकर मलें और सुरमा
रोशनाई सलाई से आंख में लगावे॥

पलक में खुजली और फुन सियों होय उसका यत्न॥

जैसा मवाद हो उस के अनुसार उपाय करना चाहिये औ
र चरूदवनपसीजी आंख में सुरमे की तरह लगावे

चरूदवनपुसजी की विधि

वनपसे के फूल· धनियां बबूल का गोंद कतीरा ये स
ब दवा साढ़े तीन तीन माशे निशास्ता ९०॥ माशे इन
सबको कूट पीस कर इस में सिरके की सात पुट दे और
छाया में सुखाले फिर इस का सुरमा बना कर काम-
में लावे॥

बरदा का यत्न

बरदा एक मवाद गाढ़ा और सफेद ओले की सदृश प
पोटे के ऊपर उत्पन्न हो जाता है उपाय उसका यह है कि
रोगन मोम और दारचीनी चून मिला कर लगाने से नर्म
हो कर बैठ जायगा और नहीं तो नस्तर से काटना योग्य है

पलक मोटे और कड़े होजाने का यत्न

जब मनुष्य की पलक मोटी और कड़ी हो जाती है तो आं
ख बंद करना और खोलना कठिन हो जाता है और यह

रोग फोड़ा के मवाद से होता है इस लिये उपाय इस का यह है कि पहिलें फोड़ा को पकावै और मवाद को निकाले और उस जगह को नर्म करै और अकलील उल मुल्क बाबूना बनफसा खतमी के पत्ते इन को पानी में औटा के आंख को बफारा दे॥

और जो बिना किसी मवाद के इस रोग में सूजन होय उस को पबूस तुलफैन कहते हैं॥

पलकों के मोटे और लाल होजाने का विषय

इस रोग में पलक के किनारे बड़े या मोटे होजाते हैं और लाल भी होते हैं उपाय इस का यह है कि पहिलें मेवों का नुकूह पीवे और सुमाक को गुलाब में भिगो कर पानी उसका टपकावै और फिटकरी· कुलफा· और कासनी के पत्तों को रोगन गुल में मिला कर लेप करना लाभदायक है॥

और जब ये रोग पुराना होजाय तो पहिलें फस्त और जुलाब दें फिर स्याफे अहमर लीन आंख में लगावें इस के बनाने की विधि पहिलें लिख आये हैं॥

पलकों में जूआं पड़जांय उसका यत्न॥

ये रोग बलगम से होता है पहिलें बलगम का मवाद निकाले फिर पलक में से जूआं बीने और जो जूआं छोटे होंय और बीनने में न आवें तो फिटकरी और नमक को पानी में

आंटा के पलक को धोवे॥
और सलाई को थोड़ी देर पानी में रखकर होले से हाथ से पों छले फिर उस सलाई को आंख में फेरे तो आंख के जंत्री मरजांय॥

गुहांजनी का यत्न

यह एक सूजन का नाम है और सूजन जो कि वरावर पल कपर होती है जो अवश्यकता मवाद निकालने की होय तो मवाद को निकाले नहीं तो रसोत और एलुआ मिले अरमनी हरी काशनी के पानी में पीस कर आंख पर लगा वे और इससे आराम न होतो उसको नाखून से कुरेद डाले या कैंची से काट डाले और थोड़ी देर तक उसका रुधिर वह ने दे जलदी वंद न करे क्यों कि जलदी वंद करने में रुका हु आ बुरा रुधिर नुकसान लाता है और जलदी आराम नहीं होता वाद उसके जरूर अस्फर उसपर लगावे॥

अंजफान का यत्न

यह वो रोग है कि आंख के नीचे के पलक में सहन्त के स दृश एक वस्तु उत्पन्न हो जाती है उपाय उसका यह है कि फस्त और जुलाव के पीछे दस्तकारी करे और जीरा औ र नमक दोनों को दांतों से चवाकर उस के ऊपर लगावे - और इस रोग का उपाय इस किताब के दूसरे भाग में लि खा है॥

जफन का यत्न

जफन उस रोग को कहते हैं कि वाजे मनुष्य के पलक प

स्पर के सदृश कड़े हो जाते हैं कारण अर्थात् उत्पत्ती इ सकी सौदा के गाढ़े मवाद के जम जाने से है इस्में दर्द से अधिक पलक मोटी होजाती है उपाय इसका यह है कि पहिले मवाद को निकाले और रोगन मोम को पिघला के लगावे और कभी यह रोग फोड़े की तुल्य हो जाता है तो फिर इसका इलाज कठिन से होता है॥

पलक में घाव पड़ जाने का यत्न

ये रोग वह है कि पलक के भीतर या बाहर घाव हो जाते हैं तो बहुत दुःख दाई होते हैं इस रोग का यत्न तिब्ब अकबरी वाले ने इस प्रकार लिखा है कि इसका इलाज घाव के उत्पन्न होने से ही पर करना चाहिये क्योंकि जो ये घाव प ड़ जाता है तो समस्त पलकों को घेर लेता है उपाय उसका यह है कि मसूर अनार और पिस्ते के छिलके इन तीनों को बराबर ले महीन पीस सिरके में पका कर लेप करे और जब खुरंड जमने लगे तब अंडे की जरदी को केशर में मिला कर घाव के मुकाम पर लगावे॥

पपोटे के फूल जाने का यत्न

पपोटा उस स्थान को कहते हैं जो पलकों के भीतर की तर्फ गुलाबी ठौर दिखाई देती है यह रोग जिगर और मेदे की कमजोरी के कारण से होय तो इनको पहिले पुष्ट करे॥ और जो बलगम के अधिक होने से होय तो इतरी फल खि लावे और फस्त की फाल करे और चंदन को हरे धनिये के

पानीमें पीस कर लेप करै॥

इतिजरोंहीप्रकारतीसराभाग सम्पूर्णम्॥

दोषोंकी प्रबलताका वर्णन

अब हम उन बातोंको लिखतेहैं कि जिसके देखनसे दोषोंकी प्रबलता मालूम होजाय कि इस मनुष्यके कौनसा दोष प्रबल है सो नीचे लिखेके अनुसार जानो॥

रुधिरकी प्रबलताका वर्णन

जिस मनुष्यका मुख मीठा रहै और चहरा नेत्र मूत्र सुर्खी लियेहो और मस्तक सरीर भारी रहै और सरीरमें फुन्सियां निकलें और नाक तथा दांतोंसे रुधिर निकले ये लक्षण रुधिरकी प्रबलताके हैं॥

पित्तके लक्षण

जिस मनुष्यके नेत्र मुख और जीभ और मूत्र इनका रंग पीला पड़िजाय और मुहमें कड़वा पन और नाकमें खुश्की और खरा खरा हट पायाजाय और निद्रा कम आवे और जलन विशेष होतो पित्तका कोप जानो॥

कफके लक्षण

जिस मनुष्यके चहरा जीभ और नेत्र और मूत्रका रंग सफेद हो शरीर और त्वचा ढीली पड़िजाय और श्वासनाक ठंडी रहै और नाकसे पानी टपका करै और [illegible] रहै और

निद्रा विशेष आवे और मुख फीका रहे तो कफ की प्रबलता जानो ।

वातके लक्षण

जिस मनुष्यका रंग रूप काला पड़जाय और मूत्रमें स्याही आजाय और जलन उत्पन्न हो और बदन रूखा और दुबला होजाय और मुख खट्टा रहे और बदनके जोड भारी रहें और थकजायं और क्षुधा मंद पड़जाय मूत्र गादा हो जाय तो वातकी प्रबलता जानो ॥

पितके निकालने वाली

दवा

पीली हड़ · इमली · तुरंजबीन · बनपसे के फूल · इफसन्तीन · सकमूनीया भुनी हुई · इश्कपेचां · आलूबुखारे · स्यातरे के पत्ते · एलुआ · गुलाब के फूल · शीरखिस्त · इनमें से सब दवा या थोड़ी दवाइयां मिलाकर जुलाब दें ॥

कफके निकालने वाली

दवा

बकायन के फल का छिलका · कंतयून · माहीज हजीज · गारारूकन · हब्बुलनाल · तुर्बुद · हुर्मल · कड बिस फायज · कलौंजी · सुफाई ·

बायके निकालने वाली

दवा

काबली हड़ · काली हड़ · सनायमक्की · बालंगू · अर्थात् बादरंजबोया · इफतीमून · उस्तखुद्दूस · लाजवर्द धुला हुआ

हजरअरमनी· आमले·

दृष्टिकी हानि करनेवाली वस्तु

खारीभोजनकरना· गरमपानी सिरपरडालना· सूरज कीतर्फदेषना· वैरीअर्थात् शत्रुकोदेखाकरना· मसूर· कुलफा· चूका· करम्व· काहू· खिरखिरा· गन्दना· अधिकमैथुनकरना· धूपमें अधिकरहना· अग्निकेपास अधिकबैठना लालमिर्चोंका अधिकखाना· चमकदारवस्तुको देषना· इतनीवस्तु नेत्रोंकोहानि कारकजाननी॥

दृष्टिको पुष्टी करनेवाली वस्तु

आमला· पीलीहर्ड· बादाम· सोंफ· मुंडी· पकाप्याज शहद· सीपीकीभस्म· रेसम· सुरमा· सोने चांदीका मैल· गोलमिर्च· कालीमिर्च· मुश्क· केशर· और मोती पीसकर सोनकी सलाई से लगाना· चंद्रमा की तर्फ देषना· कालीमिरचको कच्चीषांड और घी मिलाकर ओसमें जमाकर खाना· हरियाली को देषना· सिरका· ये दवा दृष्टि करनेवाली हैं

उन औषधों का वर्णन जो मवादको आंख पर गिरने से रोकें

तरबूजके छिलके· कुन्दर· कानुलइकलदकीक· आवनूस· घजरुलयनज· केशर स्त्री के दूधमें मिली हुई·

वनपसा· लबलाब· छालिया· तिरियाकफारूक· इंज रूत· मकोय· विही· मस्तूर· बादरूज· सफेद सन्दल· बकायन· फिल्तक· जरवर्द· अकाकिया· जौ· सिमाक अमरूद· वुसुद· नानिया· रसोत· कुनरान·

मेदेकी पुष्टि करनेवाली दवा

ठंडी

आमला· अनारदाना· सिमाक· वहेडा· हडका मुरब्बा· हर्ड· विही· बंशलोचन· गुलावके फूल·

गरम

सरकंडेकीजड· तुरंजके छिलके· विल्लीलोटन· जायफल· दारचीनी· नरकचूर· मोथा· तज· तेजपात· लौंग· इलायची· कुन्दुर· करोया· रूमीमस्तगी· मश्कतरामशी· नाना· ऊदगर्की·

जिगरके पुष्ट करनेवाली दवा

ठंडी

काशनी· जरिश्क· अनार· और उनकेपानी लुआब· ईशबगोल· शर्वतसंदल· सिकंजवीन·

गरम

छडीला· इजफाकलाब· जायफल· हम्मामा· हब्बविलसान· दारचीनी· माकिस· लौंग· तज· कुसुम· रूमीमस्तगी· नारदीन· सोंफ· करफसकेबीज· गुलकंद· असली· असाना सिया· दवाउल करकम॥

इति

जर्राहीप्रकारतीसरेभागकासूचीपत्र


भावप्रकाश का गुटका
पंडित रुद्रदेव सहाय के
से मतबः ज्ञानसागर में छपा

भूमिका

प्रकट हो कि यह पुस्तक मैंने बड़े परिश्रम से चक्रदत्त
शार्ङ्गधर तिमिर भास्कर लोलिंबराज त्रिशती वैद्य
जीवन वैद्यरहस्य और विशेष करके भाव प्रकाश
इन सब का आशय एक बड़े ग्रंथ से लेकर मल्लछंद
भाषा अर्थात दोहा चौपई कुंडलिया कवित्त और
दोमें इस प्रयोजन से बनाई है कि ये बहु प्रसिद्ध हैं और
केवल भाषा जानने वाले भी इनको खूब समझ सकें
हैं यद्यपि इसकी कविता बहुत मूल है परंतु पिंगल
के मतानुसार द्विगण विचार बहुत बार के लिखा है
अशुभगण या दग्ध अक्षर [illegible] में कहीं न हो जाय
इसलिये बनाने वाले और पढ़ने वालों को शुभदायक
है ॥ इसमें वैद्य और उसकी स्त्री की अति मनोहर
प्रश्नोत्तरी है ॥

P. Soojan Singh
Head Master

श्रीगणेशायनमः

वैद्यक गुटका

हकीमऔरहकीमकीस्त्रीके प्रश्न उत्तर दोहा

गुरुगणपत वागीश्वरी वादी मूकन हार ॥
करहु कृपा आधीनपर रचैग्रंथसुविचार ॥

वाक्य ग्रंथकार दोहा

पूर्वसमय इक विप्रबर वैद्यकराजबषान ॥
ताकी पत्नी अति चतुर सुमुखिरूपगुणखान ॥

कुंडलियां

सुमुखिरूप गुनखानरीनसब जानन हारी ॥
पतिव्रताके धर्म सकलवह वरतै नारी ॥
भांतिभांतिके रोगी जन जो द्वारे आवैं ॥
तिनकी नाड़ी देखवैद्यपुन जतनबतावैं ॥
देखदेखयह चरितवैद्यसेबोलीप्यारी ॥
सुमुखीरूपगुनखानरीनसब जाननहारी ॥

प्रार्थना स्त्रीकीवैद्यप्रति

दोहा

वैद्यकविद्यामेंनिपुणसबविधिचतुरसुजान
ऐसा ग्रंथ जु भाषये बचें सहस्रों प्रान ॥

कुंडलियां

बचैंहजारोंजान तुम्हारा यश सब गावैं ॥ देख देखवन
वपुस्तक नीके जतनकरावैं ॥ रहे जगतमें नाम काम
हो पूरन सारे ॥ करोमनोरथ मम उरके सब प्रीतमप्यारे
करयह जीवनसुफल जक्तमें सुर पुर पावैं ॥ बचैं
हजारों जान तुम्हारा यश सब गावैं ॥

वाक्य ग्रंथ कारका दोहा

नारीकासुन कर बचनबोले वैद्य सप्रेम ॥
बातकही परमार्थकी धन्य तुम्हारानेम ॥

कुंडलियां ॥ सुफल तुम्हारा नेम धर्म की बातविचा
री ॥ चतुर सुघर गंभीर मनो हर सब बिधप्यारी ॥ पू
छत जावो प्रश्न उत्तर में देता जाऊं ॥ सबरोगों के
भेद जतन लक्षण समझाऊं ॥ नारखें कुछ गुप्त प
ढीहै विरद हमारी ॥ सुफल तुम्हारा नेम धर्म
की बात बिचारी ॥

॥ प्रश्न स्त्रीका दोहा ॥

नाड़ी के लक्षण जिते कहौं सकल समझाय
जैसे जिसके भेद हैं सो सब देहु बताय ॥

कुंडलियां ॥ सो सब हमहि बताव चलैं जिस विधये नारी ॥ कहो भेद कफ पित्त वात की गति विस्तारी ॥ तुम हो चतुर प्रवीन दीन रक्षक हितकारी ॥ हम नारी का ज्ञान महा मति मंद हमारी ॥ बड़े धर्म की बात जक्त में सुख दिन चारी ॥ सो सब देहु बताय चलैं जिस विधये नारी ॥

अथ पित्त कफ़ वाय की नाड़ी की परीक्षा
उत्तर वैद्य का दोहा

मूल अंगूठा वाम कर धरै आंगुरी तीन ॥
प्रथम पित्त कफ दूसरी तीजी वाय प्रवीन ॥

कुंडलियां ॥ तीजी वाय प्रवीन कहूं सब की गति न्यारी जो वैद्यक में लिखा सुनो मम प्रानन प्यारी ॥ मेडक काक कुलंग चाल पित्त की पहिचानो ॥ पंडुक मोर मराल नाड़ि का कफ की जानो ॥ सांप जोंक ज्यों चलै मंद गति वाय विचारी ॥ तीजी वाय प्रवीन कहूं सब की गति न्यारी ॥ ॥ अर्थ शुरु ॥
बांये हाथ के अंगूठे के नीचे तीन उंगली धरै पहली

पित्त की दूसरी कफ और तीसरी वाय की जानिये॥ मेंडक काग और कुलंग की भांति जो चलै सो पित्त की नाड़ी जानो॥ पारवता मोर और हंस की नाई कफ की चलती है॥ सांप और जोंक की चाल वाय की है॥ अथ मन्दी पान और ज्वर के कोप में नाड़ी की परीक्षा॥

दोहा

थंभ थंभ कर नाड़ी चलै महा मंद गति जान
टेढी सो जो रवहि है सुन्न पानी सो जान॥

कुंडलियां

सुन पानी सो जान दूत जम के दिखलावै॥ जिस की यह गति होय वैद्य फिर कौन जिलावै॥ वेग वती अति चलै कोप में ज्वर के नारी॥ निज निज घर जो वहै रहै फिर क्या बीमारी॥

अथ कामातुर भूख और भरे पेट वाले की नाड़ी की चाल की परीक्षा॥ ॥दोहा॥

कामातुर अरु क्षुधित की वेगवती है साय
मंदाग्नि औ क्षीण की धीमी सी है जाय

कुंडलियां॥ धीमी सी हो जाय उदर में आंव बनावै अति भारी जो चलै पेट सो भर के आवै॥ नाड़ी भेद

अनेक कहां लों वरने कोई ॥ जो होवै घच प्रवीन बुद्धि से जाने सोई ॥ ॥ इति नाड़ी परीक्षा ॥

अथ मुख्य रोगों का वर्णन ॥ रोगी का वैद्य प्रति

॥ दोहा ॥

अहो कंत मतिमंद हम हैं नारी की ज्ञान
कहो भेद सम आयके मुख्य रोग की बात
कुंडलियां ॥ सकल रुजन के भेद जितने वैद्यो ने गाये सभी कृपा कर कहो तुम्हें जो शास्त्र बताये ॥ वचन प्रेम रस भरे रहे मुख से उच्चारो ॥ तुम हो चतुर सुजान धर्म के मग पग धारो ॥

उत्तर वैद्य का दोहा

सकल रुजन के भेद दो सुन मम प्रान अधार
एक मानसिक दूसरे कायक रोग अपार ॥
कुंडलियां ॥ यही रोग उर धार भिन्न कर वरनौ सोई ॥ सोच फिकर में है चित्त अंग दुबला होई ॥ नासा बैन खाय रैन दिन जी घबरावै ॥ ऐसा रोगी होय मानसिक बाधक लावै ॥

॥ अथ कायक रोग के लक्षण दोहा

कबहुक मिथ्या हार ते उपजत अंग में पीर

कायक नाही वर्णानियेकहै वैद्यधर धीर

कुंडलिया ॥ कहै वैद्य धर धीर कपथ्य भोजन जो पावै बढ़ै पित्त या वाय घटै बल रोग बिसावै ॥ अरु चित्त मोरे भोग रोग तिसको लग जावै ॥ मात पिता का कर्म पुत्र को आन सतावै ॥ ॥ अर्थ ॥

मुख्य रोग दो प्रकार के है मानसिक और कायक इनके १४ भेद है सो आगे बर्णन किये है फिक्र और बिचैनी के दिल पर रहने से नींद कम आवे अन्न न भावे अंग दुबला होने से वैद्य मानसिक रोग कहते हैं और ॥ कुपथ्य भोजन करने से पित्त या बाय बढ़ जाती है मिथ्या विहार यानी कुमार्ग में रत करने से और माता पिता के कर्मों से जो बीमारी होती है सो कायक कहाती है ॥ ॥ अथ १४ प्रकार के रोगों के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम हि सहज रोग सुम जानो ॥ दूजा गर्भज रोग बखानो ॥ तीजा जातरोग है प्यारी ॥ चौथी पीड जु है बीमारी ॥ पंचम कालरोग कबि गने ॥ छटी प्रभावक व्याधा भने ॥ सप्तम रोग स्वभावज भाषै ॥ अष्टम कर्म दोष बुध दाषै ॥ ॥ दोहा ॥

आगंतुक दूज है नवीं कायक दसमा जान ॥
अंतरपीड़ा ग्यारवीं देशज बा दश मान ॥
चौपाई ॥ कर्मज पीड़ा तेरह जान ॥ देशज चौदह भनै सुजान ॥ इन सबके लक्षण सुन आगे ॥ जिस २ बिध बीमारी जागे ॥ ॥ अथ सहज रोग का वर्णन ॥

॥ कुंडा ॥

मात पिता के बीर्ज दोष से उपजे पीरा ॥ ताको सहज सुजान कहै सुन चातुर धीरा ॥ बवासीर और कुष्ट आन शक आदिक रोगा ॥ मात पिता को होय पुत्र को निश्चय होगा ॥ ॥ अथ गर्भ रोग और जात रोग का वर्णन

॥ दोहा ॥

बौने पिंगले है गले गर्भ रोग के रूप ॥
इनकी औषधी क्या करै चातुर सुभीष अनूप

कुंडलियां

चातुर सुभरिष अनूप जानके लक्षण माषै ॥ मिथ्या हार विहार गर्भ में मात रापै ॥ गूंगे बहरे होय बाल तिन के सुत प्यारी ॥ यही जात के रोग कहावे जब मैमारी ॥ ॥ अथ पीड़ वर्णन ॥ दोहा ॥
शस्त्रो की जो चोट से उपजे पीड़ा अंग ॥

अथवा ऊंचेसेगिरे कौ देहकोभंग ॥

॥ अथ कालरोग दोहा ॥

शीतसमय सरदी लगे उदमकालमें धूप ॥
वर्षा मे जलमेंरहे कालरोग के रूप ॥

अथ प्रभावजरोग की उत्पत्ति दोहा ॥

मातपिता के श्रापसे अंगपीड़ हो जाय ॥
सोइ प्रभावज रोग है कहै वैद्य सत भाय ॥

अथ स्वभावरोग की उत्पत्ति दोहा ॥

प्यासभूष ते ऊपजे तथा अबलता जान ॥
स्वाभाविक सो रोग है परमानंद सुजान ॥

अथ कर्मदोषरोग की उत्पत्ति दोहा ॥

पाप ताप कफ पित्त से पीड़ा अंगजो होय ॥
परमानंद सुजान कह कर्मदोष है सोय ॥

अथ आगंतुक ॥ कायक ॥ कर्मज ॥ अंतर ॥ देशज ॥ दोषज ॥ रोगो का वर्णन

॥ रोड़ाछंद ॥

कामक्रोध मदलोभ मोह पुनभ्रतादिक जेरोगा ॥ आगंतुक येव्याधिक हावेदूर करै सबभोगा ॥ ज्वर आदिक जो पीड़ा सिगरी सो कायक पहिचानो ॥

तिन दिनों या तौ अरु सीडी अंतर रोग हि जानो॥ काले पीरे लालरंग के जितने लोग लुगाई॥ देशज रोग कहावै मिगरे तिनकी औषधी नांही॥ गौ ब्राह्मण हत्या से उपजे कर्मज रोग कहावै॥ वायपित्त कफ की जो पीड़ा दोषज वैद्य बतावै॥

इति चतुरदश रोगों का वर्णन॥ अथ ज्वर के भेद लिख्यते

॥ वाक्य स्त्री का पुरष से

॥ दोहा ॥

बरणन चौदह रोग का पृथक कहा सम गाय॥
प्रथम भेद ज्वर के कहो संसय सब मिट जाय

॥ कुंडलियां ॥

संसय सब मिट जाय हटै मम चिंता सारी॥ तुम होय गुर सुजान कंत हम हैं बलिहारी॥ जितने तप के भेद कहो सब न्यारे न्यारे॥ जिस जिस विधसे जाय बतादो प्रीतम प्यारे॥ ॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥

तप हैं आठ प्रकार के सुनो प्रिया सुख धाम
भिन्न भिन्न करके कहूं तिन आठों के नाम

॥ कुंडलियां ॥

तिन आठों के नाम जतन सब भेद जनाऊं॥ दृढ मन हो

करसुनो औषधीसहित बनाऊं ॥ पहला ज्वर है वायपि
त ज्वर दूजा जानो ॥ तीजा कफ ज्वर कहा वायपित
चौथा मानो ॥ पंचम कफ और वाय मिले इक ठौर
पियारी ॥ षष्टम कफ पित मिलै सुनोतुम वात हमारी

॥ दोहा ॥

सप्तम ज्वर सनपात है आगंतुक ज्वर आठ
इनसबके लक्षण कहूं जुदे जुदे लखपाठ

॥ अथ ज्वरमात्रके सामान्यलक्षण ॥

॥ दोहा ॥

[illegible] नामूपाविदाहो जाय ॥
स्वेद न हो अंग डायनतलक्षण दिये बताय

॥ अथ ज्वरमात्रका सामान्यजतन ॥

॥ दोहा ॥

पीनैंदि औटाय के ढांह सुला वैनाहि
भोजन हलका स्वेनपट मैल कुचैलो नाहि

॥ कुंडलिया ॥

मैल कुचेले नाहि सोंठ है मासा लीजे ॥ धनियां प
चगुन नासु काथ कर इनका पीजे ॥ तीन दिवस के
बाद दवा यह दीजे प्यारी ॥ निश्चै लागे भूख मिटै

ननपीड़ासरि ॥ ॥ अर्थ ॥
सोंठ २ मासे धनियां १० मासे इनका काढ़ा कर पिलावैतो
ज्वर जाय और भूष लगै ॥ ॥ वाक्य स्त्री का पुरुष से ॥

॥ दोहा ॥

कहे आठ ज्वर आपने दिये सकल समझाय
आठों के लक्षण जतन दीजे मोहि बनाय ॥

कुंडलिया ॥ दीजे सबै बनाय मोहि जगके सुखकारी ॥
करैं नाम विख्यात नाथ सब नर और नारी ॥ जो है मरूप
प्रीतरीत वैद्यक की भाषै ॥ यह संसार असार सार इसमें
कुछ यरवो ॥

अथ वाय ज्वर के लक्षण जतन लिख्यते ॥

वाय ॥ ज्वरवाले को ॥ क्षइ रोग वाले को ॥ अनि जठ
राग्नि वाले को ॥ गर्भणी स्त्री को ॥ कमताकत वाले
को ॥ बालक को ॥ बूढ़े को ॥ इतने बीमारों को लंघन
नहीं कराना चाहिये हलका पथ्य देना है ॥

॥ अथ इलाज लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

दोनालाव कट इलियां नागरमोथा जान ॥
सोंठ गिलाय चिरायता ते ज्वर वाला आन ॥

कुंडलिया॥ छै छै मासे तोलवराबर सबले आवे॥ कर इनके दो भाग काथ कर एक पिलावे॥ दिवसपांच तक देय सकल ये औषध प्यारी॥ ताजानूं कहां जाय वात ज्वर की बीमारी॥ ॥अर्थ॥

दोनो कटेली नागरमोथा सोंठ गिलोय चिरायता नेत्रवाला येसब दवा छह छह मासे डाल जौकुटकर दोभाग करके एक हिस्से का काढा कर सुबह को पिलावे दूसरे का शामको दे इसी प्रकार ५ दिन पिलावे तो वायज्वर जाय और जतन दूसरी औषधी॥

॥कुंडा॥

सोंठ धमासा छाल नीबकी पोहकर मूला॥ जड़ अरंडकी पट कचूर आड़ूसा तूला॥ भाग बराबर लेय टका भर औषधि सारी॥ दीजो करके काथ वात ज्वर से नथारी॥ ॥अर्थ॥

सोंठ नीम की छाल पट कचूर धमासा अड़ूसा अरंडकी जड़ पोहकर मूल ये सब औषधि छदाम छदाम भरले काढा कर पिलावे तो वात ज्वर दूर होय तीसरा जतन सतावरी गिलोय छ दाम छ दाम भरले काढ़ा कर छदाम भर पुराना गुड़ डाल ५ दिन तक पीवे

तोवात ज्वर जाय चौथा जतन ॥ ॥रोड़ा छंद ॥
दाख मुनका पीत पापड़ा पीपल सौंफ न वीली ॥ भाग बराबर सब पैसाभर लीजे रंग रंगीली ॥ सेर कूट करधर चूल्हे पर इनका क्वाथ पिलावै ॥ वात ज्वर वाले के हृदय का कमल सुजान खिलावै ॥ ॥ अर्थ ॥
मुनका दाख पीत पापड़ा पीपल सौंफ तीन तीन माशे ले काढ़ा कर पिलावै तो वात ज्वर जाय ॥

॥ प्रश्न स्त्री का दोहा ॥

वात ज्वर भलि भांति से दीना आप बखान
अब पित्त ज्वर के जतन भाषो कंत सुजान

अथ पित्त ज्वर के लक्षण उत्तर वैद्य का

॥ दोहा ॥

नेत्रों में गरमी रहै देह न चैन रमाय ॥
प्यास लगे अति ही तिसे मुख कड़वा होजाय

कड़ा ॥ मुख कड़वा होजाय नैन से नींद न आवै ॥ जिह्वा सूखी जाय पसाने देह न आवैं ॥ मिचलावत ना है य मूत्र पीला दर्शावै ॥ पीली आंखें रहैं चकै अति चैन न पावै ॥ ॥ अथ पित्त ज्वर के जतन ॥
॥ रोड़ा छन्द ॥

नवल धमासा नागर मोथा पीत पापड़ा वाल॥ पुनचि
रायता नेत्रवाला नवल नीम की छाल॥ ले छदाम भर
हरेक औषध कूटकाथ कर प्यावै॥ पित्तज्वरकी जित
नी बाधा सब कौ वेग नसावै॥ ॥अर्थ॥
धमासा नागरमोथा पीतपापड़ा चिरायता नेत्र
वाला नीमकी छाल हरेक दवा छदाम२ भर ले
काथ कर प्यावै तो पित्तज्वर जाय॥

॥दूसरा जतन दोहा॥

चंदन घस सम तोलके टक टक भर लाव
नीके पके फालसे शरवत स्वच्छ बनाव

कुंडलिया॥ शरबत स्वच्छ बनाव चार पैसे भर लेके
खस चंदन ले पीस टका भर मिसरी देके॥ सब रा कन
मिलाय छान कर पीवै प्यारी॥ पित्तज्वर की विथा नाश
होनि श्चय सारी॥ ॥अर्थ॥
चंदन टक १॥ खस टक १॥ इनको महीन पीस
७ पैसे भर फालसे के रस में २ पैसे भर मिसरी और चंद
न डाल पीवै तो पित्तज्वर जाय यह औषधि निघण्ट
और पित्तसागर में भी लिखी है॥

॥तीसरा जतन दोहा॥

पील धान की लायके पानी लेय मिलाय ॥
तामें मिसरी डालपी पित्तज्वर हट जाय ॥
अर्थ ॥ पीलों का शरबत कर मिसरी डाल पीवे तो पित्त ज्वर जाय और चौथा जतन ॥ चौपाई ॥
किरमाला की मीगीं लावो ॥ कुटकी नागरमोथ मिलावो ॥
पीतपापडा हरड़ की छाल ॥ सब सम औषध लेहु संभाल ॥
हरेक लो छ दाम भर प्यारी ॥ काढ़ करये काढा सुखकारी ॥
पित्त ज्वर निस दाह मिटावै ॥ मूर्छा रोग रहन नहिं पावै ॥
प्रलापभूरा कौन विचारे ॥ सुन यह औषध वेग सिधारे ॥
॥ अर्थ ॥ किरमाला की गिरी ॥ नागर मोथा ॥
कुटकी ॥ पित्तपापड़ा ॥ बड़ी हैड़ की छाल ॥ ये सब दवा छ दाम २ भर कूट काढ़ा कर पिलावे तो पित्त ज्वर ॥ निस ॥ दाहं मूर्छा ॥ भौरा ॥ प्रलाप ये सब रोग दूर हों यह वैद्यविनोद का आशय है ॥
पांचवा जतन ॥ सिर्फ शर्बत अनार से भी पित्त ज्वर की दाह दूर होती है ॥ ॥ छटा जतन ॥

॥ दोहा ॥

गजगमनी कटि केहरी सोलह वर्ष जु आय
ता नारी के भोग ते दाह तुरत मिट जाय ॥

क.डा ॥ दाह तुरत मिट जाय सुनै पिक की रञ्ज बानी॥ कोमल बालक बैन सुनै जो दिन से प्रानी॥ धार सुगंधित हार मनोहर करै सिंगारा॥ चंदन घिसा कपूर छुटै चहुँ ओर फुहारा॥ सेंधा नमक मिलाय फालसे का रस पीवै॥ पित्त ज्वर मिट जाय सुखी हो बरसों जीवै॥ ॥ अर्थ ॥ महासुंदरी स्त्री जिसकी हाथी कैसी चाल झूमती हुई चीते कैसी कमर सोलह बर्स की उमर ऐसी स्त्रीसे भोग करै तो पित्त दाह हरै बातोंने मैना के पढाने से उनका शब्द सुनने से और साफ वस्त्र पहरै और छोटे बालक से बात करनेसे सुगंधित फूलों के हार पहरनेसे कपूर सहित घिसा चंदन लगाने से सुंदर स्त्रीयों के साथ बात करने से मनोहर शृंगार करने से फुहारे छुटने देखनेसे फालसे के रस मे सेंधा नमक मिलाके पीनेसे इन सब यत्नोंसे पित्त ज्वर की दाह निसदूर होती है॥ ॥ और जतन ॥

॥ दोहा ॥

दाष मुनक्का लाय रस मिसरी लेय मिलाय
पान जु करै सुजान यह पित्त ज्वर मिट जाय

॥ और जतन दोहा ॥

मूंगदालपक वायकर पानीलिय छनाय
तामे मिसरी डालपी पित्त दाह मिट जाय
॥ और जतन दोहा ॥
नागरमोथाले अभग पीत पापड़ा आन
पुनचिरायता येसकल पांच टंक परमान
काढ़ाकर दिन तीनलों पीवे दोनो याम
पित्त ज्वर की पीड़ का फेर नहीं क्या काम
अर्थ ॥ नागर मोथा ॥ पीत पापड़ा ॥ चिरायता ॥ ये तीनो छह २ माशेले काढ़ा कर पिलावे तो पित्त ज्वर दूर होय येसब जतन निमर भास्कर का आशय है ॥ ॥ और जतन दोहा ॥
नीम बकल पदमाष पुन धनियां चंदनलाल
नवल गिलोय मंगायके दो दो मासे डाल
कुंडलियां ॥ दो दो माशे डाल काथ नीका बनवावे
पित्त ज्वर की दाह एक छन माह नसावे ॥
अर्थ ॥ नीमकी छाल ॥ पदमाष ॥ धनियें ॥ ये तीनो दो दो माशेले काढ़ा करे पित्त ज्वर जाय
॥ और जतन दोहा ॥
पित्त ज्वर के कोपमें दाह वहुत जो होय

पीपल पुहकर मूल काकड़ा सींगी आनों न च्च कायफल ज
लकूट कपड़े में छाने ॥ चटनी शहत मिलाय करे छ हमासे
नटि ॥ कफ ज्वर की जड़ जाय स्वास खांसी सब काटि ॥
अर्थ ॥ पीपल ॥ पोहकरमूल ॥ काकड़ा सींगी ॥
कायफल ॥ इन सब को बारीक पीस कपड़ छन कर
३ मासे शहद के साथ चाटे स्वास षांसी कफ ज्वर दूर
होय ये वैद्यविनोद का आशय है ॥ कफ वाले को
सेर का तीन पा पानी औटन २ रह जाय तब दे दिन में
सोने न दे बारह दिन के बाद पथ्य के लिये मूंग या
मोट का कुलथ का पानी दे और पथ्य के साथ बिजौरे
की केसर में सेंधा नमक मिलाय कर दे अदरक दे ॥

अथ पाचन की औषधि ॥ कड़ा ॥

दोनों जीरे लोंग लायची धजन मैनी ॥ सोंठ पीपला मूल मि
रच चित्रक पिक वेनी ॥ अजबायन अजमोद बराबर
सब ले आवै ॥ पीपल सींग मिलाय सब का चूरन बनवावै
गरम नीर के साथ तीन मासे ले प्यारी ॥ भूख लगे अल्प
री कफ ज्वर ब्रक्ष कुहारी ॥ ॥ अर्थ ॥
दोनों जीरे ॥ लोंग ॥ इलायची ॥ सोंठ ॥ मिरच
स्याह ॥ पीपल ॥ धुना सींग ॥ अजमोद ॥ अजवायन

पीपलामूल ॥ चीता ॥ ये दवा सब बराबर ले बारीक पीस चूरण करे गरम पानी के साथ तीन माशे दे कफ ज्वर दूर होय भूख लगे अन्न पचे ॥ और जतन ॥

॥ दोहा ॥

पुहकर मूल कटेहली सोंठ गिलोय सुजान
नवल अडूसा डालके लीजे भाग समान

कड़ा ॥ लीजे सकल बराबर छह छह माशे डाले ॥ जौकुट करके काथ आंच पै खूब उबाले ॥ दिवस सात पर्यंत दवा ये दीजे प्यारी ॥ ना जानूं कहां जाय कफ ज्वर की बीमारी ॥ ॥ अर्थ ॥

सोंठ ॥ गिलोय ॥ पोहकरमूल ॥ कटेली ॥ अडूसा ॥ ये चारों छह २ माशे कूट काढ़ा कर ७ दिन दे तो कफ ज्वर जाय ॥ ॥ और जतन ॥

॥ चौपाई ॥

पीपल नवल कटेली लीजे ॥ और काकड़ासींगी दीजे ॥
नवल गिलोय अडूसा प्यारी ॥ टंक टंक ले औषध सारी ॥
दस दिन काथ जतन से पीवे ॥ कफ ज्वर जाय सुखी हो जीवे

अर्थ ॥ पीपल ॥ कटेली ॥ काकड़ासींगी ॥ अडूसा ॥ गिलोय ॥ ये दवा चार २ माशे ले काढ़ा कर १० दिन पीवे

तो कफ ज्वर जाय॥ ॥ और जतन ॥

केवल अडूसा के काढ़े से भी १० दिन पीवै तो कफ ज्वर जाय॥

इति कफज्वर लक्षण जतन संपूर्णम् ॥ + ॥

अथ वात पित्त ज्वर के लक्षण जतन लिख्यते॥

॥ वाक्यस्त्री का दोहा ॥

करुणानिधमम प्राणपति सर्व शास्त्र की खान ॥

वायपित्त ज्वर जतन सब कहिये कथ सुजान॥

॥ कुंडा ॥

कहो नाथ अब वातपित्त के लक्षण सारे॥ कीनी कृपा अपार हमारे प्रानपियारे॥ लाखों रोगी फिरे जगत में भये अनंदा सौसौ देयं असीस कहै सुखभरण चंदा॥

अथ वातपित्त ज्वर के लक्षण जतन लिख्यते ॥

उत्तर वैद्य का॥ सोरठा ॥

नैन नींद बिसराय रोम खड़े अरु अरुचि हो॥ पीड़ा होय जंभाय कंठ जीभ सूके रहै॥ ॥ कुंडा ॥

देह सकल भर्राय अंधेरी आंखों आगे॥ बार बार बकवाद उठे निसदिन सो जागे॥ ऐसे लक्षण लखे वातपित रोग बनावे॥ आगे इसके जतन विचार सुजान जनावे॥ ॥ अथ वायपित्त ज्वर के जतन ॥

॥ दोहा ॥

नवल गिलोय अरंड जड़ पीपल चन्दन लाल
भाडंगी पद माष खस नागर मोथ्या डाल ॥
कड़ा ॥ नागर मोथा डाल सुजान पौटी लावै ॥ लेले मासे
पांच कूट कैर क्वाथ करावै ॥ बारह दिन जो देय वाय पित्त
ज्वर की पीर ॥ निश्चै होवे दूर सुनो नृप चातुर धीर ॥
॥ अर्थ ॥ गिलोय ॥ अरंड की जड़ ॥ पीपल ॥
लाल चंदन ॥ भाडंगी ॥ पदमाष ॥ खस ॥ नागर मो
थ्या ॥ ये सब दवा पांच २ मासे ले जौकुट कर ३ मा
शे का काढ़ा कर बारह दिन तक दे तो वात पित्त ज्वर
जाय ॥ ॥ और जतन ॥
॥ पेड़ा छंद ॥
नागर मोथ्या पीत पापड़ा सोंठ गिलोय नवीनी ॥ ले
चिरायता तोल बराबर सब को रंग रंगीनी ॥ मासे तीन
पकावै काढ़ा बारह दिन जो प्यावै ॥ वात पित्त ज्वर दूर
होय फिर वैनी फेर न आवै ॥ ॥ अर्थ ॥
नागर मोथ्या ॥ पीत पापड़ा ॥ सोंठ ॥ गिलोय ॥
चिरायता ॥ ये सब दवा बराबर ले कूट के रक्खे ३ मा
शे का काढ़ा कर १२ दिन तक दे तो वात पित्त ज्वर

॥ अर्थ ॥ नागरमोथा ॥ सोंठ ॥ चिरायता ॥ गिलेय ॥ ये चारों दो दो माशे औटकाढ़ा कर पिलावे तीन रोज नक बाद इसके दूसरा दे जो लिखता हूं ॥

॥ अथ दूसरा क्वाथ ॥

कड़ा ॥ नागर मोथा देव दारु भाड़ंगी लावै ॥ धणी का यफल पित्तपापड़ा सोंठ मिलावै ॥ हड़ छाल कयाग च की जड़ सब करो बराबर ॥ जो कूट करके करो क्वाथ लेवे क दोय भर ॥ बातकफ ज्वर खांसी सूजन स्वांस नसावे ॥ जो दस दिन लों देय रोग ढूंढा नहिं पावै ॥

॥ अर्थ ॥ नागर मोथा ॥ देवदार ॥ भाड़गी ॥ धनियां ॥ कायफल ॥ पित्तपापड़ा ॥ सोंठ ॥ हड़ की छाल ॥ कयागच की जड़ ॥ ये सब दवा बराबर ले कूट रक्खै ८ माशे लेके काढ़ा कर १० दिन पिलावे तो ऊपर लिखे रोग जांय ॥ ॥ और जतन ॥

॥ रोड़ा छंद ॥

नागरमोथा पीतपापड़ा सोंठ गिलोय धमासा ॥ लाय बराबर क्वाथ पकावै औरै द्वादस मासा ॥ बातकफः ज्वर वमन शोष को निश्चै देय नसाई ॥ जैसे सूरज उदय होत ही तारागण छिप जाई ॥ ॥ और जतन ॥

कुंडा ॥ शालपरणि अरु पृष्टपरणि अरनी अरलवेली॥ दोउ कटेली वेलगिरि पुन नार नवेली ॥ गोक्षुर अरलू पाढ कुंभेर बराबर लावै॥ जौकूट करके धरै काथ दशमूल कहावै तामें पीपल डाल काथ दस दिन जो प्यावै॥ वात कफ: ज्वर जाय सही यह वैद्य बनावै॥ ॥अर्थ ॥

शालपर्णी १॥ पिष्टपर्णी २ ॥ अरनी ३॥ दोनों कटेली ४ बेलगिरी ६ ॥ गोषरू ७॥ अरलू ८ ॥ पाढ ९॥ कुंभेर १०॥ यह दश मूल क्काथ है इसमें पीपल डाल के पिलावे तो वातकफ: ज्वर जाय जो वातकफ ज्वर मे मुह और तालवा सूख जाय और जीभपर षुरकी बहुत होतो बिजौरे की केसर में सेंधानमक और स्याह मिरच मिलाय जीभ पर मलेतो षुरकी जाय चिरायता गिलोय देवदारु कायफल तीन तीन माशे ले काढा कर पिलावे तो वायकफ: ज्वर जाय॥ ये जतन तिमर भास्कर का आशय हैं ॥ इति वातकफ: ज्वर चिकित्सा संपूर्णम् ॥

॥ अथ कफ: पित्तज्वर के लक्षण लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

लिये कफ़ारा जीम मुख तंद्रा अरु ची जान
बार बार शरीर में दाह शीत हो आन ॥

कड़ा ॥ निस दिन पीड़ा दाह शीन की होवे जाकी ॥ अक
ज़ा रहे शरीर हिया दुख भीघे ताकी ॥ मुख मीठा सा रहे कभी
कड़वा हो जावे ॥ जीभ लाल अरु स्वेत नेत्र मेंडक रंग लावे ॥
लिपिलल्लाई स्वेत मूत्र निसका तुम जानो ॥ नाड़ी की गति
हंस काक मेंडक पहिचानो ॥

ये लक्षण तिमिर भास्कर को आशय है ॥ कंटि हु वेहैं ॥

॥ अथ कफ पित्त ज्वर का जतन लिखते हैं ॥

इस बीमारी वाले को अष्टावशेष जल पिलावे ॥ अथ औषध
चौपाई ॥ नेत्रबाला सोंठ नवीली ॥ चंदन लाल गिलोय र
सीली ॥ दारु हलद नीकी ले आवो ॥ छठा कायफल कूट
मिलावो ॥ तीन तीन माशे भर प्यारी ॥ दस दिन काढ़ा दे्य
पकारी ॥ ॥ अर्थ ॥

नेत्रबाला ॥ सोंठ ॥ लाल चंदन ॥ गिलोय ॥ दारु
हलद ॥ कायफल ॥ हरेक तीन २ माशे ले काढ़ा कर
१० दिन पिलावे तो कफ पित्त ज्वर जाय ॥

॥ और जतन ॥ दोहा ॥

नागर मोथ मंगाय पुन हरिजतीव की छाल
धनिया और गिलोय लो नीका चंदन लाल

कड़ा ॥ नीका चंदन लाल बराबर सब ले आवे ॥ कूटप

कवेक्वाथ छान कर दसदिनप्यावे ॥ कफ पित निश्चे जाय दाहनिस वमनसमीना ॥ जोंपवरा को मार एम भाषेले सिया

॥ अर्थ ॥ पदमाप ॥ नीवकी छाल ॥ धनियां ॥ गिलोय ॥ इसकाढे कोदसदिनपिलावे ॥

॥ औरजतन दोहा ॥

नागरमोथापीप्पली सोंठ नीमकी छाल ॥

नीकीकुटकी इंद्रजव शशिमुखिचालमराल

कड़ा ॥ शशिमुखिचालमराल सेतचंदनलोप्यारी ॥ हरितगिलोयपटोल सुनोमुखचंदउजारी ॥ औषधिसवयेकूटछानकर चूर्णकरावें ॥ फंकी माशे चार जलाष्टवशेश पिलावे ॥ ज्वरषासी अरुस्वांस हिया दुखनाजो होवे ॥ नेरीहोसो नवल दुःखये निश्चे षोवे ॥ ॥ अर्थ ॥

नागरमोथा ॥ पीपल ॥ सोंठ ॥ नीमकी छाल ॥ कुटकी ॥ इंद्रजो ॥ सफेदचंदन ॥ गिलोय ॥ पटोल येसव औषधि वरावरले कूट कपड़ छनकर अष्टावशेषजलके साथ ४ माशे की फंकी कराव तो ऊपर लिखेरोग जांय ॥ ॥ औरजतन ॥

॥ दोहा ॥

दारहलद पुननीवका छालगिलोयमंगाय

पीपल और चिरायता लेकचूर सम भाय ॥

कड़ा ॥ लेकचूर समभाय कटेली दोनो लावै ॥ सुघरपटो
ल मंगाय अडूसा और मिलावै ॥ लेले मासे तीन पकावै
काढ़ा नीका ॥ जो येदस दिन देय मिटै ज्वर पित कफ ही
का ॥ ॥ अर्थ ॥

दारहलदी ॥ नीमकी छाल ॥ गिलोय ॥ पीपल ॥ चि
रायता ॥ कचूर ॥ दोनो कटेली ॥ पटोल ॥ अडूसा ॥
येसब दवा बराबर लाय कूट रक्खे ३ मासे का काढ़ा १० दि
न तक देनो पित्त कफ दूर होय ॥

॥ और जतन चौपाई ॥

नागरमोथा पीपल सोंठी ॥ किरमाला की गिरी अनोठी ॥
धनियां कुटकी दाष सुहागन ॥ मूलपीपला ले सम भागन ॥

॥ दोहा ॥

ग्यारह दिन यह दीजिये काढ़ा सो बेदर्द ॥
अलमूर्छा अरुचि ज्वर मिटै तीहन भ्रम करदं ॥

॥ अर्थ ॥ नागरमोथा ॥ पीपल ॥ सोंठ ॥ किर
माला की गिरी ॥ धनियां ॥ कुटकी ॥ दाष ॥ पीपला
मूल ॥ ये सब बराबर ले कूट काढ़ा कर ११ दिन देनो
भ्रम मूर्छा भ्रम अरुचि छर्द सहित पित कफ ज्वर दूर होय

इतिपित्तकफ ज्वरके लक्षण जतनसंपूर्णम

अथसन्निपातकीउत्पत्तिलक्षणाजतनलिख्यते॥

॥ प्रश्नकर्त्ताका सोरठा ॥

पंडितचतुरगंभीर॥सर्वशिरोमणिवैद्यवर
कहोसकलमतिधीर॥सन्निपातलक्षणजतन

कुंडा॥कहोसकलमतिधीरोगयहकैसेजाहै॥सन्निपातमेंदबासुनोविरलाहीवचाहै॥वर्णोंएसेजतनवचेंइससेनरनारी॥जगसुखकारीबातकंतयहकहोविचारी॥ अथसन्निपातज्वरकीउत्पत्तिकेलक्षणालिख्यते॥ ॥उत्तरवैद्यकादोहा॥

कीनाप्रश्नसुहावना परहितकारीबात ॥
सन्निपातलक्षणजतनसकलसुनोतजकाम

कुंडा॥सकलसुनोतजकामएकमनहोकरप्यारी॥सन्निपातकेभेदकहूंमेंसबविस्तारी॥उपजेजिसविधरोगसोइतुमसुनोसुहागन॥जिनजतनोसेजायरहेसबहोबड़भागन॥ ॥ दोहा ॥

अतिहिगरमअतिचीकनाअतितीषाजोखाय
अतितीषापदाअतीसीन्नपातउपजाय ॥

कड़ा ॥ षन्निपात उपजाय मासक ज्ञा जो पावै ॥ रोगवती अ
गिनाद संगहीरेन गवावे ॥ क्रोधवती सिरमें भेद कछु हू नारा
वे ॥ परमानंद सुजान सनातन वैद्यक भावै ॥

अथसन्निपातके लक्षणलिख्यते दोहा

छिनछिनमें गरमी उठे छिनछिन शीत दबाय
हंसी कोड़े कामनिज पलट स्वभावजुजाय

कड़ा ॥ पलटस्वभावजुजाय देहमें हडकलहोवे ॥ आं
खोंमें जल बहै देह की सुधबुध खोवे ॥ नैन लाल कछु
श्याम शब्द नहिं देय सुनाई ॥ उठे स्वांस अरु कासकं
ठमें कफ षषराई ॥ जिव्हा काली पड़े देह सब दिन रुख
के ॥ रैन न आवे नींद मिला कफ लोहू थूके ॥ दोहा ॥

अकस्मात रोवे हंसे नाचे गावे गीत ॥
पुनरोवे अरु सिरधुने छिन गरमी छिन शीत

कुंडलिया ॥ छिन गरमी छिन शीत होठ मुखपक रजा
वे ॥ नाड़ी की गतिमंद सिथलसूक्षम फरकावे ॥ काला
पीला लाल मूत्र की रंगत जानो ॥ येसब लक्षण होंयति
हिसन पात वपानो ॥

॥ अथसन्निपातज्वरके लक्षणसमाप्तम् ॥

॥ अथसन्निपातको जतनलिख्यते ॥

दो॰ पानी सौंठ मिलायके अध औटा कर लेय
दिनका औटा दिवसमें निशिका निशको देय

दोहा॥ बिना पवनके मंदुमें रषे नाकीं सेज॥ सात दिवस पर्यंत सब वस्तुनका परहेज॥ शिव जीके पूजन सहित कीजे पुन्य और दान॥ सात दिवसके बाद फिर काढा कहे सुजान॥ ॥ अथ काढा दोहा॥

वच छड़ चव्य दोउ कटकी पीपल पुहकर मूल
सोंठ इंद्र जव कायफल भाडंगी सम तूल॥

काढा॥ भाडंगी सम तूल पीपला मूल नवीली॥ मिरच स्याह अजमोद काकड़ासींगी जीली॥ पाठल राय सना चिरायता लीजो प्यारी॥ भाग बराबर कूट मिलाकर धरे सवांरी॥ टंक प्रात अरु टंक शाम का काढा दीजे॥ सन्निपात शीतांग अफारा शूलह छीजे॥ अर्थ॥ वच छड़ चव्य दोनों कटेली पीपल पुहकर मूल सोंठ इंद्र जव कायफल भाडंगी पीपला मूल स्याह मिरच अजमोद काकड़ सींगी पाठल रास्ना चिरायता ये सब द्वा बराबर ले कूट कर धरे ४ माशेका काढा कर सुबहको देवे इतना ही शामको पिलावे तो शीतांग अफारा शूल कफ व

कवाद सब दूर होय ॥ ॥ और जनन दोहा ॥

निर्गुंडी जल भांगरा देवदार कुलनार
अर्णी पीपल रास्ना सोंठ जवासा डार

कड़ा ॥ सोंठ जवासा डार आक जड़ चित्रक प्यारी ॥ चव्य पीपलामूल सहंजना बच सुखकारी ॥ नवल अ तीस विराना ये औषधि ले लीजे ॥ टंक २ परमाण काथ दोनों खन दीजे ॥ सन्निपात ज्वर धनुर्वान कफ खांसी जावै ॥ वंद जाकड़ा खुले स्वास षीनता न सावै ॥

॥ अर्थ ॥ निर्गुंडी जलभांगरा देवदार अर्णी पीपल रास्ना सोंठ जवासा आक की जड़ चीता चव्य पीपलामूल सहंजना बच अतीस विर यता ये सब दवा बराबर ले चार २ मासे का काढ़ा सुबह और इतना ही शाम को देनो ऊपर लिखे रोग दूर हो यह लोलिंबराज का आशय है ॥ जो सन्नि पात में जीभ सिथल हो जाय तो जीभ पर बिजोर की केस र में मेथी सेंधा नमक स्याह मिरच मिलाय के मलेतो जीभ की जड़ता जाय ॥ अथ सन्निपात को इलास उन्मत्तरस ॥ ॥ चौपाई ॥

मस्तुवा मिरच बराबर लावै ॥ पीपल सेंधा नमक मिलावै ॥

जलमेंपीसनाकमेंडारे॥ ज्ञान होय अज्ञा सिधारे॥
जोसन्निपातमेंज्ञानजाता रहा होतो इस ठुलाससे ज्ञा
न होवे॥ अथसन्निपातको और ठुलास॥
चौपाई॥ पांच टंक गंधक समपाय॥ षल्ल करो दोनोइ
कबाय॥ दोनोंकोसम त्रिकुटा लीजे॥कूट छान चूरण
करदीजे॥लाय धतूरा रस कढ़वावे॥ तीन तीन पुट
देता जावे॥एक दिवस पुन षरल जु कीजे॥ले ठुला
स रोगी को दीजे॥सन्निपात को छिनमें नासै॥ वैद्यक
देखसुजानप्रकासै॥ ॥ अर्थ ॥
आधी छटांक गंधक इतना हीपारा दोनोकेबराबर
यानि एक छटांक त्रिकुटा यानिसोंठीमरचस्या
ह और पीपल तीनोंको पहलेबारीक पीसबादषर
लमें पारे गंधककी कजली कर उन तीनोंका चूर्णमिला
य धतूरेके रसकी ३ पुट दे ८ पहर खरल करो सूंघनेसे
सन्निपात जाय॥ ॥ अथसन्निपातको अंजन ॥
जमालगोटेकीगिरी माशे १० पीपलामूल माशे ५
स्याहमिरच माशा १ तीनोंको जंभीरीके अरकमें ७
दिन खरल करे आंखमें डाले सन्निपात जाय॥
॥ अथ भैरवांजन॥

पारा गंधक स्याह मिरच पीपल येसब बराबर ले और ज
मालगोटा इनसे चौथाई पहले पारा गंधक पीसखरल
में कजली करे बाद बाकी तीनों को पीसकर मिलावे जंभी
री के रस में ८ दिन खरल करे आखों में आंजते ही सन्नि
पात जाय यै बैद्यरहस्य का आसय है ॥

॥ और अंजन दोहा ॥

॥ सिरसबीज लहसन मिरच सेंधानमक मिलाव
॥ पीपल सिलवच सब दवा तोल बराबर लाव

कड़ा ॥ तोल बराबर लाव पीस गोमूत्र मिलावे ॥ खरल
करे दिन एक तिसि फिर छांह सुकावे ॥ अंजन करके धरे
नेत्र में जिसके डारे ॥ स्वांस कास शीतांग सीहत सुन पात
सिधारे ॥ अथ महासन्निपात का जतन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

पारा सींगी मोहरा काली मिरच मंगाव ॥
नीला थोथा डार पुन नौसादर ले आव ॥

कड़ा ॥ ये औषध सब डार बराबर चूरन कीजे ॥ कोमल
लहसन और धतूरे का रस लीजे ॥ चूरन में रस डार घो
टिकर मस्तक बांधे ॥ एक पहर में चढ़े ताप तब शिव आ
राधे ॥ जो चेतन्य न होय और तपसी ना आवे ॥

तो फिर रोगी मरै नहीं कोइ वैद्य बचावे ॥ अर्थ ॥ पारा सींगी मोहरा कालीमिरच नीला थोथा नौसादर ये सब बराबर ले पीस धतूरा और ल्हसन के अरक में रोटी बनायके माथे पर बांधे जो एक पहर में तप चढ़े तो रोगी बचे वरना असाध्य है ॥

॥ और जतन दोहा ॥

ल्हसन राइ पीसिये मूल मदं जनाडार
गोऊ मूत्र मिलायके रोटी लेय सवांर

कड़ा ॥ रोटी लेय सवांर और रोगी करवावे ॥ मस्तक ऊपर धरे पहर दो तप चढ़ आवै ॥ जो रोगी ना तपे मूर्छा में रह जावै ॥ तो फिर वह जन मरै नहीं कोइ बैद्य बचावे ॥ यह वैद्य विनोद का आशय है ॥ सन्निपात को बाज वैद्योंने ५२ प्रकार का लिषा है उसके लक्षण जतन इस पुस्तक में नहीं लिखे क्योंकि सुश्रुत वाग्भट आदिने सन्निपात एक ही प्रकार का लिखा है ॥

अथ आगंतुक ज्वर के लक्षण जतन ॥ लिख्यंते ॥

॥ वाक्य स्वीका दोहा ॥

॥ सात ज्वरों के भेद तो ध्रुव कहे समझाय ॥

अब आगंतुकके जतनक हो कंत चितलाय कडा ॥ कहो कंत चितलाय हमारे प्रानपियारे। जो २ इसके भेद कृपाकर भाषो सारे ॥ जिन जतनोंसे जाय होय सब रोगी नीके ॥ कहो दयाकर सकल मिटैं सब संसय जीके ॥

अथ आगंतुक ज्वरांतर प्रेतादिकके ज्वरके
॥ लक्षण लिख्यते ॥

दो० छिन रोवै छिन हँसै और होयचित भंग
रहे देह उदवेगमें थरथर कांपै अंग ॥

कुंडलियां ॥ थर २ कांपै अंग प्रेतबाधा तुम जानों ॥ मंत्र जंत्र अरु तंत्र जतन तिसके पहिचानों ॥ शिवका पूजन करे वेदमाता जपवावे ॥ फिर प्रेतादिक बाधक ही ढूंढी नहिं पावे ॥

अथ भूतज्वरका कुल्लास या अंजन लिख्यते
॥ सोरठा ॥

नीका हींग मंगाय ल्हसन जलमें घोलिये
अंजन नैन लगाय वाकि चिन ले सूंघिये

॥ अथ प्रेतादिक ज्वरको तंत्र भाषा ॥

रबीवारको स्नान कर सहदेई की जड़ लावे २ तुलसीप

व॰ स्याहमिरच तीनों चीजों को तावीज़में रखगलेमें बांधे तोप्रेत ज्वर जाय और रोगी आनंद होय॥

अथ चोट लगनिसे हुवा जो ज्वर तिसके जतन लिख्यते॥

॥ दोहा ॥

शस्त्रों कीजो चोटसे भरे अंगमे वाय ॥

सोइ बिगाड़ै खूनको फिर सूजन होजाय॥

कुंडलियां॥ अंग सूजन जब होय देहमें ज्वर चढ आवै लंघन ताको मने दूध अरु मिसरी प्यावै॥ मधुर चीकना खाय चोटपै हलदी लावै॥ पट्टी बंधन सेक जतनसे खूबकरावै॥ ॥ अथ भूत उतारनेको मंत्र ॥ ओंनमो ओं ह्रीं नमो भूतनायक समस्त भूतन भूतानि साधय २ हूं २ इस मंत्रको मोरके पंखसे झाड़ादीजे तो भूतादिक निकले ॥ ॥ दोहा ॥

नारी पूंछे वैद्यसे सुनियो वैद्यक राज ॥

विषमःज्वर लक्षण जतन मोहवतावो आज

॥ दोहा ॥

नारीके सुनकर वचन बोले वैद्य सुजान ॥

विषमःज्वरके भेद बहु तिनमें चार प्रधान॥

प्रथम जो रोज आवै तिसे संतत कहते हैं, दूसरा

जो एक दिन छोड़कर आवै सो एकांतरा है तीसरा
जो दो दिन छोड़के आवै सो तिजारी कहाता है चौथा
चातुर्थिक जिसे चौथिया बोलते हैं विषमज्वरवाले
को मूंगका या मोठकी दाल का पानी पथ्य देना चाहिये

॥ अथ काढ़ा चौपाई ॥

नवल गिलोय नीम की छाल॥ हैड़ पटोल इंद्रजव
डाल॥ कूठा जवासा सुंदर लाव॥ सबै बराबर भाग मि
लाव॥ टंक प्रात अरु टंक हि शाम॥ कर काढ़ा जो प्यावै
काम॥ सात दिवस बिन नागा प्यावै॥ संतत ज्वर की मूल न
पावै॥ ॥ अथ शीत ज्वर वाले को चंदन क्षुद्रादिक क्वाथ
चौपाई॥ नागर मोथा चंदन सोंठी॥ भाड़ंगी पदमाष अ
नोठी॥ पोहकर मूल नीम की छाल॥ पीतपापड़ा धनिया
डाल॥ दोऊ कटेली इंद्रजौ॥ पत्रपटोल अडूसा लौ॥
कुटकी और चिरायता लाव॥ नीको सौरत गिलोय मंगाव
भाग बराबर सबले आवै॥ जौकुट करकै क्वाथ बनावै॥
दोदो टंक दोऊ रवन प्यावै॥ दस दिन अवधी वैद्य दिनावै
शीत ज्वर फिर ऐसे जावै॥ जैसे घन दल पवन न सावै॥
अथ विषमज्वर के लिये षोडशांग चूर्ण॥ चौपाला
फल प्रथम चायमाण पुन नागर मोथा धनि यौ ॥

सोंठनीमकीछालकटेली कुटकीलेय अमीनया॥पीप
ल पीतपापड़ा प्यासिलेयपटोल अलवेली॥ स्वच्छकचू
र काकड़ासींगी हेड़ गिलोय नवेली॥ दोनबरावरसबये
औषधि कूट कपड़ छन कीजि॥ आठदिवसलों फंकी
वसकी सबाटंकभरलीजि॥ शीतलजलके साथ फंकावि
दोनोरवन औष्धारी॥ विषमज्वर की जड़को अंगसेनिके
लेयउषारी॥ ॥ अर्थ॥

फूलप्रयंग बायपाणा नागरमोथ्या धानेयां सोंठ
नीमकीछाल कुटकी पीपल पित्तपापड़ा पटोल
कचूर काकड़ासींगी हेड़ गिलोय दोनोकटेली
येसबबराबर लि कूटकपड़छन कर चूरण ४ माशेनाजे
पानीकेसाथ ८ दिन खाय तो विषमज्वरजाय॥

॥ औरजतन॥ दोहा॥

सोंठचिरातापिप्पली कुटकी हेड़ नवीन॥
वायविड़ंग निसोत पुन छाल नीमकी चीन्ह

चौबोला॥ छाल नीम पुन चीन्ह मँगावो नागरमोथा प्यारी
भागबराबर कूट पीसकेर चूरनधरेसुधारी॥ टंक २ भरसात
दिवसलों गरमनीरसे लीजे॥ भूपकरे चित चैन धरे अ
रु विषमज्वर मद छीजे॥ ॥ अर्थ॥

सोंठ चिरायता नीमकीछाल पीपल कुटकी
हेड़का बक्कल वायविड़ंग निसोत नागरमोथा
येसब बराबरले चूर्ण करे चार२ मासे गरम पानीसे ७
दिननक फांके तो विषम ज्वर जाय भूषलगे चित्तको
चैन मालूम हो ॥

प्रथमेबुखारकी मालती बसंत लिख्यते दोहा
वरक कनकके भागले दूने मोती डार ॥
तीन भागले हींगलू स्या मिर्चांके चार ॥

रोड़ा छंद ॥ स्यामिर्चौं के चार बराबर सबके षोपा डारे
नीबूरस में षरल करे जब तक चिकन दे सिधारे ॥ रत्तीसे
थे रत्तीतक अनुमान सुजान बतावे ॥ पीपल शहत मिला
जो चाटै जीर्णबुखार नसावे ॥ मूत्र कृच्छ्र संग्रहणी षासी
स्वास प्रदर जो होवे ॥ गरमीका दुख धातु विकारी सबको
येरस षोवे ॥ ॥ अर्थ ॥

सोनेके वरक माशा १ मोती माशे २ हींगलू माशे ३
स्याह मिरच माशे ४ सबके बराबर षोपा डाल षड़ल में
रख नीबूके अरक में षड़ल किये जाय जब चिकनाई
जाती रहै तब एक रत्तीसे दो रत्तीतक पीपल शहद
मिलाय के चाटे तो पुराना बुषार षांसी स्वास प्रदर

संग्रहणीमूत्रकृच्छ धातुकेविकार औरगरमीकेसबरोग दूरहैंय॥ ॥अथसुदर्शनचूर्णलिख्यते॥ दोहा ॥

त्रिकुटा त्रिफला इंद्रजव चंदन वायविडंग
पीनपापड़ा फटकरी चीना और लवंग ॥

कुंडलियां॥ चीना और लवंग वंसलोचन अरु इंद्रगी॥ त्रायमाण षसमोप्या अजवायनभाडंगी॥ तज कचूर पदमाष अड़ूसा नेत्रबाला॥ चव्यसहंजनाबीजमुलेठी नीमकि छाला॥ कवलगटेकीगिरीमूर्वा पुहकरमूला॥ देवदारुबच दारुहलद पत्रजभी तूला॥ धनियांऔरअतीस कटेली दोनों प्यारी॥ नवलपीपलामूल षारहटी चंदउजारी॥ कुटकी और पटोल दवासवकूट कनावो ॥ सबसे आधा शील चिराता चूर्णवनावो॥ दोहा ॥

शीतलजलसंग टकभर फांके प्रातस्काल
नाम सुदर्शन चूर्णयह विषमःज्वरकोकाल

अर्थ॥ सोंठ मिरच पीपल हैड़ बहेड़ा आवला इंद्रजौ चंदन वायविडंग पीनपापड़ा फटकी चीना लौंग वंसलोचन त्रायमाण षस मोप्या अजवायन भाडंगी तज कचूर पदमाष अड़ूसा नेत्रबाला चव्य सहंजनेकेवीज नीमकी छाल

मुलेठी कंवल गट्टे की गिरी एला पोहकरमूल देव
दार वच दारहलद पद्माख धनियां अनीम क
टेली दोनो पीपलामूल भारङ्गी कुटकी पटोल
ये सव औषधि कूट कपड़ छनकर ४ माशे ताजे जल से
फांके तो विषम ज्वर जाय इस चूरणका मैंने खुद खूब तज
रवा कियाहै थोड़े दिनों में ज्वरको निकाल दिया
औरोंको भी दिया सबने तारीफ की यह चूर्ण सब ज्वरों
की फायदे मंद है जैसे सुदर्शनचक्र सब दुष्टों को मार
जक्त की रक्षा करता है तैसेही ये चूर्ण सब ज्वरों का नाश
कर देह की रक्षा करता है ॥

अथ मल ज्वर के लक्षण जतन लिख्यते

॥ दोहा ॥

वमन दाह भ्रम मूरछा मुखसूषा अरु सूल
पल पल में हिचकी चलें लीजे पीपल मूल

कुंडलियां ॥ लीजे पीपलमूल हेड़ कुटकी अरु मोथा
किरमाला की गिरी बराबर सब अवशोधा ॥ टंक टंक
भर डाल क्वाथ कर देय पिलाई ॥ मलज्वर की स
व व्यथा फेर ढूंढी नहिं पाई ॥ अथ
पीपलामूल हेड़ कुटकी नागरमोथा किरमाला

कोगिरी पसब बराबर ले कूट ४ माशे का काढ़ा कर पिलावे तो मल ज्वर दूर होय ॥

अथ गर्भवती स्त्री के रोग के लक्षण जतन ॥ प्रश्न स्त्री का दोहा ॥

गर्भवती जो नार है ताहि सतावे ताप ॥
तिस्के ज्वर को जतन क्या मोहि बतावो आप

कुंडलियां ॥ मोहि बतावो आप औषधी क्या दीजै ॥ जिन जतनों से बाल बचे अरु व्याधा छीजै ॥ तुम हो चतुर प्रवीन दीन्ह के पालन हार ॥ गर्भवती का रोग जाय किस विध से प्यार ॥

॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥

गोरी सर पस दाख अरु महुवा चंदन लाल
नेत्रवाल मिसरी धणा और मुलेठी डाल

कुंडलियां ॥ तोल सबन को लेय बराबर खूब उबाले ॥ जब का ढा पक जाय पीस कर मिसरी डाले ॥ गर्भवती को देय सात दिन तक यह प्यारी ॥ ताजानूं कहां जाय गर्भ ज्वर की बीमारी ॥ ॥ अर्थ ॥

गौरीसर पस दाख महुवा लाल चंदन धनियां नत्रबाला मिसरी मुलेठी सबको बराबर ले पीस काढ़ा करै फिर मिसरी डाल गर्भणी को पिलावे

तो ज्वर जाय॥

अथ प्रसूतिका को दशमूल का काढ़ा॥ दोहा॥

अरलू बेलौ की गिरी अरणी पाठ कंभेर॥
गोक्षुर पीपल कंटकी शालपरणी पुन गेर॥

॥अर्थ॥ अरलू बेलगिरी अरणी पाठ कुंभेर गोखरू पीपल दोनों कटेली शालपरणी ये सब बराबर ले कूट काढ़ा कर पिलावे तो प्रसूत का रोग जाय प्रसूतिका ज्वर वाली के अंग फूटनी होय शरीर भारी रहै और गरम रहै शरीर कांपे प्यास बहुत लगै सूजन हो और अतिसार ये लक्षण देख प्रसूतिका ज्वर जाने॥ ॥अथ प्रसूतिका को और जतन॥ अजमोद वंसलोचन खैरसार विजयसार सोंफ धनियां मोचरस ये सब कूट चूर्ण कर २ तोले का काढ़ा कर १० दिन दे तो प्रसूतिका को ज्वर जाय॥

॥अथ बालकों के इलाज लिख्यते॥

॥प्रश्न स्त्री का दोहा॥

बालक के जो रोग हैं ज्वर आदिक बहु भांत
तिनहु के लक्षण जतन सब दिसु नावो नाथ

कुंडलियां॥ सबहि सुनावो नाथ बालज्वर पीड़ा भारी॥

नापीवे नाखायतिन्हेंफिर क्योंवीमारी। मिथ्याहारविसरनहींकु बालक जानै॥ तिनकोंकेसेरोगदयाकरत्र्प्रापवषानै॥ ॥ उत्तरवैद्यकादोहा ॥

यामानायाधाय जो गरिष्ट भोजन खाय
भांतिभांतिकेरोग तब बालक को होजाय

कुंडलियां॥ बालक को जो हांयरोगनवयह बिधकीजै जिसकापीवेदूधतिसे पथहलकादीजै॥ वकलहैड़ मुलेठी नागरमोथालावै॥ डालपटोलवराबर चारों कुटवावै॥ लेमाशाभरएक क्वाथदिनसातपिलावै बालककोज्वरजायसुजानवषानसुनावै ॥

॥अर्थ॥ हैड़कावक्कल मुलेठी नागरमोथा पटोल इन चारोंकाकाढ़ाकरमाशा१पकायबालककोसीपीसेंदेतोज्वरजायवरसदिनतकके बालककोई माशेकाढ़ादे सालभरसेजादे अवस्थाकाहोतो तोलाभर इसी अंदाजसे जादे देनाजाय ॥

॥ औरजतन ॥

हड़ अरु पील मुलैठी मडुवा चारोंकोबारीक पिसावशहदसंयुक्त चटावेमाशाभरतोबालककाज्वरजाय॥ अथबालककोअतिसारसहितज्वरहोय

॥ तिसका इलाज दोहा ॥

नेत्र बाला इंद्रजव धायफूल अतिसार ॥
बेलगिरी धनियां नवल सब सम करके डार ॥
दो माशे का क्वाथ कर अनसमै निज देय ॥
बालक को अतिसार ज्वर निश्चै ये हरलेय ॥

अथ बालक को कृमि ज्वर को लक्षण जतन

दो॰ वर्णा विवर्णा शरीर का स्थूल पेट में होय ॥
वमन करे दुःखे हिया दूध न पीवे कोय ॥

कुंडलियां ॥ दूध न पीवे कोय उदर मे कीड़े जानो ॥ वायविडंग पलास सहंजने की जड़ आनो ॥ नागरमोथा नीव छाल को कूट सवांरो ॥ नवल पटोल मंगाय देवदारू भी डारो ॥ सबको करी मिलाय कूट दो मासे डारै क्वाथ सात दिन देय उदर कृमि नाश सिधारै ॥

॥ अर्थ ॥ बालक का वर्णा विवर्णा होजाय यानि और से और रूप होजाय पेट में दर्द होय हिया दुःखे वाले कू वमन करै भ्रम होय भोजन में रुच नहीं होय अतिसार होय तो ये औषध दीजे पलास पापड़ा नीम की छाल सहंजने की जड़ नागर मोथा देवदार वायविडंग ये सब कूट दो दो मासे का क्वाथ कर दोनों वख

त १ दिन देतो कामिज्वर जाय ॥ + ॥ + ॥ + ॥ ॥

॥ अथ ज्वरकाकुटंबलिख्यते ॥

ये उपद्रव ज्वरके साथमें हो जाते हैं पहले ज्वर होय बाद इसके इन उपद्रवोंमेंसे हो जातेहैं सो ज्वर का कुटुंब है ॥

॥ कवित्त ॥

कोटी पत्नी प्यास भूष तापकी है बडी नारी स्वांस कास पुत्र दोऊ ताके बलवान हैं ॥ हिचकी मवन दोउ पुत्रियां सुघर वाकी जाकी लगैं जावि ताके हरन आसान है ॥ अतीसार भाई और अरुचि बद नराक दोनो ये सहाय देत अन्नजामें प्रान हैं ॥ ससुर अफारा जानो वंद कोष्ट भान जाहै मूर्छा है बांदी ताने भनत सुजान है ॥

॥ अर्थ ॥

ज्वरके भूष और प्यास दो स्त्री है ॥ षांसी और स्वांस दोनो पुत्र है ॥ हिचकी और वमन दो पुत्री है ॥ और इसका दूसरा भाई अतिसार है ॥ अरुचि ज्वर की बहन है ॥ अफारा ज्वरका सुसरा है ॥ और बंध कोष्ट भानजा है ॥ जब ज्वर और अतिसार दोनो भाई इकट्ठे होंय बहुत उपद्रव करते हैं ॥

॥ तिनका जतन लिखते हैं ॥

नवल अतीस मंगाइये और कुडाकी छाल
सोंठ गिलोय चिरायता नागर मोथा वाल

कुंडलियां ॥ नागरमोथा वाल बराबर सबै मिलावै ॥ माशे चार पकाय क्वाथ दिन सात पिलावै ॥ दोनों वख्त येक्वाथ देय विन नागा प्यारी ॥ होय प्रसन्न सुजान नाश अतिसार विसारी ॥ ॥ अर्थ ॥

अतीस कुडेकी छाल सोंठ गिलोय चिरायता नागर मोथा येसब बराबर लाय ४ माशे का काढा कर ७ दिन पिलावै तो अतिसार जाय ॥

॥ औरजतन कुंडलिया ॥

नागरमोथा सोंठ इंद्रजव चित्रक प्यारी ॥ चव्य पीपलामूल कुडाकी छाल विचारी ॥ छोटी पीपल वेल गिरी सम औषधि सारी ॥ टंक २ का क्वाथ दीजिये कंत दुलारी ॥ स्वांस कांस अरु प्यास शुष्क मुख हिचकी जावै ॥ ज्वर पल्ली पितु सहित फेर दूंढा नहिं पावै ॥

॥ अर्थ ॥ नागरमोथा सोंठ इंद्रजव चीता चव्य पीपल पीपलामूल कुडेकी छाल बेल गिरी येसब बराबर ले ४ माशे का काढा कर दोनो वक्त दे ७ दिन तक तो षांसी स्वांस तिस मुखकी षुश्की हिचकी अफा

दूर होय॥ अथ ज्वरमें अत्यंत प्यासका जतन
॥ रोड़ा छंद ॥

नागरमोथा पीतपापड़ा धनियां कूट करनावे
टंक २ का काढ़ा करके तीन दिवस लों प्यावे
प्यास दाह अतिसार सीत ज्वर ढूंढ़ा कहीं न पावे
परमानंद सुजान काथ यह लष २ ग्रंथ बनावे

॥ और जतन रोला छंद ॥

कमलगटा अरु बड़का अंकुर पील धान ये तीनों॥ नो
लवण वर पीस शहद में गोली बांधन वी नो॥ जो यह गोली
मुखमें राखे प्यास दूर हो जावे॥ परमानंद सुजान गोलि
का लष २ ग्रंथ बनावे॥

अथ ज्वरमें खांसीका जतन लिख्यते
॥ चौपाई ॥

पीपल भाडंगी अलवेली॥ सोंठ पीपलामूल कटेली॥
नये बहेड़े और अडूसा॥ सब सम कूट कीजिये भूसा॥
खैरसार कुली जन डारे॥ टंक एक भर क्वाथ उतारे॥
तीन दिवस लों जो यह पीवै॥ खांसीज्वर दुखी होजीवै

॥अर्थ॥ पीपल भाडंगी सोंठ पीपलामूल
कटेली बहेड़े का बकल अडूसा खैरसार कुलीजन

येसववरावर ले कूट काढ़ा ४ माशेका कर ३ दिनपिलावै तो ज्वरकी षांसी जाय ॥

॥ अथ ज्वरमें स्वासका जतनलि० ॥

रोलाछंद

पीपलमिरच सोंठभाडंगी पोहकर मूल ह्लीजे ॥
कठी काकड़ासींगीसप्तम मोथा सबसम कीजे ॥
टंक २ भरकाढ़ाकरके सात दिवसलों प्यावै ॥
ज्वरमैं स्वास सुजानवषाने तुरत दूर होजावै ॥

॥ अर्थ ॥ पीपल मिरच सोठ भाड़ंगी पोहकर मूल काकड़ासींगी मोथा येसव वरावर ले ४ माशेका काढ़ाकरके ७ दिन तक दे तो ज्वरको स्वांसदूर होय ॥ अथ ज्वरमें हिचकी का जतन

॥ सोरठा ॥

सेंधानमक मंगाय पीस ङ्लासकराइये
छिनमें हिचकी जाय सूंघे होएक वारजो

अथ ज्वरमें वमनका जतन ॥ सोरठा

लेके टंक गिलाय कूट काथ करलीजिये
तामें शहद मिलाय वमन होय तो दीजिये

॥ और जतन चौपाई ॥

प्रथमहि छोटी पीपल लावै॥धानषील समभाग मिलावै
पीस शहदमें डाल चटावै॥ ज्वरकी छर्दि दूरहो जावै
॥अर्थ॥ पीपल धानकी षील दोनों को पीस शहदके साथ चटावै तो छर्दि दूर होय॥

अथ ज्वरमे मूर्छाका जतन॥चौपाई॥

किरमालाकी मींग सुवाल॥पीतपापड़ा रूड़की छाल
चौथा दाष सबै सम कीजे॥टंक२ काढ़ा कर दीजे
ज्वरकी मूर्छा निश्चय जावै॥वैद्यक देख सुजान बतावै
॥अर्थ॥ किरमालाकी गिरी पित्तपापड़ा रूड़का बक्कल दाष येसब बराबर डाल ४ मासेका काढ़ा करके पिलावै तो मूर्छा जाय॥

अथ ज्वरमे बंधकोष्ट और अफारेका जतन
॥दोहा॥

सावनकी बाती करे धरे गुदाके मांहि॥
बंधकोष्ट ज्वर नारि पितु छिनमें दोनो जाहि

अथ ज्वरमे मुखशोष और जीव रोठन लगी तिसका जतन लिख्यते॥ सोरठा॥

मिश्री और अनार॥दोनो जलमें घोलके॥
करकुल्ले दोचार॥मुखकी पुरकी दूर हो॥

अथ ज्वरमे नीद न आवे तिसका जतन

आल्बुषारा १ सेकी भांग १ दोनोको पीस शहद में मिलाय चटावे तो नींद आवे मंग्रहणी जावे भूसत्न वे या अरडीका तेल और अलसीका तेल इन दोनोको कांसीकी प्यालीमें हथेलीसे घिस अंजन करे तो नींद आवे॥ इति आठों ज्वरके लक्षण जतन संपूर्णम्

अथ अतिसाररोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिख्यते॥ ॥ प्रश्न स्त्रीका दोहा ॥

तपका आता जो कहा और एक अतिसार

ताके अब वर्णन करो लक्षण जतन प्रकार

कुंडलियां॥ लक्षण जतन प्रकार कहो अतिसार पियारे॥ इसके रोगी फिरें जगत तो दुषित विचारे॥ जो २ भोजन करें उदरमें पचना नाही॥ पीर पगोंमे होत रगोंमें रस नहि जाही॥

अथ अतिसारकी उत्पत्ति लिख्यते

॥ उत्तर वैद्यका दोहा॥

गरिष्ट भोजन जो करे ठंडी वस्तु जु षाहि

भोजनपै भोजन करे अतीसार कहनाहि

कुंडलियां॥ अतीसार कहनाहि होय पुनि पकखाये

वारी के मल्लमूत्र रोक ना भोजन पावै॥ या जो रूषा भषै अथवा पतला कर पीवै॥ बढे उदर जल धातु सुखी होके सें जीवै॥ अग्निमंद होजाय पवन संग विष्टा आवै॥ मल उतरे अत्यंत रोग अतिसार कहावै॥

अर्थ

गरिष्ट भोजन के करनेसे सीतल वस्तु विशेष खानेसे भोजन के बाद तुरत ही भोजन करनेसे विष आदि के खानेसे मल के रोकनेसे चिकनाई ज्यादे खानेसे रूषा खाने से भोजन पतला करके पीने से उदर में जल धातु बढ़ता है और जठराग्नि को मंद करता है बायके साथ विष्टा आजाता है और मल बहुत उतरता है उसे अतिसार कहते हैं सो अतिसार छह प्रकार का है॥

दोहा

प्रथम बाय पुनि पित्त का तीजा कफ का जान
सन्निपात का सोच का षष्टम आम सुजान

बायु अतिसार १ पित्तातिसार २ कफ अतिसार ३ सन्निपात अतिसार ४ सोच अतिसार ५ आम अतिसार ६॥

अथप्रथम अतिसारकापूर्वरूपलिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

गुदानाभिहृदयउदरमें पीडाहोयसुजान ॥
सदारहे रूपूर्टनीरुज अतिसारपछान ॥

कुंडलिया ॥ अधोपवनरुकजायपेटमेंहोय अफारा ॥ बंधकोष्टसंगरहैपीडकोहैनसहारा ॥ अन्नजिनकना पचेपेटभारीबतलावै ॥ परमानंदसुजानतिसेअतिसा रबतावै ॥

॥ अथवायके अतिसारकेलक्षण ॥

॥ दोहा ॥

मलउतरेरुकरुकजिसे बाय झागअरुश्याम
सेयजनाई दस्तमेंपेडुपिरावेवाय १ ॥

अथवायके अतिसारकाजतन

कुंडलिया ॥ नागरमोथासोंठइंद्रजव लीजेप्यारी ॥ बेयाउर अतीस बराबर औषधसारी ॥ सबसे चार कूट करकाढाछानपिलावै ॥ नाशदिवसनौंदेयवाय अतिसारनसावै ॥

॥ अर्थ ॥

नागरमोथा सोंठ इंद्रजौ अतीस येसब ५ मासेबराबरलेकाढाकरके ३ दिनपिलावैतोबाय काअतिसारजाय ॥

अथ पित्तके अतिसारके लक्षण जतनलि॰

कुंडलिया॥ लाल हरद्यौ पीत रंग मलमें दरसावै॥
पुन पतला मूत्र नाय पसीना पलपल आवै॥ प्यास मूर्छा
प्यास गुदा जोम कपक जावै॥ परमानंद सुजान पित्त अति
सार बतावै॥ ॥अथ पित्तके अतिसारके जतन॥

कुंडलिया॥ नेत्रबाला बेलगिरि अरु नागरमोथा॥ चौ
थाऊ अतीस सबै सम लै अवदोषा॥ दो दो टंक पकाय
क्वाथ दिन आठ जो प्यावै॥ परमानंद सुजान पित्त अ
तिसार नसावै॥ ॥अर्थ॥

नेत्रबाला बेलगिरी नागरमोथा अतीस येसब
बराबर लै ८ मासे का काढा कर ८ दिन दे तौ पित्त अति
सार जाय॥ ॥अथ पित्त अतिसार को औरजतन॥

कुंडलिया॥ सुभग अतीस मंगाय सौंठ दूंद जव उरै॥
धाय ऊफूल रसौत समभाग पखल पधौरै॥ पीस कपड़छन करै
चूर्ण दोटंक बनावै॥ नीका शहद मिलाय समदिन
खात हीपावै॥ ॥अर्थ॥

अतीस सौंठ दूंद जव धायकेफूल रसौत
येसब बराबर लै चूर्णकर ८ मासे शहद केसाथ औरद
खाय तो पित्त अतिसार जाय॥

और पित्त अतिसार को रक्त अतिसार भी कहते हैं जो बहुत गरम चीजें खाई जावें तो इसके साथ लोहू आता है ॥ ॥अथ रक्त अतिसार को जतन ॥

॥ दोहा ॥

॥ छाल कूड़ा की लाइये अरु अनार की छाल
एक टका भर ले दोऊ काढ़ा कीजे बाल
सोरठा तामे डारे लाय पांच टंक पुन शहत ह
रक्त अतिसार नसाय सात दिवस लों लीजिये

अर्थ ॥ कूड़ा की छाल अनार की छाल दोनो टकाभर ले काढ़ा कर ५ टंक शहत डाल ७ दिन पीवे तो रक्त अतिसार जाय॥ रक्त अतिसार को और जतन

सोरठा ॥ नवल कूड़ा की छाल छिलका लेय अनार के मोथा चंदन लाल पाठ धाय के फूल ह नेत्रवाल अतीस सब औषधि सम कर धरो डार घड़े में पीस टंक तीन को क्वाथ कर शहत टंक दो डार क्वाथ सात दिन पीजिये जाय रक्त अतिसार मूल दाह को साथ ले॥ अर्थ कूड़ा की छाल अनार का छिलका मोथा लाल चंदन पाठ धाव के फूल अतीस नेत्र वाला येसब दवा बराबर ले कूट कर

१ मासेकाकाढ़ाकर ७माशेशहद मिलाय ७ दिन देतो रक्त अतिसार दाह शूल सहि न जाय ॥

रक्तातिसार की और जतन चौपाई

चंदन माशे चार जु लावे॥ ताते दूनो शहद मिलावे ॥
दस मासे भर मिसरी डारे॥ चाटत ही अतिसार सिधारे
आठ दिवस तक कीजिये यह औषधि सम भीन॥ परमा
नंद सुजान फिर अतिसार ले जीत॥ अन्यै ॥

सफेद चंदन माशे ५ शहद माशे ८ मिसरी माशे १० इन तीनों को बारीक पीस ८ दिन चाटै तो रक्त अतिसार दूर होय॥ और जतन दोहा

अजा दूध संग पीजिये मिसरी माषन मीन
रोग रक्त अतिसार को तिस्मै लेवे जीत

अथ गुदापक गड़ु होय तिसका जतन

॥ दोहा ॥

अजा दूध संग पीजिये मिसरी शहद मिलाय
गुदापकी के रोग को निश्चै देय नसाय

अथ श्लेषातिसार को लक्षण जतन लिख्यते दोहा

मल चिकना गाढ़ा गिरे श्वेत रंग दरसाय ॥
दुर्गंधा अरु सर्द हो जनत न उदर पिराय

कुंडलिया ॥ उतरत उदरपिपथ देहभारी होजावे ॥ भाजनमें रुचनादिकछोफिरक्यावर खावे ॥ जिसको होयद्दोगअचारलंघनकरवाव्यो ॥ नवीनस्कोपथ्य मूंगदालकानीरपिलाव्यो ॥

अथश्लेष्मातिसारवालेकोकाढा ॥ सोरठा ॥

सोंठकुडाकीछाल ॥ कुटकीचव्यअतीसपुनि ॥
वेलगिरीतजजाल ॥ कूटआठबाजारिये ॥
लेदोटंकपकाय ॥ इनसबकेसमभागकरि ॥
श्लेष्मातिसारनसाय ॥ सातदिवसलोंदीजिये ॥

॥ अर्थ ॥ सोंठ कुडाकीछाल कुटकी चव्य अतीसबेलगिरी तज कूट येसब औषधवरले कूटकाढा भारोकाकरै ७ दिन पिलावेतो श्लेष्मातिसारजाय ॥ ॥ औरजतन ॥

॥ चौपाई ॥

पीपलीमिरचस्याहसुनप्यारी ॥ सोंठअतीसनिमककालीं ॥
हींगभूनकरतिसमेंडारे ॥ सबसमानलेचूर्णसंवारे ॥

॥ दोहा ॥

सातदिवसपरियंतलों प्रतिदिनमाशेचार
जोइसकोफांकैसुघर होश्लेष्मअतिसार ॥

अर्थ ॥ पीपल ऋ्यारूमिरच सोंठ अतीस कालानमक धनाहींग ये सब बराबर ले चूर्ण करै ७ दिन तक चारमासे रोज फांके तो दोषज अतिसार जाय ॥ ॥ अथ सन्निपात के अतिसार को लक्षण ॥

॥ चौपाई ॥

तिदोंसे से नंदा जाके ॥ मोह होय पुन चित भ्रम वाके प्यास अधिक सुख सूखा है ॥ भांति २ का रूप जु कहै ॥ मल सूकर का मांस जु जानै ॥ सन्निपात अतिसार बखानै जो वह रोग बालक के बृद्ध के और स्त्री के होय तो असाध्य जानिये ॥

अथ सन्निपात के अतिसार को जतन

॥ दोहा ॥

पीपल चीता इंद्रजव पाथापाट सुबाल ॥

बेलगिरी अरु चव्य पुन सोंठ कुड़ा की छाल

कुंडलिया ॥ सोंठ कुड़ा की छाल पीपला मूल विशाल सब सम का दोटंक पकावे काथ सुहाल ॥ दस दिन लौं यह काथ विना याँ जो पीवै ॥ सन्निपात अतिसार जाय वह रोगी जीवै ॥ ॥ अर्थ ॥

पीपल चीता इंद्रजव पाथा पाट बेलगिरी

चव्य सोंठ कुडाकी छाल पीपला मूल चिरायता येसब औषधि बराबर ले कूट ८ माशे का काढा कर १० दिन ले तो सन्निपात का अतिसार जाय ॥

और जतन चौपाई

मोथा जंगी हरड नवीली ॥ सोंठ पीससब रंग रंगीली ॥ तोलपुराणागुड सम लीजे ॥ टंक दोयभर गोली कीजे सोना दिवस जो गोली षावै ॥ तो त्रिदोष अतिसार समावै अर्थ ॥ मोथा जंगी हरड सोंठ ये तीनो बराबर पीस पुराणे गुड में मिलाय ८ माशे की गोली बांधे ७ दिन तक एक गोली खाय तो त्रिदोष अतिसार जाय ॥

अथ शोक के अतिसार के लक्षण

सोरठा ॥

उपजत हिय जो सोच पत्नी धन सुत नाश ते
करे अग्नि को पोच और बिगाडे रक्त को

कडा ॥ और बिगाडे रक्त उदर में तेज जु जावै ॥ मलसंग मिलकर रक्त गुदा के द्वारा आवै ॥ ऐसे लक्षण देष शोक अतिसार बतावै ॥ अथ आम अनिल गे भयातिसार कहावै ॥

॥ अथ आमातिसार लक्षण ॥

॥ दोहा ॥

उदर अजीरण अन्नका पुन गरिष्ट जो षाय ॥
वायपित्त कफ के सहित अन्न कोष्ट में जाय
धातु समूह विगार के मल को करै विकार ॥
दुरगंधी तिसमें उठे गिरे गुदा के द्वार + ॥
एसे लक्षण चीकना आम सहित मल जाय
डूबे आम जु वारि मे मल जल में तैराय ॥
लक्षण आमातिसार के कहे सकल समझाय
अब चित दे सुन लीजिये जतन कहूं सब माय

अथ आमातिसार को जतन

कुंडलिया ॥ नागर मोथा बेलगिरी धनिया पुन लीजे ॥ नेत्रबाला सोंठ बराबर सब को कीजे ॥ जौ कुट करके टंक दोयभर काथ पकावे ॥ सात दिवस जो देय आम अतिसार नसावे ॥ अर्थ ॥

नागरमोथा बेलगिरी धनिया नेत्रबाला सोंठ ये सब बराबर ले जौकुट करके २ मासे का काढा करके सात दिवस तक दे तो आमातिसार जाय तथा रोग को देष के १० दिन या १५ दिन तक दे तो अतिसार जाय ॥ यह धान्यपंचक है ॥

अथ आमातिसारका और जतन

चौपाई ॥ जंगी हरड़ अतीस नवीनी ॥ मोथा सोंठ सुरंगर गीली ॥ इन्द्र दारु वरावर लीजै ॥ कूट टंक दो काढ़ा कीजै ॥ सात दिवस जो क्वाथ जु प्यावै ॥ आमातिसार दूर ह्वै जावै

और जतन चौपाई

सैंधानमक अतीस सुहागना ॥ जंगी हरड़ हींग बड़भागन ॥ सोंचर नौन सगा वषियारी ॥ सबको समकर कूट बढ़नारी ॥ माशे आठ चूर्ण नित खावै ॥ गरम नीर ऊपर से प्यावै ॥ आमातिसार व्याधि यह नासै ॥ परमानंद सुजान प्रकासै

अर्थ ॥ जंगी हरड़ अतीस मोथा सोंठ दारुहलद ये सब बराबर ले जौकुट करके धरे ७ माशे का काढ़ा करे ७ दिन तक पिलावे तो आमातिसार जाय और जतन सैंधानमक अतीस जंगी हरड़ भुना हींग सोंचर नोन ये सब बराबर ले कूट छानकर ८ माशे रोज गरम जल के साथ दे तो आमातिसार जाय ॥

अथ पक्वातिसार को जतन

॥ दोहा ॥

बेलगिरी मोथा नवल और धाय के फूल
इंदर जव पुन आंव की गुठली सब सम तूल

पीसकपड़छनटंक दो भैंस छाछ से षाय
भस्मानंद सुजान तुरत पक्कातिसार नसाय
अर्थ बेलगिरी नागर मोथा धायके फूल इंद्रजव
आंबकी गुठली ये सब बराबर ले पीसकपड़छन करै ८
माशे भैंस की छाछ से लेनो पक्कातिसार जाय ॥

अथ पक्केजातिसार को जतन लिख्यते चौपाई

इंद्रजव अरु नागर मोथा। सोंठीकी जड़ औ अवरोष
पाढ़ अनीस अरु बायबिडंगा। कालीमिरच कूट सबसंग
जौकुटकर दो टंक पकावै। काथ सात दिन लौं यह प्यावै
तो जतिसार रहन नहिं पावै। भस्मानंद सुजान बतावै
अर्थ इंद्रजव नागरमोथा सोंठीकी जड़ पाढ़
अनीस बायबिडंग कालीमिरच येसब औषधि कूट
८ माशे का काढ़ा कर ७ दिन देतो पक्कजातिसार जाय

अथ अतिसार में छर्दि होय तिसका जतन दोहा

बेलगिरी और आंब की गुठली ले दो टंक
कूटकाथ करलीजिये रीराहतीन सक
कड़ा ॥ औरि राहन निरांक टंक दो मिसरी डारे ॥
तासम बेल मिलाय कर काथ दिन सात जु प्यावै ॥ छूटै
छर्दि अतिसार रोग यह फेर न आवै ॥

परमानंद सुजान ग्रंथ जिन यह बनावै॥ अर्थ ॥
बेलकी गिरी और आंबकी गुठली इन दोनों को कु
काढा ८ मासे का करे ८ मासे शहद और ८ मासे मिस
री मिलायकर सातदिन पीवै तो छर्दि अतिसार जाय

और जतन

मूंग चावल की खील दोनों को औटाय शहद मिसरी
मिलाय पीवै तो छर्दि अतिसार जाय॥

अथ बात पित्त कफ रुधिर के अतिसार के लक्षण जतन लि

॥ दोहा॥

मल उतरत पीडा बहुत सो बातिक अतिसार
जामें दाह उठै घनी पित्तऽतिसार विचार
कफ मल संग उतरे जिसे सो कफ ही को जान
रुधिर सहित जो मल गिरे लोहू पीर बषान

अथ चारों अतिसार को जतन दोहा

वेलगिरि कालीमिरच तीजो लोध मिलाव
इन तीनों को पीस कै दो पैसे भर खाव॥
शहद टंक भर डार के चाटै औषधि जोय
अतीसार मोडैसहित नाशै जु रोग सब दोय
अर्थ॥ वेलगिरि काली मिरच लोध ये तीनों बराबर

पीसके टेपैसेभरमें ४ मासे शहद मिलाय चाटे तो
अतिसार मोडे निवाही जाय तथा धायके फूल पीस
कर दही के साथ षाय तो मोडे निवाही जाय अथवा कै
थका रस टंक ५ शहद के साथ पीसे ७ दिन पीवे तो मोडा
निवाही जाय ये सब लक्षण और जतन भावप्रकाश
का आशय है॥

अथ आमातिसार को और जतन ॥

हड़ की छाल बधिक पीसकर ८ मासे शहद में मि
लाय कर षाय तो आमातिसार जाय ॥ अथवा ब
राल टंक २ मिसरी टंक १० मिलाय १० दिन षाय
तो पुराना अतिसार भी जाता रहै ॥ अथवा बेल
गिरी मासे ८ बकरी के दूध के साथ ७ दिन पीवे
तौर अतिसार जाय यह वैद्यविनोद का आशय है

॥ अथ और जतन कहा ॥

पीपल सेंधा नोन हींग भुनवाकर जीरा अरु अ
जमोद सोंठ सब सम कर धारै॥ दही मठ में टंक
दो तिस को पीजै॥ भूप करे अतिसार आम और सूल
दू कीजै॥ अर्थ॥ पीपल सेंधा नमक भुना हींग जीरा
अजमोद सोंठ ये सब बराबर ले पीस १० मासे भर

लेद स्त्री के मद्दे में डालकर पीवै तो सूषलगे होय अथवा होय अतिसार आमसूल वा होय यह मूंद का आशय है ॥ ॥ और जतन ॥

सोंठ बारीक पीस जल में गोला बनावे गोले को अरंड के पत्तों में लपेट ऊपर से सूत लपेट कर कपड़ौटी कर मंद २ आंच में पकावै जब ठंढा होय कपड़ौटी दूर कर पत्तों से सोंठ निकाल कर माशे ८ शहद के साथ दिन सात तो अतिसार जाय ॥ और जतन

अफीम माशा १ हींगलू मा० २ लौंग माशे ४ मोचरस माशे ३ मिसरी इन सब को बारीक पीस रत्ती एक सेवन कर सांठी चावल के पानी में वा छाछ में ले तो भयंकर अतिसार भी जाय ॥ और जतन दोहा

नागर मोथा मोचरस जोध अफीम जुआव
बेलगिरी अरु इंद्र जव धाय फूल मंगवाव

चौपाई ॥ सोधा पारा गंधक ल्यावे ॥ सब ये औषध सम कर लावे ॥ गंधक पारा कजली कीजे ॥ पुन सब औषधि पीस जु लीजे ॥ दोहा

पुन कजली में डार के जो तीनन सुखाय ॥
ऊपर छाछ जो पीजिये अतिसार मिट जाय

जो यह अतीसार दिन दिन अतिसार सुजान
संग्रहणी में ऐसी हतो दिन दिन घटती जाय
अर्थ ॥ नागरमोथा मोचरस मोथ अफीम बेल
कीगिरी इंद्रजव धायके फूल सोधापारा सो
धी गंधक येसब औषधि बराबरले प्रथम पारे गंध
ककी कजली करफिर औरसब औषधिबरीक
पीसकर मिलावै १ रत्ती काढ़ के साथ १० दिन खाय
तो अतिसार औरु संग्रहणी जाय यह गंधार रस है
अथवा जायफल छुहारे अफीम ये तीनोबराबर
ले पीस कर पान के रसमें रत्ती १ प्रमाण की गोली बां
धे १ गोली काढ़ के साथ ७ दिन खाय तो भयंकर
अतिसार भी जाय ॥ अतिसारवाले को परहेज

दो० नया अन्न अरु चीकनो भारी वस्तु न खाय
धूप खेद मैथुन गरम भोजन करै न न्हाय

॥ इति अतिसार चिकित्सा ॥

अथ संग्रहणी रोग की उत्पत्ति लक्षण जतन वि०

॥ अथ स्वी का दोहा ॥

लक्षण जतन अतिसार के लिये सकल उर धार
संग्रहणी के भेद अब कहो सहित विस्तार ॥

कड़ा ॥ मुज्ञ कक रूके कथा भेद संग्रहणी भाषे ॥ पथ्य जतन अरु भेद सुतन कह रूमन रा पे ॥ बढ़े जगत में कीर्ति तुम्हारा पुन सब यांवे ॥ मिटें उदरके रोग भोग नवम नको भावें ॥ उत्तरवैद्यकाशेद्ध ॥

तुम हो चतुर प्रवीन अति सुंदरि प्रान अधार
संग्रहणी केरोग का सुन लीजे बिस्तार ॥

कड़ा ॥ सुन लीजे बिस्तार कहूं सब लक्षण प्यारी ॥ पा कारज के हेत धन्य यह बुद्धि तुम्हारी ॥ संग्रहणी का रोग भया नक नगर में भारी ॥ करे अंग को भंग संग जावे बीमारी ॥ अथ संग्रहणी की उत्पत्ति छंद

प्रथम दोश अजिरारना को कर इलाज जु खावई
पुन कुपथ्य को जु रोगी मंद अग्नि होवई
है पुरुष के उदर में छठवी कला इक जानियो
सोइ संग्रहणी कहावे अन्न का अस्थानयो
काउ पक्का अन्न कच्चे को ग्रहण कर लेत है
पक्क को पुन गुदा द्वारा जान बाहर देत है
तिसी कारण वैद्य संग्रहणी कहैं इस रोग को
अंग को दुर्बल करै नासे सकल सुख भोग को

अथ संग्रहणी मात्र के लक्षण

रोड़ाछंद ॥ कच्चा अन्न गुदासे निकलै संग्रहणी पहचानो
कफपित्तवात अरुसन्निपात ये चारयोनि काजानो ॥ मलपत
ला होय गिरै गुदासे कबहुक कैड़ा आवै ॥ गिलोवा कोइ अ
तिसार संग्रहणी बतलावै ॥

अथ वायु की संग्रहणी की उत्पत्ति सहित लक्षण जतन लि

दो० मिथ्या आहार विहार पुन वायुक वस्तु जु खाय
अति बलसे मैथुन करै कुपित वाय होजाय

कुंडलिया ॥ कुपित वाय जब होय कंठ मुख सूखन लागै अरु
प्यास अति लगै विगड़ जठराग्नी जागै ॥ पैर जंघा पेट पीठ
कांधोंमे होवै ॥ दिनदिन दुर्बल होय स्वाद जिह्वासे खो
वै ॥ कान होउ गुंणा यरु चौभोजन में ताकी ॥ जब तक अन्न न
मिलै तृप्ति नहि होवै वाकी ॥ छुटै न फूट न लगे दस्त दम
दम में आवै ॥ गोले का आकार उदर में कबहू
कनावै ॥ मीठा खारा लगै और खट्टा मन मानै ॥
ऐसे लक्षण देख वाय संग्रहणी जानै ॥

॥ अथ संग्रहणी का इलाज ॥

॥ चौपाई ॥

नागरमोथा सोंठ पियारी ॥ नवल अजमोद
गिलोय संवारी ॥

चारौं कूट बराबर कीजे ॥ टंक दोय भर काढ़ा कीजे ॥
पंद्रह दिवस काथ यह दीजे। आम वाय संग्रहणी छीजे
अर्थ ॥ नागरमोथा सोंठ अतीस गिलोय ये चारों
औषधि बराबर ले जौकुट कर ८ माशे का काढ़ा कर १५
दिन देनो आमसहित संग्रहणी वायु की जाय और भूख
बढ़े ॥ वातसंग्रहणी का और जतन ॥

॥ दोहा ॥

चीता पीपल सोंठ अरु चव्य पीपलामूल ॥
पंचों का चूरण करो ले प्यारी सम तूल ॥

कड़ा ॥ ले प्यारी सम तूल टंक दो चूरण कीजै। तामें
छाछ मिलाय दिवस दस लौं यह पीजे ॥ सेवन कीजे
छाछ जहां तक होवे प्यारी ॥ संग्रहणी मिट जाय औ
षधी तीव्र हमारी ॥ ॥ अर्थ ॥
चीता पीपल सोंठ चव्य पीपलामूल ये सब बराबर ले
चूरण करे माशे आठ छाछ में डाल पीवे और छाछ का
बहुत करके सेवन करे तो वायसंग्रहणी जाय अवश्य
करके ॥ ॥ और जतन दोहा ॥

सोधी गंधक टंक दो पारा टंक प्रमाण ॥
दोनों की कज्जली करी परमानंद सुजान ॥

चौपाई॥ माशे दसभर सोंठ जु आने॥ माशे दस पीपल पुन जाने॥ कालीमिरच टंक दो डार॥ भेकी भांग जु पैसा चार॥ पांचों नौन जु आन लावे॥ दस मारो सब नोन मिलावे॥ पंच टंक अजमोद पियारी॥ तासम जीरा कन दुलारी॥ पांच टंक पुन हींग जु लावे॥ इन तीनो को सेक मंगावे॥ पांच ही टंक सुहागा लीजे॥ सबको पीस चूर्ण कर दीजे॥ ले पारे गंधक की कजली॥ तामें डार वस्तु ये सगली॥ ॥ दोहा ॥

खरल करे दो दिन इसे खूब चूर्ण हो जाय
पुन दो माशे जल के संग संग्रहणी में पाय
दूर होय मंदाग्नि सब बावासीर नसाय॥
संग्रहणी पुन बात की कमी सहित मिट जाय

अर्थ॥ सोधी गंधक टंक २ पारा टंक १ इन दोनो की कजली करि बाद इसके इसमें ये दवा मिलावे सोंठ माशे १० पीपल माशे १० स्याह मिरच माशे ८ भुनी भांग पैसा ४ भर पांचों नौन माशे १० भुनी अजमोद माशे २० भुना जीरा माशे २० भुना हींग माशे २० सुहागा माशे २० इन सबको पीस कजली में डार २ दिन खरल करे इस

पैसे ३ मासे से ८ मासे तक गऊकी छाछमें डालकर पीवेतो
वायसंग्रहणी मिटजावै और अग्नि तीव्रहोवै और कृमि वेमरोग
दूर होय॥ अथ पित्तकीसंग्रहणी की उत्पत्ति और लक्षणलि०

दो॰ मिरचखटाई और घनी गरम वस्तु जो खाय
तिनउपित्तन लवणहै देत अग्नि बुझाय
कच्चामल उतरै तिससे पतला पीला जान
हियेकंठ में दाह हो अरुचि सहित सुजान
प्यास लगै अति शरीरमें खट्टी उठै डकार
पित्त संग्रहणी जानिये ताके सकल विकार

अथ पित्तकी संग्रहणीको जतन

दोहा

इन्द्रजव नज धायके फूल रसौत अनीस
इन पांचोंको लायके तोल बराबर पीस॥
टंक दोय गौ छाछवा चावल जल मैलाय
पंद्रह दिन सेवन करै संग्रहणी मिटजाय

अर्थ॥ इंद्रजव नज धायके फूल रसौत अनीस
येसब बराबर पीस गौकी छाछ या शहत या चावलोंके पा
नीमें ४ मासे डालकर पीवेतो पित्तकी संग्रहणी जाय

पित्तसंग्रहणीको और जतन

दोहा

पत्रज नगर इलायची पीपल बाय विडंग
चंदन सफेद मधु जायफल काली मिरच लवंग

कड़ा॥ काली मिरच लवंग सोंठ जीरा प्रिय प्यारी॥ लोचन वंसक पूर भीम सेनी सुख कारी॥ ये सब सम कर तोल बराबर मिसरी ली जे कूट कपड़ छान करे चार मासे नित दीजे॥ बारह दिन लों गौ का दूध से दीजे प्यारी॥ ना जानू कहां जाय पित्त संग्रहणी भारी॥

अर्थ

पत्रज नगर इलायची पीपल बाय विडंग सफेद चंदन जायफल काली मिरच लौंग सोंठ जीरा वंसलोचन भीम सेनी कपूर। ये सब बराबर ले इन सब से दोगुनी मिसरी मिलाय। महीन पीस चूर्ण करै या सब औषधिन के बराबर मिसरी डाले तो इसी के तुल्य धुली हुई भांग पीस के मिलावे ये चूर्ण ४ मासे से ६ मासे तक गौ की छाछ से १२ दिन तक खाय तो पित्त की संग्रहणी जड़ी नशै ॥

इति पित्त संग्रहणी चिकित्सा॥

अथ कफकी संग्रहणी की उत्पत्ती लक्षणलिख्यते

॥ दोहा ॥

अनिचिकना भारी अति ठंडी वस्तु जु षाय
भोजन पाछे हस्त हो दूना अन पच जाय

कड़ा॥ दोनो अन पच जाय हिया दुखना बन लावै॥ अरु चीपीनष रूदेपेट मारी बन लावे॥ मीठी चले उकार उठे खांसी अति भारी॥ आम सहित होदस्त लगे नहि नारी प्यारी॥ निरबल रहे शरीर पुष्ट सा देन दिखाई॥ संग्रहणी कफ जान देष वैद्यक बनलाई॥

॥ अथ कफ की संग्रहणी के जतन ॥

चौपाई॥ चीना पीपल मिरचे कारी॥ हड की छाल सोंठ पिय पियारी॥ संचर नोन मिलाय जुदीजे॥ सबसम तोल चूर्ण कर लीजे॥ माशे आठ छाछ संग फांके॥ कफ संग्रहणी फेर न झांके॥ पंद्रह दिन यह चूर्ण षावे॥ लष लषग्रंथ सुजान बतावे॥ अर्थ ॥

चीना पीपल स्याह मिरच हेड की छाल सोंठ संचर नोन ये सब बराबर ले चूर्ण कर माशे ८ छाछ के साथ १५ दिन पीवे तो कफ संग्रहणी जाय ॥

॥ अथ सन्निपातकी संग्रहणीके लक्षण ॥

दोहा

मिले वात कफ पित्तके लक्षण जामें जान ॥
सन्निपात संग्रहणीका तादि बखान सुजान

॥ अथ सन्निपातकी संग्रहणीके जतन

दोहा

नागर मोथा इंद्र जव और कुड़ाकी छाल
बेलगिरी अरु मोचरस पच्छन नेत्र बाल
सबै बराबर तोलके चूरण लेय पिसाय
अजा दूध संग टंक दो पच्चिस दिन लों खाय
सन्निपात संग्रहणि का करै चूर्ण यह नाश
ज्यों तारा गण छिपे जब दिनकर होय प्रकाश

अर्थ ॥ नागरमोथा इंद्र जव कुड़ाकी छाल बेलगिरी मोचरस नेत्रवाला ये सब औषधी बराबर ले कूट चूर्ण करै ८ मासे चूर्ण बकरीके दूधके साथ २५ दिन तक खाय तो सन्निपातकी संग्रहणी ऐसे जाय जैसे सूर्य्यके उदय होतेही तारागण छिप जाते है ॥

अथ प्रमेह रोग के नाम लक्षण उत्पत्ति औ जतन लिख्यते

प्रश्नकर्त्ताका दोहा ॥

लक्षण जतन प्रमेह के मोसे कहो विचार
यह दुख व्यापत जगत में करत सबन को ख्वार

कुंडा ॥ करत सबन को ख्वार रोग यह है दुखदाई ॥
देखत दीखत देह काष्ट सम घुन लगजाई ॥ कहीं
दर्द नहिं होय देह निर्बल होजावे घटे आयु बल
बुद्धि हजीये रोग उपावे ॥

उत्तर वैद्यका दोहा

प्यारी ने सांची कही है यह अद्भुत रोग
लाखों नो जाने नहीं कि ये जांय सब भोग

कुंडा ॥ किये जांय सब भोग रोग अति बढ़ता जावे ॥ व्याधि
उठे अनेक वात पित कफ अति आवे ॥ बीस भेद जो कहे
कहूं सुन तुमसे प्यारी ॥ तिनके लक्षण जतन औषधी सुन
सब न्यारी ॥ अथ बीसों प्रमेह के नाम ॥

उदक इक्षु सिकता कहा सांद्र सुरा अरु शीत
पिष्ट शुक्र पुन लाल शनै ये दश कफ के मीत

कुंडा ॥ क्षार हरिद्रा नील काक पुन रक्त बखानो ॥ छठा म
जिष्ठ प्रमेह पित्त के ये छै जानो ॥ वसा श्रौद्र अमेह म
धु अरु वसा सनावे ॥ चार असाध्य प्रमेह वायु के सु

अर्थ

उदकप्रमेह १ इक्षुप्रमेह २ सिकता प्रमेह ३ सान्द्रप्रमेह ४ सुराप्रमेह ५ शीतप्रमेह ६ पिष्टप्रमेह ७ शुक्र प्रमेह ८ लालप्रमेह ९ शनै प्रमेह १० ये दसों प्रमेह कफके हैं क्षार प्र० १ हरिद्रा प्र० २ नील प्रमेह ३ काल प्र० ४ रक्त प्र० मंजिष्ठ प्र० ६ ये छह पित्तके हैं ॥ वसि प्रमेह १ क्षौद्र प्रमेह २ नील प्र० ३ और वसा प्रमेह ४ ॥ येचारों वायुके प्रमेह असाध्य हैं ये बीसों प्रमेह वाग्भट्ट सुश्रुत और भाव प्रकाशके मतसे हैं और अत्रेय जीने ६ और वर्णन करे हैं सो ये हैं तक्र प्रमेह १ पूय प्र० २ पीड़िका प्र० ३ शर्करा प्र० ४ धूल प्र० ५ अग्नि मूत्र प्र० ६ अथ कफके दश प्रमेहोंके लक्षण क्रमपूर्वक लिख्यते ॥ १ अथ उदक प्रमेहके लक्षण दोहा ॥

मूतनिर्मलबहुतसा स्वेतगंधबिन जान
चिकनाई हो मूत्रमें उदक प्रमेह बषान

२ अथ सान्द्र प्रमेह को लक्षण ॥

दोहा बासीपानी जिमभरा बर्तनमें गढ़ थाय ॥
ऐसा मूत पुरषजो सांद्र प्रमेह कहाय ॥

३ अथ सुरा प्रमेह को लक्षण लिख्यते ॥

दोहा दारूकीसीबासहो नीचेका गढ़थाय ॥
ऊपरानिर्मल मूत्र हो सुराप्रमेह कहाय ॥

४ अथ पिष्ट प्रमेह को लक्षण लि० ॥

दोहा चावलका सा माड हो रोम खड़े होजाय ॥
लघु शंकामें पीड़ हो पिष्ट प्रमेह कहाय ॥

५ अथ शुक्रप्रमेहको लक्षण दोहा ॥

वीर्य सरीखा मूत्र हो तथा वीर्ययुत होय
शुक्रप्रमेह सुजानयह कहैं वैद्य सब कोय

६ अथ सिकता प्रमेहको लक्षण दोहा

बालूकण सम मूत्र में अथवा कफ युत होय
सिकता प्रमेह सुजानये वैद्य बतावे सोय॥

७ अथ सीतप्रमेहको लक्षण॥ दोहा ॥

मूते बारंबार जो अतिही शीतल जान
परमानंद सुजान सो शीत प्रमेह बखान

८-१० अथ शनै और लाल और इक्षु प्रमेह के लक्षन

चौपाई॥ शनै शनै जो मूते कोई शनै प्रमेह कहावे सोई
लाल सरीखा मूत्र जो होय लाल प्रमेह कहै सब कोय
इक्षुरससा मूत्र जु आवे सोई इक्षुप्रमेह कहावे॥ इति
कफ के प्रमेहों के लक्षण समाप्तम् ॥

अथ पित्त के छह प्रमेहों के लक्षण लिख्यते

१ तिनमें प्रथम क्षार प्रमेह के लक्षण लिखते हैं॥

चौपाई खारी गंध मूत्र में आवे षार सरीखा मूत्र लषावे
सोई क्षार प्रमेह कहावे पुस्तक देख सुजान बतावे

२ अथ नील प्रमेह के लक्षण लिख्यते

चौपाई॥ नीला रंग मूत्र में आवे सोई नील प्रमेह कहावे

३ अथ काल प्रमेह को लक्षण लि०

चौपाई॥ काला रंग मूत्र या होई काल प्रमेह कहै सब कोई

४ अथ हरिद्रा प्रमेह को लक्षण लि०

चौपाई पीलारंग मूत्र हर्साये नामें कड़वी गंध हुआवे
गिरे दाहिनी ओर जु जाकेमेह हरिद्रा निश्चे ताके ॥

५ अथ मंजिष्ठ प्रमेह के लक्षण

दो॰ रंग जीठी मूत्र का अरु आवे दुर्गंध
सो मंजिष्ठ प्रमेह तुम जानो परमानंद

६ अथ रक्त प्रमेह के लक्षण लि॰

दो॰ लोहू साजो मूत्र हो बहुत बुरी हो बास
खारी हो अरु गर्म हो रक्त प्रमेह प्रकास

इतिपित्तके प्रैहोंके ६ लक्षण समाप्तम् ॥

अथ वायु के चारों प्रमेहोंके लक्षण लिख्यते

चौपाई ताजामास रंगजो होई वसा प्रमेह कहै सब कोई ॥ मज्जा मूत्र साथ जो आवे अरु मज्जासा रंग दसावे ॥ शंका वार वार पुन जावे सोई मज्जामेह कहावे सहत सरीखा मीठ होई अथवा लख कषायल सोई जिसको लघुशंका इम आवे ताको चुद्र प्रमेह बतावे

दो॰ बहुत दिनोंका मेह हो करे जतन कछु नाह करता है कुपथ्य सब मधुप्रमेह कहाय ॥ यह मधु प्रमेह असाध्य है ॥ अथ कफ के प्रमेह का उपद्रव लिख्यते दोहा

अन्न पचे ना पेट में भोजन में रुचि नाह
पीनस खांसी हो देह हो नींद सतावे नाहि

इति कफ के प्रमेह के उपद्रव ॥ अथ वायु के प्रमेह के उपद्रव लिख्यते ॥ दोहा ॥

दोहा आवेनीदृत नयनमें रहैहियेमेंपीर ॥
उदावर्त रोगपाइये कांपे सकलशरीर ॥ कां०
कांपे सकल शरीर पेटमें रोग बतावे ॥ खांसी सूजन होय सकलरस मनको भावे ॥ वायु मेहकेकहे उपद्रव सबये प्यारी ॥ करजतन जो वेग जायनि श्चैवमारी ॥ अथप्रमेहको असाध्यलक्षणलि०
जिसमनुष्यकेकफकेउपद्रव होंय और तभी वायुके भी होजावें सो असाध्यहै ॥
अथ आत्रेयजीके मतके ६ प्रमेहोंके नामलक्षण लिख्यते ॥ पूपप्रमेह १ तक्र प्रमेह २ पिंडिकाप्र० ३ शर्करा प्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ ॥
चौपाई ॥ पीब सरीखा मूत्रजो आवे ताको पूपप्रमेह बतावे छाछसमान मूत्रजो जाने ताको तक्र प्रमेह बषाने बीजफुटक लघीसंगवैहै ताको मेह पिंडिकाकेहै । खांड सरीखा मूत्र मिठावे मेहशर्करानाहि बतावे । घीवसरीखावर्णजो होई घिरत प्रमेह कहै सब कोई । रातदिवसबहुमूत्रजो आवे । सर्व अंगनिर्बल होजावे । सो अतिमूत्रप्रमेह कहावे । परमानंद सुजानबतावे ॥
अथ प्रमेहरोग के जतनलिख्यते
प्रथमप्रमेहवालेकोयेनाज षानेकोदेना चाहिये
दो० चावल गेहूं जौ चणा साठी मोठकलत्थ्य
मूंग हरड़ दादालये होंय पुराने पथ्य ॥

दोहा॥ तेल दही घी दूध गुड़ खाक हिरनकामास
दारू खटी वस्तु सब करे प्रमेह प्रकास ॥

अथ कफ के दसों प्रमेह वालोंको काथ जुदा जुदा

दोहा- नागरमोथा कायफल लोध हरड़ की छाल
तोल बराबर लेय सब जौकुट कीजे बाल
पांच टंक का काथ कर शहत मेल कर देय
परमानंद सुजान यह कफ प्रमेह हर लेय

और जतन ॥ छंद ॥

लोध पस कहवा वकल अरु लाल चंदन डारिये
सब बराबर तोल प्यारी पांच टंक उवारिये ॥
काथ जब पक जाय तामें शहत डार जु पीजिये
पित्तका परमेह परमानंद दिन दिन छीजिये॥

दोहा॰ साल कदम धव वृक्ष की बकली चंदन लाल
चारों जौकुट कीजिये दीजे काथ उवाल ॥
ठंडा करके दीजिये प्यारी काथ बनाय॥
परमानंद सुजान ये उदक प्रमेह नसाय॥

अथ लार प्रमेह को जतन दो॰

मृगनैयनी कटि केहरी सुंदर ताकी खानि
ऐसी नारी संग में लारमेह की हानि ॥

अर्थ॥ सुंदर स्त्री से भोग करे तो लार प्रमेह जाय ये
अमितसागर के १९८ सफे में है॥

अथ रक्त प्रमेह को जतन ॥ चौपाई ॥

दाष मुलैठी चंदन लाल पीवे बासी जल में डाल

निम्बरक्त प्रमेह नसावे वैद्यक देख सुजान बनावे

अथ तक्र प्रमेह और पीड़िका को जतन

दोहा- चंदन खस अरु आँवला लोध नीब के पत्र
कहुवा बक्कल शाल के करो सबै एकत्र॥
काढ़ा करके पीजिये नाम गुड़ ले डाल॥
तक्र मेह अरु पीडिका दोनो नासे काल॥

अथ शुक्रप्रमेह को जतन दोहा ॥

दाख्यो नीम जीद पुन सालवकल ले आव
दूब मूर्वा दाभ की कासकी जड़ लाव॥
इन सब को काढ़ा करे छाने देय पिलाय॥
शुक्रमेह अरु रुधिर हू दोनो की जड़ जाय॥

अथ घृतप्रमेह को जतन॥

दोहा- नवल बहेड़ा आवला और हैड़ की छाल
किरमाला की मीग जड़ दत्र मेह जनाशाल

कड़ा- पत्ते नीब अरु बकल खेत केले का लीजे। दाख
मुनक्का और मूर्वा सब सम कीजे। काढ़ा करके देय
मेह घृत का मिट जावे। परमानंद सुजान वैद्य यह ज
तन बनावे॥ अथ इक्षु प्रमेह का जतन ॥

पीतपापड़ा कुट की कूट इनका काढ़ा कर मिसरी
मिलाय पीवे तो इक्षु प्रमेह जाय॥ या अरंड की ज
ड़ धमासो अरलू छाला की जड़ इनका काढ़ा दे तो
इक्षु प्रमेह जाय॥ अथ पित्त के प्रमेह का जतन॥

दोहा इन्द्र जव धव की बकल मूल कमल की डाल

कहवा वकल आवला पुन इमली की छाल
इन सब का काढ़ा करे मिसरी लेय मिलाय
जो यह पीवे नियम कर पित्तप्रमेह नसाय॥
अथ कफ के प्रमेह का जतन॥ दोहा॥
विजयसार कहवा वकल लोध कदम की छाल
वायविडंग अरु कायफल दे कफमेह निकाल
अर्थ विजयसार। कहवा की वकल लोध कदंब का व
कल वायविडंग कायफल इनका काढ़ा देतो कफ
प्रमेह जाय॥ अथ सम्पूर्ण प्रमेहों का जतन और यह
मूत्रस्थान को भी साफ करै है-
कलहारी हैड़ की छाल हलदी कहवा का वकल ये
वारीक पीस सब की बराबर मिसरी मिलाय टंक ५
शहत के साथ चाटे तो सर्व प्रकार का प्रमेह जाय॥
अथ मधुप्रमेह को जतन दोहा
वड़ किरमाला आमला अरलू पीपल चार॥
इन पाचों की मूल का वकल लेय उतार॥
चारोली के वृक्ष की वकल छवीबाल॥
नवल मुलेठी लीजिये और नीम की छाल
पटोल वर्णा की वकल सेंठा सींगी सोंठ॥
दारुहल्दी काली मिरच चीता नवल अनोठ
कड़- चीता नवल अनोठ इंद्रजव पत्रज प्यारी॥ कसुम
च की जड़ बाला निरफला चंद्र उजारी॥ नजड़ लापची
बुधा मिलावो सब सम कीजे॥ पीस सहत के साथ आठ

माशेनित्तलीजे ॥ मधुप्रमेहकीमूलदेहसेदेयनसा
ई ॥ परमानंदसुज्ञानयुक्तिमेरेमनभाई ॥ अथ ॥
वड़कीजड़कावकल किरमालाकीजड़कावकल बेलू
कीजड़कावकल आँवलेकीजड़कावकल पीपलकीज
ड़कावकल चारोलीकेवृक्षकावकल मुलेठी नीमकी
छाल परोलवर्णीकावकल दन्त्यूनी सेठ सींगीचि
त्रक कसागचकीजड़ इंद्रजव त्रिफला सुधाभिला
वा सोठ कालीमिरच तजपत्रज इलायची येसव
वरावर ले वारीकपीस कपड़छनकर आठमाशे श
हतमें मिलाय रोजचाटेतो मधुप्रमेहजाय याइन्ही
सव औषधोंका काढाकर पीवेतो मधुप्रमेहजाय
या इनसवकातेल तथा घृत निकासले औरमर्दन
करेतो मधुप्रमेहजाय ॥ इतिन्यग्रोधाद्यचूर्णम् ॥
औरजतन ॥ सोधीसोनामाखी पाखाणभेद
सेंधा शिलाजीत चंदन कपूर पीपल वंसलोचन
येसववरावरले पीस कपड़छनकर माशे १०
भर ३। तोले शहतमें मिलाके गौके दूधकेसाथ
रोजपीवेतो मधुप्रमेह और मूत्रा
वध दूर होय ये आत्रेयके
लिखेहुवे इलाजहैं

अथ सर्व प्रमेहों का चंद्रप्रभा गुटिका लिख्यते

छन्द

वचकचूर अतीस हलदी दारु हलदी वचला
देवदारु चिरायता वचमूलपीपल तिरफला
नगर मोथा खार जोका नागपीपल सुन्दरी
नोन संचर नोन सांभर नोन सेंधा गुन भरी
धनिक चीता स्वच्छ सजीनेउ सब सम लीजिये
तोल हर एक टंक भर पुनि पीस चूर्ण कीजिये
सार माशे बीस मिसरी आठ माशे डारिये
शिला जीत सुधा हुवा भर टका चार पधारिये
ताहि सम गूगल सुधा सब जुदी पीस कनाइये
पुनि सबै एकत्र करके चूर्ण नीके बनाइये
टका भर पारा सुधी गंधक टका भर लावरी
टका भर अभ्रक पिसा सब चूर्ण माहिं मिलावरी
चार माशे चूर्ण ये घृत शहत संग नित खावई
बवासीर प्रमेह सब अरु कास शूल नसावई
वीर्य के सब दोष चक्षू दन्त रोग निवारई
पांडु रोग अपार मूत्रा घात छिन में टारई
उदर के सब रोग फीहा मूत्र कृच्छ बवा नये
कोढ भी जाता रहै जो खाय नित्य सुजान ये

अर्थ ॥ वचकचूर अतीस हलदी दारुहलदी देवदारु चिरायता पीपलामूल त्रिफला नागरमोथा जवाखार गजपीपल संचरनोन सेंधानोन सांभर धनियां चीता

सज्जीये सब चार २ माशे ले तामा शे २ मिसरी मासे ८
सुधा शिलाजीत टके ४ भर सुधा गूगल टके ४ भर
इन सब को जुदा २ पीसकर मिलावे पारा टका १ भर
सोधी गंधक टका १ भर अभ्रक टका १ भर इनकी
कजली कर ऊपर लिखी औषधों के चूर्ण में मिलावे
इस में से मासे ४ शहत और घृत मिलाय के नित्य खा-
य तो सब प्रकार का प्रमेह जाय और बवासीर क्षई
वीर्य के दोष नेत्र रोग खासी पांड रोग शूल उदर रोग
फोड़ा मूत्र कृच्छ्र मूत्रा घात और कोठ इन सब रो-
गा को दूर करै ॥ ॥ इति चन्द्र प्रभा गुटिका ॥ ॥

॥ अथ मधु प्रमेह को और जतन चौपाई

टका चार भर त्रिफला प्यारी ॥ ता सम जीरा चंद्र उजारी
ताही के सम धनिया वाल ॥ टके दोय भर चीनी दाल
गज केसर पैसे भर चार ॥ लौंग बराबर इसके डार
तथा लायची छोटी जान ॥ तुष्मरियां के बीज समान
कोच बीज पुनि चार टका भर ॥ सब को पीस कपड़छन लेकर
घृत मिसरी में सबे सनावे ॥ ताके मोदक नीके बनावे
दोहा ॥ टका एक भर तोल के प्रात समै जो खाय
परमानंद सुजान कहु सब प्रमेह नसाय

अर्थ ॥ त्रिफला टके ४ भर जीरा टके ४ भर धनिया टके ४
भर दालचीनी टके २ भर लौंग टके २ भर नागकेसर
टके २ भर तुष्मरिया के बीज टके २ भर कौंच के बीज
टके ४ भर छोटी इलायची टके २ भर इन सब को

बारीक पीस मिसरी घृत मिलाय टका १ भर के लड्डू बना रक्खे नित्य प्रात समय १ लड्डू खाय तो प्रमेह मात्र दूर होय ॥ + ॥ इति प्रमेह हरीस चूर्णम् ॥ * ॥ + ॥ ५ ॥

अथ मधु प्रमेह को और जतन ॥ चौपाई ॥

सोधी गंधक सोधा पारा । कहवा की जड़ मिसरी चारा ॥
इन चारन को खडल मधारे । सालर की जड़ को रस डारे ॥
पुट दे तीन युक्ति से साधे । मासे भर की गोली बांधे ॥
गोली एक रोज जो खावे । मधु प्रमेह को मूल नसावे ॥
अथवा लोध टंक इक लेई । पीस शहत संग इसको देई ॥
तथा खैरेटी क्वाथ बनावै । लोध पीस इसके संग ध्यावै ॥

॥ और जतन ॥ सत गिलोय त्रिफला सार ये तीनों माशे ५ शहद के साथ ले तो प्रमेह जाय ॥ अथवा ॥ मिसरी सिंघाड़ा खेल चीनी ये बराबर ले महीन पीस माशे १० भर जल के साथ ले तो पुराना प्रमेह भी जाय ॥ अथवा ॥ बंगेश्वर रत्ती १ शहद के साथ चाटे ऊपर से गूलर पैसे २ भर सेंधे नमक और शहद से खाय तो असाध्य प्रमेह भी जाय ॥ या केवल गूलर पक्के सेंधे निमक से रोज खाय तो असाध्य प्रमेह भी जाय ॥ इति ९

अथ बंगेश्वर की बिधि लिख्यते - कवित्त ॥

तोले बीस रांग गाल तासे अर्ध पारा डाल गलने में डाल पुनि कूपका बनाय ले ॥ केके पुनि केंची ताको कोटे २ टूक कर गोशन के बीच जार शंकर मनाय ले ॥ स्वांग शीत हुये पीके राख सब दूर कर ताकी सब खील बड़ी

युक्ति से चुनायले ॥ तोल में जौ पूरा होय जानो काम सि
द्ध भयो काचे टूक रहैं तिने फिर भी भुनायले ॥ इति ॥

अथ सुपारी पाक लिख्यते ॥ अरिल्ल ॥

नवल सुपारी आठटका भर आनिये ॥ तिनको कूट
महीन बसन में छानिये ॥ गोघृत तीन छटांक तिसी
में सानिये ॥ तीन सेर गो दूध में डार सुजान ये ॥ खिल
वां मावा होय तबहि उतारिये ॥ सरसर टंक जु तोल
दवा ये डारिये ॥ नागरमोथा चन्दन सोंठ लवंग लो ॥
पीपल धनियां काली मिरचें संगलो ॥ तज पत्रज चा-
रोल सिंघाड़े लीजिये ॥ केसर नाग आँवला सुकोय
ल बीजये ॥ जीरा स्याह सफेद लायची जायफल ॥
पीस कपड़ छन करो दवा ये सब ॥ नवल मिसरी बीस
छटांक तिसी में दीजिये ॥ दो तोले परमाण गोलि
का कीजिये ॥ एक सबेरे सांज एक पुन खाइये ॥
बवासीर मंदाग्नि प्रमेह नसाइये ॥ शुक्र दोष अरु
प्रदर जीर्ण ज्वर नाशैं ॥ अंग होय सब पुष्ट सुपरमा
नंद कहै ॥

अर्थ ॥ दक्षिणी सुपारी टके भर पीस कर कपड़छन कर
गौ के घी में साने फिर तीन सेर गौ के दूध में मिला के
मावा खिलवां करे उसमें सेरसवा १ मिसरी और
आगे लिखी दवा और मिलावे नागकेसर टंक ५ नागर
मोथा टंक ५ चन्दन टंक ५ सोंठ टंक ५ स्याह मिरच टंक
५ पीपल टंक ५ इलायची टंक ५ लौंग टंक ५

आंवला टक ५ कोयल बीज टक ५ तज टक ५ पत्रज टक ५ चारोल टक ५ धनियां टक ५ जायफल टक ५ दोनों जीरे टक १० सिंघाड़ा टक ५ बंसलोचन टक ५ ये सब औषधी मिलाके दो तोले प्रमाण गोली बांधे १ प्रात समय और १ स्याम को खाय तो प्रमेह मंदाग्नि जीर्णज्वर अस्थित शुक्र के सब दोष और बवासीर प्रदर ये सब रोग दूर होय और देह पुष्ट होय ॥ ॥ इति सुपारीपाक समाप्तम् ॥

अथ गोखरू पाक लिख्यते दोहा ॥

गोक्षुर आधा सेर ले कूट महीन बनाव
एक सेर गो घिरत में ताको खूब सनाव

॥ कुंडलिया ॥ ताको खूब सनाव दूध गो का पुनि डारे ॥ पांच सेर हो दूध आंच पर धरकर जारे ॥ जब मावा पक जाय भूनकर खूब खिलावे ॥ अब जो औषधि लिखूं पीसकर तिन्हें मिलावे ॥ १ ॥ छन्द ॥ १ ॥

बेल गिरि कुट मिरच काली दाल चीनी जयफल
ताल मखाना च्यवची अहिफेन इल दीलो नवल
भीमसेनि कपूर पत्रज माशे इस दस ली जिये
इन सबन से तोल आधी भंग शामिल कीजिये
बारसेर समाय मिसरी चाशनी कर सुन्दरी
डाल मावा सहित औषधि बांध गोली गुन भरी
पांच टंक प्रमाण औषधि नित्य प्रति ले खाइये
दूर होंय प्रमेह बीसो बीजदोष नसाइये ॥

अर्थ ॥ आध सेर गोखरू महीन मिलाय सेर १ गो घृत में

मानि इसे ५ सेर गौ के दूध में मिलाकर खिलकामावा करै इस मावे में ये दवा पीसकर और मिलावे ॥ बेलगिरि टंक २॥ मिरच स्याह टंक २॥ दालचीनी टंक २॥ अफीम टंक २॥ जायफल टंक २॥ तालमखाना टंक २॥ हलदी टंक २॥ भीमसेनी कपूर टंक २॥ पतंग टंक २॥ इलायची टंक २॥ कूट टंक २॥ समुद्रसोख टंक २॥ इन सबकी तोल से आधी भंग ४ सेर मिसरी की चाशनी कर इन दवाओं सहित मावा मिलाकर ५ टंक प्रमाण गोली बनावे १ गोली रोज खाय तो प्रमेह जाय और बीर्ज स्तम्भ होय ॥ इति गोरखपाक समाप्तम् ॥ १ ॥ ९ ॥

अथ पंचानन गुटिका चौपाई ॥

गंधक सोधी नागर मोथा । सोधा पारा लो अरोथा १
सींगी मोहरा त्रिफला चीता । काली मिर्च सोंठ मेरे मीता
गंधक पारा कजली कीजे । तामें सेल औषधी लीजे १
भांगरे के रस की पुट देई १ । डाल खरल में पीस जु लेई
गोली टंक प्रमाण बनावै । प्रातसमय नित उठ कर खावै
यह अष्टादश कुष्ट नसावै । औषधि वैद्यरहस्य बतावै

अर्थ ॥ सोधी गंधक सोधा पारा नागरमोथा सींगी मोहरा त्रिफला चीता मिरच स्याह सोंठ ये सब बराबर ले पहिले पारे गंधक की कजली करे फिर ये दवा पीसकर मिलावे भांगरे के रस की पुट देकर खरल करे माशे ५ प्रमाण गोली बांधे १ गोली रोज प्रातसमय खाय तो १८ प्रकार का कुष्ट जाय ॥ ये जतन वैद्यरहस्य में लिखा है ॥

अथ प्रमेह घृत का जतन लिख्य० चौपाई

चीता पाठ कुड़ा की छाल । कुटकी हींग भून कर डाल
कूट गिलोय सबै सब आन । सब सम पीस बसन में छान
ढाई टंक नीर संग खाय १ । घृतपरमेह सुजान नसाय

अर्थ॥ चीता पाठ कुड़ा की छाल कुटकी भुना हींग कूट गिलोय ये सब बराबर ले बारीक पीस १० मासे की फंकी जल से करे तो घृत प्रमेह जाय॥ इति॥

अथ मेघनाद रस लि० चौपाई॥

सोधी गंधक मिर्चें काली । त्रिफला सोना माखी आली
हलदी कैथसार अरु सूंठी । गिरीबेल की लेय अनूठी
पारा गन्धक कजली कीजे । तामें ये औषधि सम दीजे
भंगरा रस की पुट इक्कीस । डाल खरल में पुनि सब पीस
टंक एक रोजीना खाय १ । सब परमेह दूर हो जाय

इति मेघनाद रस समा०

अथ प्रमेह कुठार रस लिख्यते॥ भाषार्थ॥ १॥ इलायची भीमसेनी कपूर जायफल भाड़ंगी गोखरू सालर का बक्कल मोचरस पारा अभ्रक बंग सार ये सब बराबर ले खरल में बारीक पीस २ रत्ती रोज शहद से खाय तो प्रमेह मात्र जाय॥

इति प्रमेह कुठार रस समाप्त

इति श्री पण्डित सुजान सिंह कृते वैद्यक गुटकायां॥ प्रमेहप्रकर्णो समाप्तम्

अथ वायु प्रकर्ण लि०

अब बात रोग के लक्षण और जतन लिखते हैं ॥

प्रश्न स्त्री का दोहा

कहो कंथ समझाय के जो मुझ पर है प्रीत ॥
बात रोग के रूप सब लक्षण जतन समीत

कुण्डलिया॥ लक्षण जतन समीत बात की घात बतावो ॥
भिन्न भिन्न कर नाम सबन के दोष जतावो॥ तुम हो वैद्य
प्रबीन दीन रक्षक हित कारी ॥ कौन कौन सी बसु बढ़ावै
यह बीमारी ॥ १ ॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥ १ ॥

कड़वी तीखी वस्तु पुनि शीतल भोजन खाय
अति मैथुन औरु खेद से बात रोग हो जाय ॥

कड़ा॥ पवन रोग उपजाय मूत्र मल को जो रोकै॥ होय
वीर्य्य अति क्षीण पवन आवै अरु ओकै॥ बर्षाऋतु में
राज्य करै है वाय बिचारी ॥ पहर रात से उठ कर अंग पर
असवारी॥ अंग अंग में होय अथवा एक अंग सतावै ॥
हैं चौरासी रोग बाय के शास्त्र बतावै ॥

अथ वायु के ८० रोगों के नाम ॥ दोहा ॥

प्रथम शिरोग्रह दूसरा अल्प केशि है नाम
तीजे जंबाड़ी घनी पुनि जाड़ी जुद बाम॥
पंचम जीभ हिले नहीं खष्टम रुक २ बात ॥
सप्तम बोलत सहज में पुनि गूंगा हो जात
खोटे बोल कहै नवम दसवें करै कुबाद ॥
एका दश में जीभ का जाता रहे सवाद ॥

हनुग्रह बस्या जानिये तेरह कानगुंगाय
चौदह [illegible]ान स्पर्श को सकल त्वचासे जाय
पंद्रह आर्दित रोग है सोहै मुड़े न कन्ध
सत्रह सूखैसब भुजा पुनि कर मुड़ना बन्द
उन्निस चर्चित रोग है विश्वाची है बीस ॥
इक्किस बहुत डकार हो आफारो बाईस ॥
तेइस है प्रत्यापरुज अष्ठीला चौबीस
प्रत्यष्ठीला रोग पुनि तूनी है छह बीस
सप्तविंश प्रति तूनिका अग्निविषम अठबीस
उनतिस है आटोपरुज दुखपस वाड़ा तीस
शूल पेट इकतीसवां बहुत मूत्र बत्तीस
रुकेमूत्र तेंतीसमें मल गाढ़ा चौंतीस
पैंतिस मल उतरै नहीं गृध्रूरोग छह तीस
कलापखंजन रोग पुनि खोड़ापन अठतीस
उन्तालिस पगलापना कोष्टुशीर्षका गोड़
इकतालिस खल्ली कहा वातकंठ का जोड़
पग सूजन ४३ पगवोकरै ४५ पुनि अक्षेपक खान ४६
वाताक्षेपक रोग पुनि ४७ पित्ताक्षेपक जान ४८
दंडपतानक ४९ घातक्षय ५० पुनि अंतारायाम ५१
बावनवां तुम जानलो है इक वाह्यो याम
धनुर्वात ५३ कुब्जिक ५४ कहा [illegible] तन्त्रय अपतान ५६
सत्तावनवां रोग तू पक्षाघातक जान
छन्द ॥ आपतानिक ५८ कंप ५९ लोद ६० स्तंभ ६१ व्यथा ज्वु

अति घणो ॥ ६२ ॥ स्फुरन ६३ लूखो ६४ श्यामपन ६५
अति क्षीणपण ६६ शीतलपणो ६७ ॥ रोमांच ६८ अं-
गमर्द ६९ अंगविभ्रम ७० नसांको संकोच है ७१ ॥ अंग
शोषण ७२ डरपणो ७३ अरु मोहपण अति पोच है ७४ ॥
उन्माद ७५ निद्रानाश ७६ स्वेद बिनाश ७७ बलकी हा-
नि है ७८ ॥ बीर्जनाश ७९ अरु नाशतियरज ८० गर्भ
कीनिरआस है ८१ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ दोहा ॥ १ ॥ १ ॥

बिनापरिश्रमश्रम जु हो ८२ पुनि हो श्रमकानाश ८४
इन सब के लक्षणजतन आगे करूं प्रकाश ॥

अथ बातव्याधि के सामान्य जतन जिन से बाय नहो दोहा ॥

चिकना मीठा नोनका गरम जु भोजन खाय
नित्यतेल मर्दन करै बायू ब्याधि नसाय ॥

अथ आदि से तरतीब बार चौरासी बायु में से प्रथम शिरोग्रह बायु के लक्षण जतन लिख्यते दोहा

बायु रुधिर संग बायके करै रगों में पीर ॥
है यह रोग असाध्य सुन कहै बैद्य मतिधीर

कड़ा ॥ कहै बैद्य मतिधीर मूल दश काढ़ा लावै ॥ और
बिजौरा लाय काढ़ रस क्वाथ मिलावै ॥ क्वाथ अरक
अरु तेल मिलाकर खूब पकावै ॥ अरक क्वाथ जल जा
य तेल को छान रखावै ॥ जहां जहां हो पीर रगों में मरदन
कीजे ॥ जो हो देव सहाय शिरोग्रह पल २ छीजे ॥ और ज
तन ॥ दोहा ॥ पीपल सींगी मोहरा निरख स्याह अरु कूट ॥

मंडधतूरा सल्ननातीनोंकी जड़ सोंठ ॥

कड़ा॥ तीनोंकी जड़ सोंठ भाग सम लेके आवै॥ पहले क्वाथ पकाय छान फिर तेल मिलावै॥ पुनि चूल्हे पर राख आँच तर मधुरी दीजै तेल मात्र जब रहै छान कर मर्दन कीजै॥ १॥

अर्थ॥ पहला नुसखा जाहिर है॥ दूसरा॥ पीपल सींगीमोहरा मिरचस्याह कूट अंडकी जड़ धतूरेकी जड़ सोंठ येसब बराबरले कूट काढ़ाकर तेलमें डाल कड़ाही चूल्हे पर रख मीठी आँच से पकावे जब काढ़ा जलजाय केवल तैल रहै छानकर रगों में मले तो शिरोग्रह रोग नाय॥

अथ दूसरी अल्पकेशी वायुका जतन लि०

दोहा॥ देसी गोक्षुर पीसलो तिलके फूल मिलाय
सहदघिरत में सानके दीजे शीस मिलाय

अर्थ॥ देशी गोखरू और तिलके फूल पीसके शहद और घी मिलायके सिरमें खूब मले तो अल्पकेशी जाय॥

और जतन॥ कड़ा॥ नीलकमल कर मूल मुनक्का दाख नवीली॥ डाल मुलैठी सबै बराबर भाग कबीली॥ तेल घिरतया दूध मेल कै पीसो चारी॥ करै शीश पर लेप केश लंबे हों प्यारी॥

अर्थ॥ नीले कमल की जड़ मुनक्का दाख मुलैठी॥ ये सब बराबर लेके घी तेल या दूध में पीसके सिर पै लेप करै तो बाल लम्बे होंय॥

अथघनीजंभाईकाजतनलि॰ दोहा

नवलसोंठ पुनिपिप्पली अरुअजमोदमगाय
गरमनीरसे खाइये सेंधामिरच मिलाय॥

अर्थ॥ सोंठ मिरच पीपल अजमोद सेंधानमक इन सबका चूर्ण गरम जल से फांके तो जंभाई जाय॥

और जतन॥ दोहा॥

मरदन कड़वे तेलका मीठा भोजन खाय
अथवा चाबे पान इक तुरत जंभाई जाय

अथअनुग्रहरोगकालक्षणजतन लि॰

दोहा॥ दांत हिलें जिह्वा फटे सूजमसूढे जांय॥
मुखरदपटफटतेरहैं दुखसे भोजन खाय

अर्थ॥ दांत हिलनें लगें मसूढे सूज जांय जीभ होट फटे रहैं भोजन करते कष्ट होय॥

कड़ा॥ दुख संग भोजन खाय अनुग्रह वायु बखानें॥ तिसकी औषधि सेक धुवें या जल से जानें॥ मुंहआया जो होय सर्द औषधि मुख राखे॥ दांत मसूढे दुखें सोंठ पीपल रस चाखे॥ लहसन अदरक डार उड़द के बड़े कवै॥ सेंधा नमक मिलाय अनुग्रह रोगी खावै॥

अर्थ॥ अनुग्रहरोगकी दवा गरम पानी के कुल्ले या हुक्का पीना है जो मुंह आरहा होय तो ठंडी बस्तु कत्था सेलखड़ी सीतल चीनी आदि मुंह में रखे दांत और मसूढों में दर्द हो तो लहसन अदरक मिलाय के उड़द के बड़े सेंधा नमक डलवा के खाय तो अनुग्रह रोग जाय॥ इति॥

अथ जिह्वास्तंभ वायु रोग के लक्षण जतन॰

दोहा॥ नाडी जिह्वा में जु है तामे रहै जु वाय
तिसी बायके दोषसे जिह्वा दुखे जाय

कड़ा॥ दुखे जिह्वा जात बात मुख से जो बोले॥ जल पीवत में कष्ट होय जब रद पट खोले॥ येसब लक्षण कहे जीभ थंभन के प्यारी॥ अब सुन तिसके जतन औषधी न्यारीन्यारी॥

अर्थ॥ जिह्वा में रहने वाली नाड़ी में जो वाय रहती है उसके दोष से जिह्वा में दर्द होता है बोलने में जल पीने में जब होठ खोलने पड़ते हैं बहुत कष्ट होता है॥ ॥ अथ जिह्वा स्तंभन रोग की चिकित्सा॥ दोहा॥

मीठा खट्टा नौन रस घृत संग गरम कराय
जिह्वा पर मरदन करै निश्चै रोग नसाय॥

या सुहाते२ गरम जल से कुल्ले करावे तो जिह्वास्तंभ जाय॥

अथ गूंगा पण गिण गिणा पण और हकलाते का जतन लिख्यते॥

सोरठा

कफ के सहित जु वाय धमनी नाड़ी में बसे
गिणगिण करै गुंगाय गदगद पण निश्चै करै

चौपाई

सुरभी घिरत सेर इक आनै॥ बकरी दूध चतुरगुण जानै
मूल सहजना धावड़ फूला॥ लौंग रकाभर सब सम तूला
सबको पीस दूध में डाले॥ घिरत डाल पुनि ताहि उवाले

दूधदवा जबसब जल जाई॥ घिरत मात्र को लेय छनाई

दोहा॥ प्रति दिन इस गोघिरतको इकीस दिनलौं खाय

गूंगोपण अरु गिण गिणा सकल रोग मिट जाय

अर्थ॥ जो पवन कफ के साथ धमनी नाड़ी बसती है गूंगा पणा गिण गिणा पणा और गद्गद पणा करदेती है तिस का जतन॥ गौका घिरत सेर १ बकरी का दूध सेर ४ सहजने की जड़ टका १ भर लौंग टका १ भर धाय के फूल टका १ भर इन तीनों को पीस दूध में डाले इस के बाद गैका घी सेर १ उसी में मिलाके खूब उबाले जब दवा और दूध सब जल जावे घृत मात्र रहे तब उता रके छान रखे इस घी को २१ दिन तक खाय तो गूंगा गिण गिणा और गद्गद पणा निश्चय जाय॥ और जतन॥ मालकंगनी के तेल का सेवन करे तो गूंगा पण गिण गि णा पण और गद्गद पणा जाय॥ और जतन॥ कुंडलिया॥

पीपल जीरा कूट मुलेठी महुवा लावो॥ निमक लहो री सोंठ और अजमोद मगावो॥ भाग बराबर लेय सक ल ये औषधि प्यारी॥ कूट कपड़ छन करे युक्ति से धरे संवारी॥ दस दस माशे लेय बराबर माखन चाखे॥ गिण गिणपण सब जाय शब्द अति नीके भाखे॥

अर्थ॥ पीपल जीरा कूट मुलेठी महुवा सेंधा नमक सोंठ अजमोद ये सब औषधि बराबर लाय कूट कपड़ छन करे दस माशे मक्खन में मिलाय चाटे तो गिण गिण पणा जाय॥ ९॥ इति॥ १॥ १॥ १॥

अथ प्रलाप और बाचाल रोग का लक्षण लि०

दोहा

कुपथ करे ते बायु जो भरे अंग में आय
बोले बचन कु बचन नर अर्थ ग्यान सब जाय

कुड़ा॥ अर्थ ग्यान सब जाय तिसे परलाप बखानो॥ बच न न कहे संभाल तिसे बाचालु हि जानो॥ १॥ इति॥

॥ अथ प्रलाप बाचालु को जतन लिख्यते॥

कुड़ा॥ अगर तगर असगंध मूल दस कुटकी लावो॥ ब्रह्मी मोथा पीत पापड़ा दाख मगावो॥ शंखा हुली नवीन बराबर सब को लीजे॥ जो कुट कर के धरे क्वाथ कर इन का दीजे॥ हरे प्रलाप अपार खोज तिसका नहिं पावे॥ दूर होय बाचाल पनो फिर निकट न आवे॥

अर्थ॥ अगर, तगर, असगंध, दसमूल, कुटकी, ब्रह्मी, मोथा, पीतपापड़ा, दाख, शंखाहुली, ये सब औषधि बराबर लाय जो कुट कर काढा कर पिलावे तो प्रलाप और अति बाचालुपणा दूर होय॥ १॥ १॥ इति॥ १॥

अथ जीभ का रस ग्यान तथा स्वाद जाता रहे तिसका लक्षण॥ दोहा॥

लवण खटाई चरपरा तथा मिठाइ आद
जिसकी कोमल जीभ से नासे सकल सवाद

कुडलिया॥ नासे सकल सवाद रस अग्यान कहावे॥ तिसके जतन बिचार कहूं जो शास्त्र बतावै॥ पीपल काली मिरच सोंठ अरु चूक नवीली॥ अमल बेद पुनि

नमक लहौरी रंग रंगीली ॥ पीस जीभ से मले कहां फिर रोग सतावै ॥ तिसके जतन बिचार कहूं जो शास्त्र बतावै अर्थ ॥ खटाई मिठाई चरपरा आदि का स्वाद जाता रहै तिसे रसाज्ञान कहते हैं तिसका इलाज ॥ पीपल ॥ काली मिर्च, सोंठ, चूक, अमलबेद, नमक सेंधा, इन सब को पीस जीभसे मले तो जिह्वा रसा ज्ञान रोग जाय और जाय का ठीक होय ॥ और जतन लि० ॥ कुंडलिया ॥ चीता राई प्लास पापड़ा पीपल धीरा ॥ ब्रह्मी पीपल मूल सूंठ पुनि काला जीरा ॥ पीस कप ड़ छन करै जीभ के ऊपर लावै ॥ अथवा क्वाथ पकाय खूब कुल्ले करवावै ॥ रसा ज्ञान को रोग नहीं फिर रहने पावै ॥ तिसको जतन बिचार कहूं जो शास्त्र बतावै ॥ अर्थ ॥ चीता, राई, पलास, पापड़ा, पीपल, ब्रह्मी, पीप ला मूल, सोंठ, कालाजीरा, ये सब दवा बराबर ले कूट कपड़छन कर जीभ पर मले या काढ़ा पकाके कुल्ले करावै तो रसा ज्ञान जाय और इस रोग के लिये अद रक भी बहुत गुणदायक है ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

अथ शरीर की त्वचा सून्य होगई होय ताको लक्षण जतन लि० ॥ दोहा ॥

गरम सरद कोमल कठिन जिसके अंग न ज्ञान
देह फटासा रहै सब त्वचा सून्य पहिचान ॥

कड़ा ॥ त्वचा सून्य पहिचान फस्द तिसके खुलवावै ॥ अथवा सेंधा नमक धूम सा तेल मिलावै ॥ हाय सुलायम

बाल रोग कबहु नसतावे लख२ ग्रन्थ अनेक वैद्य यह यत्न बतावे ॥ इति ॥ अथ वायु पित्त कफ के अर्दित रोग के लक्षण जतन लिख्यते ॥

प्रथम वायू के आर्दित रोग के ल०

दोहा ॥ बहुत राल मुखसे गिरे कांपे सकल शरीर
होंगे पै सूजन चढे व्यापै अंग मे पीर ॥

अथ पित्त के अर्दित रोग के लक्षण दोहा

पीला मुख अरु प्यास अति तपै देह ज्वर होई
पित्त आर्दित रोग यह कहै वैद्य सब कोइ

अथ कफ के अर्दित रोग के ल० सोरठा ॥

सूजन अधिक दिखाय कंधे सिर अरु कंठ में
लक्षण देहु सिखाय कफ के आर्दित रोग के

अथ कफ के आर्दित रोग के असाध्य ल० दोहा

नैनन से निद्रा नसै बोलत मैं हो पीर
तीन वर्ष पर्यंत लों कांपै सकल शरीर

अथ आर्दित रोग के सामान्य जतन लिख्यते

॥ छन्द ॥

तेल नित मर्दन करै विषगर्भ या नारायणी
देह में सुख होय व्यापै पीड़ना तिसको घणी
मेल घृत भोजन करै अति गर्म औषधि सेवई
पवन से बचता रहै नित नित पसीना लेवई
वायु को जो तेल ताको शीश मे मर्दन करै
भाषै सुजान सुजान के यह रोग आर्दित को हरै

अथ ऊर्द्धबात का जतन॥दोहा॥

दस दस हिस्से डारिये सुंठी और बिधार ॥
हिस्से पांच निसोत के इद्रसम हैड्हु डार॥

कड़ा॥इद्र सम हैड्हु डार हींग इक भाग मिलावै॥एक भाग असगंध नमक सेंधा पुनि लावै॥ चीता सब के तुल्य पीस कर कपड़ छनावै॥ दस दस माशे देय गरम जल ऊपर प्यावै॥ ऊर्द्ध बात का रोग सकल छिन में मिट जावै॥ ज्यों पछवा के चलत घटा कहुं देख न पावै ॥

अर्थ॥॥ सोंठ भाग १० विधारी भाग १० हड़ की छाल भाग ५ निसोत भाग ५ इन सब को पीस कपड़ छन कर १० माशे की फंकी गरम जल से ले तो ऊर्द्धबात रोग जाय॥

अथ आध्मान रोग को लक्षण इस रोग को प्रत्याध्मान भी कहते हैं

दोहा॥पेट अफारो होघना अधोबायु रुक जाय
अतिही पीड़ा होय जो रुज अध्मान कहाय॥

अर्थ॥ पेट पै अफारा बहुत हो अधो बायु बन्द होजावे पीड़ा अत्यंत होतो आध्मान रोग जानो॥॥ अथ जतन॥॥

कड़ा॥पीपल ढाई टंक टंक दस मिसरी लीजे॥ले निसोत दस टंक कूट कर चूरण कीजे॥ढाई टंक प्रमाण औषधी नित जो फांके॥तिसके तन में कभी नहीं फिर रुज यह झांके ॥

अर्थ॥ छोटी पीपल १० माशे मिसरी ३। तोले निसोत ३। तोले इन सब को कूट चूर्ण कर १० माशे की फंकी नित्य प्रात समय ले तो प्रत्याध्मान रोग जाय ॥

अथ प्रत्याध्मान को दूसरो जतन ॥ छन्द ॥

कूटवच अरु नमक सेंधा हींग सेकजु लीजिये
सौंफ हू मंगवाय सब को तोल सम करदीजिये
लेप कांजी नीर सों कुछ गरम करके कीजिये
रोग यह अध्मान फेर सुजान दिनदिन छीजिये

अर्थ ॥ कूट, बच, सेंधानमक, भुना हींग, सौंफ, येसब दवा बराबर लेकर कांजी के पानी में पीस गरम कर सुहाता २ लेप करे तो प्रत्याध्मा रोग जाय ॥

और जतन ॥ महानारायण रस ॥ चौपाई ॥

दात्यूनी अरु कूट की प्यारी ॥ किरमाला को गिरी सुधारी
हेड़ आंवला और निसोत ॥ नवल लाव पुनि नागर मोथ
टका टका भर औषधि प्यारी ॥ थूहर दूध टका दो प्यारी ॥
आधसेर जल माहिं उबारे ॥ अष्टम भाग रहै तब तारे ॥
छन्द ॥ पीस बकल जमालगोटा पोटली करलीजिये ॥
डार तिसको क्काथ में तर मंद अग्नी दीजिये ॥ क्काथ सब जल जाय तब यह औषधी ठंडी करो ॥ युक्ति से पुनि खोल पोटली आठ भाग जु सम धरो ॥ पारा औ गन्धक की करो कजली मिरच काली परे ॥ भाग दोइस के जु ले पुनि सोंठ या सम कर धरे ॥ एक भाग सु शोधि गंधक तोल ताम्रें डारिये ॥ एक भाग सुजान पारा सब हि खड्ल पधारिये ॥ पहर भर कर खड्ल सब को गोलिका बांधो भली ॥ एक रत्ती सेन कम जादभी ना दो लाडली ॥ सरद पानी सा थ गोली नित्य प्रति इक खाइये ॥ शूल प्रत्यध्मान गोला उदावर्त नसाइये ॥ ८ ॥ ८ ॥

अथ बाहुक रोग को लक्षण लिख्य०

कंधे में रहने वाली वायु जो कोपकरके बांह के कफ को सुखाय देतीहै इस सबब से नस खिच जातीहैं और कुह नी नहीं मुड़ती तिसे बाहुक रोग कहते हैं और अम बाहुक भी बोलते हैं॥

अथ बाहुक रोग का जतन॥ सोरठा

केवल जलहि सुंघाय अथवा पानी उड़द का
बाहुक रोग नसाय और जतन सुन लीजिये

छन्द॥ कूट यव अलसी उड़द अरलू कुलथ मगवाइये ॥
कौंच जड़ कपास सन का बीज कुटकी लाइये॥ जड़ खरैटी
बेर की जड़ खीय की जड़ डारिये॥ गोखरू सेला कटेली
रासना उर धारिये॥ लो गिलोय नवीन औषधि तेल में
सब सम करो॥ तेल में डारो सकल पुनि आग के ऊपर धरो॥
औषधी जल जांय सब तब तेलमात्र छनावई॥ हाथ
पै मरदन करे अप बाहु रोग नसावई॥

अर्थ॥ केवल जल सूंघनेसे या उड़द का पानी सूंघने से बाहुक रोग रोग जाता है या॥ कूट॥ यव॥ अलसी॥ उड़द॥ अरलू॥ कुलथ॥ कौंच की जड़॥ कपास सन का बीज॥ बेर की जड़॥ खीय की जड़॥ रास्ना॥ खरैटी की जड़॥ गिलोय॥ कुटकी॥ इन्हें तेलमें पकावे बाद छानने के इस तेल को मले तो अप बाहुक रोग जाय॥ इतिमाष तैलम्॥

अथ विश्वाची रोग का लक्षण

हाथ की उंगली न मुड़ें और भुजा के पीछे खाज ऐसी हो

कि हाथ निकम्मा होजाय उसे विश्वाची कहते हैं ॥

अथ विश्वाची का जतन लि०

कड़ा॥ उड़द खरैटी डाल मूल दश काय पकावै॥ पीवे तेल मिलाय रोग विश्वाची जावै ॥ ॥और जतन ॥ दोहा ॥ ॥

उड़द खरैटी रास्ना सोठ हींग दश मूल ॥

डारै या में सुघर वच सेंधा नमक न भूल

कड़ा॥ सेंधा नमक न भूल पीस सब जल में लावै ॥ तेल मेल कर मंद मंद तर आग जलावै ॥ सब पानी जल जाय तेल कपड़े में छानै ॥ करपै मरदन करै चतुर जो इसको जाने ॥ विश्वाची अरु बाहु शोष अपबाहुक रोगा ॥ पक्षाघात नमीत फेर तिसको नहिं होगा ॥

अर्थ ॥ उड़द, खरहटी, दशमूल, और तेल, इन सबका काढ़ा पका के पीवे तो विश्वाची जाय ॥ तथा ॥ उड़द, खरहटी, रास्ना, सौंठ, हींग, दशमूल, वच, सेंधा नमक ॥ इन सब को जल में पकावे जब काढ़ा पक जाय कपड़े में छान कर फिर कड़ाही में उसी के बराबर मीठा तेल डाल के दोनों को पकावे जब काढ़ा जल जाय और तेल मात्र रह जाय तब उतार कर छान ले और हाथ पर मले तो विश्वाची पक्षाघात बाहुशोष और अपबाहुक रोग जाय ॥

अथ ऊर्द्ध वात रोग का लक्षण

कुपथ्य के सेवन से अधो वायु, कोप करके मुख के कफ से मिल जाती है तब बारबार डकार बहुत आवें उसे ऊर्द्ध बात कहते हैं ॥

अब जतन सब वायुपित्त कफके जुदे सुनलिजिये
एक मन होकर सुनों कहु और चित्त न दीजिये॥

अथवायु के आर्दित रोग का जतन॥ दोहा॥

काढे से दस जड़न के वायु आर्दित जांय॥
अरक बिजौरा एक का निश्चय वायु नसाय॥
कड़ा॥ निश्चय पवन नसाय दवा यह अजब अनूठी॥
भाग बराबर लेय खरैटी चित्रक सूंठी॥ चव्य पीपला मूल
नवल पीपल पुनि डारो॥ वायु आर्दित जांय तिया निश्चय
उरधारो॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ १॥ १॥
वायु के आर्दित रोग वाले को दस मूल का काढा या बिजो
रे का रस बहुत गुण दायक है या खरहटी चीता सोंठ
चव्य पीपल पीपला मूल ये सब बरा बर ले कर काढा
पका के दे तो वायु आर्दित रोग जाय॥ १॥ १॥ १॥

अथ पित्त के आर्दित रोग का जतन लि०

दोहा॥ गरम दूध नित पीजिये पित्त को आर्दित जाय
अति उत्तम यह जतन है कहै वैद्य समझाय॥

अथ कफ के आर्दित रोग का जतन लि०

दोहा॥ तेल तिलों का लाय के लहसन लेय मिलाय
नित उठ प्रात सने भषे कफ को आर्दित जाय॥

अथ मन्या स्तंभ का लक्षण लि०॥ दोहा॥

बैठके जो जादे करे या दिन में सो जाय॥
कफ में आवे वायु तहां कांधो मुड़त पिराय॥
अर्थ॥ बहुत बैठे से या दिन में सोने से वायु कफ में

जाकर कन्धे मोड़ने से पीड़ा पैदा करती है तिसे मन्या स्तंभ कहते हैं ॥ १॥ अथ मन्या स्तंभ को जतन लि॰ दोहा ॥ १॥

काढा कर दश मूल का गरम गरम दे प्याय
पंच मूल का क्वाथ वा मन्य स्तंभन जाय ॥

कड़ा ॥ मन्य स्तंभी जाय तेल का मर्दन कीजे ॥ तापर पात अरंड सेक कर के धर दीजे ॥ पुनि तहं पट्टी बांध यत्न से पवन बचावै ॥ मन्य स्तंभन रोग फेर कूढा नहिं पावै ॥ और यत्न ॥ कुक्कुट अंडा फोड़ नोन सेंधा घृत डारे ॥ कांधे मर्दन करै रोग तत्काल सिधारे ॥

अर्थ ॥ दश मूल का काढ़ा या पांच मूल का काढा गरम२ पिलावे तो मन्य स्तंभ जाय ॥ तथा ॥ मीठा तेल कंधोंपर मलवाकर अरंड के पत्ते सेक कर बांधे परंतु हवासे बहुत बचाय के खोले तो मन्य स्तंभ जाय ॥ ॥ और जतन ॥ ॥ मुरगी के अंडे में घृत और नमक सेंधा मिला कर कंधों पै मले तो मन्य स्तंभ जाय ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

अथ बाहु शोष को लक्षण जतन लिख्य॰

कंधे में जो वायु रहती है सो कोप कर के हाथ को सुखाय देती है तिसे शोष कहते हैं ॥ ॥ जतन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

काथ खरटी काकरा मोथा नमक मिलाय
मन्य स्तंभ रु शोष रुज पीवत ही मिट जाय

अर्थ ॥ बेल खरहटी नागरमोथा सेंधा नमक ये तीनों औषधी पका के पिलावे तो मन्य स्तम्भ अरु शोष रोग जाते रहैं ॥

अर्थ॥ दात्यूनी टका १॥ भर कुटकी टका १॥ भर किरमाला की गिरी टका १॥ भर बेड़ का बक्कल टका १॥ भर आँवला टका १॥ भर निसोत टका १॥ भर नागरमोथा टका १॥ भर थूहर का दूध टका २॥ भर ये सब दवा जौ कुट कर सेर १ पानी में काढ़ा करे जब आठवां भाग पानी रहै तब उतार कर छान लीजे इसमें जमाल गोटे के कोतरे के बारीक चूर्ण की पोटली बांध कर डाले पोटली महीन कपड़े में बांधे कि काढ़ा उसमें मंद २ आंच से पकते २ सूख जाय तब ठंडा होने के बाद पोटली खोल के ८ हिस्से बराबर के करे तिसमें २ हिस्से सोंठ डाले फिर पारा गंधक की कजली करे॥ सोधा पारा १ हिस्सा सोधी गंधक १ हिस्सा और स्याह मिरच २ हिस्से ये सब मिलाय उसमें डाल एक पहर खरल करे बाद रत्ती एक की गोली बांधे एक गोली रोजीना सरद जल से खाय तो अफरा भूल प्रत्याध्मान अनाह और उदावर्त ये सब रोग दूर होंय॥ इति महानारायणरस

अथ बातष्ठीला का लक्षण लि० दोहा

नाभी नीचे पवन की पथरी सी बन जाय॥
रोके मल और मूत्र को बातष्ठील कहाय॥

अथ प्रत्यष्ठीला को लक्षण० दोहा

नाभी नीचे पवन की पथरी सी पड़ जाय॥
सो अति ही पीड़ा करे मल अरु मूत्र न साय

अथ वातष्ठीला और प्रत्यष्ठीला को जतन०

दोहा॥ चीता सेंधा नमक अरु बनीका हींग भुनाव॥ १॥

जीरा संचर नौन पुनि काली मिरचहु लाव ॥

कड़ा ॥ काली मिरचहु लाव पाठ पीपल अरु संठी ॥ धनियां चव्य कपूर पीपला मूल अनूठी ॥ सज्जी पुहकर मूल हैड़ की छाल नवीली ॥ अमलबेत अरु जवाखार ले रंग रंगीली ॥ सांभर बीज अनार मूल झाऊ की लीजे ॥ सब औषधि सम पीस कपड़ छन विधि से कीजे ॥

दोहा ॥ अदरक रस की तीन पुट मेले छांह सुकाय

तोल अढाइ टंक भर उष्णोदक से खाय ॥

सोरठा ॥ उष्णोदक से खाय प्रात समय इस चूर्ण को

बातष्ठीला जाय प्रत्यष्ठीला के सहित ॥

अर्थ ॥ चीता१ सेंधानमक२ बच३ भुना हींग४ जीरा५ संचर नौन६ कालीमिरच७ पाठ८ पीपल९ सोंठ१० धनियां११ चव्य१२ कचूर१३ पीपलामूल१४ सज्जी१५ पोहकरमूल १६ हड़ का बक्कल१७ अमलबेत१८ जवाखार१९ सांभर २० अनारदाना२१ डासरिया२२ झाऊ की जड़२३ ये सब तो-ल में बराबर ले पीस कपड़ छन कर अदरक के रस की तीन पुट देकर छांह में सुकावे चूर्ण बना रक्खे ढाइ टंक प्रमाण गरम पानी के साथ में खाय तो बातष्ठीला और प्रत्यष्ठी ला जाय परंतु प्रातःकाल के समय खाय ॥

अथ तूनी प्रतितूनी का लक्षण जतन लि०

॥ दोहा ॥

लिंग गुदा की बायु जो पेडू माहं पिडाय ॥

तूनी प्रतितूनी कहै तिसे बैद्य समझाय ॥

अथ तूनी प्रतितूनी का जतन लि० छन्द

मिरच काली सोंठ पीपल हींग भूना लाइये
नमक सेंधा डार प्यारी जवाखार मिलाइये
औषधी सबले बराबर पीसकर चूरण करै
टंक ढाई गरम जल से खाय प्रति तूनी हरै

अर्थ॥ लिंग और गुदा में रहने वाली वायु जो पेडू में आकर पीड़ा करती है उसे तूनी प्रतितूनी कहते हैं॥

जतन॥ काली मिरच १ सोंठ २ पीपल ३ भुना हींग ४ सेंधा नमक ५ जवाखार ६ ये सब बराबर ले पीस चूर्ण कर कपड़े में छाने ढाई टंक प्रातसमय गरम जल के साथ खाय तो तूनी जाय॥ ॥अथ त्रिशूल रोग का लक्षण॥॥

पीठ की हड्डी में दर्द होता है उसे त्रिशूल रोग कहते हैं॥

अथ त्रिशूल को जतन लि०

दोहा॥ गूल्हीवाली मूलका वकुल झाऊ छाल
अजवायन असगंध अरु सोंठ सौंफ पुनि डाल

कड़ा॥ डालो हींग मिलाय गन्ना गोखरू प्यारी॥ नवल नि मात मतावर सब सम चन्द्र उभागी॥ उत्तम गूगल सोध स- बके तुल्य मिलावै॥ तिनसे चौथा भाग घिरत पुनि ताय मिलावै॥ ॥दोहा॥ ॥१॥

दारू पानी गरम वा साथ शोरवे खाय॥
प्रति दिन माशे पांच ये रुजा त्रिक शूल नसाय

अर्थ॥ गूल्ही बेली की जड़ की छाल १ झाऊ की छाल २ अजवायन ३ असगंध ४ सौंफ ५ सोंठ ६ मतावर ७ गोखरू ८

गिलोय ९ निसोत १० रासना ११ ये सब औषधि बराबर ले
के सबकी बराबर सोधी गूगल मिलावे और गूगल से चौ
थाइ घी मिलावे पांच पांच माशे की गोली बनाय रखे १ गोली
गर्म गरम पानी या शराब या शोरवे से खाय तो विकशूल
को भुजास्तंभ को संधिगतवायु को टूटे हाड़ को खोड़ापन
को गृद्धसी को पक्षाघात को सब को फायदे मंद है ॥
और इस औषधि को त्रियो दशांग गूगल कहते हैं ॥ इति ॥

अथ वास्तिवात का लक्षण ०

सोरठा ॥ पड़ कीजो वायु रोके उतरत मूत्र को
आनपीडा हो जाय और रोग पैदा करे

अथ वास्तिवात का जतन लि०

दोहा ॥ छाल खेरैटी मूल की मिसरी तुल्य मिलाय
दो माशे नित तोलके गौ दुग्ध से खाय ॥

और जतन दोहा,

हैड़ बहेड़ा आँवला सम ले चूर्ण कराय
सार बराबर डार के माशे चार जु खाय ॥

अथ मूत्र बंद हो जाय ताको जतन ॥ चौपाई ॥

माशे पांच जवा को खार ॥ तामें सम तुल मिसरी डार ॥
जो नर इस चूरण को खाय ॥ छिन में मूत्र बंद छुट जाय ॥
और चीनियां कपूर की बत्ती बनाय भग वा लिंग में रक्खे तो मूत्र
आवै ॥ **अथ गृद्धसी रोग के लक्षण ० दोहा ॥**

पीडा होवे अंग में पै थकित हो जाय
चलते में भारी पड़ै गृद्धसी रोग कहाय

साकुजहै दो भांतिको वायु १ वायु कफ जान
इन दोनोंके जतन अब बिधिसे कहूं बखान

अथ वायु की गृध्रसी रोग के लक्षण लि०

सिर टेढा होजावे जंघा गोडे और संधी फड़कने लगे और स्तंभित होजावे ॥ अथ वायु कफ की गृध्रसी के लक्षण ॥ शरीर भारी हो अग्नि मंद हो तंद्रा हो राल मुंहसे बहुत गिरै ॥

अथ जतन ॥ दोहा ॥

बमन करावै आदिमें जुलाब हल्के का देय
ता पाछे ये औषधी गृध्रसीवाला लेय ॥

चौ० ॥ प्रथमहि तेल अरंडी लावे ॥ फिर तामें गोमूत्र मिलावे
एक महीना तक ये पीवे ॥ सुखी होय वह रोगी जीवे ॥ १ ॥

और जतन ॥ दोहा ॥

घृत अदरक रस तेल पुनि अरक बिजौरा लाय
गुड़ अरु चूक मिलायके एक महीना खाय ॥

कड़ा ॥ एक महीना खाय गृध्रसी रोग नसावे ॥ कटि पेडू अरु जांघ पदोंकी पीड़ा जावे ॥ उदावर्त्त त्रिक शूल रोग सब नासैं प्यारी ॥ गोला सा मिट जाय उदर का कंथ दुलारी ॥ ॥ और० दोहा ॥

मींग अरंडी काढके करै दूध में खीर
एक महीना खाय जो हरै गृध्रसी पीर

अथवा १० तोले रास्ना और १० तोले गूगल घृत में मिलाय ४ माशे प्रमाण गोली बांधे १ गोली रोज खाय तो रोग जाय ॥

और जतन ॥ रास्नादि काथ ॥ ॥ चौबोला ॥

तेल चलती ॥ किरमाला की गिरि रास्ना सोंठ मिलाय नवीला

साठी की जड़ जड़ अरंड की गोक्षुर रंभ सगीली ॥ देवदारु पुनि डारपियारी सब का काढ़ा कीजे ॥ पसवाड़ा को शूल गृ-ध्रसी पीवत छिन छिन छीजे ॥ ॥ इति ॥ ॥

अर्थ ॥ रास्ना १ किरमाला की गिरी २ सोंठ ३ गिलोय ४ साठी की जड़ ५ अरंड की जड़ ६ गोखरू ७ देवदार ८ इन सब को बराबर ले काढ़ा कर पीवे तो पसवाड़ा का शूल और गृध्रसी रोग जाय ॥ ॥ इति रास्नादि क्वाथ स० ॥ ॥

अथ षोड़ा पांगुली रोग के लक्षण जतन

कटि में रहने वाली वायु जो जांघ की नसों को खैंचती है उसे षोड़ा कहते हैं ॥ और वही वायु जो दोनों जांघों की नसों को खैंचे तो उसे तो पांगुली कहते हैं ये बीमारी जुलाब लेने से और तैलादिक के मर्दन से जाती है ॥

अथ कलाप खंज रोग के लक्षण जतन लिख्यते

दोहा ॥ चलते कांपे देह सब लंगड़ा सा हो जाय ॥
छोड़े नस निज थान को कलापखंज कहलाय

ये रोग विषगर्भादि तैल के मर्दन से जाता है ॥ ॥ अथ विषगर्भ तैल की विधि ॥ ॥ धतूरे की जड़ १ निर्गुंडी २ कड़वी तूंबी की जड़ ३ अरंड की जड़ ४ असगंध ५ पवाड़ ६ चित्रक ७ सहजने की जड़ ८ कागलहरी ९ करिहारी की जड़ १० नीम की छाल ११ बकायन की छाल १२ दशमूल १३ शतावरी १४ चिरपोटन १५ गोरीशर १६ बिदारी कंद १७ थूहर के पत्ते १८ आक के पत्ते १९ सनाय २० दोनों कनेर की छा० २१ आधी रा रखीय ये सब

औषधी टके तीन भरले इनसब की बराबर काले तिलों का तेल डाले और इसी की बराबर अरंड का तेल डाले और इनसे चौगना पानी डाले औषधी सब कूट कर डाल चूल्हे पर रख नीचे मंद मंद अग्नि जलावे जब औषधि और पानी सब जल जाय और तेल मात्र रहै तब उतारकर ये औषधि और डाले सोंठ १ मिरच २ पीपल ३ असगंध ४ रासना ५ कूट ६ नागरमोथा ७ वच ८ देवदार ९ इंद्रजव १० जवाखार ११ पांचोनोन १२ नील्हाथोता १३ कायफल १४ पाठ १५ भाडंगी १६ नौसादर १७ गंधक १८ पोहकरमूल १९ शिलाजीत २० हरताल २१ ये सब औषधि छः छः माशे ले सींगी मोहरा टका १ भर ले पीछे ये सब पीस तेल में मिलावे इस तेल का मर्दन करै तो वायु के सब रोग जांय ॥ इति ॥

अथ शीर्ष कोष्टु को लक्षण लि॰ दोहा

रुधिर पवन के कोपसे गाडे मज्ज जु जाय ॥
होवे पीड़ा अति घनी कोष्टु शीर्ष कहलाय ॥

अथ शीर्ष कोष्टु को जतन लि॰ ॥ दोहा

ढाई टंक गिलाय ले त्रिफला ले दस टंक ॥ १ ॥
इन चारों को कूटकर काढा करै निशंक ॥ १ ॥

चौबोल्या ॥ काढा निःशंक करै गूगल डारै ॥ ढाई ये टंक काथ बीच पधारै ॥ पीवै यह क्काथ तीस दिन जो प्यारी ॥ करै नेम सब रोग दूर होय सुख्यारी ॥

अथ ॥ हड बहेडा, आवला, तीनों १० टंक मिलाय, गूगल, २॥ टंक पांचों का काढा कर पीवै ३० दिन तक तो शीर्ष कोष्टु रोग जाय ॥ इति ॥

अथ गोड़ दुखने को जतन लिख्यते॥ दोहा॥

मर्दन मीठे तेल का तापर सोंठ मिलाव
तापर पात अरंड के तेल चुपड़कर लाव

अर्थ॥ मीठा तेल मलवा के ऊपर से सोंठ वारीक पिसवा के मलवावे बाद उसके अरंड के पत्ते सेककर बांधे तो गोड़ दुखने अच्छे होजावें॥ ॥ और जतन॥ ॥ कौंच के बीज टकर दही के साथ १ दिन तक खाय तो गोड़ का दुक्ख बन्द हो॥

अथ खल्ली के जतन॥ ॥ कूट सेंधानमक दोनों का काढा कर इसमें तेल अमलवेत का रस डाल मंदर आंच से पकावे जब सब जल जाय तेल मात्र आयरहे तब उतार कर छानले इस तेल का मर्दन करे तो खल्ली रोग जाय॥ १॥

अथ वात कंठ के लक्षण

दोहा॥ ऊंची नीची जगह में धरत पांव दुख होय
पुनि टकनों में पीड़ हो वात कंठ है सोय॥

अथ वात कंठ के जतन॥ रोड़ा छन्द॥

गूगल मल्ली गर्म औषधी खाय पसीना लीजे॥ अथवा तेल अंड को लेकर पांच टका भर पीजे॥ पीवै तेल महीना भर जो वातकंठ नाशै॥ पक्का पवन चलत ही नभ में घनदल नाशै जैसे॥

अथ पाददाह के लक्षण॥ ॥ वायु पित्त और रक्त मिलके पांव के नलवों में दाह पैदा करते है तिसे पाद दाह कहते हैं॥

अथ पाददाह को जतन दोहा

पीसे दाल मसूर की पतली करे पकाय
लेप पांव पर कीजिये जब ठंडी हो जाय॥

अर्थ॥ मसूर की दाल महीन पीस जल में औटावे जब ठंडी हो जाय आठया सात लेप करै तो पाद दाह जाय वा मक्खन का लेप कर मर्दन करे और सेकै वा अरंडी के दूध में पकाकर तलवों पर लेप करै तो पाद दाह जाय॥१॥१॥१॥१॥१॥

अथ पादहर्ष को लक्षण॥ ॥दोनों पैरों में झुनझुनाहट हो और पैर सो जावें दबाये से न जागें तो पाद हर्ष जानो॥१॥१॥१॥

पादहर्ष को जतन सोरठा

कफ अरु पवन नसाय ऐसा जतन जु कीजिये
तातें यह रुज जाय परमानंद सुजान कह॥

अथ पगफुटनी को जतन लि० दोहा

सांभर हलदी तिल नवल तीनों सम करलाय॥ बीजधतूरे
अरक में सब को लेय पिसाय॥१॥ तीनों को सम तोल के।
गो का माखन डाल॥ धर चूल्हे पर सबन को मंद अग्नि तर बाल २
चार गुना गोमूत्र पुनि डारै बारंबार॥ घिरत मात्र रह जाय जब
ठंडा करे उतार॥३॥ पग तलवों पर लेप के खूब मलो चित
लाय॥ परमानंद सुजान कह पग फुटन मिट जाय॥४॥

अथ वाताक्षेपक पित्ताक्षेपक को लक्षण॥

पित्त में मिली हुई वायु पित्त के स्थानों में जाकर स्तंभित करदे दंड की तरह करदे या वही वायु कफ में मिलके धमनी नाड़ी में जाकर देह को स्तंभित करदे और अंगों में पीड़ा करे तो असाध्य है वा चोट लगने से जो वायु पैदा होती है तिसके अक्षेप को भी असाध्य जानौ॥

इति वाताक्षेप पित्ताक्षेप को लक्षण समाप्तं

अथ अक्षेपका जतन ॥ महावल्लातेलली

दोहा ॥ बेरी की जड़ उड़द अरु मूल खरहटीवाल ॥ कुल
त्थ मूल दशमूली जिये सबको काथ उबाल ॥ १ ॥ रहै आठ
वों भाग जब तामें तेल मिलाव ॥ आगे जो औषधि लिखूं
तेहू सम कर लाव ॥ २ ॥ छन्द ॥ नमक सेंधा सोंठ गोरी
सर मजीठ सतावरी ॥ अगर पत्र जराल साठी जड़ इलाय
ची लावरी ॥ कूट छड़ पदमाष अरु असगंध तामें डारिये ॥
देव दारू डार सबये तेल मांह उवारिये ॥ क्वाथ औषधि सब
पचें तब तेल मात्र रहाइये ॥ अंगमें मर्दन करे आक्षेप व्या
धि नसाइये ॥ सांस हिचकी अंत्रवृद्धी क्षीणता सब खोव
ई ॥ खंचवृढा हाड दुखता रोग अच्छा होवई ॥

अर्थ ॥ बेरी की जड़ । उड़द । खरहटी की जड़ । कुलत्थ ।
दशमूल ॥ इन सबका काढ़ा पकावे जब आठवां हिस्सा
रहै तब उसमें ये औषधि और तेल मिलावे सेंधानमक
सोंठ, गोरीशर, मजीठ, सतावरी, अगर, पत्रज, राल, साठी की
जड़, इलायची, कूट, छड़, पदमाष, असगंध, देवदारु, ये
सब औषधि मिलाय खूब पकावे जब काढ़ा औरये औषधि
जल जाय तेल मात्र रहै तब उतार के इस तेल का मर्दन
करे तो सब तरहका आक्षेपक सांस हिचकी अंत्रवृद्धि
क्षीणता स्वेद वृढे हाड का दर्द ये सब रोग जांय ॥ इ. म. व. ते. ॥

अथ अंतर्याम रोग को लक्षण दोहा

पग उंगली पद हिया टकनों में की बायु
पकड़े मुख नाड़ीनके नेत्र खुले रह जाय

सोरठा॥ सकल अंग तन जाय मुड़ कर होय कमानसा
अंतरयामबताय मुड़े जवाड़ा भी नहीं ॥१॥

अर्थ॥ वायु उत्पन्न करने वाली वस्तु खाये से वायु कोप कर के देह की नसों को कंधोको पीठ को सुखाय देती है मनुष्य क शरीर को कमान की सदृश कर देती है तिसे प्रत्यायाम कहते हैं जो पीछे आर्दित रोग के जतन लिखे हैं वेही इस के हैं॥

अथ धनुस्तंभ का लक्षण॥ ॥कमान की समान अंग हो जाय शरीर का वर्ण विवर्ण होजाय मुख बन्द हो जाय देह शिथिल हो जाय अचेत हो जाय पसीना आवे तिसे धनुस्तंभ कहते हैं इस रोग वाले की १० दिनकी अवधी है॥

अथ कुब्ज रोग के लक्षण॥ ॥वायु कोप करके हिये को ऊंचा कर देती है हिये में पीड़ा बहुत होय तिसे कुब्ज रोग कहते हैं इन तीनों रोगों के वास्ते प्रसारणी तैल गुणदायक है॥ ॥अथ अपतंत्र रोग के लक्षण॥ दोहा॥१॥१॥

बायु हिये में जायके सिर कनपटी पिराय
मोह बढावे अतिघना देय शरीर नवाय॥
सांस लेय अतिकष्टसों कंठ कबूतर बोल
संज्ञा सब जाती रहै नेत्र फाड़ ले खोल
अथवा नैन मिरवरहै जो ये लक्षण जान
यही रोग अपतंत्र है परमानंद सुजान

अथ अपतंत्र का जतन लिख्यते दोहा

मिरच सहजना बीज पुन तीजा वायविड़ंग
पुनि अफीम लब सम धरा पीसकरो इक अंग

चैन॥ जोयह चूरणलेयहुलास॥ निश्चयकरोअपतंत्रविनास
अमल बेतअरुहड़कीछाल॥ बचअरुसेंधानमकसुवाल
डालरासनासबसम कीजे॥ पीसमहीनछान पुनिलीजे
टंकदोयघृत अदरकसाथ॥ जा अपतंत्रप्रात जो खात
हड़की छालबचसेंधानमक॥ अमलबेतरासनायेबराबर
लेपीसटंक २ घृतशहद केसाथ खाय तो अपतंत्रजाय॥

अथपक्षाघातकेसाध्यअसाध्यलक्षणलि० सोरठा॥

केवलकोपेवायुपक्षाघात जुप्रकटहो
लक्षणसाध्यकसायपरमानंदसुजानवद

दोहा॥ गर्भवतीप्रसूतिकाबालवृद्ध अरुक्षीण
इनकोपक्षाघातहोसोअसाध्यपरवीण

अथपक्षाघातकाजतन लिख्यते॥ कुंडलिया॥

उड़दखरैटीमूलअरुकौंचबीजपुनिडाल
मूलअरंडकीडारकेकाढ़ालेयउबाल॥
काढ़ालेयउबाल भूनकरहींग मिलावे॥ नमकलहौरीडार
छान करबेगपिलावे॥ पवनलगन नहिंदेयरैनमेंओस
बचावे॥ पक्षाघातसुजानफेरढ़ढ़ानहिंपावे॥

अर्थ॥ उड़द खरहटी कीजड़कौंचकेबीज अरंडकीजड़
इनसबका काढ़ा कर भुनाहींग और सेंधानमक डाल
करपिलावे तो पक्षाघातजाय॥

अथपक्षाघातकोग्रंथिकादितैलकि० चौपाई

चीतापीपल उड़दअनूठी॥ सेंधानोनरास्ना सोंठी ॥१॥
मूलपीपलासबसमलावे॥ इनसातोंकाक्वाथपकावे

तामें तेल डारसम जारे ॥ तेलमात्र जब रहै उतारे ॥ १ ॥
तिसी तेलका मर्दन कीजे ॥ दिनदिन पक्षाघात गुडीजे
अर्थ ॥ चीता, पीपल, पीपलामूल, उड़द, सेंधानमक, रास्ना,
सोंठ, इनका काढा कर तेल मिलाय पकावे जब काढा ज-
ल जाय तेलमात्र रहे उतार कर मर्दन करे तो पक्षाघात जा०

अथ पक्षाघात को माषादि तैल चौपाई

उड़द रास्ना सौंफ अतीस ॥ सेंधानमक लाडली पीस ॥
कौंचबीज पुनि मूल अरंड ॥ करै क्वाथ दे अग्नि प्रचंड ॥
काढा चौगुन तेल सम डारै ॥ तेलमात्र रहजाय उतारै ॥ १
तिसी तेलका मर्दन करै ॥ पक्षाघात रोग यह हरै ॥
अर्थ ॥ उड़द रास्ना य सौंफ अतीस सेंधानमक कौंच के
बीज अरंडकी जड़ इनसबका काढा पकाय चौगुन के
बराबर तेल मिलाय फिर पकावे जब तेलमात्र रहै उतार
कर मर्दन करे तो पक्षाघात जाय ॥ ये भावप्रकाश में है ॥

और जतन ॥ दोहा ॥

उड़द सोंठ जड़ अरंडकी मूल खरैटी आन
कौंचबीज सेंधानमक काढा करै सुजान
चौगुन क्वाथको पीजिये पक्षाघात नसाय
यह है वैद्यविनोदका आशय सुन सत भाय

अर्थ

उड़द सोंठ अरंडकी जड़ खरैटी की जड़ कौंचके बीज
सेंधानमक इनका काढा कर चौगुन पीवे तो पक्षाघात
जाय ये वैद्यविनोद में है ॥

अथनिद्रानाशरोगकोजतन ॥ ॥ भांगसेकीहुई महीन पीस अनुमान मोफिक शहत में मिलायचाटै तोनीद आवै अतिसार और संग्रहणी जाय और भूखलगे यापीपलामूल का चूर्ण गुड़के साथ खाय तो नष्ट भई नींद आवै या अरंड का तेल और अलसीका तेलकांसी के पात्र में घिस के आंजै तो नींद बहुत आवै या सुरक स्त्री के दूधमें घिसकर आंजै तोनींद आवै या सौंफ और भांगमहीन पीसकरबकरी के दूध में घिसकर लेप करै तो नींद आवै॥ ये सब जतन वैद्य रहस्य में लिखे है ॥ इति निद्रा नाश केजस ॥

अथवात व्याधी का सामान्य जतन लि॰

अथ नारायण तेलविधि ॥ छन्द॥ दोनो कटेली गोखरू असगंध अरलू लाइये॥ पाढ़ गंगेरण छालप्यारी नीम छाल मंगाइये ॥ बेल मींगी जड़ खैरैटी मूल साठीसांवरी सांप भरणी दशटकाभरसवे औषधिलावरी ॥ सखोडष नीर तामें डार क्वाथ उबारिये ॥ भागचौथाबचरहे तब तेल तिलसम डारिये॥ गाय दूध मंगायप्यारी चौगना इसमे करो॥ आंचमधुरी बालनीचे औषधीपुनि ये भरो॥ लायची चंदन खरैटी रास्ना संधा नमक॥ थाल पर्णी प्रष्टपर्णी माषपर्णी लायरख॥ मुदगपर्णी सौंफ बच कुड़ इंद्रायण साफकर॥ शिलाजीत सुगंध प्यारी तोल्ल दो दो टकभर॥ पुनि टका भरकूट सबसंग पीसतामें डारिये॥ मधुरी आंच जरायनीचे मद २ उबारिये॥ औषधी और दूध जब जल जाय तेलउतारिये

होय शीतल छानकर तब पात्रमांहिंधारिये

अर्थ ॥ दोनो कटेली गोखरू असगंध अरलू पाटल गं गेरण की छाल नीमकी छाल बेलगिरी खरैटी की जड़ सारी की जड़ सीप अरणी ये सब औषधी ४टके भरले कर १६ सेर पानी में काढ़ाकरे जब ४ सेर रहजाय तब इसमें ४सेर तिल्का तेल डाले और १६ सेर गौका दूध डालकर मंद२ अग्नि से पकावे पकते में नीचेलि खी औषधी औरडाले कूटटका १भर इलायचीटका २भर लाल चंदन टका २ खरैटी टका २ बचटका २ छड़ टका२ शिलाजीत टका२ सैंधा नमक टका २ रास्नाटका२ सौंफटका२ इंद्रायण टका २ शालपर्णी टका२ पृष्टपर्णी टका २ माषपर्णी टका २ मुद्गपर्णी टका२ जबये औषधी और दूध जलजाय औरतेलमात्र रहै तब उतार तेल को छानकर कंचके पात्रमें रखे जो मर्दन करै तो ये रोग जांय॥ पक्षाघात हनुस्तंभ बहरापणा गतिभंग कटि ग्रह गात्रशोषन विषमज्वर अंत्रवृद्धि शिरोग्रह पार्श्वशूल गृध्रसी औरसंपूर्णवायु के रोगदूरहोय ॥

इतिनारायणतैलम् ॥

अथ जोगराज गूगलकीविधि

चौपाई॥ चीता सोंठपीपलामूल॥ पीपल कुटकीचव्यन भू ल॥ दोनों जीरे हींग अतीस॥ भाड़गीवचमूर्वा पीस ॥ इंदरजव संभाल आन ॥ गजपीपल ह डार सुजान अजमोदा अरुबाय विडंग॥ सरसों पाट सभी इक संग

मासे चारचार लेआव ॥ सबसे दूना त्रिफला लाव ॥
दोहा ॥ गोली माशे चारकी विधिसों लेय बनाय
रायसनादिक क्वाथसे नेम पूर्वक खाय ॥

अथ रासनादि क्वाथ लि० ॥

रायसना सांठी की जड़ गिलोय अरंडकी जड़ इन के काढ़े के साथ खाय तो बायु के सब रोग जाय ॥ और गोमूत्र से खाय तो पांडु रोग जाय और किरमालापंचक के काढ़े से ले तो कफ के सब रोग जाय शहद से खाय तो वातरक्त रोग जाय ॥ इति जोगराज गू० ॥

अथ लहसन कल्प ॥ चौपाई ॥ टका एक भर लहसन लावे । ताही के सम तेल मिलावे ॥ सेंधा नमक डारु जो पीवे ॥ वायु नसाय सुखी हो जीवे ॥ दूध घिरत संग लहसन खावे ॥ सब प्रकार की वायु नसावे ॥ मंदाग्नी पीड़ा अरु शूल ॥ विषमज्वर की रहे न मूल ॥ शिर के रोग पेट का गोला ॥ वीर्य्य रोग यह हरे अमोला ॥ चौदहा दिन लों विधि से लीजे ॥ पुष्ट होय अरु रुज सब छीजे ॥

इति लहसन कल्प

अथ महारास्नादि क्वाथ लिख्यते ॥ दोहा ॥

रास्ना बक्कल सहजना पीपल सौंफ अतीस
मोथा हड़ की छाल पुनि सांठी की जड़ पीस ॥
मूल खरैटी गोखरू देवदारु असगन्ध ॥
किरमाला की गींग अरु शतावरी सुख चन्द
धनियां छाल अरंड की दोउ कटे की मूर

चव्यधमास अडूसपुन बीधारो कचूर ॥
हरित गिलोय समान सब काढालेय बनाय
जोगराज सेखायतो बातव्याधि नसाय ॥

अर्थ ॥ रास्ना १ सहजने का वक्कल २ पीपल ३ सौंफ ४ अतीस ५ मोथा ६ हड़की छाल ७ माठीकी जड़ ८ खरैटीकी जड़ ९ गोखरू १० देवदारु ११ असगंध १२ किरमाला की गिरी १३ शतावरी १४ धनियां १५ अरंडकी छाल १६ दोनोकटेली १८ अडूसा १९ कचूर २० चव्य २१ धमासा २२ बिधारो २३ गिलोय २४ इन सबके कांढेके साथ गूगल जोगराज खायतो सर्वव्याधि जाय ॥ इति म॰ रा॰ क्वा॰ ॥ ये भाव प्रकाशमें है ॥

अथ अष्टांग तैल विधि लि॰

अरंड सँभालू सहजना थूहर और कनेर ॥
कूटी बकायन जानिये सबके पात सकेर ॥

चौबो॰ चल्ला ॥ इन सबका रस चार भाग इक भाग तेलका डारे ॥ सोंठ डार पुनि धर चूल्हे पर नीचे अग्नी बारे ॥ तेल मात्र जब रहै पंजर के छान वस्त्र में लीजे ॥ मर्दन करे सुजान बात की बाधी छिनछिन छीजे ॥

अर्थ ॥ अरंड के पत्ते सँभालू के पत्ते सहजने के पत्ते ॥ थूहर के पत्ते कनेर के पत्ते बकायन के पत्ते मंगाय सबको बराबर ले कूटरस निचोड़ और इससे चौथाई तेल डालकर पकावे पकते में सोंठ डारे जब रस और सोंठ जल जाय तब तेल को उतार कर छानले ॥ इस तेल का मर्दन करने से सब प्रकार की वायु जाय ॥ इति अष्टांग तैल बिधि ॥

अथविष गर्भ तेलविधिः लिख्यते

मूल धतूरे नेगुंडी पुनि कड़वी तूंवी मूला ॥ मूल अरंड स हजने की जड़ छाल बकायन हूला ॥ कारे हारी की मूल नींव की छाल विधारा कंध ॥ चिरपोटन गोरी सर थूहरके पत्ते असगंध ॥ पवाड़ चीता कौवालहरी सतावरी प्रिय प्यारी ॥ सनाय दोनों कनेर बकली आधी झारो खारी ॥ दशौं मूल अरु आकपात सब छह२ तोले लावे ॥ इन सबही की तुल्य तोल पुनि तिल का तेल मिलावे ॥ पुनि अरंड का तेल तिलोंके तेल बराबर डालो ॥ इससे चारगुना पुनि पानी सब एकत्र उबालो ॥ जल औषधि जल जांय सकल तब तेल हि भाव हिलालो ॥ कान वस्त्र में कूट पीस के और दवा ये डालो ॥ सोंठ मिरच पीपल इंदरजव जवाखार मृगनैनी ॥ पांचो नोंन रास्ना नीला थोता कोकल वैनी ॥ पोहकर मूल कायफल गंधक भाड़ंगी नौसादर ॥ देवदारु असगंध कूट अरु शिला जीत हूलाधर ॥ बच्छहरताल औ नागर मोथा पाट सबै सम लीजे ॥ छह२ माशे सब ये औषधि पीस कपड़छन कीजे ॥ ले दो तोले सींगी मोहरा पीस तिसी में डारे ॥ मर्दन करे तेल यह प्रति दिन वायु सुजान सिधारे ॥ ॥ इति ॥ ॥

अर्थ ॥ धतूरे की जड़ १ निर्गुंडी २ कड़वी तूंवी की जड़ ३ अरंड की जड़ ४ सहजने की जड़ ५ बकायन की जड़ ६ कारी हारी की जड़ ७ नीम की छाल ८ बिधारी कंद ९ चिरपोटन १० गोरी सर ११ थूहर के पत्ते १२ असगंध १३ पवाड़ १४ चीता १५ कागलहर १६ सतावरी १७ सनाय १८ दोनो कटेली १९ कनेर का बकोल २०

आधी आरोखीय २१ दशमूल २२ आक केपत्ते २३ येसब कूट२ तोलेलेके इनसब कीबराबर तिलका तेल और इसी की तुल्य अरंडकातेल और इसमें चौगनापानीडाले सब एकत्र कर मंद आंचसे पकावे जब जल और औषधि जल जाय और तेल मात्र रहे तब उतारकर ये दवा और मिलावे सोंठ मिरच पीपल इंद्र जव जवाखार पांचो नोन रास्ना नीला थोता पोहकरमूल कायफल गंधक भाड़ंगी नोसादर देवदारु असगंध कूट शिलाजीत वच हरताल नागरमोथा पाट येसब दवा छ२ छ२ माशे और सींगी मोहरा २ तोले बारीकपीसकर उसी तेलमें मिलादे रोज इस तेल को मल्ले तो सब प्रकारकी वायु दूर होय॥ पीठ जांघ संधिगत का सोजा उतरे गृध्रसी रोग सिर का रोग हड़फूटनी कानका दर्द गंडमाला ये सब रोग दूर होंय ॥ इति विषगर्भ तेल॥ अथ लक्ष्मीविलासम-तु-तै॥

दोहा॥ हैड़बहेड़ा आंवला नागर मोथा वाल
तजपत्रज गंधकसुधी चीढ़ कटेली डाल

कड़ा॥ चीढ़ कटेली डाल और मंजिष्ठ सुहागन॥ देवदारु कचूर और बच लोबड़ भागन॥ दोदो तोल तोल औषधि सबये लीजे॥ कूट क्वाथ कर तेल सेर उसमें पुनि कीजे॥ जब सबरस जलजाय तेल तब लेय छनाई॥ पुनि ये औषधि कूट छान कर देय मिलाई॥ मेडल चंपा मूल पीपला मूल सुवाला॥ मवी संचर नोन बेरजा नेत्र बाला॥ नपछड़ अरु असगंध अल लोबान पियारी॥ दोदो तोले कूट छान कर

गरो तैयारी ॥ चन्दन केसर नागलायचीलौंगनवीली ॥ जायकली कंकोल मिरच सुन रंगरंगीली ॥ एक एक तोला ले मर्दनकर इसमें डारै ॥ मृगमद माशे बार तिसी में और पधारै ॥ जब औषधि जल जाँ कपूर नौ माशे ली जै ॥ डाल तेल के बीच देह में मर्दन कीजे ॥ सूजन गोला मेह बात की व्याधि नसावै ॥ परमानंद सुजान ग्रंथ लख युक्ति बतावै ॥

अर्थ ॥ हड़ की छाल १ बहेड़ा २ आँवला ३ नागरमोथा ४ बज ५ पबज ६ सोधीगंधक ७ चीढा ८ कटेली ९ मजीठ १० देवदारु ११ कचूर १२ वच १३ येसब दवा दोदो तोले कूट काढा करे काढे में १ सेर तेल डाले जब काढा जलने लगे ये दवा पीसकर और मिलावे मेडल चम्पा की जड़ पीपलामूल मूर्वा संचरनोन नेत्रवाला बेरजा नषछड़ असगंध लोबान येसब दोदो तोले और चंदन नागकेसर लायची लौंग जायकली कंकोल येसब तोला २ भर कस्तूरी ४ माशे जब येसब रससहित जल जावें तब तेल छानकर उसमें ८ माशे कपूर मिलाके मर्दन करै तो प्रमेह सूजन गोला और सब बात की व्याधि दूर हो ॥ इ॰ त॰ ते॰ ॥

अथ विजयभैरव तैलबिधिः

पारा गंधक हरताल येतीनों बराबर ले कांजी के पानी में ३ दिन खरल कर कपड़े पर लेप करै फिर उसकी बत्ती बनाकर चौगुन मीठे तेल में भिगोवै जो तेल बचे जलती बत्ती पर डालता जाय लोहे का पात्र नीचे रखे जो तेल बत्ती के फूल से

टपके निकाल कर शीशी आदि में भरे जो इस तेलका मर्दन करे सब प्रकार की वायु दूर हो॥ इति विजय भैरव तैल ॥

अथ बिजय भैरव रस लिख्यते

सवैया॥ ॥ चित्रक तीन टका भरलै पुन हैड़की छाल तिही सम जानो॥ पत्रज नागरमोथ इलातज ये सब द्वादश माष बखानो॥ पारद गंधक होय सुधी पुन पीपल पीपलामूल हु आनो॥ सींगीमोहरमोथ भया अरु सोंठ सियाह मरीच प्रमानो ॥ येसब माष सुजान दरेक संभालुक पांच हि माष बिसावो॥ केसरनाग अढाइ हि माष सबै मिलवाय मर्दन पिसावो॥ गंधक पारदकी कजली करता महि औषधि पीस कुनावो॥ सेरसवा गुड़लाय पुरातन मेल इसे गुटिका जु बनावो ॥ दोहा॥ गोली सींगी बेरसी एक तथा दो खाय॥ युग्म मास सेवन करै कफ पित्तकी रुज जाय॥ बारमहीना खाय जो हरै वायुकी पीर॥ एक वर्ष जो लेइ से बल युत होय शरीर ॥ अर्थ॥ चीता टके ३ हैड़का बक्कल टके ३ पत्रज तोला १ नागरमोथा तो॰१ इलायची तो॰१ तज तो॰१ पारा टंक १० सोधी गंधक टं॰ १० पीपल टं॰ १० पीपलामूल टं॰ १० सींगीमोहरा सोधा हुवा टं॰ १० सोंठ टं॰ १० कालीमिर्च टं॰ १० संभालु टं॰ ५ नागकेसर टं॰ २॥ सबको मिलाय पीसे पहले पारे गंधक की कजली करे तिसमें ये सब दवा डाले सबको सेर १। गुड़ में मिलाय कोटे बेरकी गुठली समान गोली बनावे १ या २ गोली रोज २ महीने तक खाय तो कफ पित्त के सब रोग दूर हो ४ मास लेतो वायुके सब रोग जांय १ वर्ष लेतो आयुबल बढे ॥ इ॰ वि॰ भै॰ र॰॥

अथवातारिरसलि० चौपाई

पाराभाग एकही जानो ॥ गंधक के दो भाग बखानो ॥
त्रिफला तीन भाग करलीजे॥ चारभाग चीते के कीजे ॥
पाचभाग पुनि सोधीगूगल ॥ अरंडतेलमें करे जुखरल ॥
खरल एकदिन कीजेताही ॥ पुनिहिंगवाष्टक डारेमाही
दोहा॥ एकदिवसपुनिखरलकर ढाई टंकप्रमान
गोलीताकीकीजिये परमानंद सुजात
सोंठ अरंड जडलौंगके काथसाथ जो खाय
एकमासकेबीत ते बात व्याधि नशाय

अर्थ ॥ पारा भाग १ गंधक भा० २ त्रिफला भा० ३ चीता भा० ४ सोधीगूगल भा० ५ अरंडके तेलमें १ दिन खरल करो फिरतिस मे हिंगवाष्टक चूर्ण मिलावे यानि सोंठ मिरच पीपल अजमोद सैंधानमक दोनोंजीरे हींग येसब मिलाय १ दिन और खरल करे फिर २॥ टंक प्रमाण गोली बनावे १ गोलीनित्य सोंठ अरंडकी जड़ और लौंग के काढे के साथ १ महीने तक खाय और जितेंद्री रहै तो सब वायु के रोग जांय और सामान्य वायु तो ७ दिनमें ही जाती रहै॥ इ० वा० ॥

अथसमीररस लि० चौपाई ॥

काली मिरच अफीम नवीन ॥ तीजा कुचला लाव प्रवीन
पान अरक में खरल जु कीजे॥ गोली रत्तीभर करलीजे॥
गोलीएकप्रातनितखाय ॥ पुनि ऊपर से पान चबाय
सजन अरुची मिरगी जावे ॥ सबप्रकारकी वायुनसावे
॥ इतिसमीरराजकेसरीरससमाप्तं॥ येवैद्यरहस्यमें है ॥

अथ लहसन पाक विधि लि० ॥ दोहा ॥

लहसन पैसा एक भर ताके जवे कराय ॥ पुनि धेला भर नी
र मे जल पैसा भर पाव ॥ १ ॥ तीनों को एकत्र कर नीचे आग
जलादि ॥ जल पय सब जल जाय तब खरल करै पुनि ताहि
॥ २ ॥ लुगदी लेय बनाय पुनि धेला भर घृत डार ॥ नले आँच
पुनि दीजिये लाल होय तब तार ॥ ३ ॥ दो तोले अंदाज कर
नीकी मिसरी लाव ॥ करै चाशनी युक्ति से ये सब दवा मिलाव
॥ कवित्त ॥ आधी रत्ती कस्तूरी मे रत्ती चार लौंग डार जाय
फलो दारचीनी माशा माशा दीजिये ॥ सोंना के वरक एक
माशा ये सब औषधी ले खूब पीस छान कर चाशनी मे दी-
जिये ॥ पुनि लहसन डार गोली बाँधे जो सवाँर पर गिन्ती
मे चार कमो वेश मत कीजिये ॥ एक गोली खाय प्रात वा-
यु मिट जाय रोग होय जो सिवाय सांझ एक और लीजिये ॥
दोहा ॥ इक्किस दिन तक ले इसे अथवा ले उंचास

बायु रोग का अंग मे रहै सुजान न वास ॥

अर्थ ॥ लहसन पैसा एक भर के बारीक जवे तराश कर पै
सा भर दूध और धेला भर पानी मिला के पकावो जब
दूध पानी जल जाय तब उतार के खरल करके लुगदी
बनालो इसे ६ माशे घी मे भूनो जब सुरखी पर आवे तब
उतार लो अगर घी बचे तो अलहिदा करलो बाद इस्के
दो तोले मिसरी की चाशनी कर ये दवा और पीस कर मि-
लावे ॥ कस्तूरी आधी रत्ती लौंग ४ रत्ती जायफल १ मा-
दारचीनी १ माशा सोने के वर्क १ माशा फिर लहसन डार

गोली ४ बनाओ १ गोली सुबे कों खाओ बीमारी सख्त होतो १ शाम को खावो २१ या ४१ दिन खानेसे वायु की कुल बीमारी जाय बदन पुष्ट होभूख लगे ॥ इतिलहसनपाक ॥

इति वायु रोग की उत्पत्ती लक्षण जतन सम्पूर्णम् ॥१॥

इन रोगों से जो अपर रोग हैं उनके लक्षण जतन इस पुस्तक के दूसरे भाग में लिखे जावेंगे ॥ ॥ इतिश्री वैद्यक गुटका छंद भाषा पण्डित सुजान सिंह हेड मास्टर कृत समाप्तम् सम्वत् १९४५ फाल्गुण कृष्णा १४ भृगु वासरे शुभमस्तु श्रीरस्तु मंगलं ददातु ॥

छन्द

नगर मेरठ वैश्य पाड़ो ज्ञान सागर मत्तवा
मुलतानि मन हरदेव सिंह पंडित जहां पर येछपा
ईसवी सन अष्ट दिग्गज वसु निशाकर जानये
विक्रमादित अंक तर्य पुनंक वेद सुजान ये

समाप्तम्

श्री

यह पुस्तक पंडित सुजानसिंह हेडमा-
स्टरने वैद्यक के ग्रंथोंसे दोहे चौपाई
छन्द और कई चौबोले आदि में उल्था
किया और पंडित हरदेवसहाय जी को छाप
ने की इजाजत दी बगैर इजाजत मा-
स्टर साहब की कोई साहब न छापे ॥

"The Baidiyak Gutka

"Not to be printed with-
out permission of
Pundit Hurdeo Sahay
Printed at the Gyan
Sagur press Meerut
city

वैद्यरत्न



दर शहर आगरा मोहल्ला पुराना काजीप
डा में मतबा हुसैनी में अमीरुद्दीन उर्फ क
ल्लन के प्रबंध से बहुत सुद्ध छापा गया

श्रीगणेशाय नमः

अथ वैद्यरत्न

दोहा

नारदादि सेवत जिन्हें पारद विमद प्रकाश ॥ नारद
विधि बन्दन करहिं हिये शारदा पास ॥ १ ॥ वैद
आलस लखत बडो ग्रंथ अभिराम ॥ तिनको यह
छोटो करत वैद्यरत्न इति नाम ॥ २ ॥ अथ नारीप
रीक्षा ॥ भूखो प्यासो सयन युत तेल लगावे कोय
जैवो न्हायो तुरत ही नाड़ी ज्ञान न होय ॥ ३ ॥ हाथ
अंगूठा निकट की नाड़ी जीवनि मूल ॥ तासो पं
डित देह को जाने सुख दुख मूल ॥ ४ ॥ नरको कर प
ग दाहिनो त्रिय की कर पग वाम ॥ तहं वैद्य जानै
निरखि नाड़ी को परिमान ॥ ५ ॥ सम्प्रदाय पोथीन सो अ
रु अनभव सों जान ॥ नाड़ी लक्षण वैद्य फिरि औषधि
कहैं बखान ॥ ६ ॥ जैसें परखै पारखो रतन जतन
कर एन ॥ नाड़ी निरखत वैद्य इमि भली भांति सुख
चैन ॥ आदि मध्य अरु अन्त मे वात पित्त कफ जान

क्रमतें नाड़ी विधि यह नाड़ी को ज्ञान ॥ ८ ॥ मोर कबूतर पांडुराज हंस तमचूर ॥ इनकी गति नाड़ी निरखि कफ जानै यह मूर ॥ ६ ॥ वार वार इन की गति वार वार अहि गौन ॥ बात पित्त की नाड़िका पंडित जानै एन ॥ १० ॥ सर्प हंस गति सम चलै नाड़ी तब कफ बात ॥ सिंह हंस गति पित्त कफ नाड़ी तब यह धात ॥ ११ रहि रहि कठिन काठ ज्यों कट परा करि सोर ॥ यों नाड़ी तब जानियों सन्निपात नहि जोर ॥ १२ ॥ तीस बेर लौं फरकि फिर नाड़ी रहि २ जाय ॥ तब यह निश्चय जानिये नाहि रोगी ठहराय ॥ १३ ॥ रहि रहि रहि कर फिर चलै नाड़ी वार वार ॥ तब रोगी के प्राण वह लेय रहीनिरधार ॥ १४ ॥ **छप्पय** ॥ जिमि जिमि अरु कुटिल कुटिल व्याकुल फिरि ॥ रहि रहि नाड़ी चलै राजाय सूक्ष्म है फिरि गिरि ॥ फरकै कंठ मझार नित्य नाड़ी पुनि तबहू ॥ चलि चलि अंगुरी छुवहरि नाड़ी वह कबहूं ॥ इमि होय भाव बहुतहिं जवहिं नाड़ी कैते निरखि नित ॥ जानै असाध्य नाड़ी तबहिं सन्निपात बुध जानि चित ॥ १४ ॥ पहले पित्त गति होय वात गति होय बहुरि बहु ॥ कफ गति नाड़ी होय भेद कहि दियो बहुरि यहु ॥ चक्र चढ़ी सी फिरै थान अपनो नाड़ी तजि ॥ बहुत भयानक होय मोर गति चलै बहुरि भजि ॥ पुनि होय जाय सूक्ष्म बहुरि जान किराच्य रस ॥ यह भांति होय जवहिं तब असाध्य कहि धमरस १६ ॥ **दोहा** ॥ नाड़ी करकै मास मधिव इमभीर वर बानु ॥ नाड़ी ज्वर के जोर से कुपित उष्ण अति

जातु ॥१७॥ **चौपाई** ॥ काम कोप ते चंचल नाड़ी ॥ चिं
ता रोग छीन निरधारी ॥ छीन धातु मंदाग्नि भारी ॥ ता
की नाड़ी मंद बिचारी ॥ **दोहा** ॥ तोहू आम विकार
ते गरुई नाड़ी होई ॥ उदर अगिन अति तब चपल हलुके
लक्षण होय ॥ **सोरठा** ॥ लक्षण जानो एक भूखे की ना
ड़ी चपल मुनि जन करो विवेक अफरे की थिर जानिये ॥२०
दो० ॥ दुपहर अग्नि समान चर मल गिरि चंचल नारि ॥ वह
नर जीवे एक दिन मुनिन कह्यो निरधारि ॥२२॥ जैसे ड
मरू चलत है यों नाड़ी चलि जात ॥ जो नर जीवे एक दिन
नीठ नीठ ठहरात ॥ इति नारी परीक्षा ॥ **अथ जिव्हा
परीक्षा** ॥ दरकी पीरी खरखरी जीव पवन कह देत ॥
लाल श्याम बहु पित्त से पिछले होवे स्वेत ॥२३॥ सूखी
कारी कंठ युत सनि पात कहदीन ॥ मिलवा लक्षण होय
के अशुभ सुलक्षण हीन ॥२४॥ इति जिव्हा परीक्षा ॥ अ
थ नैत्र परीक्षा ॥ सूखे चंचल धूमरे भीम जरत से नैन
निहचे उपजे ॥ जानिये वात रोग तब एन ॥२५॥ दीप
सुहाइन सेत पित्त पित्त नैन तव पीत ॥ गीले चिकने तेज
घट मैंद जातु कफ मीत ॥२६॥ वात पित्त कफ़ वात के कै
कफ़ पित्त मिलंत ॥ तव मिलवा लक्षण कहे नैन वान लखि
संत ॥२७॥ कारे टेढे अरु अरुन तेतन्द्रा जुत तव देष ॥ लाल
भयानक नैन लखि कहत त्रिदोष विवेक ॥२८॥ आंख
भयानक एक लखि वह दूजी मुंद जाय ॥ तव रोगी दिन
तीन में यम के घर ठहराय ॥२९॥ **चौपाई** ॥ जाकी आं
ख जलज सम वारी ॥ लाल कि होइ रकत अनु हारी ॥ चित
वन लगे भयानक भारी ॥ तव रोगी की मीच्य विचारी ॥

दोहा ॥ भ्रमते दृग तारे फिरैं एक ठौर नहिं चेतु ॥ एकरु ति में यम नगर रोगी मारग लेत ॥ ३१ ॥ इति नेत्र परीक्षा ॥ अथ असाध्य व्याधिनिरूपनम् ॥ छप्पय ॥ नींद नास निशि होय कंठ कफ़ भरि आवत होत देह मधि दाह चैन फल एक न पावत ॥ वात कहत तुतरात होय लघु इन्द्रियमून वल बदन सकत लैय जीव बिचारी ॥ होइ जाइ रोग जुड़मि तुरत रोग आधान जब ॥ ताकहं बिचारि ओषधि कहत राम नाम तजि काम सब ॥ ३२ ॥ अथ ज्वराधिकार ॥ जाने सगरे रोग को ज्वर राजा सिरदार ॥ ताते पहले कहत हों अव ज्वरको अधिकार ॥ दो० ॥ अथ वात ज्वर ॥ धनासरी ॥ कंप वेग कंठ मुख होठ सूखे निंद्रा नाश छींकहू न आवे होइ देह में रूखाई ॥ जास अंग हिय मूड पीर वदन निरस होय गांठ वाढि बात बदन उरू सो विषले पहाई ॥ जानो संधि को सम भय दंत लोम हरष सुख काम वमन जो होइ बात ज्वर इमि जानतो ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ पीठ मूत नैन अरुन प्यास मलाप जंभाइ ॥ सूल अफर वो बात ज्वर लक्षन विधि यह आइ ॥ ३५ ॥ इति अथ पित्त ज्वर ॥ चौपाई ॥ तीक्षन वेग जोर अति सार ॥ आलस नींद उकलेद अपार ॥ कंठ होठ मुख नाक बखानो ॥ तिन का पकि वो वहु मन आनो ॥ स्वेद प्रलाप बदन कटुताई ॥ दाह मूर्छा तृषा वताई ॥ भ्रम मल पीतम घन मल आदि ॥ पित्त ज्वर लक्षण अरू आदि ॥ ३७ ॥ अथ कफ़ ज्वर लक्षण ॥ चौपाई ॥ दिन चल अंग वेग पतराइ ॥ मधुर मदन आलस ठहरो

ई ॥ मल अरु मूत स्वेत रंग होइ ॥ तमः तृतिय जानो ये दोई ॥ ३८ ॥ गुरुता सीत अरु उकलेद ॥ रोम हर्ष निद्रा द्रि भेद ॥ फरिया अंग सीत पर सेंक ॥ कंड तन्द्रा छर्दि विवेक ।३९ ॥ नात वस्तु बहुत मन माने ॥ मंद पेट की अगिन वखाने ॥ पीनस अरुचि सेत दृग कांस ॥ कफ़ ज्वर कोय ह कहो प्रकास ॥ ५० ॥ इति ॥ अथ वात पित्त ज्वर ॥ चौपाइ ॥ तृषणा दाह मूर्छा आई ॥ नींद न आवे मूड पिराई ॥ भ्रम मुख कठ शोष अधिकारी ॥ रोम हर्ष वमिअ रुचि बताई ॥ ५१ ॥ गांठि गांठि उपजे अति पीर ॥ मानो लागे निसरे तीर ॥ मोह होइ अरु होइ जमाई ॥ वात पित्त जवर रीत बनाई ॥ ५२ ॥ अथ वात कफ़ ज्वर ॥ चौ० निश्चल अंग नीद अति आवे ॥ गांठनि गाठनि पीर बढ़ावे ॥ पीनस रोग होय अरु कांस ॥ मूढ पिराइ पसीना नास ॥ ५३ ॥ वेग होइ मध्यम नहि जोर ॥ देह सांस संताप कठोर ॥ ऐसे लक्षण जब अनुमाने ॥ वात कफ़ ज्वर तवही जाने ॥ ५४ ॥ अथ पित्त कफ़ ज्वर चौपाइ ॥ लिवर अरु मूह करोई ॥ तंद्रा मोह प्रगट ये होई ॥ कांस अरुचि अरु लागे प्यास ॥ फिर फिर होइ दाह परकास ॥ अरु फिरि फिरि जाड़ो लगि आवे ॥ रोगी पल पल चैन न पावे ॥ प्रगट होइ जब लक्षन राह ॥ पित्त कफ़ ज्वर तव वुध कहेह ॥ ५५ ॥ इति पित्त कफ़ ज्वर लक्षण ॥ अथ सन्निपात ज्वर लक्षण ॥ चौ० छिन में जाड़ो छिन में दाह ॥ मूड पिराइ न होइ निवाह ॥ संधि हाड़ में होवे पीर ॥ नैननि में भरि आवे नीर ॥ कसन नाद नैन हमिलाल ॥ भरि रासे है मनो गुलाल ॥ कसन ना

द अरु कौन पिराई ॥ कंटक होइ कंठ भरि आई ॥ ५८॥
तहां मोह प्रलाप प्रकाश ॥ स्वास अरुचि चित्त अरु
भ्रम उपजे कांस ॥ जीभ खुर खुरी जरे समान ॥ सिथल अं
ग सब होइ निदान ॥ कफ़ लोहु उगले मुख पित्त ॥ धुनै
सीस दुख पावै चित्त ॥ नींद नास तृष्णा अधिकारी ॥
हिये होय तृष्णा अति भारी ॥ आवै अल्प पसीना अंग ॥
थोरी नींद मूत संग ॥ देह दुखरई अधिक न आई ॥ घन सम
कंठ बनो घहराई ॥ देह ददोरा कारे लाल ॥ पंडुल होंहिं
कि बहुत विसाल ॥ पकै कान मुख बोलन आवै ॥ अधि
क उदर मधि खोन बनावै ॥ जाड़ो लगै सबै दिन सोवै ॥
और जागन सबरी निशि खोवै ॥ रैन दिना के सब जाग
त जाई ॥ बहुत पसीना कै नहि आई ॥ हंस हंस नाचै
गावै गीत ॥ लीला निरखि होय मन भीत ॥ बहुत दिना
रोग पचि जाई ॥ सन्निपात ज्वर लक्षण आई ॥ इति ॥ अ
थ ज्वर लंघन करण ॥ दोहा ॥ ज्वर में लंघन में लंघन
प्रथम ही मुनिजन दियो बताय ॥ कांस स्वास भय कोप क्षय
वात जुरहिं कहाय ॥ चौ० ॥ वात ज्वर अरु छर्दि ज्वर वारो ॥ भू
खो होइ कि बहुत बिचारो ॥ गर्भिन नारी बालक प्यासो ॥
बूढ़ो अरु डरपोकर प्यासो ॥ अरु दुरबल इन माधि गति
ताई ॥ इतने रोग वृद्धि मन लेइ ॥ लंघन करन इनकह
नहिं देइ ॥ दोहा ॥ लंघन मानुष करत है दोष सकल
वह आइ ॥ दोष गये फिर कै सेइ लंघन कह्यो न जाइ ॥
६०॥ साते राति में वात ज्वर पित्त ज्वर दस राति ॥ कफ़
ज्वर बारह राति में पचत कहत मुनि जात ॥ ६१॥
सात रात में तरुन ज्वर बारह मध्यम जान ॥ अगिवारह

रात में जीरन ज्वर मन आनि ॥ प्यास भयानक बुझ
त जो प्यास हरत है प्रान ॥ प्यासे कहं जल दीजिये
वात है निदान ॥ ६३ ॥ मोह प्यास ते होत है प्यासीह
लेत है प्रान ॥ ताते रोगी को न बुध वरजे जाको पान
६४॥ दोहा ॥ नैन रोग ज्वर मंडल भंग ॥ उदर रोग
को लगि परसंग ॥ मंद अगिन अब अरुचि विचारो
॥ मुख रूखो पीनस निरधारो ॥ भग अरु सोथ रोग
फिर वैसे ॥ कोरा अरु मध मद जो तैसे ॥ इतने रोग
जाहि लखि पावै ॥ ताहि कुनकुनो नीर पियावै ॥
६६॥ **सवैया** ॥ मूर्छा दाह महा गरमी अरु पित्त घनो
जिन से दुख पावै ॥ राह चलै अति हाय परि भ्रमछांह
लगै कछु जासो न भावै ॥ पित्त करत को दाह को जोर
कियो एतो मादुर जोर जतावै ॥ होत है रोग इते नर जो
कहु ता कहं शीतल नीर पियावै ॥ ६७ ॥ चौपाई ॥४
पीनस अरु नूतन ज्वर जानि ॥ और गल यह रोग बखा
नि ॥ पीर पसुरिया की कह देइ ॥ संग्रहनी पुनि मन ध-
रि लेइ ॥ आध मान अरु अरुचि बताइ ॥ बात विथा अ
रु कफ पित लाइ ॥ गुल्म रोग कांस अरु स्वांस ॥ विद्र
धि रोग सो होइ प्रकास ॥ वार वार हिक्का जो होइ ॥
स्नेह पान न करे जो कोइ ॥ इतने रोग जाहि लखि आ
वै ॥ ता कहं ताते नीर पिवावै ॥ **चौपाई** ॥ औटे ते
निरवेग जल निरमल फेन विहीन ॥ आधो बाको जब
रहै उष्ण उदक कह दीन ॥ स्वांस कांस ज्वर मेद कफ
बात अरुचि मिटि जाय ॥ सोधे वपुरे अगिन र
उष्ण उदक गुण गाय ॥ चौथो आधो आठवे

हंस घटावे नीर ॥ ७३॥ चौपाई ॥ चरन हीन जल
वात नसावे ॥ आधो हीन पित्त विनसावे ॥ कफ हर
तीन अंस जल हीने ॥ लघु पाचन दीपन कह दीने ॥ ७४
दो० सन्निपात ज्वर जुगल ज्वर ताकी वेदन जाइ ॥ उ
ष्ण उदक ही जान अति वैद्य पिवावै ताहि ॥ ७५ ॥ चौ
पाई ॥ आध पाव जल सरस घटावे ॥ चरन हीन हेमंत व
नावे ॥ ग्रीष्म ऋतु अरु शिशिर वसंत ॥ अरध घटावे य
ह सुनि मंत ऋतु विपरीत सुवर्षा भाषे ॥ तब जल अंस
आठवा राखे ॥ उष्ण उदक कहि सरस विधान ॥ सुनि
जल सब मह कहे निदान ॥ इति उष्णोदक विधि ॥ दोह
॥ लंघन ज्वर की आदि करु पाचन दे ज्वर बीच ॥ क्षार लेप
ज्वर अंत में जात रहे ज्वर नीच ॥ अथ ज्वरो पचार
सोंठ धना सुरदारु अरु दोइ कटाई लेइ ॥ ज्वर आवे ता-
को पहल यह पाचन कर देइ ॥ फिर वारो मोथा मिले
काढो देइ बनाइ ॥ ताके पीवत तुरत ही वात ज्वर मिट
जाय ॥ कुटकी मोथा जाय फर नीम छालि करि क्वाथ ॥
पित्त ज्वर को द्वन्द्व जो सहित सवे दिन खाय ॥ नीव छाल
गुड़ वे धना अरु चौथे पदमाख ॥ एतो चदन सकल ज्वर हरे
क्वाथ मुनि भाष ॥ मठा पानी अरुचि पुनि दारु छर्दि अरु
स्वांस ॥ इन को याही क्वाथ सों जानो तुरत निकास ॥ ८ ॥
पित्त ज्वर हरन को पित्त पापड़ा मीर ॥ चन्दन मोथा क
हो अरु मिल जाइ उसीर ॥ चन्दन धनिया पापरा
सोंठि उसीर समान ॥ तृषा दाह ज्वर वमि हरे
सीतल क्वाथ निदान ॥ मोथा गुड़ में पापरा फिर
वाराख उसीर ॥ पंच भद्र काढ़ा करे वात पित्त ज्वर पीर

९५॥ चौपाई॥त्रिफला अरु सैमल की छाल॥ इन मधि फिरि वासन कहि घाल॥ फिर वारी और वासा मैले॥ बात पित्त ज्वर क्वाथ ढकेले॥ दोहा॥ दाष सोंठि गुरु मे मिलाय मे ले पुहकर मूल॥ क्वाथ बात कफ ज्वर हरै करै त्रिदोष निर्मूल॥ फिर बारो मोथा हरर कुटकी पीपरा मूल॥ क्वाथ महा कफ बात ज्वर तुरत करे निर मूल॥ चौपाई॥ गुर वै कुटकी मोथा लावै॥ उदी निंबु की छाल मिलावै॥ सोंठि इंद्र जव पर वर पान॥ चंदन डारै बैद सुजान॥ ९९॥ विधि सौं काढो ओटि उतारै॥ पीरि चून नामहि डारै॥ अम्रताए यह काढो आई॥ पित्त कफ ज्वर कढो जाई॥ १००॥ दोहा॥ पर वर चन्दन मुरहटी कुटकी पाढ़ गिलोय॥ पित्त कफ ज्वर दाह बमि कंडू हारै खोइ॥ १०१ सामस जाडो तीन फल निंब सुपर वर पात॥ इन के काढे सो तुरत पित्त कफ ज्वर जात॥ १०२॥ लंका उत्तर कोन में कुमुद नाम कपि रइ ताके सुमिरन करत ही तुरत इक तरा जाइ॥ १०३ ॥ चौपाई॥ पर वर पात निंब की छाल॥ दाख और फिर बारो घाल॥ त्रिफला और अडसी डारै॥ क्वाथ करै इक तरा बिडारै॥ १०४॥ दोहा॥ सेहत खांड यह क्वाथ में आन डारै बैद्य सुजान॥ क्वाथ देहित ब पान को यह बैदक को त्रिफला पर वर इन्द्रजव मोथा निंब सुदाख॥ हरै इक तरा क्वाथ ज्वर कही बार दस लाख॥ १०६॥ हरै जवासा इन्द्र जव पर वर गुरु वे नीव॥ जात रहै यह कासों संतत ज्वर अति भीम॥ १०७॥ सोंठि धना गुरु वै सरस चन्दन मोथा लेउ॥ यह उसीर इन नीम्र बहुरि चतुर

जान कहदेउ ॥ क्राथ करौ इन को जहां डारै मधु अरु-
खांड ॥ या काढ़े से वेग्रह ठिकरे तिजारी भांड ॥ १०९
छप्पय ॥ लंका पति मद हरन जानुकी सोच विदारन ल
क्षमन क्षत्रिय तिलक पान रक्षा के कारन ॥ इन्द्रिय
जीतन हार सुभट राक्षस कुल गारन ॥ पवन तनयब
ल वंत नगर लंका पति जारन ॥ हनुमान के नाम जो
नित उठि प्रातहि नर पढ़हि ॥ ताके न फेरि दुख कर-
न वह ज्वर तृतिये कवहूं चढ़हि ॥ ११० ॥ सोंठि हरर
कटसेरुआ आग कला सा नोन ॥ डारि अरु सा इभि
करे जिम काढ़े की हौन ॥ १११ ॥ दोहा नामहि मिश्री
डारि कै सहत सहित ले खाय ॥ मंदाग्नि या सों मिटै चा-
तुर्थिक ज्वर जाय ॥ ११२ ॥ देव दारु हरर: बहुरि सोंठि
अरु सो दोइ ॥ इन ही में सालोनि फिरि आम कलारी-
दोइ ॥ ११३ ॥ काढ़ै में मिश्री सहित डारि भली बिधि
खाइ ॥ स्वांस कांस घटि अगिन अरु चातुर्थिक ज्वर
जाय ॥ ११४ ॥ रस अगस्त के पान को काढ़ै पाथर कूटि
॥ नास लेइ नर जाय तो चातुर्थिक ज्वर छूटि ॥ ११५ ॥ चौ
पाई ॥ मोथा और कटाई छोटी ॥ सोंठि आंवरे गुर से
मोटी पीपरि सहित डार के प्यावै ॥ काढ़ो विषम ज्वर
हि नसावै ॥ ११६ ॥ दोहा ॥ गुरु अरु जीर मिलाय के
पैसाभरि नित खाय ॥ वात वेदना लघु अगिनि और वि
षम ज्वर जाय ॥ ११७ ॥ चूरन करके हरर को मधु सों लेइ
चढ़ाय ॥ विषम ज्वर के हरन को औषधि दई बताय ॥
११८ ॥ पीपरि पांच दूध मैं प्यावै ॥ पांच पांच वे रोज ब
ढ़ावे ॥ ४ ॥ ५ ॥ सो पीपरि लौ बढ़ती करै ते सेहिं

फिर घटती उर उर चौ ॥ स्वांस वात और रुधिर विकार ॥ पांडु अरस और सोथ अपार ॥ गुल्म उदर विषम ज्वर आई ॥ १२० ॥ दोहा ॥ बर्द्धु वान पीपरि भखै जो नर यह सुख पाय ॥ और भख सब छोड़ि कर दूध भात वह खाय ॥ १२१ ॥ भगरा की जड़ कान में बांधे डोरा डारि ज्वर आवत है रात को ताको देइ बिडारि ॥ १२२ ॥ ऐसे हिं बाधे कान में स्वेत आक की मूल ॥ तासों सवरे और ज्वर तुरत करे निर्मूल ॥ १२३ ॥ बांधे सेत कनेर की जड़ कर में नर लाय ॥ तासों निहिचि जानिये संतत ज्वर मिटजाय ॥ १२४ ॥ सोरठा सहदेई की मूल ल्यावे बसन उतार सब ॥ चातुर्थिक ज्वर जाय कान बांधहिं जवहिं १२५ ॥ दोहा ॥ को बाधेदी पात को रस काढो कुटवाय ॥ तासों अंजन करत हीं चातुर्थिक ज्वर जाय ॥ १२६ ॥ पीपरा मूल हरीत की मोथा मोकर काथ ॥ ताके खाये मिटत है आमाशय ज्वर साथ ॥ १२७ ॥ इति काथः ॥ अथ अधूरो ॥ दोहा ॥ कूटि सोंठि असगंध वड़री सरसों ले समजानि ॥ करि अधूरो अंग में पित्तर ज्वर कर हानि ॥ १२८ ॥ अथ अवलेह ॥ चौपाई ॥ पोहकर मूल कायफर लेइ ॥ काकरा भृंगी पीपरि देइ सहत डारि के वैद्य चटावे ॥ स्वांस कांस ज्वर कफ़हि न सावै ॥ १३० ॥ दोहा ॥ स्वांस कांस ज्वर कफहिं न सावै ॥ १३१ ॥ दोहा ॥ औटि पीसि मथि मैनहर वैद्य लगावै अंग ॥ हाथ पांय को ज्वर जनित हरै दाह पर संग ॥ १३२ ॥ चौपाई ॥ दाह देह जाकी नित जारै ॥ ताको पहले उतानो पारै ॥ फिर कांसे को वासन आने

जामें अधिक गहराई जाने ॥ बासन ल्याय हूंडी परभौ शीतलाता यह व्यापै ज्यों ज्यों ॥ दाह मिटै तन की वह त्यै त्यों ॥ १३३ ॥ दोहा ॥ पातनीम के बेर मथि करि उपजा वे फेन ॥ फैन लगावे देह में दाह मिटै यह अैन ॥ १३४
अथ चूरण ॥ हरड आमरे पीपरें चित्रक सेंधा नौन चूरन मंदा गिनि अरुचि ज्वर मल धन को पौन ॥ १३५
॥ धनाक्षरी ॥ छप्पय ॥ कर्ष एक तालीस कर्ष कर्ष दे मिरचै लीजै ॥ कर्ष तीनि ले सोंठि चारि पीपरिये दी- जै ॥ पांच कर्ष भरि तहां बंश लोचन बधु आनै ॥ आध कर्ष तज आन आध एला लघु जानो ॥ मिश्री मिला थ बत्तीस फिरि करष चूरण करई ॥ ज्वर झाड सो थ अफरा अरुचि स्वांस छर्द्द पिलहा हरई ॥ १३६
॥ इति चूरण ॥ अथ तैलम् ॥ हरदी लाष मजी ठ को कलक करइ बुध वीर ॥ लेहु तेल छः गुनो वहुरि दही की नीर ॥ १३७ ॥ छाडि कलक वह ते ल में डारे वैद पचाय ॥ तेल लगावे अंग में शीतल ज्वरये जाय ॥ १३८ ॥ चौपाई ॥ ले मजीठ अरु बड़ी कटाई ॥ सेंधो कूट शतावरि भाई ॥ जाय मासिका रासना आनो ॥ एक प्रस्त भरि तेल बखानो ॥ चा रि प्रस्थ ले दधि का पानी खरल करे ले औषधि आ नी ॥ १३९ ॥ कलक दही को पानी डारि ॥ तेल बढ़ा वै वैद बिचारि ॥ सिद्धि होइ तब तेल उतारै ॥ ते- ल लगावे सब ज्वर जारै ॥ इति अंगार तैलम् ॥ अ- थ रस ॥ सोधि लेहु बिष गंधक पारो ॥ कनक बी ज तीन उसम भारो ॥ इन ते दूनी त्रिकुटी दीजे ॥

चोषा लाइ काढ़ो करि लीजे ॥ १४०॥ चूरन करै भा
वना चारि ॥ काढ़े की मन बुद्धि बिचारि ॥ सुख द
पा मधि वरिन लेई ॥ दो रत्ती पीवे कद देई ॥ १४१ ॥ अ
नो पान आदो रस लेइ ॥ कीतो जे भारी गूदा देइ ॥ या
को गुन सब देइं बताइ ॥ नित ज्वर और इकतरा भारी
॥ याके खाये जाय तिजारी ॥ बिषम ज्वर चातुर्थिकू
जाय ॥ सब ज्वर की यह औषधि आइ ॥ अथ सन्नि
पात चिकित्सा ॥ दोहा ॥ तीन दिना कै पंच दिन
दश दिन करै उपास ॥ सन्निपात ज्वर जानिकै करि जी
वे की आस ॥ १४२ ॥ काढ़ो करि दश मूल को पीपरि
डारि पियाउ ॥ सन्निपात जोर अति ताको वेगि नसा
उ ॥ १४३ ॥ कुटकी सोंठि चिराय तो दारू हरद दश
मूल ॥ धना इन्द्र जव लीजिये सम पीपरि सम तूल
१४४ ॥ ये औषधि सब जोरि कर पीवे काथ बनाय ॥
स्वास कास तंद्रा अरुचि दाह मोह ज्वर जाय ॥ १४५
धना खरी ॥ भारंगी चिरायतो इन्द्रोरन की जारि छाल
नीव की ले मोथा बच कुटकी हरद दै ॥ पीपरि मरिच बा
य सुरही आदि सों निसोत देव दारू जवासो पटोल इको
पात दे ॥ पुहकर मूल त्रायमाण ब्रह्म नौनिया गुरुची
दारू हरद निसोत सो सती सउ मिलाय कै ॥ सोनो इन्द्र
जव पांडवर कटाय और त्रिफला कचूर सब औषधि जमा
य कै ॥ १४६ ॥ स्वांस कांस मूल और हिच की पवन विथा गु
ह जाको जो होत अधमान है ॥ पीच को पिर वो और पिं
डरी को पिराइ वो और आन की वदन की विथा जो निदा
न है ॥ संधि संधि विथा को विनास करै पलक यह वुध

जन को परम बखान ॥ सन्निपात ते रहै मतंग ताके मेटि
वे को यह क्वाथ ॥ यह सांचु कहि सिंह समान है ॥ १४७
दोहा ॥ दै हरदी त्रिफला बहेरि कुटकी मोथा लेउ ॥ नीम
छाल सुपटोल रस अलप खवाइ देइ ॥ अथ सन्नि
पात अवलेह ॥ चौपाई ॥ पुहकर मूल काय फरली
ज्यों ॥ काकरा भृंगी त्रिकुटा दीजियो ॥ डार कलौंजी
और जवासो ॥ चूरन करै मिहीं अति वासो ॥ सहत
डार चूरन यह चाटै ॥ हिचकी कांस स्वांस कफ काटै
॥ कंठ रोग यासों मिट जाई ॥ सन्निपात को औषधि आ
ई ॥ दोहा गुरु वे मोथा सोंठि ले और चिरायतो डारि ॥
चूरन आदे रंग सो चाटै कफहिं बिडारि ॥ १४८ ॥ अथ
अधूरो ॥ दोहा ॥ वच चिरायतो काय फर कुटकी ले
उ सभारि ॥ करो अधूरो कूटि के और कलौंजी डार ॥
१४९ ॥ ज्वर त्रिदोष को जाय अरु मिटै अंग पर सेद ॥
या विधि मुनिजन कहत हैं या औषधि को भेद ॥ १५०
सोंठि मिरच पीपरि हरर लोध सु पोहकर मूल ॥ कुटक
लौंजी इंद्रजव कुटकी और कचूर ॥ इन मधि डारि चि
राय तो चूरन करै बनाय ॥ सन्निपात ज्वर हरन काम-
लो अधूरो आइ ॥ १५१ ॥ कुलथी भूनि पिसाय के करे
अधूरो अंग ॥ सन्निपात अरु ज्वर मिटै सकल पसीना
भंग ॥ १५२ ॥ इति अधूरो ॥ अथ नास ॥ दोहा वच
पीपरि सेंधा बहेरि अरु महुआ को सार ॥ नास देइ
नि हचै सु नर भयेउ अचेत अपार ॥ १५३ ॥ अथ
कार्णिक सन्निपात ॥ दोहा ॥ आदि मध्य अरु अंत
मे करन मूल अधिकाय ॥ वह असाध्य दुखसाध्य सुख

साध्य सुक्रमतें आइ ॥ सोंठि कलौंजी कायफर कुलथी ये सम आनि ॥ करन मूल कहं कुनकुनो लेपन कर कर जान १५४ ॥ अरनी सोंठि सितावरि आनो ॥ देवदारु सा सन फिरि जानो ॥ और बिजोरे की जड डारे ॥ करन मूलयह लेप बिडारे ॥ अथ सन्निपात रसः ॥ त्रिकुटा नोन पांचहु लेऊ ॥ सोंठि बकुरि दोउ जीरे देऊ ॥ तीन खार तेहु ले धरे ॥ औषधि ले चूरन करे ॥ संधो पारो गंधक लीजे ॥ मारो अभ्रक तामहि दीजे ॥ ये औषधि ये औषधि सब लेय समान ॥ आदे को रस काढ सुजान ॥ १५५ ॥ ता रस में ये औषधि सानै ॥ सुरस खरल अरु सोटा आनै ॥ डारि खरल में औषधि लेऊ ॥ एक दिना लगि रगरे देऊ ॥ वीरभद्र नाम रस आइ ॥ मासेभरि यह देइ खवाइ ॥ आदो संधो चित्रक लीजे ॥ अनो पान जल में घिस दीजे ॥ १५६ ॥ बीरभद्र यह रस कहेउ मुनिजन चतुर सुजान ॥ सन्निपात गज हरन को यह है सिंह समान ॥ १५७ ॥ प्रात गरू रस दीजिये यह पोषन की बात ॥ रस खवाय पुनि दीजिये मध्य दूध अरु भात १५८ इति सन्निपात ॥ अथ ज्वर दश उपद्रव ॥ दोहा ॥ स्वास मूर्छा अरुचि अरु छेर्दि तृषा अतिसार ॥ मल बंध हिचकी कास अरु अंग पीर सरदार ॥ १५९ ये ज्वर के दश जानिये कहेउ उपद्रव ऐन क्रमतें औषधि कहति हों ज्यों पावे नर चैन ॥ चौपाई ॥ त्रिकुटा मोथा और कचूर ॥ पथर सगा और पुहकरमूल ॥ पांच मूल और लेइ कटाई ॥ तिन मधि गुरुचै और बताई ॥ ये औषधि सब लेइ समान

यह काढो करि वैद्य पिवावै ॥ स्वांस उपद्रव तुरत नसा
वे ॥ १६० ॥ दोहा ॥ किर वारो दाखै बडी कुटकी हरर उ-
सीर ॥ क्वाथ पापरा सहित यह हरै मूर्छा धीर ॥ १६१ ॥
कौनि सोत मिश्री हरर चूरन सहत मिलाय ॥ चाटै-
तासो तुरतही विकट मूर्छा जाय ॥ १६२ ॥ वारवार मु-
ख में धरै सोंठि मिरच यह नीर ॥ अरुचि हरनको मुख ध
रहि निंबु वारस मुनि धीर ॥ १६३ ॥ काढ विजौरे कोसु
रस केसर नोन मिलाय ॥ मधु जुत राखै वदनमें तासोंअ
रुचि नसाय ॥ कुटकी पीपरि सहत जुत मोर पंख कीरा
खा कै गुरु में करि क्वाथ मधु छर्दि हरै मुनिभाख ॥ आंम
रे विजौरे चूक निंबु वारस जंभीर ॥ जाभले अमले इतेह
रै तृषा गंभीर ॥ रूपे की गोली करै वहराखै मुख माहि ॥
ताही सों वढ जोर अति नर की तृषा वुझाय ॥ तज्ञ पत्र
ज और इलायची चन्दन दाख उसीर ॥ चूरण मिश्री स-
हत जुत यह याको गुन धीर ॥ ले चिरायतो पापरा गुरुवै
मोथा पाढ सोंठि अरु इन्द्रजव कुटकी तहां बिचारि ॥ य
ह औषधि सवजोरि के काढो यह तार ॥ या काढे के पी
यत ही ज्वर अतिसार भगिजाय ॥ अनुलोमनु विधिज्ञा
तरह करे जाते मल वंध ॥ तीक्ष्ण फल बतीन सों के काढ
मल वंध ॥ थोडा निर्मल नीर ले सेंधो नोन घिसाय ॥ नास
दइ याको जनहि तवहिचकी मिटजाय ॥ पीपरि पीपरा
मूल ले सोंठि दंद्र जो चूर ॥ चूरण चढावे सहत सों करे
काम को दूर ॥ काढि अरू से को सुरस मधु सों चोरि मि
लाय ॥ जाको चाटे से तुरत कांस दूरि हो जाय ॥ ज्वर विरोध
निज दारु को सीतल करै निदान ॥ मिटे उपद्रव ज्वर मिटे

यही वेद को ज्ञान॥सहस सीस हरि जगत पति न के
वो महाराज॥ तिन सौं हरि अस्तुति करें सब ज्वर जाइ अ
पार॥इति श्री स्वामी जनार्द भट्ट विरचिते भाषा वैद्यरत्ने
प्रथम प्रकाश: १॥अथ अतीसार चिकित्सा॥
अगिन बुझाव न उदर की जब वाढी जल धात॥होइ पवन
आधीन मल सहज तरे वह जात॥स्रवण लगे मल जल स
रस जब ही बार बार॥अतीसार यह जानियो विविध वहै
निरधार॥ वात पित्त कफ सोप अरु आम त्रिदोष जु और॥
या विधि ऐसे जानियो अतीसार छः ठौर॥३॥धना सोंठि
मोथा वक्करि वेल उसीर सुहाय॥आम मूल और वंध हर पा
चन क्वाथ पकाय।४।धना आदि दे पांच हैं तिन में सोंठि
चाह॥क्वाथ करै यह पित्त को छिन में देय वहाय॥मोथा
वेल उसीर और धनिया सोंठि अतीस॥क्वाथ करे इन को
हरे तो विवेध जगदीस॥६॥आंव मूल और ज्वर हरै औ
र सर कन अतिसार॥यह जानों यह क्वाथ को कहो
जो गुन विस्तार॥७॥चूरण चित्रक कूट को चाटै सहत
मिलाय॥रक्त पित्त वहु दिने को अति कष्ट त पुनि जा
य॥८॥अरिल्ल॥मोथा और उसीर को चारो पुनि लीजि
ये॥ पाढ पीय के फूल सुन्दर वादी जिये॥चन्दन लाल
अतीस क्वाथ इन को करे॥ परिहां जी कूट जो छक
अतिसार नीके हरे॥९॥दारु रक्त और मूल आंव के रो
ग जे॥अतीसार के भेद और सब जान ते॥ तिन को पे
वन हार क्वाथ यह जानियो॥ परिहां जी याके गुन ये
सांच चित्त मन आनियो॥धनाक्षरी छन्द॥आछी
मोकी वकुला कुर को लाइची का के धावन धांवे माही रो

ला के कारन को ॥ जामन कैई आछे नीके पान न को ॥ दौना करे गोली जो बनावै मह ताही के धर्म को ॥ बांध कस सोभा पेट माटी पुट पाक करि काढ़ि सब प्यावे मेल मधु के चाट न को ॥ कृष्ण ग्रनि सुत ताको कह्यो सवै औषधि ते जो- गराज त्राति सार के घटन को ॥ १२॥ दो० ॥ पानी दैदि वा हार्के जो जो ओटे आन ॥ त्यों त्यों बुध वा जानियो अती सार धन काल ॥ १३॥ अथ संग्रहनी अती सार जब हीं मिट जाय ॥ मंद अग्नि तब रहै वा खाय ॥ तासों अग्नि उदर यह सोखे ॥ उदर अग्नि तब ग्रहणी दूखे ॥ गृहणी दुष्ट ना अन्न पचावै ॥ जो कछु खाय काचो निक सावै ॥ पचै न पीर बहुत दुरगंधी ॥ फिरि २ द्वै और फिरि बंधी ॥ १५॥ दोहा ॥ संग्रहणी को यह कह्यो लछमन बिबिध विचार ॥ बूमि संग्रहणी जानि तब करिये उपचार ॥ १६॥ सोंठि बेल सम धना और सेंधो नोन मिलाय ॥ वात संग्रहणी बंधको काढ़ो करि के खाय ॥ चौ० ॥ मोथा लोध कुरै की छाल ॥ सोना सोंठि खटाई घाल ॥ बेल न जाल् मादा उसीर ॥ और मोचरस डारो धीर ॥ आंव छाल छन्द्र जो आने ॥ और बत्तीस त्रै चून मधि छाने ॥ सोरह मासे चूरण खाय ॥ चावर धोवन मथत मिलाय ॥ १८॥ संग्रहणी करि डारे छार ॥ अती सार रुज और अपार तिन को कर कस्यो विवेक ॥ गंगा धर यह चूरण एक ॥ २० इति गंगा धर चूरण ॥ दोहा ॥ सोंठि धाय के फूल अरु मोथा बेल मिलाय ॥ छाल कुरै की इन्द्र जो कुटकी पाठ सुखाय ॥ मिलै रसौत अतीस अरु चूरन करि बनाय ॥ चावल जल सों घोरि घोरि के

सहत डारि के प्यावा ॥ २२ ॥ पित्त संग्रहणी अरस अरु गुद पीड़ा अति सार ॥ नागरादि चूरण हवै रते दोषनि रधारि ॥ २३ ॥ इति नागरादि चूरण ॥ धनाक्षरी छन्द ॥ गंधक १ अफीम २ पारो २ कौड़िन की रारख ७ टि ष१ पीपरें ८ धतूरे के बीज २० सोधि लीजिये ॥ दशचार दोइ सात एक आठ बीस फेरी गंधक से क्रम ही सों अंस इमि कीजिये ॥ ग्रहणी कपाट रस तीन रत्ती भरि यह जीरो अरु सहत सब सो खैबे को जबरी जिये ॥ उदर बंध अफरा हरे संग्रहणी अती सार आमाशय रोगनि को केसेहू न लीजिये ॥ २४ ॥ इति संग्रहणी कपाटरस ॥ दोहा ॥ एक और सब और सब अवधे सं- हणी को जानिये ॥ एक और जानो मठा यह मुनि कह्यो बखानि ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ वैद तहां लै मठा वढावे ॥ बंध्यो जहां लो मल पुनि आवे ॥ क्रम ही क्रम पुनि मठा छुटावे ॥ तब रोगी को नाज खवावै ॥ इति संग्रहणी ॥ अथ अरस ॥ दोहा ॥ बात पित्त कफ सहज ते लोहू और त्रिदोष ॥ छः प्रकार गुद मवल में होत अरस को दोष ॥ इकस बहु भांति के भेषभाव और ख्याल ॥ गुद मधि अंकुर मास के करै अरस वहु ख्याल ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ एक टका भरि मिरचि लेहु ॥ सोंठि दोइ टका भरि देहु ॥ चित्रक चारि टका भरि लीजे ॥ आठ टका भरि चूरन माने ॥ सब चूरण गुर फिरि डारि ॥ बांधो गोली युक्ति सं- भारि ॥ यह प्रसिद्ध पाव मोदक जानो ॥ ताको फल इमि सत्य बखानो ॥ २७ ॥ अरु यद रोगन

पावे चैन ॥ अरस रोग को औषधि औना ॥ ३१ ॥ पैसा भरि इलाइची लेउ ॥ द्वै पैसा भरि तज पुनि देऊ ॥ पत्रज पैसा तीनि समान ॥ चार भाग गज केसरि जान ॥ मिरच पांच पैसा भरि त्योंही ॥ द्वै पैसा भरि पीपरि योंही ॥ सोंठि सात पैसा भरि धरै ॥ सब औषधि ले चूरण करै ॥ ३३ ॥ सब चूरण सम मिसरी डारि ॥ रोगी चूरन खाय विचारि ॥ औषधि अरुचि हिय रोग विडारि ॥ गुल्म हरै उदर व्याधि निकारै ॥ चूरण सूरण सोरह भाग ॥ चार भाग सोंठि पुनि देहु ॥ एक भाग मिरचैं पुनि च लेहु ॥ ३५ ॥ सब औषधि चूरन कर आनि ॥ चूरन सम गुर लेकर माने ॥ गोली बांध प्रात उठि खाई ॥ अरस जाइ नहि होइ लखाई ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ पीपरि पीरी डारि कै मठा मधुर अभिराम ॥ तो तिहुं सुनि हो नहीं फेरि अरस का नाम ॥ ३७ ॥ सोरठा ॥ कोढ हरन को होइ वैद विजौरे लै धरौ ॥ अरस हरन को होइ तैसो मिलवो अरु करे ॥ दोहा ॥ सोरे हरदी जोग सों ज्यों परमेह बिलात ॥ साजी चित्रक जोग सों त्यों गुड अंकुर जात ॥ ३९ ॥ भुरता सूरन कंद को कीच लपेट पकाय ॥ देइ तेल अरु नोन सों अरस रोग मिट जाय ॥ ४० ॥ कै नैनू मल वाय कै केसर नै नखांड ॥ दही सिखरन को मठा करि करै अरस को भांड ॥ ४१ ॥ देवदारु की क्वाथ करि गुद धोवै नित नित ॥ धूप देहु कै तो मिटै सरसैं मिता ॥ ४२ ॥ देव दारिन को सोधि दीध को नीर ॥ गुद अंकु गुद अंकुर या लेप ते मिटै अरस की पीर ॥ ४३ ॥ ४ ॥

अथ अजीरण रोग

सहज बात कफ पित्त सो और रसा रसा से पांच ॥ विष-
म असन ते दूमि सुठै कहे अजीरण सांच ॥ ४४ ॥ गंध
क ३ सेंधो ३ सोंठि कै १ तीन दोष अरु एक ॥ क्रम सौं ली
जौ अंसरा करि करि पित्त विवेक ॥ ४५ ॥ चूरण करै मही
न कर निंबुवा को रस डारि ॥ क्षुधा बोध दूमि नाम है ली
जौ रसहि बिचारि ॥ संख्या करहि सो संयम सो नित-
खाय ॥ भख बहुत वासों बढहि सरस अजीरण जा
य ॥ ४७ ॥ चौपाई ॥ हरड़ें पीपरि सोंचर लेउ ॥ चूरण
घोरि छाछ में देऊ ॥ कै ताते पानी सों धारो ॥ जानि-
दोय नित दीजो मारो ॥ ४८ ॥ मिटै अजीरण अरु वि
सराई ॥ उदर अग्नि बहु तै अधिकाई ॥ आधमान औ
र गुल्म नरहे ॥ बात सूल सोऊ पुनि कहे ॥ ४९ ॥
छन्द भेद ॥ सोंठि मिरच पीपरि अजमोदा सैंधोजी
रो दोऊ ॥ चूरण तोलि आठ वासा भरि हींग भूजिये
सोऊ ॥ मात घीव सों भोजन पहिले चूरन वेद खवा
वै ॥ बात रोग सब तुरत नसावै ॥ ५० ॥ चौपाई ॥
पका जंभीरी ल्यावे तोरि ॥ पांच सेर रस लेय निचोरि
॥ तीन टांक हींग पुनि लेइ ॥ हींग भूंजि बुकनी कर
देई ॥ ५२ ॥ पीपरि मिरच सोंठि अरु राई ॥ अजवाइ
न दूमि माझ बताई ॥ सेंधो लोंग बाइ बिड़ंगी ॥ दश
ही टंक लेइ सब संगी ॥ पद्मावती छन्द ॥ अज मोदा
कटु त्रिय हिंगु सेंधव हि सुरतरु ग्रंथ कचीता ॥ सोअ
विडंग बिडंग विदित नव नागर वृद्ध दारू दश कीता ॥
अभया पचांनन नम सो जल पिउ मुद्ध पंगु परस् ती ॥
जंघ संधि भुज बात विदारन गुड गोली अनु भूती सोंच

र नोन टंक चालीसा ॥ रस मधि डारै वेद को ईसा ॥ फिरि बह रस सीसा मैं भरै ॥ भूमि मे खोदि गाड़ि पुनि धरै ॥ एक मुद गाड़ि के राखहि सीसी ॥ बीते दिना एक और बीसी ॥ सीसी काढहि वैद सुजाना ॥ सिद्धि होय जबही संधाना ॥ ५५॥ एक अधेला भरि रस खाइ ॥ सकल अजीरण देह भगाइ ॥ बिथा मूल की तनक न रहै ॥ बाढ़हि भूख खाउ यह रसहि ॥ ५६॥ इति जंभीरी संधानं ॥ दोहा ॥ सोंठि हरड़ और पीपरैं चित्रकू वाय विडंग ॥ भिलवा बच गुरु वेसु बिष करै बदेह संग ॥ ५७॥ पीस गाय के मूत में औषधि सवै समान ॥ चतुर वैद्य गोली करै गुंजा के परिमान ॥ ५८॥ एक अजीरन को कही है बिसूका धारि ॥ तीन सांप काटे तवे सन्निपात को चार ॥ ५९ ॥ आदे को रस ल्याइये ताके संगहि खाइ ॥ यह गुटि का संजीवनी नर जीवनि चितलाइ ॥ ६०॥ इति संजीवनी गुटिका ॥ दोहा ॥ पीपरि कंजा सोंठि अरु हरड़ वेल अरु खांड ॥ वड़वानल चूरण करै सकल अजीरण भांड ॥ ६१॥ इति वड़वानल चूरण ॥ चौपाई ॥ एक भाग हींग ले आउ ॥ दोय भाग बच्च तहां मिलउ ॥ तीन भाग पीपरि पुनि डारो ॥ अदरक चार भाग निरधारो ॥ भाग पांच अजवायन आनै ॥ हरर भाग छह तहां बखानै ॥ सात भाग चित्रक फिरि लेय ॥ आठ भाग कूट फिरि देइ ॥ चूरण औषधि जोरि बनावे ॥ दही छाछ सों घोरि पियावे ॥

मानो जल के मदिरा संग ॥ चूरण खाय होय सब रंग ॥ पीड़ा उदर अजीरण आवा ॥ उदा वर्त को रहे न नाव ॥ वात सांस वेदन विष जाइ ॥ चूरण नाम अगिनि मुख आइ ॥ इति अगिनि मुख चूरण ॥ दोहा ॥ कै गुरु संग कै सोंठि संग कै सेंधो संग खाय ॥ हरड़ रोज नर तौ बढ़त उदर अगनि अधिकाय ॥ ६७ ॥ जवा खार सम सोंठि ले प्रातहि घीसों खाइ ॥ भूख बढ़ै अरु रुचि बढ़ै अन्न तुरत पचि जाइ ॥ ६८ ॥ हरड पीपरहि सोंठि जो ये तीनो लै खाइ ॥ उदर अगिन बाढ़ै अरु रोग त्रिदोष नसाय ॥ ६९ ॥ सेंधो पीपरा मूल अरु पीपरि चाव मंगाइ ॥ चित्रक सोंठि हरड़ ये इनमें देइ मिलाय एक एक एकत्र करि सब को भाग बढ़ावई ॥ अगिन बढावन को यही पुरुष बड़वानल भाई ॥ ७० ॥ इति बड़वानल चूरणम ॥ छप्पय ॥ पीपरि सोंठि चित्रक हरर सो चर्ले आवै ॥ ये सब लेइ समान कूट चूरण करवावै ॥ चूरण खाइ प्रभातई रुचि अग्नि बढै पुनि ॥ प्लीहा गुल्म न रहै होय बल यह पुनि ॥ उदर आव विष नास चूरण मुनीपु किये सरस ॥ इति पंचम चूरणम ॥ चौपाई ॥ सोधि टका भरि पारो देइ ॥ दोइ टका भरि हरड़ मिलावै ॥ तीनि टका भरि सोंठि रलावै ॥ सेंधो मिरच पीपरै लीज ॥ छह छह पैसा भरि यह दीजे ॥ फेर फेर पुट तिनहि दिवावै ॥ निबुवा रस के घाम सुखावै ॥ खरल मध्य घिस रत समान ॥ गोली बांधहि वैठ सुजान ॥ होत अजीरण अरु इमि जान ॥ रस ताको इमि गुन परमान ॥ दीपन पाचन मेरे मत भारी ॥ दूना

बढा खाय भूख अधिकारी ॥ इति अजीरण रसः ॥ अ
थ बिसूचिका उपचार ॥ दोहा ॥ सूची सम बेदन
करै पाय अजीरण बात ॥ वैद्य विचित्र बिसूचिका ता
ही सों कहि जात ॥ ७६ ॥ नर ऊपर निकसे नहीं अन्न
वात कफ दुष्ट ॥ ताको कहत बिलंबिका कहे वैद्य गुण
पुष्ट ॥ ७७ ॥ चूक कूट सैंधो कलूक करि कै चुरवै तेल ।
॥ ७८ ॥ पल्ली मूल बिसूचि मिटै लगावै तैल ॥ ७९ ॥
सोंठि मिरच पीपरि हरद कर ज विजौरे मूल ॥ अंजन
करिये छाछ सों मिटै विसूचिका सूल ॥ ८० ॥ अथ
अतीस भंगरा हरद हींग इंद्र जौ आनि ॥ सोंचर नोन
मिलाय के चूरण करियो छान ॥ ८१ ॥ चूरण तुष के
नीर में घोरि जबहिं वह खाय ॥ सूल विसूची आरू
ढो रक्त अजीरण जाय ॥ ८२ ॥ अथ कृम ॥ दोहा ॥
हृदय रोग ज्वर कांस भ्रम वात रोग अतिसार ॥ होवें
किचुआ उदर में यह लक्षण निरधारि ॥ ८३ ॥
करि दरि वाकी छाल को क्वाथ मेलि तिर तेल ॥ खाय
तीनि दिन गिर पडे तो किचुवा यह खेल ॥ ८४ ॥
वासी जल सों वांटि कै खाइ सांझ की प्रात ॥ अजवा
यन गुड़ धीव के तुरत करै कृमि पात ॥ ८५ ॥ राई
सैन के बीज कौं ले मधु के संग खाय ॥ की विड़ग चूरण
करै कृमि की ओषधि आइ ॥ ८६ ॥ अथ पांडु रोग
दोहा ॥ स्वांस काम पीरे नयन पीरे नख अरु खाले स्वास
कास थोरी अगनि पांडु रोग को ख्याल ॥ क्वाथ पिये
दश मूल को सोंठि कपर छन डारि ॥ अतीसार ज्वर
सोथ कफ पांडु रोग निरधारि ॥ ८७ ॥ लै त्रिफला

कै नीम रस कै गिलोय मधु मेलि ॥ दारु हरद मधु प्रात हीं खाइ काम ले ठेलि ॥ ८८ ॥ अथ रक्त पित्त उपचार ॥ तीक्षण कटु खारो अमल रस जाते रहि पित्त अरु को रुधिर को यह मेरे है मित्र ॥ गुद मुख नासा माहि देलोहू बारं बार ॥ निकसे तासों कहत हैं बुध जन पित्त विकार ॥ ९० ॥ फल कुम्हेरे के दरद अरु कमर पकी खजूर ॥ दाख खाइ ये सहद संग रक्त पित्त कर दूर ॥ ९१ ॥ खाइ अरूसे को जुरस सहित बराबर डारि ॥ ज्यों सलिल बुझावन अगिन ज्यों रक्त पित्त को मारि ॥ ९२ ॥ घनाक्षरी छन्द ॥ चन्दन उसीर लोद कमल केसरि उसीर फिर वेल मोथा खाइ हू मिलाइये ॥ पाटनाग केसरी गुणोन चारो कुरो थाये आधो ले अतीस गदाइन में पिसाइये ॥ दवां को बकुल मजीठ छोटी लाइची रसोत पोही आम को सुमोचरस आइले ॥ जामुन को सारनीक कमल समान भाग औषधि पिस इ सब चूरन कराइले ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ चामर को धोवन सहित ताम्हि सानि ॥ खाइ प्रात हीं कहत सो ताके गुणनि बखानि ॥ रक्त पित्त ज्वर भेद अरु तृषा मूर्छा जाइ ॥ अतीसार अरु छर्दि पुनि यासों तुरत नसाइ ९४ ॥ गर्भ गिरत यासों रहे मुल ताने कूं देइ नातेचरन तियन कौ याही ते दियो बताइ ॥ ९५ ॥ अथ कास ॥ प्राण वायु ऊपर जवै मिलि ब्रह्मांडसे जाय ॥ कमल नाभि पै चल हृदय तवै कास अधिकाइ ॥ पंच मूल को काथ करि पीपरि चूरन नाइ ॥ खात प्रात उठते तुरत वात कास मिट जाय ९८ ॥

हरड़ सोंठि पीपरि मिरच गुरू ते षांड मिलाय दीप
न पांचन काम हर गोली है दई बनाई ॥ ९९ ॥
सो मोथा दाडिम कायफल हरर भरंगी लाइ ॥ का
करा भृंगी सोंठि बच देवदारू सुमिलाय ॥ १०० ॥
कंठ रोग मुख रोग अरु मूल रोग अधिकाय ॥ हिका
ज्वर अरु कास को मारन को सिरदार ॥ १०२ ॥ धेना
पापरा डारि के कर काढो हित जानि ॥ पित्त वा
त कफ़ कास को हीग सहित सो जाने ॥ १०१ ॥
एक करषले पीपरें मिरचें करष प्रमान ॥ दरवार्की
वकुला कहे दोय करष सुनिदान ॥ १०३ ॥ जवाखार पा
धो करष आधो करष गुड डारि ॥ गोली मासे चारि
करि मुख में लीजे धारि ॥ १०४ ॥ गोली के परिभाव
से जितने हैं सब कास ॥ यह तुम निहचै जानियो
तिन में होय निरास ॥ १०५ ॥ सोरह मासे जायफल
सोरह वाके फूल ॥ सोरह मासे लौंग ले यहै बात
को मूल ॥ १०६ ॥ चारि टका भरि सोंठि ले मिरचै पैसा
एक ॥ मिश्री चूरण सम कहीं या विधि कयो बिवे
क ॥ १०७ ॥ स्वास कास पर मूल ज्वर अरु रुचि अगि
नि अति मंद ॥ और अनेक न रोग पर या चूरण
को फन्द ॥ १०८ ॥ खील कुहारे दाख घृत मिश्री
पीपरि डारि ॥ मधु सो गोली बांधिये पित्त कास दे
टारि ॥ १०९ ॥ अथ स्वास ॥ अधिक कास जब
बढ़त है तब उपजत है स्वास ॥ हिचकी याही है
तु सो ता मधि ताको वास ॥ ११० ॥ सोंठि मिरच
पीपरि हरड़ गोली करि गुड मेलि ॥ उदर अगिन

अरु कास हर स्वास रोग देठेलि ॥ ११२ ॥ क्वाथ करो द-
शा मूल को मेलो पुहकर मूल ॥ स्वास कास पथरी बि
था सूल करै निर्मूल ॥ २१३ ॥ मोथा सूंठी हरड पुनि गो
ली कर मुख नाउ ॥ एक बदे हो पाति मुख कास स्वास-
बिन साउ ॥ १३ ॥ कुहडा की जड पीसि के ताते जल सो
खाय ॥ स्वास कास दारून महा बनर तुरत मिटाय ॥
१७ ॥ आदे को रस काढ़ के तामहि सहत मिलाय ॥
स्वास कास कफ हरन कूं यह औषधि नर खाय ॥
चौपाई ॥ सोंठि मिरच अरु पीपरि लीजे ॥ काक
रा शृंगी दून मदि दीजे ॥ जटा मासिका त्रिफला आ
ने ॥ पांचो नोन भारंगी साने ॥ पुहकर मूल कटाई
धरै ॥ ऐसे वहुका चूरन करै ॥ ताते पानी सों यह
खाय ॥ स्वास कास कफ बाय नसाय ॥ गुड़ अरु
घी तेल संग एक बीस दिन खाय ॥ यह तुम निश्चय
जानिवो स्वास न फिरी निज काय ॥ १८ ॥ धना सरी छ
न्द ॥ पारो और गंधक सुहागा बिष मैनसिल टंक भरि
सोधि औषधि यह लीजिये ॥ आठ टंक मिरचै एक
एक मिरच देख रल मधि डार सब चूरण ये कीजि
ये ॥ फिर कै त्रिकुटा को मिलाय चूरण सीसी माझ
धरिये और प्रात संज दीजिये ॥ रती एक स्वास का
स को कुठौर स्वास कास के सन्निपात बाय माहि जु
डीये सोच कीजिये ॥ ११६ ॥ इति स्वास कुठार रसः
अथ हिक्का ॥ दोहा ॥ आरक बाधक उष्णा गु
रु सीतल रूखो खाय ॥ सीरो पानी घोरि अरु
धूमा घास बचाय ॥ २० ॥ सीस बोझ ले बहु त

राह चल दोर ॥ और स्वास कास हिचुकीन की यई भ
नो है ठौर ॥ २१ ॥ सोरठा ॥ मधु सोंचर के संग पिये
बिजौरे को जुरस ॥ हिचुकी जाय सुरंग औषधि कह
दीनी सुरस ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सोंठि पीपरे आमरे खाड
या मधुसों सानि ॥ हिचुकी को यह दूसरी औषधि ली
जो जान ॥ २३ ॥ सोंठि भरंगी दीजिये ताते जल सों घो
रि ॥ औषधि कह दीनी सुरस हिचुकी डारै तोरि ॥ २४
इति काष ॥ अथ क्षय रोग प्रतीकार: ॥ दोहा
अति कफ अति संभोग ते दुखी जो दुख लगात ॥
स्वास कास पीड़ित महा लोहू अगलिनि जात ॥ २५
मंद अग्नि अरु स्वास तृष मास पीत सित नैन ॥ वी
न छर्दि बिस्वास सव मास पीत सित नैन ॥ ज्वर को
चूरण में कह्यो पहले जे तालीसादि ॥ ताके पाछे छ
य रोग में नीके करियो यादि ॥ २७ ॥ खाड सहित नै
नू मिले नर चाटे जो रोज ॥ रजै निश्चित छय रोग
को सहज मिटावे खोज ॥ २८ ॥ जरगंगेरुवा की ले
आवे ॥ मासे तीनि रोज पिसवावो ॥ बढती सौंथ
ह औषधि आदु ॥ याते दूध नाज घरि जाय ॥ हो
य पुष्ट बल और निरोग ॥ छई रोग को यह है जोग
॥ अरिल्ल ॥ केवल कलास कड़ि करै छके बीज है ॥
जरगं गेरुवा ल्याय ताहि पुनि पीस ले ॥ खांड स
हित घृत संग रोज उठि खाय जो ॥ परि हां हांजी
स्वास कास सम जाय छय रोग तो ॥ ३१ ॥ दोहा
॥ चूरण असगंध गोखरू सहत दूध के संग ॥ खाय
प्रात उठि तो करै स्वास कास छय भंग ॥ ३२ ॥ छप्य ॥

लौंग अगर कपूर कमल गटा और चन्दन जारो ॥ और उसीर इलायची मोथा टेमन ॥ जटा मासि का तगर बंश लोचन और डारो ॥ पीपरि कंकाल जाय फल तज निरधारो ॥ नेउ नाग केसरि सरस मिश्री चूरण आध सम ॥ गुन निधान चूरन कह्यो लवंगादि चूरण परम ॥ ३३ ॥ रुचि उपजावै बहुत तृप्ति बल करै अधिक पुनि ॥ वात पित्त कहं हरै पीनस यह पुनि पुनि ॥ कंठ रोग हिय रोग कास हिचुकी छिन सावै ॥ अतीसार और स्वास रोग छलीह भगावै ॥ संग्रहनी परमेह अरु गुलम रोग क्षय रोग धर ॥ यह खाय रोग सब हरन कौ लवंगादि चूरण सुधर ॥ ३४ ॥ इति लवंगादि चूरण ॥ छप्पै ॥ गंधक तोला एक सोधि तोरे ले पारो ॥ अभ्रक तोले एक तीनि यह सम निरधारो ॥ मैनसिल तोले डेढ तोरा दरा रूधरू ॥ छय तोले ले सार खरल मधि सब एकत्र करि ॥ काढि धतावरि को सुरस देइ भावना चारि दश ॥ यह भांति सिद्ध यह होत है कुंभ ईस्वर वृंगिनाम रस ॥ रत्ती दोय के तीनि मिरच मिश्री संग खावै ॥ रस के सरस सकल गुननि बनि वताइ ये तवै ॥ पित्त कफ वाय कर्दि रोग विकट टारि ॥ ज्वर आदिक कव मिटै न मिटै वात दान नर हरि ॥ सदा यह सेव नर अनुपान संग प्रात नित्त ॥ तन मधि न होय जु कते वार होय सुनि लाय चित ॥ ३४ ॥ छन्द सार ॥ रसत सुसांधु सीतली है गवषम में धरिये सतवति

नि सु स्वामी हू दे विचारियें ॥ है सुन्दर भाग एक है
भाग मुक्ता डारि के ॥ दुगुण सुहागो भाग तीन के मि
खभाग सुधारि के ।४०॥ घनाक्षरी छन्द ॥ सोने के तव
क अरु पारो ये समान लै दोऊ के समान डारि फिरि मे
ती आन के ॥ पारे की बराबर ले गंधक चौथे हिस्से साजीना
मधि मिलाइ दे जान के ॥ एक दिन खल मधि डार मर्दन क
रो गोली बांधो धान तुस सखिल सानि के ॥ हंडिया में नो
नी भरि तामें एक गोली धरि एक दिन आंच देइ हितु पहि
चान के ।४१॥ दोहा ॥ यह मृगांगारस पीपरें सहित संग स
ब लेइ ॥ तीन रत्ती भरि देत वै छर्दि रोग दूरि करि देइ ॥ सं
गृहणी याते मिटै मंदाग्गिनि मिटिजाय ॥ सीतल पित्त
हित हूर दियो पथ्य बताय ॥४२॥ इति मृगांगारस ॥
इति गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचिते भाषा वैद्यर
त्ने द्वितीय प्रकाशः ॥ अथ अरुचि ॥ दोहा ॥ सं
निपात अरु दोष सौं अरुचि दोष कहि देइ ॥ मिर
च इलायची डारि गुड जल वृमिली को लेइ ॥ जीभ
दोष हिय दोष तें अरुचि दोष संताप ॥ या औषधि
सों तुरतही अरुचि हू दूरि करि दाप ॥२॥ छन्द
सिंह मिश्री औषधि जब आठ भाग सों लीजिये ॥
तिहि डारि खरल सुमध्य वांटे एक दिन कहदीजि
ये ॥ चौपाई ॥ मिरच कलौंजी जीरा दाख ॥ तंतरीक
कहि कहि अभिलाष ॥ गुरचे सोंचर चावउ डारि ॥
गोली करो तनक निरधारि ॥ दोहा ॥ गोली मुख में
पानिवयो येहि तुजान अपार ॥ अरुचि रोग या सोंमि
टै यह कीयो निरधार ॥ ५ ॥ बार बार पानी पिये

तृप्त न क्योहूं होय ॥ फिरि फिरि चाहे सलिल को तृषणा कहिये सोय ॥ मिश्री घोलि दाख मधु दूनमीडार यह ॥ तृण करदे दूर इन के पानी को दिये ॥ ६ ॥ मुठाकूट मधु पील वर पारा लाल पिसाउ ॥ गोली करके राख मुख तिरषणरोग नसाउ ॥ ७ ॥ इति तृषणा ॥ अथ छर्दि ॥ दोहा ॥ वात पित्त कफ ते बहुरि और त्रिदोष बलवाय ॥ लटी बस्तु देखे बढ़े छर्दि पंच विधि आय ॥ ८ ॥ कोमल कै जाघात ले लोन कुटाई डारि ॥ घंड प्रात ही खाइ कै दीजो छर्दि विडारि ॥ ९ ॥ छप्पै ॥ प्रथम लाइची लोंग नाग केसरि ले आवहु ॥ मीगी वेर की वहुरि ल्याइ इन मांझ मिलावहु ॥ मोथा और प्रियंगु सेते चन्दन इन मधि धरू ॥ पीपरि पील मिलाइ कै सूक्ष्म चूरण करू ॥ मधुर डारि मिश्री सहत चतुर चाट चूरन सरिस ॥ कफ वात पित्त उपजी प्रबल छर्दि फेरि नाकर परस ॥ १० ॥ दोहा ॥ लै जामुन और आंवरा काथ पात कर वाइ ॥ सहत पील चूरन मिले खाय छर्दि मिट जाय ॥ इति छर्दि ॥ अथ मूर्छा ॥ दोहा ॥ जानि परे सुख दुख नहीं गिरे काठ सम देह ॥ जासों कहिये मूर्छा छह विधि निःसंदेह ॥ १२ ॥ पंखा जल को सींच वो सीतल मणि गण हार ॥ फूल सुगंध अनेक ये मूर्छा अरु उपचार ॥ चौपाई ॥ सिंगी वेर की और उसी गज केसरि लै मिलवे धीर ॥ पीपरि सीतल जल सों प्याउ ॥ विकट मूर्छा तुरत नसायु ॥ १४ ॥ दोहा ॥ पीपरि की बुकनी करे चाटे सहत मिलाय या औषधि सों मूर्छा नर की तुरत नसाउ ॥ १५ ॥ ५ ॥

मिरच ग्रादि को नास दे मूंदि नाक मुख ओर ॥ मूर्छित रहे जगाइयो परो होय जा ठौर ॥ इति मूर्छा ॥ ग्रथ दाह ॥ पित्त करत को मूर्छित तृषा न उठ माव्दाद ॥ त्वचा मांझ वह करत है तहां पित्त सो दाह ॥ २७ ॥ देह चुपरिस व होठ घृत मिश्री सहत मिलाय ॥ घीव डारि के तुरत ही दाह देह की जाइ ॥ १८ ॥ वासपात को क्वाथ करि सीतल भै मधु डारि ॥ नल वह बच्चा बाइ का कमल सिसर जल धारि ॥ दाह हरत चंदन सहित सुन्दर तरु निर धार । २० इति दाह ॥ ग्रथ मृगी- रोग चिकित्सा ॥ वंक नाल सीसी को ल्यावे ॥ कपरौटी इक ईस दिवावे ॥ ल्याइ करू वा मह वा गोली जवखार सिंगरफ़ लै भली ॥ २१ ॥ जल गुलाव सब खरल करावे ॥ सो यह सीसी मांझ धरावे ॥ सीसी वे जल ऊपर धरे ॥ २२ ॥ यह चूवे जो लै धरि ग्राछें लेइ काढि ताही के पाछे ॥ सीसी भाग तेल वह नाखि मुंह को मूंदि जतन सों राखि ॥ २३ ॥ यह मल- सो व दाल दिसावे ॥ ताको पहले नास दिखावे ॥ फिरि वै सीसी सों वह तेल ॥ ग्रंगुरी मांझ लगावे खेल ॥ लेप करै सोई कनपटी नरूवा ॥ काढे नादि नहरवा ॥ दिन इक्कीस लौं यह विधि सही ॥ सो धनवन्तर निज मुख कही ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ग्रस गंध कूट लोन दुजीरा ॥ सोंठि मिरच पीपर लै वीरा ॥ ग्रज मोद ग्रूरु पांखा हली ॥ पाट ल्यादि जव चूरन को करै वनाइ ॥ चूरन सव सम चूरन ग्राइ ॥ व्रह्मा नोनिया को रस लेऊ ॥ ताकी वहुत

भावन्त देऊ ॥ चूरण मथि घृत देइ मिलाइ ॥ साठि दिना नसकत खाई ॥ मोसे सोरह कही प्रभान ॥ ॥ खावे की यह कहत सुजान ॥ बढ़ती बुद्धि मन धीरज रह्यो ॥ खार खते मिना में लह्यो ॥ लटी बुद्धि उनमाद नसाई ॥ अपसमार यासों कहि जाई ॥ ३१ ॥ छंद भेद ॥ तेल लगाइ सरस सरसों को बांधि उताली पारे ॥ धाम माझ पुनि चाबुक बोदरी लै लहर फिर कारे ॥ भांति भांति डरपावो बंदति आनो सूने रासे ॥ उन्मादिक को भले करन को बचन भयानिक भाखे ॥ ३३ ॥ तातो करै लोह वाले ले वाके अंग लगावे ॥ तातो करै तेल अरु पानी ताती तन छिरकावे ॥ ऐसे जतन करै बहु भांतिन तब दूमि बंदन पावे उनमादी नर कोतवे चितने चित्त ठिकानो आवे ॥ ३४ ॥ इति उन्माद

अथ अपस्मारः ॥ चौपाई ॥ मोह न मन सुदि ना रहे ॥ भूलि जाइ बातें जे कहे ॥ दोष को पका बढ़ती कही ॥ अपस्मार की लीला कही ॥ पीता ल्यावे पुष्य को कुत्ता को उर फारि ॥ ताको घिस अंजन करै तो अपस्मार दे टारि ॥ ३५ ॥ कुत्त को पित्ता मिले चित सों धूनी देय ॥ अपस्मार के हरन को यह औषधि करलेइ ॥ ३६ ॥ चूरन बच को सहत संग ताहि प्रात उठि खात ॥ अपस्मार मिटि जाय तो पथ्य दूध अरु भात ॥ ३७ ॥ जाड़ो जल में पीसि के नीन लौ प्याउ अपस्मार कर दूरि नर बहुत दिने लगि जीउ ॥ इति अपस्मार ॥ अथ बात व्याधि ॥ दोहा ॥ होत षाप के आपनो कुपित गहत जब अंग ॥

नव पीड़ा इमि होत है असंसी बात परसंग ॥
उदर परहटी अंड जड़ असंग धराहिस और ॥
रस्ना बीज करेंछ के तेजानौं या ठौर ॥ ४०॥ इनको
क्वाथ बनायके डारि हिंग औरि नोन ॥ पीवे ताको त
न रहै बात व्याधि कहि कौन ॥ ४१ ॥ करा नाद अठ
रक वक्रारि तीजो पक्षा घात ॥ मन्यास्तंभ हरै हरीष
स्वाए दिना जो मात ॥ ४२ ॥ देवदारू कसेरु वासो
ठि डारि करि क्वाथ ॥ तेल डारि पीवे तुरत लगे बात
को हाथ ॥ ४३ ॥ हींग त्रिकुट कटुले तुरत अमलवे
तकै धरि बिचारि ॥ पाढ धना और बावई भार्ङ्गि इ
न मधि डारि ॥ ४४॥ जवाखार साजी सरस बच
अजमोदा लाइ ॥ तितरा काजी रोबकुरि पीपरा
मूल मिलाउ ॥ ४५॥ सार हरड़ के डारि के चोखो
वा करो बनाय ॥ स्वास कांस संहीं अरुचि मूल वा
न मिट जाइ ॥ ४६ ॥ हृदय रोग गल रोग लरोग
मल रोग अरू पांडु हूं खाते जाय ॥ उदर बंद अफ़
रा मिटै हिंगुलादि जो खाय ॥ ४७॥ गाद मूत्र में
मेलि के तेलअंड को खाइ ॥ उर हरदं अरू अहन सों
रोग तुरत मिट जाइ ॥ ४८ ॥ आदे का रस तेल घृत
बीज पूर रस चूक ॥ ये पीये गुड डारि के यह बेदनकी
कूक ४९ ॥ गुल्म मूल कटि विकव्यथा ऊरू विथानुवी
र उदावर्त और प्रधसी औषधि है बहतीर ॥ ५० ॥ पी
ये पीपरी डारि के दश मूल को क्वाथ ॥ वात विथा बहु
भांति की अर्दित छोडे साथ ॥ ५१ ॥ चौ० ॥ रास पह
ले टका भरि लेइ ॥ पैसा २ भरि यह देइ ॥ सामस अंडे

जवासो आनै ॥ देव दारू लै इन मधि सानै ॥ बच कचू
र सोंठि अरु बासा ॥ हरर आंवरे करै तमासा ॥ पुनर्न
वा मोथा सो मिलाय ॥ सोंफ बिधारा ये लै दोऊ ॥
असगंध और गोखरू आनै ॥ लै अतीस किरवारो
सानै ॥ पीपरि पीपरि बासो धन्म ॥ दोइ कटाई मेलै
मना ॥ सरस सतावरि इन मधि डारै ॥ बैद्य बनावै
काथ बिचारै ॥ सोंठि संग कै पीपरि संगी ॥ काढा खा
इ होय तब चंगी ॥ ५२ ॥ जोगराज गुग्गुल संग खाइ
॥ अज मोदादि तेल कहलाई ॥ कै अरंड जर तेल
मिलाई ॥ अनूपान याको यह आइ ॥ ५३ ॥ स
कल अंग को कंपन साइ ॥ पक्षा घात कुवज ता जा
इ ॥ आमबात अरु बहुत ग्रधसी ॥ श्लीपद अपता
नक जानसी ॥ अंड बृद्ध अपरासु कठोरा ॥ जाय
जानु मर्दिनन जोरा ॥ शुक्रलिंग वंध्या भग रोग ॥
रास नादि का करिये जोग ॥ ५३ ॥ इति रास्नादि का
थः ॥ अथ गुग्गल ॥ दोहा ॥ देव दारू रासन हरर
सोंठि गिलोइ पिसाउ ॥ सब सम गुग्गल लाइ कर
वह इन माझ मिलाउ ॥ ५४ ॥ बात बिथा मस्तक बि
था दाह भगंदर रोग ॥ यह गुग्गल खाये मिटै इन
रोगन को जोग ॥ ५५ ॥ अथ तैल ॥ दोहा लेजड़
कनक कनेर अरु आक पात को रंग ॥ धातु तुसी जल
तेल सम और तेल के संग ॥ ५६ ॥ करै अंग यह तेल को
मर्दन बार बार ॥ बात बिथा बहु बिधि मिटै यहै किये नि
रधार ॥ ५७ ॥ छंद भेद ॥ तेल रका बोजक भर लेइ का पहले
ही शुद्ध करावै ॥ काटका भरि औषधि लैके फिरि इन

मांझ मिलावै ॥ पीपरि और मिरच बच चित्रक फेरय
हु औषधि लावै ॥ कूट धतूरा और रास्ना विष अरु चो-
वपिय गुण गावै ॥ करड कनेर मजीठ दूरद है मासी
चिफला तैसो ॥ तेल नाम विष गर्भ बना बहु बैद कहं-
हू है जैसो यह तैल लगावै तन में वात रोग बद कैसो ॥
५९ ॥ चौ० अरनी सोना बेल मिलाउ ॥ और प्रसारिणी अ-
गंध आनु ॥ दोउ कटाई इन आधि जानु ॥ ६० ॥ कदही
औषधि रहटी साउ ॥ पुननेवा और गोखरू दोऊ ॥ दश
२ भार ये औषधि लेऊ ॥ चार दश चोदह में देउ ॥ चरन
रहु बाटि जल राखै ॥ वह जल लेइ तेल धरि राखै ॥ सों
फ सिल्लारस सैंधो नोन ॥ देव दारु पुनि कहियत तौन ॥
६१ ॥ मासी लाव खरैटी और ॥ चन्दन तगर जानु पद
ठौर ॥ चातुर जात लायची रासन ॥ पुनर्नवा आध-
मिल्ल तासन ॥ ६२ ॥ कूट सहत है है पल लेऊ ॥ इन
कर कूट कलक कर देऊ ॥ तेल मांझ वह कलक पचा
वै ॥ फेर सतावरि खोदि मंगावै ॥ तेल बराबर रस कढ
वाई ॥ तेल मांस रस लेइ पचाइ ॥ गाइ किधौं छेरी दु
हि लावै ॥ ६५ ॥ पीछे वाई तेल लगावै ॥ नास देइ या
को यह खेल ॥ पोरा यह मानस होइ ॥ बात मते बह
नीकी होवू ॥ ६६ ॥ हाथ पाव वेदन कौर हाकी ॥ वा
त बिथा दंत सिर नाकी ॥ वात भेद जितने है भारी ॥
ताको यह औषधि निरधारी ॥ ६७ ॥ अंग अंग के
जितने बात ॥ तिन तिन की यह करन निपात ॥ वात
बिथा हरि लेत वे खेल ॥ यह जानो नारायण तेल ॥
६८ ॥ इति नारायण तेलम् ॥ इति ... छंद ॥ पित्त को

तेल सेर चार का लै माटी टिकिया डार सुधावहु॥ नेग
हु आक धतूरो भंगरा सेंहुड़ पाव तब काढ़न लावो॥०
अरंड कनेर पात को रस लै सेर भर तेल पकावहु॥ अ
ठरमा यह तेल वान करि अगना बेद लगावो॥६९॥
इति अथ रस॥ छप्पय॥ गंधक और हरताल सोधि
पारो लै तीन्यो॥ मीनारि लो हर जलेउ और ते सो कर सो
नो॥ अरनी नेगड़ हरड़ सुहागो और त्रिकुट कह दीजो॥
नेगड़ को रस काढ़ एक दिन ताको मर्दन कीजो॥ मुंडीरस
सो एक दिन मर्दन गोली करहु॥ गुंजा समान है वात कहं
दस मुकुंद भैरव धरहु॥ दोहा॥ रासन गुरु वै देव तरु
सोंठि अरंड मिलाय॥ अनूपान गुग्गल मिलइ दीजे
काथ पिवाइ॥ इति भैरव रस॥ अथ वात रक्त॥ दोहा
पवन रुधिर असवार कहु घुमि करि डारन दुष्ट॥ अंग
छुवत जानत नहीं व्रन उपजाति पुष्ट॥७२॥ मंडल
होइ विसूचिका विकल अंगुरिया और॥ वात रक्त ल
च्छन कविन वैद्यक कहत कुठौर॥७३॥ वात रक्त ज
व अंग में रहत बहुत दिन छाइ॥ तब बहु नर की देह
में देत कोढ़ उपजाय॥७४॥ चौपाई॥ दारु हरद वच
और गिलोई॥ कुटकी त्रिफला नीम गुहोई॥ अरु म
जीठ में काथ पिवावै॥ वात रक्त और कोढ़ नसावै॥७५
धनाक्षरी॥ त्रिफला मजीठ छाल नीब की चितावरि
मरु सो दोऊ हरद मिलाइ कै॥ फेर लाल चन्दन चिराय
तो बकुची औव किर वारो कुटकी मुरहटी सो लाइ कै॥
रासन इन्द्रोरन विडंग जटा मासी पाढ़ दातन पीपरिन
सोंत मो लाइ कै॥ मिरच जवासो काकमाची सोना

परवर पात कूट क्वाथ के विधि बनाय यह पाइ कै ॥ ७६ ॥
दोहा ॥ वात रक्त कंडू षता रुधिर बिकार अनेक ॥ सिद्ध
बा धामा कोढ़ को क्वाथ कहेउ यह एक ॥ ७७ ॥ नाग
वेल अरु मालती कनक पात रस लेहु ॥ और मुरदह टीक
ट और मेन सिल नामधि देहु ॥ ७८ ॥ इन मधि पारो
मेलि कर घोटहु तेल मिलाइ ॥ खाज विवाई कोढ़ अ
रु रोग बिसर्प जो जाइ ॥ ७९ ॥ मिटै देह की श्याम ता
बात रक्त मिटि जाइ ॥ तेल लगावै अंग में यह गुन दयो
बताइ ॥ ८० ॥ इति वात रक्त ॥ अथ आमबात ॥
दोहा ॥ अधिक पवन प्रेरित जबहिं आबुक कास थे जा
य ॥ यह नारी सों पाइया आम वात यह जाय ॥ ८१ ॥
जानु जाघ कटि मुर मधि मूल होइ जब जोर ॥ आम-
वात लक्षन कहेउ यह वेदन सुक ठोर ॥ ८३ ॥ रासन
गुरु वे अंड जर देव दारु संग खाय ॥ आम बात सब
अंग को पीवै सोंठि मिलाय ॥ ८४ ॥ त्वम्वा हाडगति
संधि गति मज्जागति है रुन ॥ यह औषधि सों वह मि
टै नर पावै सुख चैन ॥ ८५ ॥ दूध साजी पाइ कै मिगी
अंडी की खाय ॥ आम वात कटि मूल अरु रोग ग्रध
सी जाय ॥ मिगी अंड की सोंठि सम खाय खांड के
संग ॥ तौ न रहै नर देह में आम वात परसंग ॥ छप्प
य आठ टका भरि सोंठि दूध बत्तीस टका भरि ॥ बी-
स टका भरि चाव डारि तहे ले कसार करि ॥ खांड अ
ढाई सेर घोर करि पाक बनावहु ॥ टका टका भरि सों
ठि मिरच पीपरि ये लावहु ॥ तज पत्रज एला वहुरि पी-
स डारि कतरा करहु ॥ चूरन पुष्ट वल आयुष्य की आमवात

औषधि धरइ ॥ ९७ ॥ इति आम बात ॥ अथ मूल
बात १ पित्त २ कफ ३ बात पित्त ४ पित्त कफ ५ कफ बात
६ ॥ आमाषय ॥ ७ त्रिदोष जे आठ ८ मूल कहि जात ॥
९९ ॥ अथ परिश्रम मूलम् ॥ करूं जाकी भूजी
मिगी कोरि आगु में आपु ॥ ताके खाये पेट के मिटै-
मूल संताप ॥ १०० ॥ काढो तिल गुर सोंठि को दूध मा
झ करि खाय ॥ बिथा मूल परिमान को सात दिना
में जाय ॥ १०१ ॥ अरंड सितावरि गोखरू पुनर्नवा-
फिरि लेउ ॥ सोंठि मिरच सम औषधि यह चूरन क
रि देउ ॥ १०२ ॥ ताते पानी से पिये चूरन सरस बनाय
बिकट मूल पर वान कहि यह चूरन सों जाय ॥ १०३
अरिल्ल ॥ सेंधो सुपी परी मिरच सोंठि विष दीजियो ॥
गंधक कोडी राख पापरो लीजियो ॥ नाग वेलि रस
डारि पीसि करि योवरी ॥ परि हां हां जी छहर त्री भरि
खाउ मूल गज केसरी ॥ १०४ ॥ अथ गुल्म ॥ दोहा ॥ हृ
दय नाभ बीच जो चपल गांठि अति होय ॥ रुधिर दोष
ते पांच विधि गुल्म कहावत सोइ ॥ १०५ ॥ छप्पय ॥
घी कुमारि को लेइ सेर छह आठ टका भरि ॥ नामधि
गुरु प्राचीन सेर पांच के लेकर ॥ धरि धरि पांच पसे
रि और टका भरि बाहर पानी ॥ त्रिकुटा त्रिफल औ
र सार मारो अजवायनी ॥ या मधि मिलय मिलावे वहुरिजे
औषधि तेलउ सुनि ॥ त्रिकुटा त्रिफला और सार मारो
अजवायन ॥ मोथा वाइ विडंग सिता वरि और-
वताइन ॥ टका चार भरि और एक एक ये औषधि
ये तीखाई ॥ यह सब लेकरि एक भरि धरि राषई ॥

गुल्म पांडु जठर स्वास को सब सोरस ॥ ७ ॥ चौपाई ॥
दोइ टका भरि बच लै आवउ ॥ तीन टका भरि हरड मि
लावहु ॥ टका छह भरि बाइ विडंग ॥ चारि टका भरि
सोंठि दे संग ॥ ८ ॥ हींगि टका भरि डारै तामहि ॥ आठ
टका भरि पीपरि यामहि ॥ पांच टका भरि चित्रक स
रवहि ॥ सात टका अजवायन भाषहि ॥ १० ॥ कूट छा
न चूरन कर वावहु ॥ ताते जल संग मधु संग प्यावहु ॥
गुल्म शूल स्वास और कास ॥ और संग्रहनी रहै न पा
स ॥ ११ ॥ हिंगु सोंठि राई सरस तिंतरीक और नोन
॥ यह चूरन भख गुल्म नर दूरि करै तौ क्यो न ॥ पारो
गंधक पापरो हूरर बरावर लेउ ॥ किरवारे के क्वाथ
सम यह फिरि घोटन देउ ॥ १२ ॥ फिरि थूहर के दूध
संग मर्दन करै बनाय ॥ सहत संग मासे भरि फिर नर
यह रस खाय ॥ १३ ॥ गुल्म जलंधर तियन को मिटै ॥
पथ्य दूध और भात ॥ अनुपान ई मिलाइनो यह पं
डित की बात ॥ इति गुल्म ॥ अथ हृदय रोग ॥ दो
हा ॥ रस सुस्वादु के दोष जव तिगुनहि मधि यह जा
त ॥ परि करई न वृद्धि ही हृदय रोग कहि जात ॥ १५
कै घृत से कै प्राव सै कै जल गुरु सो खाय ॥ को हात
रु की छाल वो हृदय रोग मिट जाय ॥ ४६ ॥ चूरन पुह
कर मूल को सहत संग नर चाट ॥ स्वास कास दारु ग
महा हृदय रोग वड कद ॥ १७ ॥ इति हृदय रोग अ
थ उदर रोग ॥ दोहा ॥ छेद पनीमा करके रोग दोष
बढि आउ ॥ प्रान पान दुष करन रग्नं मन दूमि पाउ
१८ ॥ आध मान दुख वल भगिन ॥ ५ ॥ ५ ॥

दुर्बल तन अति दाह ॥ तन्द्रा चूले टल जाय यह उ
दर रोगी की राह ॥१९॥ अथ सीहा ॥ उदर जठ
र कृत रोग लक्षणम ॥ दोहा ॥ परी बस्तु सो दुष्ट
कफ अरु लोहू ये दोइ ॥ ल्पीह बढावै उदर कह सो
निश्चय करि जोय ॥ ल्पीहा वाई ओर बढ्जकृत दा
हिनी ओर यह विधि ल्पीहा जकृते कहे लक्षन कहे
कठोर ॥२१॥ जवाषार ओर कूट बच जीरे चित्रक ला
इ ॥ अजमोदा दातोन अरु हींग चाउ पुनि दाइ ॥
२२ ॥ तीन नोन साजी बहुरि चाव सोठि पिस-
वाय ॥ ताते जल सौं खाय तो वाय उदर मिट जाय
॥२३॥ त्रिकुटा कुट सीधो जवाषार हिंगु पिसवा
य ॥ बीज पूर रस सौं सरस सीहा मूल को खाय
॥२४ ॥ सरफोंका की पीस जड़ पीजो मठा मिला
इ ॥ सीहा बहुत दिनान को सोउ यह सों खाय॥
२५ ॥चौपाई ॥ जवाखार सोंचर ओर वारी ॥ कच
लोना साजी निरधारी ॥ सैंधा नोन सुहागो दोऊ
॥ ये सब ले चूरन करि लेऊ ॥ दूध आक सेंहुड
को लावहु ॥ दूध डारि दिनतीन सुखावहु ॥ ती-
भावना यह विधि धरि के ॥ सब चूरन इकठो
रे करके ॥ ल्यावहु तोर आक के पति ॥ तर ऊ
पर राखहु यह घात ॥ सब ले यह हंडिया में
धरहि ॥ हंडिया की कपरोटी करहि ॥ ताहि
आंच गज पुट की देइ ॥ सीतल भये काढि तब
लेइ ॥ फेर पीस चूरन करवावहु ॥ ये औषधि इन मा
हि मिलावहु ॥ सोंठि मिरच पीपरि अरु राई ॥ वायवि

विडंग वाव मिल बाई ॥ मेल मठा मथि चूरण खाइ ॥ २८ ॥ सोथ गुल्म मंदागिनि जाइ ॥ सीहा गुल्म जकृत कहं आइ ॥ उदर रोग रुहें पावहि चैन ॥ चूरण खार चनायो ऐन ॥ ३० ॥ इति रोगा ॥ दोहा ॥ बात १ पित्त २ त्रिदोष ३ कफ़ ४ मूत्र वेग कफ़ घात ६ ॥ शुक्र रोग ७ अरु अस्मरी ८ मूत्र कृच्छ्र ९ कहि घात १० ॥ ३१ ॥ दोहा तनक १ भरि खाइ के मूते बार बार ॥ निकसे पीड़ा सहित यह मूत्र कृच्छ्र नर धार ॥ ३२ ॥ क्वाथ गोखरू बीजको जवा खार जुत लेइ ॥ मूत्र कृच्छ्र अति जोर युत ताहि बिदा कर देइ ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ पीपरि ओर सिलाजित दीनो ॥ अरु पाषान भेद पुनि कीजे ॥ मेलि लायची चूरन करै ॥ चावर धोय नीर लै धरै ॥ ३४ ॥ ता पानी में गुर लै घोरै ॥ वाही में यह चूरन बोरै ॥ यह यह विधि सो यह चूरन खाय ॥ मूत्र कृच्छ्र सेकबु नइ राय ॥ जवाखार मिश्री रस दोऊ दोऊ लेउ समान मूत्र कृच्छ्र कह यह कही औषधि पाय सुजान ॥ तनक कुन कुनो दूध करि तामहि देइ गुर मेल ॥ मूत्र कृच्छ्र अरु अस्मरी वात रोग दे ठेल ॥ ३७ ॥ कुष्य डारि मूल फल पात जुत पांच सेर सब ल्याइ ॥ गोखरू औटि डारि जल पांच सेर कढ़ि जाइ ॥ सवा सेर जल राखि खांड है सेर आध धरू ॥ धोर मंद करि आंच औटि वह नरम पाक करि ॥ जवाखार संठी मिरच पीपरि नाग केसरि सुफल ॥ कहों लायची जाय फरुष बीज है सुफल ॥ ३८ ॥ टका आठ भरि सास वंश लोचन ले आवइ ॥ यह औषधि सब डारि फेरि अवलेह बनावो ॥

चिकनी हंडिया लादु पर अचलेय छिन ॥ टकाटकाभ
रि प्रात उठि करन सुभस्नान ॥ मूत्र दाह अरु अस्मरी
रुधिर मेह मधु मेह ॥ मूत्र कृच्छ अरु मूत्र को रोध ता
हि नर दूरि करेह ॥ दोहा ॥ सरकंडा कुस अरु उषदा
भये पांच ॥ पित्त मूत्र के कृच्छ कह यह पीजो नर सां
च ॥ ४० ॥ हुनही को करि कलक बहु पच दूध सोउ
रि लोह गिरत जो लिंग ते सोऊ दे किन टारि ॥ इति मू
त्र कृच्छ ॥ अथ अस्मरी ॥ पथरी ॥ दोहा ॥ वाह
रोके के मूत की कटि और वस्ति मंझार ॥ करे बैद न
अस्मरी यह जाने निरधार ॥ भेद अंत या वान को
जवाखार गुड़ डारि ॥ मूत्र बंध अरु शार्करा देह अस्म
री टारि ॥ ४३ ॥ सरिल भेद ॥ अत या वान अरंड जर
लाइयो ॥ ताल बुखारे की मूल सुबरन मिला
इयो ॥ औटि कटाई देह गोखरू रांग दही ॥
परि हांहां जी लेइ अस्मरी मूत्र बंध औषधि क
ही ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ चना तुषा के नीर में घोरि हरर गु
रु खाइ ॥ विकट अस्मरी लिंग की तुरत बिदा होजा
य ॥ ४६ ॥ पथरी ऐसे जतन सौं जब नहि हटे सुजान ॥
तब काटो यह जतन सौं पथरी चतुर सुजान ॥ ४७ ॥
इति अस्मरी ॥ अथ प्रमेह ॥ दोहा ॥ जथा कहे छह
पित्त ते दश कफ तैसे साध्य ॥ चारबात ते होत हैं ते प्र
मेह असाध्य ॥ ४८ ॥ त्रिफला चूरन कर सरस सहत सं
ग नर चाट ॥ उपजे बहुत दिनान कर तुरत प्रमेह सुकात ४९
॥ छुये वर कुमारि और आम कैथ पीकर किरवारा ॥ जामु
नि सोना सांजि चारि को हां निरधारो ॥ मडुवा जाटौ नी

बरनौ त्रिफला पुनि॥ धौंकं जाकी मिगी इन्द्र जौ मिलवं सुनि पुनि॥ चूरन करि यह सहत संग खाइ पिये त्रिफला सरस॥ परमेह बीस कुरिया मिटइ मूत्र कृच्छ न करइ परस॥ ५०॥ दोहा॥ कूट आमरे काढ़ि रस मधु औरअरु दे मिलाइ॥ मिटै सकल परमेह गृह जैगयारे दिन खाइ॥ ५१॥ नर गुर मैं कोरस पिये डारि सहित सिरताज॥ हने बीस प्रमेह यह ज्यौ मारत मृग राज॥ रस सेंमर की छाल लै खाय हरद मधु साथ॥ तौ नर बीस प्रमेह करै तुरत लगावै हाथ॥ ५३॥ रस सेमर की छाल को हरद सहत अरु संग॥ खाय बीस परमेह को तुरत मिटै यह संग॥ ५४॥ हरद शतावरि लीजियो अभ्रक चन्द्रक हीन॥ मधु संग खाइ प्रमेह को यह उपाय कहू दीन॥ ५५॥ छप्पय॥ आठ टका भरि लाइ कपर छन करै सुपारी॥ दूध अढ़ाई सेर तामधि पावहि तारी॥ मंद आंच सों औटि चतुरनर करइ कसारी॥ खांड अढ़ाई सेर सुभ घोरि बनावै पाक जब॥ तामधि कसार डारै बहुरि जे औषधि सो कहत आव॥ मोथा चन्दन त्रिकुटा नाग केसर आमरा अरु॥ चारि बेर की मिगी दोय जीरे की सुधि करु॥ तज पत्रज अरु लेहु लाइची धना जायफल॥ बंशलोचन चूरन सिंगार कर नर॥ लेसही है कर षटि डारि आवरे को जुर सा॥ रस डारि सतावरि अंजली रस पुनि कर गोली सरस॥ ५७॥ षाइ पाक परिमान जाइ जीरन ज्वर तजि तनु॥ लमस पित्त यह जाय जाय मंदाग्नि यह मनु॥ आय बाक मुखक छत रुधिर मिटि जाय तउ छिन॥ पुष्ट गर्भ यह विधि कहत पाग पाक गुनवैद्य जन॥ इति॥

सुपारी पाक ॥ छप्पय ॥ पारो अभ्रक गंधक सारी मारी एक
सबलेह ॥ मिश्री सेमर छाल लायची आवरा ये हैं ॥
ताल मारवाने अरु वा पूरन सारु मिलावहु ॥ औरजाय
फल पीस डारि इन मधि सबावहु ॥ रस परमेह कुठार ख
ह है मासे भरि खाइ सहत सों ॥ वाके प्रमेह जो होइ तु
रतु जाइ मुनि कहत अस ॥ ५९ ॥ इति प्रमेह ॥ अथ
मेद ॥ दोहा ॥ दिन सवैरे नि चलौ फिरौ मधु अन्न न
र खाइ ॥ और कफ कारक खाइ तौ मेद रोग अधिका
य ॥ ६० ॥ उदर पेट कुच मधि बढ़ै मास बढ़त यह मेद
बल उतसाह घटै बढ़त ताहि कहत है मेद ॥ ६१ ॥ प्रा
त बराबर सहत जल पिये मुटाई जाय ॥ माड़ पिये के
मात को औषधि आइ ॥ ६२ ॥ सुत वारिधि के नीर सों पि
ये घोर नर रोज ॥ तौ यह निश्चित जानिये मिटै मेद क
र खोज ॥ ६३ ॥ बेल पत्र कर रस पिये कूट वस्त्र में छानि
मेद रोग दुव सिना मिटइ लेउ यह जानि ॥ ६३ ॥ अरि
स्त दारु हरद तिल कूट कचूर पिसाइ ले ॥ सरसों हरद
मजीठ सुमोथा मिलाइले ॥ आंब छालि पिस वाय उ
बटना कीजिये ॥ परि हां हां जी मेद रोग धर वोई
चिरजी जिये ॥ ६६ ॥ इति मेद ॥ अथ सोथ ॥ दोहा
बात बाहरी न सब सै त्याइर क कफ पित्त ॥ दोष मुच्चि
घ और चोट तें करत सोथ निह चित्त ॥ ६७ ॥ गुरु पीप
रि और सोंठि कर चूरन करके खाय ॥ मिटै अजीरए
आम अरु मूल सोथ मिटि जाय ॥ ६८ ॥ छप्पै ॥ गुरु
आदी गुरु सोंठि के हस्व वाय बढती ॥ सोरह मासे औष
द का तीन ले बढती ॥ पंद्रै के तीस भरि सेवन करियो ॥ सोथ

कंठ मुख नेक न डारियो ॥ स्वांस कास पीनस अरस ज्वर संग्रहनी बात गद ॥ कफ के विकार जितने कहे तितने यह सब करत नरद ॥ ६८ ॥ सवैया ॥ पीपरि सोंठि के हाड़ सिता बरि मोथा मंगाइ कै जीरक आवै ॥ बाह जड़ा हरदी गजपीपरि कूटि २ कपरा मधि छानै ॥ चूरन लेय ह तातै पानी करवावै कै बाढ़ कै बीरक खानै ॥ सोथ विकार के टारन कौं यह तीन उपारि ओषधि जानै ॥ ६९ ॥ इति सोथ ॥ अथ अंड वृद्ध ॥ दोहा ॥ वात १ पित्त २ कफ ३ मेद ४ अरुचि ५ मूत्र रुधिर बढ आन ॥ मूत्र कृछ कहं सात बिधि रचन करि कहि जात ॥ ७० चौपाई ॥ चंदन जड़ यौ पद माप ॥ नील कमल उर ईं जर भाव ॥ पीसि दूध सौं लेपहि करहि ॥ अंड वृद्धि व्रण दाहहि हरहि ॥ ७१ ॥ दोसा मस गुरबै गोखरू जा डो ससन अंड ॥ अंड तेल जुत काथ करि अंड वृद्धि कर खंड ॥ ७२ ॥ इति अंड वृद्धि ॥ अथ बिध्र रोग ॥ दोहा ॥ ऊरू संधि मधि दोष से जे तहि सोथ कछु होत ॥ विध्र मत सोथ सों कहत मुनी सुर गोत ॥ ७३ ॥ पीपरि सेंधा डारि के हरर पीर करवाय ॥ भूनि अंड के तेल में संधो विध्र करि जाइ ॥ ७४ ॥ तुरत मार कौवा उदर फार पीठ कट बाइ ॥ ले निकोरिया जतन सों विध्रधि रोग तब जाय ॥ दैव जोग से बिद्रधि जोप के चैर सिर द्वार ॥ तौ बह चीरि पुनि करे जन को सो उपचार ॥ इति बिद्रधि ॥ अथ गलगंड भाषा साथ ह्वै कंठ मधि लय के अंड समान ॥ कै छोटे के अति बडो वह गलगंड बखान ॥ ७७ ॥ अथ ग्रंथि ॥ दो० नाव आदि जब दुख दुष्ट मानस सम छेद ॥ गांठ होत

अवी कौं ग्रन्थ विथा विन भेद ॥ ७८ ॥ अथ गंड माला ॥ दोहा ॥ बेर आमरे सम बढ़रि गांठ होइ निरधारि ॥ का वकटि करि आदि में गंड माला सुविचार ॥ ७९ ॥ सनमूरी और सहजनो तीनहू के ले बीज ॥ सरसौं जौ अरसी बहुरि पीस चूर गाढ़ कीज ॥ ८० ॥ पीस सठा को लेप करि ग्रन्थ मिटै सुविवेक ॥ गंड माला गल गंड कहं यह औषधि है एक ॥ ८१ ॥ इति गल गंड ग्रंथ गंड माला ॥ अथ स्लीपद ॥ दोहा ॥ साथ होइ कफ़ भेद कर खाइ कान कर नैन ॥ चतुर वैद्य कह देत है स्ली पद लक्षन ऐन ॥ ८२ ॥ सरसो निगड़ सहजनों पुनर्नवा अरु अंड ॥ पीस धतूरे लेप कर स्लीपद करि खंड ॥ ८३ ॥ इति स्लीपद ॥ अथ विद्रधी ॥ दोहा ॥ बात १ पित्त २ कफ ३ रुधिर ४ अस्सु व्रन निरदोष समूल ॥ लाविद्रधि तिय कुचनि गुल आति सुविद्रधि सूल ॥ ८४ ॥ जौ गेहूं अरु मूंग यह पीसे मपमउ देइ ॥ लेप करहि विद्रधि उपर चतुर दूरि करि देइ ॥ ८५ ॥ इति विद्रधि ॥ दोहा ॥ एक ठौर तन में कहूं सोथ होइ सिरदार ॥ पूरव लच्छन जानिये व्रनको यह निरधार ॥ ८६ ॥ बात पित्त त्रिदोष ते अरु आगंतुक पांच ॥ और होय रुधिर ते व्रण छह विधि यह सांचा ॥ ८७ ॥ बरड़ा सिरवकु पीपरै अरु यह कमल बैन ॥ पीउ सहत व्रण सोथ का यह औषधि है दैन ॥ ८८ ॥ तेल पीव सों सेगनि को सत बत पन कर वाइ ॥ बांधे पूर्वै अमवता और सोथ मिटि जाइ ॥ १०६ ॥ चौपाई ॥ पारा गंधक ये सम देऊ ॥ मुरदा संख दाह सम सोऊ ॥ लेइ कवीला सबहि समान ॥ ८ ॥

हरिया घृत तनक प्रमान ॥ ९० ॥ पीव चौगुनो चरनम
नो ॥ व्रन सोधे कछु और न पावे ॥ जेन मिटे सो औषधि
लाये ॥ व्रन मिटे मलहम के लगाये ॥ ९१ ॥ इति व्रण
अथ सघन व्रण ॥ दोहा ॥ भांति भांति की धार के भां
ति २ हाथियार ॥ भांति भांति के होत हैं तिन के घाउ अ-
पार ॥ ९२ ॥ सद्यौ व्रण लक्षण कहेउ यह विधि किवार
विचार ॥ अब तिन के मैं कहत हौं भांति भांति उपचार
९३ ॥ छप्पय ॥ पहले घायल घाउ पाट होरा सो सीजो
मैदा लावहु सानि वहुरि लोई करि लीजे ॥ लेई ताती
करहु सेंकता सों कर वावहि ॥ अजमोदा नोन पुटरिया
करि सिक वावहि ॥ करई सेंक यह विधि चतुर ज्यों घाय
ल पावहि न दुख ॥ है एक हि भांतिक किये मिटहु पीर पु
रुष पावहि सो सुख ॥ ९४ चौ० ॥ दारु हरद अरु तेल पचा
वै ॥ तेल कबीला दोउ मिलावै ॥ तेल दूवरस एको जानो
व्रण रोपन औषधि यह बखानो ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ जाती
कुटकी और हरद कंजा के फल पात ॥ जाती परवर नीव
के पात मैन कहि जात ॥ ९६ ॥ घृत मैं औषधि मेलि के
मल्हम नीक बनाव ॥ पीर मिटै यह सो तुरत और पुरवा
हि घाव ॥ ९७ ॥ पीर मिटै यह सो तुरत और पुरवावहि
घाउ ॥ इति सद्यो व्रण ॥ अथ विदीरण सद्यो व्रण
ईंट काठ पाथर भरि लगै फटै मास खाल ॥ सद्यो विदीर
ण नाम व्रण लक्षण कहत त्काल ॥ ९९ ॥ फटेउ घावल
खि तुरतही सींचे सीतल नीर ॥ बांधे कीचल पेट कर मि
टै अवल तब पीर ॥ चावर घृत सन घीवा सो पीसि लेप करव
थ ॥ जाहुप सोंठि मजीस घाव लेप करि ल्याउ ॥ १००

इति बिद्रीरण संयोग व्रण ॥ दोहा ॥ बाइ फूलचूरन करेकरि और सरस मिलाइ ॥ बार बार लेपन करइ अग्नि दग्ध मिटजाइ ॥ १ ॥ बिषला लेप कराय के अरु अल सी को तेल ॥ यह को लेप करै मिटै आनदग्ध व्रन खे-ल ॥ २ ॥ इति अग्नि दग्ध व्रन ॥ अथ भगंदर ॥ दोहा ॥ गुदा अंड के बीच ही पकि फोरा परि जाय ॥ पीर करै अति पांच बिधि वहै भगंदर आय ॥ ३ ॥ पुन र्नवा रषै वड़रि साठि वर पात ॥ पीस लगावै तव हि यह भगंदर मिटजात ॥ ४ ॥ तिल मजीठ सैंधो सह त गज केसरि अरु निसोत ॥ करिहारी दातोन अरु करो हरर और आक ॥ वीज पूरकर वीर अरु नोनते ल अरु पाक ॥ ६ ॥ इनकर कलक बनाय के तेल बना वै ऐन ॥ तेल लगाये से मिटै रोग भगंदर चैन ॥ ७ ॥ इ-ति भगंदर ॥ अथ उपदंश - फिरंग ॥ दोहा - हाथी दांत नख के लगै जौन दोष ते सांच ॥ यह विधि करि उपदंश यह होत लिंग निधि पांच ॥ धोवै त्रिफला क्वाथ सौं भगरा को रस डारि ॥ खता लिंग के दूरि करि और फि-रंग दे टारि ॥ ८ ॥ त्रिफला डारि कराह में सहत संग कीं राख करै लेप उपदंश यह मुनि संगन ते भाष ॥ ९ ॥ कोह कजा नाम वर जामुन सोलय पात ॥ तेल पचावै कलक कर जाको गुन कहि जात ॥ १० ॥ दाह पाक अरु पीव जुत है उपदंश ये दोष ॥ तुरत मिटै यह लेप सौं यह याको गुन दोष ॥ ११ ॥ पारो मिरचै लौंग मस्तंगी अकर करा है पुनि ॥ छब्ब बाइ विडंग पुनि र्त निती सुनि ॥ लै मिलवा चालीस होई आंवरे वे डारइ ॥ वारई लव अजमोद

में पुनि में गुरू आरह॥ करि गोली है करष भरि इक इस दि
न खावे सुपारि॥ दूध भात बीश बहुरि नर मिटा उपदंश
जाय॥१३॥ इति उपदंश॥ गजकेसरीरस॥ अथ
अविसर्प॥ दोहा॥ फुरिया सवरे देह में निकसे धातु
समान॥ फिरन लगै पीडा करै वह विसर्प सु प्रमान॥
१४॥ आग जरे कैसी परइ फोडा अरु ज्वर होइ॥ कव इक
सवरी देह में रक्त पित्त ते सोइ॥ १५ करे लेप घृत डार के
खता दाह ज्वर जाय॥ औषधि एक विसर्प की यह
मुनि दई बताइ॥ १६॥ चौपाई॥ गुरु वे मोथा परवर
पान॥ खेर अरूसा लेइ सुजान॥ लै सतौनि अरु का
री वेत॥ नीव पात अरु हरदी लेत॥ इनको काढो खा
इ बनाय॥ फोडा कोढ तुरत मिट जाइ॥ औषधि ए
कि विसर्प की यह मुनि दई बताइ॥ १९॥ चौपाई
जाइ सीतला रोग विसर्प॥ सीत पित्त अरु ज्वर को सर्प
दोहा॥ त्रिफला नीम चिरायतो चन्दन कुटकी लाय॥
और परवर के पात ले वासा आनि मिलाय॥ २०॥ ये औ
षधि सब लाय कर इन को खाइ ये काथ॥ कंडु दाह वि
सर्प ज्वर तृषा को रुप क्काथ॥ इति विसर्प॥ अथ स्नेह रो
ग॥ दोहा॥ दोष कोय करि मैन न मीघ पहिल सा थ उ
पजाय॥ डोरा सम इक रङ्ग सु रोग वह आइ॥ २१॥
गाय मूत सम पीस कर बीज बबूरन गाउ॥ रोग न हरु
वा सोय अरु पीर सो तुरत न साउ॥ २३॥ घीव गाय को पि
उ के तीन दिना लगवाय॥ नेगड़ को रस तीन दिन रोग
नहरुवा जाय। २४। चौ० बीट कबूतर की ले आउ॥ ता
महि थोरो सहत मिलाउ॥ गोली बांध लीजिये ताहि

रोगन हरयारे इनवाहि ॥ २५ ॥ अथ मसूरिका-सी
तला ॥ दोहा ॥ फुरिया होय मसूर सम बहुर समसूरि
का नाम ॥ संग भंग कंड़ अरस भ्रम ज्वर पहिल बखान ॥
२६ ॥ बेल वैत को क्वाथ करिवा साधै नमस्कार ॥ पावै ता
हि मसूरिका होय यही निरधार ॥ सीतल जल अमली
हरद पीवे पहले तानि ॥ ताके तन में सीतला कढ़े जो
पहले आनि ॥ २७ ॥ स्तोत्र पाठ ग्रह मंत्र जप दान यज्ञ
सु विचार ॥ एक सीत को कहेउ यही बड़ो उपचार ॥
जेम सूरिका रोग को कहेउ बहुत उपचार ॥ २८ ॥ जेम
मरिका रोग को कहेउ बहुत उपचार ॥ सकल सीतला
भेद को यह जानो निरधार ॥ ३० ॥ छप्पै तेल लगावे ना
ह मूड पैड़ा हीन मुड़ावे ॥ छोड़े भंगल गीत और वाजे न
बजावे ॥ धोये कपरा होइ और भूतन नाजड़ावे ॥ जा घर में
बालक परता घर में यह बात सबना कारे ॥ परमेश्वर मंगल
करे ध्यान उसी सब करे ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ धनापारा चंना ग
ला मोथा दारु कचूर ॥ सिधारे कोरू मिलात अरु बिच
रनात व होइ निरोग जब ॥ इति मसूरिका ॥ अथ अमल
पित्त अरिल्ल ॥ वर्ष नयो श्रम होइ न पाय बचावही ॥ खटि
काइ और उसे उपकार सुहावही ॥ उदर कंठ और उदरद
ह सु बहुत पयानियो ॥ परि हांहा जी अमलपित्त इमि रो
ग सुलक्षण जानियो ॥ छप्पै ॥ लैकु हरापर पक क्वाल
वत्तीस टका भरि ॥ डारै सेर छह जीर चुरै लेपमंद आंच क
रि ॥ वाको करै कसार गाय को डार घृत तब ॥ ल्या बैना
रि पर गली बड़रि सारे सुटका स्याव गाय के दूध पुनि ॥
करियो कसार इमि जोंम न वह जौ लेउ यह सारव सुनि

चार सेर गौदूध सोंठि चौसठ भरि ॥ डारि देहि केसरि पाग पहिलो यों करि ॥ तज पत्रज और उसीर चूरन पैसा २ भरि ॥ सकल यह बांधि डारि गोली करष भरि सीतल सों एक फेरि पल ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अमल पित्त का हू नहीं मिटै कहेउ असाध्य ॥ सेवन तें वह पाक के होइ जाइ वह साध्य ॥ ३५ ॥ इति कूष्मांड पाक ॥ धानज वासापीपर दाख हरर और षांड ॥ मधु सों चूरन खाइ ये अमल पित्त कर भांड ॥ ३६ ॥ गुरु पीपरि और दूध सों खोया चीव पचाय ॥ कै गुरु बहेड़ा खाके खांड आमरे खाय ॥ इति अथ उदर्द रोग ॥ दोहा ॥ सीत पीततें देह में परै ददोरो जोर ॥ कहं जिमि काढ़े परइ रोग उदर्द कठोर ॥ ३८ अजवायन मेथी मगा हरद कलोंजी देइ ॥ और मिरचें यह औषधें टका २ भरि लेइ ॥ गंधक दोइ टका भरि लीजो शुद्ध कराइ ॥ चूरण करइ गोली करइ आदे को रस नाइ ॥ ४० ॥ रोज अधेला एक भरि गोली खाइ उठि प्रात ॥ जानोगे नरकेसरी रोग उदर्द न जात ॥ सेंधा घृत न चुपरि करि वोरै कमलाल ॥ सोवो रोग उदर्द करि मिटै ददोरा ख्याल ॥ सेंधो घृत गेरू सरस और कसुम को फूल ॥ करइ उबट नों तब मिटै ददोरा ख्याल ॥ सेंधो घृत गेरू सरस और कसुम को फूल ॥ गुरु अजमोदा कूटि तनक डारि कटु तेल ॥ खाइ तुरतता की मिटै करत पित्त यह खेल ॥ ४४ ॥ सेंधो घृत तनक चुपरि करि वोरै कपरालत्त ॥ सोदा रोग स उदर्द करि मिटै ददोरा ख्याल इति उदर्द ॥ अथ कष्ठ ॥ दोहा ॥ परव षाइ अहार श्रम धाम बिरक बखान ॥ कोढ़ अठारह भांति के दूरि

होय जान ॥ ४५ ॥ अरिल्ल ॥ सबसों कंजा हर देइ कबीज
कही ॥ सेंधो वाइ बिडंग सु औषधि है सही ॥ गाय मू
त्र सों पीसि लेप करियो तहां ॥ ४६ ॥ चौपाई ० ॥ १
कूट लाइची बाइ बिडंग ॥ समान सोंफ सितावरि सं
ग ॥ और दातनि रसौत पिसावै ॥ कर लेपन यह कोढ़
नसावै ॥ ४७ ॥ द्रोन २५६ एक त्रिफला जल धरै दस
सो १००० ॥ मिलवो तामधि धरै ॥ वह जल औटे तब
लगि ऐसे ॥ चौथे हिस्सा रहि सब जैसे ॥ ४८ ॥ ताम
हि दस पल गूगल डारै ॥ पल दस पांडु तहीं निरधा
रै ॥ ४८ ॥ एक टका भरि बकुची डारै ॥ और औषधै य
ह निरधारै ॥ ४९ ॥ नीवरू खै रुद्र दौरत दीजे ॥ दू हर
दी त्रिफलै दीजो ॥ दरद सज्जी और सुरदार ॥ और
भंगी यह निरधारु ॥ ५० ॥ गोली करइ मटर पर मान
॥ वैद्य वै कोई यह निदान ॥ गोली एक प्रातउठि खाइ
बहुत भांति के कोढ़ नसाइ ॥ यह सर्वांग सुन्दरी करी
कोढ़ काज ये मुनि की करी ॥ ५१ जम ससी के पात पान
मगावै ॥ तिनति चौरता जल अन्हवावै ॥ दिन इक इस
न्हाय सुपावै ॥ ताही की फिर दातौन करावै ॥ पेसाम
रि यह सब लेऊ ॥ चूरन करि ताते जल देऊ ॥ यह सब
औटे वैद सुजान ॥ गोली बांधै मटर प्रमाण पैसा पै
सा भरि निरधार ॥ चूरन कर यह मैं सब डार ॥ पह
ले यह आठ गोल बंध बावै ॥ निहचै करिके वैद खवावै
॥ गोली एक प्रात उठि खाय ॥ भांति २ को कोढ़ नसाय ॥
यह सर्वंग सुन्दरी करी ॥ कोढ़ काज मुनि वर यह करी
॥ इति सर्वंग सुन्दरी गुटिका ॥ दोहा ॥ नेपडु आक मर्का

सर फों का अरु खंड ॥ अरनी औब करहारी ये स्याद्द धत
रो खंड ॥ इन कर वकला ल्याइ कर छांह मांहि सुखवाय
तेल जंत्र वा ताल को लेइ फेर निकसाइ ॥ ५४ ॥ मासेभ
रियह तेल नर दिन उनचास जो खाय ॥ मिटे कोढ इह
सो तुरत दिव्य देह व्है जाय ॥ ५५ ॥ परवर गंधक १ पल
पारो मासो सार पल ॥ एक बिधारो चौसठ पल घृतता
सों लेउ ॥ पल भरि गुगल लाल सदेउ ॥ ५६ ॥ त्रिफला
लीजो अरु फल तीन ॥ लेउ वकायव पल भर बीन ॥ ४
पल भरि तहां सितावरि आनि ॥ पल भरि मुद्ध शिला
जित जानि ॥ चौसठ पलकं जाके बीज ॥ कूटि कपरछ
न चूरन कीजे ॥ सब चूरन घृत मधु सों साने ॥ चिकने
वासन में धरि जाने ॥ मासे आठ प्रात उठि खाय ॥ या-
को गुन अब देत बताय ॥ गलित आदि कोढ़ सब जांई ॥
कोढ कुमार नाम रस खाई ॥ २८ इति कुष्ठ म ॥ अथ
कच्छु सेहुवा या पाढ दुगज चर्म चिकित्सा ॥ पन्चबैय
ह सब तेल में हरद आक दल रंग ॥ मिटे लगाये तेल
सों तन से कच्छु पर संग ॥ ६० ॥ किरवारो दोऊ हरद का
कमा छिकापात ॥ कर वो तेल पमार के बीज मठा कहि
जात ॥ ६१ ॥ ये औषधि सब पीसि के पिठी समान बता
इ ॥ करे उबटनो देह में पानादिक मिट जाय ॥ ६२
त्रिकुटक बीज पमार के और मूरा के बीज ॥ मठा मे-
लि सब कीजिये पीठी समगहि कीज ॥ ६३ ॥ य इत्औ
षधि को उवटनो करे अंग ये ख्याल ॥ सेहुआ एक दाद को
दूरि कर इत त्काल ॥ छप्पै ॥ गुंजा चित्रक मूल पोष की राख
निब पुनि ॥ सेहुड बीज कंरज अरु दबरो हिसलेहु सुनि ॥

मोथा चीव कुमार आक का दूध मिलावहु ॥ सैधो वाय
विडंग मिरच अरु सहत मिलावहु ॥ और पमार केबी
ज पीस कर करहु उवटनो अंग सब ॥ ६५ ॥ छ्प्पै लेक
र पहले सुजन पत्र तांवे करवावहु ॥ तेल मठा गो मूत
छाछ तामाहि वुझावहु ॥ पात्र चौगुना ल्या नोन सें
धों सुलगावहु ॥ तर ऊपर ये पत्र एक दिन रात धराव
हु ॥ हरताल पत्र से है गुना फिर निवुवा रस डारिस
ठ ॥ कर चन्द्र हीन घुट वाय तब अति पलटावहु पत्र
सब ॥ ६६ ॥ कपरा में धरि पत्र गेंद सी वहुरि बनावहु ॥
कपरौटी दृढ़ि सात गेंद ऊपर कर वावहु ॥ सुखई गेंद
कर वाउ आंच देवहुरि पचावहु ॥ स्वात सीतल निकस
ई पीस कर रख करावहु ॥ दोइ रत्ती चूरन वहुरि मिश्री
मासे चारि भरि ॥ यह खाइ प्रात उठि पथ्य चारि पी परैं डा
रि नर ॥ ६७ ॥ इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट कृते बैद्य
रत्ने तृतीय प्रकाश ॥ ॥ अथ सिरोरोग ॥ सूर्यावर्त अ
धासीसी बैन होइ सित वार ॥ सहज पीर आदिक कहे
सिर के रोग अपार ॥ १ ॥ पीस गाय की छाछ सो पीसक
र मूल ॥ पहुप कि नरू मुच कन्द को मिटइ मूड को मूल
॥ २ ॥ केसरि घृत में भूजिये तामाहि मिश्री डारि घोर दू-
ध सों नास दे रोगन पहले विचार ॥ ३ ॥ नास देइ मुख मू
दि करि मूड मूल सुकठोर ॥ सूर्य वर्त्त आधा सिसी मिटै प
वन को जोर ॥ ४ ॥ जाढ़ो मोथा पीपरें सोंठि सोंफ सुउ
सीर ॥ जटा पीस जल लेप करि तुरत मिटै सिर पीर ॥
५ ॥ जाढ़यो महुआ सौरि अरु भंगरा वाय विडंग इन
को घृत सों नास दे मूड पीर हरू रंग ॥ ६ ॥ चौपाई ॥

बड़ी कटाई के फल लावहू ॥ तिनकी कूटि सुरस कढ़वाव
हू ॥ तासों गुंजा पीसि लगावहू ॥ इन्द्र प्रकार धुजहि मि
टावहू ॥ दोहा ॥ आधासीसी की पीरसों दुख पावत है
जीउ ॥ मिश्री सीतल नीरसों क्यों न पीसि के पीउ ॥
८ ॥ इति शिर ॥ अथ नेत्र रोग ॥ दोहा ॥ बात पित्त
कफ व्याधि तें गिरत नयन से नीर ॥ नयन रोग बहु कह
त हैं सबल करत है पीर ॥ ९ ॥ अरिल्ल ॥ लोध बीज
सें भूमि पर भूंजि पीसि जल सों धरहि ॥ वह कपरा
मधि डारि बांधि पुटरी करहि ॥ दारहरद के क्वाथ
में बहुवार लगा वही ॥ परि हां दां जी अरिपुयनको इ
मि कोय विन सावही ॥ १० ॥ चौपाई ॥ जात्यो गेरू सें-
धों नून ॥ दारु हरद सर्वत्र वह तौन ॥ जल सों पीसि पल
कुलपरावै ॥ सबल वाय सों रोग मिटावहि ॥ ११ ॥ दोहा ॥
और रोग उपजे नहीं अरु उपजे मिट जात ॥ जो त्रिफला
के क्वाथ सों लोचन धोवे प्रात ॥ १२ ॥ खाइ अचइ कर धो
य के जल कन नैना डारि ॥ चल जल सों तू तुरत नर तिमिर
नयन को टारि ॥ १३ ॥ पिये प्रात उठि नाक सों विमल स
लिल नर कोय ॥ मति पूरन अरु गरुड़ दृग अजर रोग वि
न होइ ॥ १४ ॥ सहत बीज संग सांझ के त्रिफला चूरन
खाइ ॥ चाकर छोड़न छीन धुज नैन रोग तिमि जाय
आजे घर के दूध सों घिस कपूर रज नैन ॥ फूली मिटै को
टी बड़ी और पावै नर चैन ॥ पीपरि त्रिफला लोध अरु
लाख सु सेंधा नोन ॥ घिस २ एक संग सों करे इहि गोली न
र तौन ॥ १८ ॥ घिस गोली अंजन करहु ये गुन सरस विच ति
मिर कांच कंडु फूली नैन रोग दे टारि ॥ १९ ॥ इति नैन ॥

अथ कर्ण रोग ॥ दोहा ॥ मुरु पवन कफ साहनु कर कान भेद कह दोष ॥ पाकि श्रवन अरु बधिरता शूल करत यह दोष ॥ २० ॥ दुमिला छन्द ॥ पकपके अच्छे सुबरन से आक पात दस बारह लावहु ॥ घीउ चुपरि निन अंगारन पर धरि पान मंद करि के सिकवावहु ॥ मीज के पात काढ रस कान मांझ में फिर निचरावहु ॥ कानशूल यह औषधि करि कर प्रबल बेदना सहत मिटावहु ॥ तुंबर सोंठि हींग सों सिद्धि सुसरसों तेल ॥ शूल बिधिरता नाद यह हरै कान कर मेल ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ समुद्र फेन पिसवाय डारि वुकनी कान महं ॥ पीर तुरत इमि जाय अंधियारी ज्यों भान तें ॥ २३ ॥ दोहा ॥ सूरज मुखी १ सिंदुरिया २ मूल लागनी नीर ॥ चिकटा कान को कृमि हरेयें औषधि और पीर ॥ इति करण ॥ अथ नासिका ॥ झिरवो लोहू पीव को पीनस अर्स बिकार ॥ रोग होत इमि नाक में सुनि यह जतन विकार ॥ २५ ॥ छन्द ॥ त्रिभंगी ॥ धरि ऊन में ल्यावे मिरच मिलावे गुरु संग प्यावो रुचि भरि के ॥ तव पीनस वैसो कहिये जैसो जीयत तैसो जरि भरि के ॥ नवगेरू लावे चूरन चबावे पीपरि जाको पात अद्रम मधि दानो नि पुनि सब मुनि जन कहि जतन २६ ॥ दोहा ॥ इनको कलक पचाइ के लीजो तेल बनाय ॥ पीनस यह कै नासते तुरत विदा होइ जाय ॥ २७ ॥ तास सक चौबहु करइ तौ यह यतन कराय ॥ आदी मिस्री में लिके आछो दूध पिवाय ॥ २८ ॥ कोर कलोंजी पीसके बच सारी मिसना ॥ अटरीसु पैल बराबैर पीनस थे मिटजाय ॥ इति नासिका रोग प्रथमु

ख: रोग ॥ रुधिर सहित कफ कोप करि करत बदन के रोग। जी
भ दोष दुर्वासना कुरिया फोरा जोग ॥ डारि और बाव यारि की कु
ल्ली करिये प्रात। फोरा कुरिया जीव फदि याही सौं मिट जात ॥३॥
एला मैने गुरु डारि के तेल बनाय ॥ ओठ दरकिबो कठिनता आ
दि लगाइ मिट जाइ ॥ ३३ ॥ अरिल्ल ॥ चिकुटक वाय विडंग हरद मो
था मनो ॥ सुखर नीम के पांत सरस इन में सनो ॥ गाय मूत्र सौं सानि
सुखवौ फिरी ॥ परि दांढ़ा जीये मुख में डारि दंत दृढ यह
करी ॥ छप्पय ॥ गज पीपरि और हरद कूट अजमोदा लैके
॥ सौंठ चवेली पात पीय वांसा को देके ॥ पुन नें वाये
कूट क्वान चूरन मुख राखहु ॥ या के गुन गन कहें मुनि-
नने यह विधि भाषहु ॥ दंत मूल कम वात हर सिथल दं-
त दृढ करन अति ॥ दुर्गंध दोष नासक परम ज्या त्यादि
जानो सुमति ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ कारो नीरो इन्द्र जो कूट धसो
दिन तीन ॥ बदन पाक दुर्गन्ध व्रन दूरि करे यह बीन
॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ पाठक पूरनि पीपरि आने ॥ जवाश
र रस बत ये जाने ॥ दारु हरद ले आवहि ज्यो ही ॥ ५
कूट क्वान चूरन करहि वोही ॥ ३७ ॥ सहत डारि चूरण
संग खावहि ॥ तनक २ गोली बन वा वहि ॥ गोली मु-
ख में राखहि नाइ ॥ कंठ रोग सब देहुन साइ ॥ ३८ ॥ दो
हा ॥ पान खान में बहुत सो चूना खायो जाय ॥ फिरि २
व्हाली तेल सों कुल्ला ताहि कराइ ॥ ४० ॥ इति मुख रोग
॥ अथ स्त्री रोग ॥ तत्रादौ कुसुम जनन विधि ॥ कारे तिल
को क्वाथ करि सीतल गुड़ करि डारि ॥ तिय पावे रज मिगवै
फेरि निर धारि ॥ इति कुस ॥ अथ गर्भ स्थित ॥ ४१ ॥

दोहा ॥ बीज तितोरा एक के पीस दूध सौं प्याय ॥ स्नानकरै जादिन त्रिया पुत्र होइ अधिकाय ॥ ४२ ॥ सोरठा ॥ दूध सा थ पिय पाय नाग केसरि सरस ॥ चौथे दिन जब न्हाय पु त्र होइ ताकी सरस ॥ ४३ ॥ लाइ पुष्य को लक्ष्मना फूलदू ध घृत दोय ॥ घृत असगंध के क्वाथ सौं सिद्धि दूध तिय खाय ॥ मात न्हाइ इकही मनो गर्भ रहै सुख पाइ ॥ ४४ ॥ शिव लिंगी को एक फल तिय न्हाय गलि जाय ॥ चौथे दिन ते बांझ ऊसुत पावै यह आय ॥ ४६ ॥ इति गर्भ स्थित ॥ अथ गर्भ रक्षा ॥ दोहा गिरन लगे तिय गर्भ ज्यों तौ यह जतन कराइ ॥ ले कुम्हार की मृति का जल में घोरि पियाय ॥ ४७ ॥ कन्या काते सूत सौ सह कटही को मूल ॥ बांधै तिय के तौर है गर्भ मिटै अरु मूल ॥ ४८ ॥ अंड कांस कुस गोखरू जरि सौ दूध पकाय मिश्री सौं तिय गर्भ के मूल हरन कौ प्याय ॥ ४९ ॥ दुर्मिला छन्द ॥ सो ना धना लाल चन्दन औरे समस्त मोथा मुरुवै ल्यावहु ॥ सर सज वासो डारि क्वाथ करि नारि गर्भिनी को यह प्यावहु ॥ व्याधि अनेक रुधिर ज्वर पीरा गर्भ मूल निर्मूल कराव ॥ इति गर्भ रक्षा ॥ अथ सुख प्रसव औषधि ॥ दो हा ॥ बीज बिजौरा के सहत जेठा घिस के प्याउ ॥ सु ख सौं नारि गर्भिनी ताको नजनाउ ॥ ५१ ॥ सापात औ र सांतरा गुंजा जड के खंड ॥ कटि मधि बांधे तियज ने सुख सौं होइ घमंड ॥ सरफोंका की लाइ जड़ तिय क टि माहि बंधाउ ॥ यह औषधि परिभाव सौं सुख सौं ति यहि जनाउ ॥ सोरह १६ है बारह १२ बहुरि छः ६ दस १० चौदह १४ और ॥ आठ ८ अठारह १८ चारिये ४ ॥ ४

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

लिखि कोठे नौ ठौर ॥ सोलह दो क्रम तें किम
तें लिखे कपरे पै यह अंक। जंत्र देख मिसाख्य य
ह नारि खाय निरसंक। ५५ ॥ अथ अपराध पा
तन विधि ॥ दोहा। अंगुरी वारल पट के धसै कंठ में कोय ॥ अप
राध पातन उदर तें इह इलाज तें होय ॥ ५६। पीस लगावे पग
करन किर किच हाद्द मूल कै याही उपचार सौं कारि अपराध नि
रमूल ॥ ५७। इति अपराध पातन विधि। अथ सूतिका रो
ग। अंग मर्द ज्वर कफ अरुचि प्यास सोथ गुरु गान। मूल वेगि
इमि सूतिका रोग वैद्य कहि जात॥ पीवे पीपरि डारि के दशमूल
न को क्वाथ॥ सकल सूतिका रोग कों तुरत लगावे हाथ। ५८। चौ
पाई॥ आठ टका भरि सोंठि पिसावै वीस टका भरि घीउ मिलावै
॥ दूध टका चौसठि भरि डारि षांड पचास टका भरि लावे॥ घोरि
छानि ये पाक बना वहि॥ डारि सोंठि त्रिकुटी त्रिग ध॥ अरु अ-
जवायन कर के कर बंध॥६१॥ मिश्री वाव चित्रक मोथा पुनि
और कलौंजी इन में ले सुनि ॥ टका टका भरि ये सब
लेउ ॥ तीन टका भरि अभ्रक देउ॥ तीन टका भरि मा
रेउ सार। रूपो सोनो त्यों निर धार॥ करु अवलेय ही
सब डारि घृत वासन में धरि सुबिचार॥६३॥ यह
सवलेह सूतिका खाय ॥ ताको गुन अब देइ बताइ॥ आ
यु बढाय वरन बल करै॥ गुजल कसी इन कबहु न परै
॥६४॥ रहे ज्वान से मतिय निरधार॥ कबहूं होइ सेत नहिं बा
र श्याम मूल मंदा गिन जाइ॥ मस्तक शूल रहे को आय॥
६५॥ देखि अग्नि बल ताहि खवाय॥ दिन २ यह सों रुचि
रुचि उपजावै॥ यह सौ वैठि सुकृत पाको॥ कह दीनो

सब गुन है ताको ॥ अरिल ॥ आक कनक के पात ल्याइ सु
पहिल पिसावही ॥ तिस में सरसों तेल चौगुनो लाव
ही ॥ यह पचाय के तेल हेम सुन्दरि करहि ॥ परिहां
हांजी सकल सूति का रोग सुपरि तासों हरहि ॥ ६७ ॥
इति सूति का रोग ॥ अथ क्षीर विवर्धनम् ॥ दोहा ॥
काढ सतावरि रंग तिय दूध संग जो खाय ॥ तो वाके कुच कल
स में दूध बहुत अधिकाय ॥ ६८ ॥ दूधकुन कुनो करि तिय
पीवे पीपरि डारि ॥ दूध होय तव बहुत ही कही बात निर-
धारि ॥ ६९ ॥ बांटि बिलाई कंद को तिया सहत रस खा
य ॥ दूध होय ताके बहुत गाय भैंस को आइ ॥ ७० ॥ घृत
कुआरि काजर हरज जल सूं पीसि लगाउ ॥ ७१ इति ॥
क्षीर विवर्धनम् ॥ अथ प्रदर ॥ दोहा ॥ अति स्वास
बारी तुरंग की अति मै पुनरपति दाह ॥ तातें तिय भग-
तें गिरत रूधिर प्रदर निरबाह ॥ छप्पय ॥ लाल सुपा
री लाय फेरि माजू फल आनहि ॥ फेरि धाय के फूल
मोच रस इन मधि जानहि ॥ गेरू और रसोत और चौ-
राई जर डारहि ॥ कूट कपर छनकरहि औषधें यह नि
रधारे ॥ पैसा भरि चूरन सरस चावर जल सो घोरि करि
॥ पीवे प्रात नित नेम करि तौ जीवे तिय प्रदरहरि ॥ ७३
दोहा ॥ चावर जल सौ पीसि के सहत चौर इ मूल ॥ श्र
डार रसौत तिय तुरत प्रदर करत निरमूल ॥ ७४ ॥
चावर जल सौ पीसि के कुस जरि सहित मिलाइ और
रसौत पीवे तिया प्रदर तुरत ही जाइ ॥ ७५ ॥ चौपाई ॥
जैसे सोरह टका प्रमान ॥ दूध सेर छः लेइ सुजान ॥ आध

टका भरि घृत ले ग्राउ ॥ ७६ ॥ खोवा दह सव मेलि बनावै ॥ गोढ़ा गाढ़ी होन न पावै ॥ सोरह टका भरि पिस वावहि ॥ मिश्री खोवा मांझ मिलावे ॥ ७७ ॥ सोंठि षीपरि चातुरजात ॥ मोथा जीरो यों कहि जात ॥ धनाउ सीर रसौत जुलावै ॥ वरि बांब कला हरद मिलावे ॥ ७८ बंश लोचन ग्रौर पद माष ॥ त्यौं षरली जौ कहत सुजान ॥ पैसा २ भरि ये लेउ ॥ चूरन करि खोवा मधि देउ ॥ ७९ ॥ यह जीरक ग्रब लेह बतावौ ॥ यह कोगुन मुनि जन मन भावो ॥ प्रदर ग्ररुचि ज्वर त्रषा स्वांस ॥ कांस छर्द ग्ररु दाह निरास ॥ ८० ॥ दोहा ॥ सियचाउर कीनी सो मूमा वल की मूल ॥ पीस पियो दिन तीन में प्रदर करै निर मूल ॥ इति प्रदर ॥ ग्रथ रंडा गर्भ निवारण विधि ॥ ग्ररिल ॥ गेरू तालीस कर्ष भरि ल्यावहि ॥ सीतल जल सौं बहुरि पिस वावही ॥ चौथे दिना ग्रन्हाय तहां ग्रौषधियें षाये ॥ परि हां हांजी गर्भ निती संग रहे तिय जब लौं जियहि ॥ दोहा ॥ मधु घृत वीज पलास के पीस जोनि मधि लाउ ॥ चौथे दिन गर्भ नारहरा तुरत करवाउ ॥ ८३ ॥ चौपाई ॥ पुष्य नक्षत्र जाही दिन ग्रावे ॥ षोद धतूरे की जड़ लावै ॥ करि हां बांधि करे संभोग ॥ रंडा के गर्भ न रहै यह जोग ॥ ८४ ॥ तिल गाजर के वीज सौं ग्रवर कलौंजी खाय ॥ रांडी तया को तुरत ही रहा गर्भ गिरि जाय ॥ इति गर्भ निवारन ॥ गर्भ पतन विधि ॥ ग्रथ कुच दृढ करन ॥ दोहा ॥ रस कुम्हेरी ग्ररु सकल तिल को तेल पकाउ ॥ भिजइ रुई यह तेल

तेल में कुच ऊपर लपटाउ ॥ ८६ ॥ सिथल भये ज्यो होंय कुच लगि पिय के अंग ॥ तेऊ कुच यह तेल सों गिरिस म होंय तुरंग ॥ ८७ ॥ इति कुच दृढ करन ॥ अथ योनि संकोचन ॥ बांध पुटरिया भांग की तिय राख हि भग माहि ॥ व्यानी कैयो बार की योनि होय जिमि बांझ ॥ ८८ ॥ वुकनी करै मोचरस तिय राखहि भग माहि ॥ व्याई-कैयो बार की छोटी भग व्है जाय ॥ इति भग संकोचन ॥ अथ योनि रोम दूरि करन ॥ कुंड लिया आवै रोमन तेहि करहि ऐसो उपचार ॥ अजवायन अजवायन अज-मोदाही मरू ल्यावै हरताल ॥ ल्यावै हरताल घांस चूरन मिलवावहि ॥ पुनि इन सौ तेल बनाय ताहि सिद्ध कर राखहि ॥ यह मुनियन को तेल बनाय ये ही भग मांझ लगावे ॥ तुरत बार गिरि जाय बार तहां फेरि न आवे ॥ ८० ॥ इति रोम दूरि करन ॥ अथ बालक रोग ॥ दूध पिये के बाज खाय के नाज खाय के नाज दूध पुनि बालक ॥ तीन प्रकार पहले निश्चय करि के सुनि दूध अन्न नहि खाय जभी बालक सुख पावे ॥ दूध अन्न नहि दुष्ट तबहिं बुध रोग बतावे ॥ बड़े नर को यही औष धि रोग पर ते देइ बाल के औषधि हि मात्रा लघु कर बैद्य वर ॥ ६१ ॥ बाइ बिडंग समान तुरत उपजे के दीजे ॥ मास उपरांत एक से बढ़ती कीजे ॥ बीस दिना के बाल के बेर गुठली समता को ॥ औषधि देइ प्रवीन रोग उप-जै जो जाको ॥ पोषधि दूध पिये जो शिशु दूध ता-की माता खाय औषधि वही ॥ तब धाय जो खाय

दोहा ॥ बालक को कुछ रोग जो तौ बरजे सब बात॥ दुग्ध पान वरजे तरुण यह पंडित कहि जात ॥ ९३॥ अरिल ॥ जाढ्यो हरद प्रियंगु लोध पिसवाइये॥ इन को कलक बनाय तेल सुबनाये॥ बालक नाभि ये केत व तेल लगाये॥ परि हां हो जी त्रिसवाय के चूरन डारि ये॥ ९४॥ दोहा॥ तुरत भयो शिशु सो जनो चूची पीई न जाय॥ सेंधो मधु घृत आंवरे हरद जीभ लगवाय॥ दुगये उंगली जो शिशु तो घृत सनवाय॥ दोइ कटाई बच सर स पंच कोल को चटाइ॥ ९९॥ जो बालक को होइ ज्वर तौ यह यतन कराइ॥ कुटकी खांड मिलाइ के सहत संग चटवाय॥ ९७॥ चौपाई॥ काकरा शृंगी मोथा आनु॥ और अतीसार पीपरि ये जानु॥ बाल के मधु डारि चव वै॥ काम छर्दि ज्वर रोग नसावे॥ ९८॥ मोथा सोंठि अती स अरु हर जवा उरई मूल॥ काथ खाइ शिशु को करइ अति सार निर्मूल॥ ९९॥ चौपाई॥ काकरा शृंगी पीपरि डारि॥ अ रु अतीस इन में निरधारि॥ सहत संग शिशु चूरन खाय ॥ अतीसार ज्वर खासी जाय॥ १०७॥ अरिल॥ पुहकर मूल अतीस पीपरें लीजिये॥ काकरा शृंगी पी सि कपरछन कीजिये॥ वालक को यह सहत संग द नदे॥ परि हां हा जी कास स्वास पांच बिधि जानदे ॥ दोहा वंसलोचन सहत संग चाटे जोइ प्रकास ॥ तो बालक की वेगिही दूरि करै यह स्वास॥ अरु सा कुटकी को चूरन करे सहत खांड के संग॥ बाल क की छच की मिटे अरु पुनि बमन प्रसंग॥ ३॥ ५

मिश्री सैंधो पीपरें मिरचें ये पिसवाइ॥ जो बालक को मुष पके तो पीपरि की छाल॥ तासों मुख लेपन करो वासी पानी घालि॥ सारा ग्राम को लाइ कर चूरन सरस कराउ ५॥ लरिका के मुख पाक को दीजे यही लगाय॥ वेल पत्र गूगल हरद उरद छंद दरियाषीठि॥ अरि वांधपव नाइये जोर औषधि नीठि॥ लरिका रोवे रात को लेत न पल भर चैन॥ ताको याकी धूपदे यह उपाय है ७॥ इति बालक रोग॥ अथ गृह ग्रहस्तो उपचार॥ छंद॥ पलक करे उदवेग पलक में बालक रोवे॥ दांत काटै देह अपनी देह बिदारे॥ धाई माइ कै काढ़ि नोचि बित्या पारे॥ सावन के जुरु इमि होइ जो बालक तब हिं॥ चेष्टा बिलोकिय विधि सकल जतन करहु बुध बर तबहिं॥ दो०॥ दुर्बल लागें रैनि सब छिन छीर मल और॥ मन्य अंग जिव्हा बढ़त ये लच्छमन या ठोर॥ ८॥ चौ०॥ नदीन के संगम जहां॥ वाक कूल विलोकि तहां॥ दोऊ कुल की माटी ल्यावै॥ ताकी पुतली एक बनावै॥ पुतली ऊंची हाथ प्रमान॥ तीन नैनन कर चतुर सुजान॥ दोऊ हाथ पुतली के करही॥ मूल कपाल हाथ में धरही॥ जटा बनावे सरस अनूप॥ वाको करई रुद्र की रूप॥ करे सर्व भूषन तेहि संग॥ भस्म लगावे सबरे अंग॥ सर्बग्री पति रुद्र कहावे॥ उह मूरत में ताहि बुलावे॥ मंद आदि पूतना ग्रौर॥ सद्र आदि सुहते ठोर॥ चावर पीस चूरण कर चावरहि॥ चौख ठो तब चौक पुरावहि पूरव मुख प्रतिमा बह राखे॥ सो तो मित्र कहे भाखे॥ दीप धूप चंदन अरु भोग॥ फूलन कर कीये संजोग॥ एक

त जा होय जो गोबर सैं लीपै फिर हाथ भर चांवर के चून सीं
चौखूटो चौक पुरावै तिहि यही बास कै जलवा सखा के ध
रहि ता माटी की मूरति धरहि महीना तिथि वार अष्टकेष्ठ
मुक बालक यस्य पर्व ग्रहस्य त्यर्थ: समेण हवल करि
छाया भांति सकल करै फिर वो प्रतिमा सूर्य आवा ह्यां
ति सर्व ग्रहन को आवाहन करै ओं सर्व गृहा दि पतिन्ये
हु फटि स्वाहा ॥ या मन्त्र सूं स्नान धूप दीप नैवेद्य करके
सात बेर सात ठौर चून के दिया गुरु को पानी पछरी मा-
स बुरा गेहूं की ककही बराबर हसव साज प्रतिमा के आ
गे परसे ओं नमो भगवते च्यव के सत्य सुवाह्न सत्या प्रवा
ह्न हूं हूं हू फट स्वाहा-यह मंत्र पढ़ के यह मूठि को हरै ल-
ड़ के हाथ में देह जोन साज रोवे अग पहे यह से होइ सह
मग डरावा है फिर दूसरी मूठि को हरै लरक को हाथ दे-
द्र ह्रीं ह्रीं स्वरू। फुर वे न याय: नमा: यह मंत्र पढ के पै
से गुन्न में डरावे लड़का की बराबर फूलन की माला ब
नावै लड़का के उपर तीन वेर फेरै ओं करनी सुस्या पय
या पढि माल प्रति मानु साधरी फिर पाछे को न देखे या
भांति चल दास करि धर आवै फिर लड़को धूप देय या।
बिधि योपरि मिरच जटा मासी मनुष्य के बार बिलावी
की बीट कचूर ऊन नयवा बिसार ये हाथी दांत गाय
भैंस की सींग अहार सब मले कुधारै यह भूत प्रेत कृ
त्या उन्माद नुसरा बस मृह राक्षस पिशाच हो तिरिया
॥ इति गोस्वामी जनार्दन सुत मई विरचिते वैद्य र-
त्ने चतुर्थ प्रकाश: ॥ अथ बाजी करनम ॥ छंद
॥ मौसरू तालवो पात सतावर बीज कारि हु केली मगावो ॥

सामस अरू गंगेरू की जर खोदि सुपादिल मंगावो ॥ औ
षधि सब कूटि कपर छन राखो दूध मह घोरि पीवै ॥ ६
सो मेहरा धर जोवरू जाके ताही को चूरन वैद सवावै
॥ १ ॥ चौ० ॥ वीज गोखरू को पल एक ॥ दो पल वीज ए
करे छके देय ॥ वीज गंगेरू बीजो लीजे ॥ द्वै पल कुं
द बिदारी लावै ॥ द्वै पल खीरा जर मंग वावै असगं
ध अच्छो लीजै बीन ॥ ताको डारै ले पल तीन ताइ
अरू सो तोल वोखादु ॥ चन्दन लाल गिलोय खिवा
रि ॥ तज पत्रज एलाल घु दोऊ ॥ लोंग आंव रेइ न
मधि देऊ ॥ पीपर और गज केसर सोउ ॥ सोरह
सोरह मासे दोऊ ॥ इतनी एसब औषध लावै कू
ट छान बुकनी कर वावै ॥ ताकी द्य भावना पोत ॥
एक अधिक ते मानो भोत ॥ ल्यावै खैर कुस कास ज
रै ॥ सात भावना ताकी पैरै ॥ चूरन बराबर खांड मिला
इ दुष्ट अरू बीरज को हान ॥ मूत्र कृच्छ ये सव जान
॥ सगरे मूल धात के दोष ॥ तेहनि करै धात की पोस
॥ सो नासे सौ गुन करै ॥ तौ कैसे सो मनुष बल धरै बां
रू खाय चूरन सुत जावै ॥ कामदेव चूरण ये कहावै
दो० ॥ चूरन मधु घृत संग सो करई सकल संजोग ॥
बढे धातु यासों तुरत करई दस त्रिय सों संभोग ॥ १ ॥
कुंडलिया ॥ ज्वान होय चाहे फेरि तौ राजुज काकरा
य ॥ आंवरा को रस काढ़ि के आंवरा चूरन खाय ॥
आंवरा चूरन खाय भावना दे बहुतेरी ॥ सुखादु धा
म मह सोख सुनिये तेरो ॥ चूरण को सुखवादु अरू मधु
सेवनो ॥ दोहा ॥ सोरह मासे बीज करे छ के खादु मधु घृत

होयजो पिये फिर दूध सौं करदस त्रिय सौं रसरंग ॥
छप्पय ॥ एक प्रगोखरू १६ टका दूध १४ मधु डारै ॥ औ
र गोखरू चूरण यह दूध धरहि कसारै ॥ षपूर मिरच
पीपरि और लौंग सारजाजी पकर ॥ समुद्र सोष अज
मोद आवरे अकरकरा भल जाती ॥ पुह करके सरिसु
परिये सम चूरण करउ ॥ दै जीरा हरदी बहुरि सोंठि
बहेरा पास धरउ ॥ चूरन और कसार मिलाय के स-
व तौलौ ॥ चूरन आध भाग खांड तौलो यह जौलो ॥
ये सब तितने भाग औट के पाक बनावै देखि अगिन
बल सनपृ और धातु कर ॥ ८ ॥ लाडू पकोरा निरधारो
॥ कौलि के कलश करय बनारो ॥ पांच सेर जल हांडी
डारौ ॥ चूरन तै आंच मंद तब वारो ॥ चुरौ जानो कुह-
डा उतारखो ॥ मिट्टी पीस कर घोट बनावै ॥ चौव
टका सोरह भरि डारि ॥ कुहड़ा करि सरम कसार ॥
पांच सेर मिश्री को पाक कसा ऐसो करहु जो छूटे ता-
रु त्रिकला धना सवहि बिचारो ॥ तज पत्रज एलाल घुडा
रो ॥ नाग केसर जीरा अरु लेहु ॥ फिर तालीस निसोत से
देहु ॥ गज पीपरि मोथा दातौनि ॥ ताल बुखारो तिलको
होंत दाख गोखरू मोथा बैसो ॥ चाकट असगंध ले तै-
सो ॥ खैर करेळ: के बीज अजारो ॥ जाको अरु कचूर नि
र धारो ॥ बंश लोचन पीपरा मूर ॥ कमल गट्टा लखि
ई सूर ॥ जाती फल कंकोला ॥ कंद बिदारी ल्यावै मोल
॥ सेमर छाल सुसैंधो नोन ॥ मूसलि कंद कहो लै तौ-
न ॥ भांग सिंगारा लाजो सब से ॥ सोरह मासे तबरो ॥
इनको चूरन करहु बिचार ॥ अभ्रक देउ टका भरि डा-

रि ॥ सबै बनाइ पाग मधि डारै ॥ सिद्ध होइ जब दे-
खिय सार ॥ ताकी गोली धरहि बनाइ ॥ गोली प्रमा
न टका भरि खाई ॥ धातु पुष्ट करै अग्नि बढाये ॥
बमन अम्ल पित्त छुटि जाइ ॥ पांडु न सावन रक्त पि
त्त अरु भूपान सावे ॥ रोग प्रमेह नजदीक न आवे ॥
अस्सी वर्ष को मानुष खाइ ॥ सोऊ सो वह ज्वान कहा
इ ॥ उज्जल कपडे तक बहु अंग ॥ दिन दूना वढहि अ
नंग ॥ शुक्र शुद्ध याते अति होय ॥ बाढै कांति कुवांरा
होइ ॥ कुहड़ा पाक मसगहि जानो ॥ ताके यह गुन कह
त बखानो ॥ २० ॥ छन्द ॥ नोन सात टका भरि तोल तवै
॥ बीज करेछ के चूरन करै ॥ छः सेर मंगाइ के दूध सुनी
॥ वह चूरन डारि बढाउ गुनी ॥ जब औटि के खोवा होइ
सवै ॥ घृत आठ टका भरि डारि तवै ॥ अषाढ टका इकती
स भरो ॥ मिलवाय टका भरि बांधबरो ॥ अरु पाय मि-
ल वै तबही बंध वाय सब कै वरी ॥ जब ही गज के सर बा
नो सुजाय फरी ॥ अज मोद लौंग अकरकरा मिरचै अ
ति सोंठि सुपी परिदे ॥ और सारूक को पुनि लेउ ॥ तज
पत्रज और । लायची जहां ॥ तजि पीपरि लेउ प्रियां रूरू
हा ॥ और बीज धतूरे के उग्र है ॥ सोरह २ मासे कहि इन
में सो सिद्ध के सोष कहाऊ ॥ बनाय द्रव्य बाको जासु
॥ परमेह सुखी बना कृच्छ मिटै ॥ पथरी मूल और गुल्म
घटै ॥ सब बात के रोग वियोग लहैं ॥ त्रिय कुपनि धाय
तें गर्भ रहै हरि संकट कहि फारि कूप मर्द करै ॥ अरु धा
तु बाइ अरु वृद्धि करै ॥ त्रियन के लोह विकार हरै ॥
नर के मन वे मनोज टरै यह खाय ॥ विचार यामें ॥ त्रिय

को गुरू रहै रीतिमें ॥ यह पाक कौरहु के भोजन के ॥ हितभावन बालक के मन भषे। २९ पीपरि पहले टका से भर पीसि के ॥ सो औटे दूध टका चौसठ भरि सोकके ॥ आठ टका भरि घी उडुरि के कसार पुनि॥ चौसठि टका भरि षांडु को पाग करे सुनि औषधि डारै॥ बहुरि पूरण करिये पाग मनाते॥ औषधि बनाय कहत सुधिभान तज पत्रज और लौंग लायची डार दूस कोतर मोथा पीपरि तगर चन्दन बान धनूर तोल सकपूर असजा वौ के सार अरू॥ अभ्रक लोहा सिंगरफ एक २ पल सव धरू। चार टका भरि सहत सुडारि पुनि गोली करहु बल अगिन समान निरखि खाय गोली तिन्ह यह धरहु॥ पुष्ट करै बल करै नेत्र की जोत करै॥ यह धातु करइ बल करइ छर्दि भ्रम मोह हरै॥ कोढ त्रषण दाह हरहि बीस परमेह नसावे॥ कोढ अठारह आठ ज्वर बात रोग सकल कल बिष गर्भ होय बांझ अरू कपिप्पली कहै षांड मल॥ ३०॥ सूखी कली आंव रे ल्यावे ॥ सोरट के भरि सो तो लेबे गा वे दूध सोति समधि डारि चौसठ टका भरि दे निर धारि॥ एक राति फिर दूध टरकावे॥ नयो दूध आनी भरि वावे॥ तीन राति इमि करसुनि षाय॥ पीसे लोम लोद कह लेई ॥ और पीठीसी करइ ॥ चौसठ टका भरि दूध पुनि धरइ॥ आंबरा घोरि दूध में आने॥ कपरा राधी रे पुनि छाने॥ भट्टी की साई ले आवे॥ तिह में आबरा डारि चुरावे॥ आग बार चूल्हे में सुनी॥ नावा करिये बात यह मुनी॥ मिश्री चौसठ टंक प्रमान॥ घोरि बनावे पाक सुजान॥ तजपत्रज एला सम डारै

और नाग केसरि निरधारे॥ जायल पत्रज फरमावै॥ मय धना लयरह ठौर॥ चंदन तगर सुनीरा दोउ॥ कमल पट्ट लजाटिउ सोऊ॥ मोथा अरु केसरि जे सई॥ अकबाव चीनी कह दई॥ एक एक मासे भरि बत्तीस॥ लीजो कहत वैद्य कोइ स॥ चूरण कराय औषधि ले ल्यावै॥ पाक मोगई में मिलावै॥ खोवा डार बनावै गोली॥ टका एक भरि वह निर्मोली॥ सोरह मासे अभ्रक बंग मिल वे खोवा के संग॥ औषधि सरस हकीम की कही॥ नाम नोसदारू कह दई॥ याके गुन अब कहत बखान॥ लीजो सकल वैद्य अब जान॥ बलु और वीर्ज को बहुत बढावे॥ पित्त रोग चालीस मिटावे॥ उदर रोग आठ भजावे॥ तनक जो यह औषधि को खावे॥

अथ लक्ष्मी बिलास रस॥ छप्पय॥ एक टका पिदस मासे गंधक भाग धतूरा बहुरि यारीगति पारो हून को बीज फेरि बिदारी कंद जाय फर लीजो बीज॥ गुर सक्कर निर सोरह मासे सास पीस के चूरन सरस॥ धरहु सोरह मासे बहुरि जापिची बुध आनो॥ दे दसमासे कपूर मिलाय सब जल सौं सानो॥ पल मधि डार घोटि कि नीकर चावे॥ सुवहरे गोली बहुरि खाय प्रात उठि नित पुनि॥ याके विचार पुनि कहत अब सरस से उ कवि सो सुनि॥ सन्निपात और वाय पित्त के रोग जायं सब॥ कोढ अठारह जायं बीस परमेह हरे कब॥ नारी ब्रन और गुदा तेरो गम गंदर अति वृद्धि पीनस छर्द अर सस्वांस और मेद गद॥ आमबात कसता उदर कान॥ नाक मुख रोग पद॥ उदर मूल सिर मूल जीभ के भर·

ग्रह त्रिय जन के जे भूल तुरत डारै तेरा हू आनौ पान मि
षान मास दधि मूल मठा जल सरा संग जो खाय वृद्ध
पावै सो तरुन ॥ नवला सौं त्रिय सों संभोग ॥ करै घटइ
ना घटइ तनक ॥ बूढो नर कै बार सिथल नहि होइय
यह सुनि भनक गज के सो बल होइ बात सुनि यह द
मन नारद सों यह मैं उचित विचारि कृष्ण सों देइ तरा
रस में यह नाम लक्ष्मी बिलास निधान रस सरस देइ
मभ्भानी ॥ ये छय उत्तव जाई कृष्ण तिहुलोक पति
लखनारी बस भयौ ॥ इति लक्ष्मी विलास रस ॥ अथ
चन्द्रोदय रस ॥ छप्पय ॥ टका भरि लेइ सोन बहु सु-
न्दरा ॥ आठ टका भरि लेय तथा पारा ते बुधवर ॥ लावै
गंधक सोधि टका सोरह भर सोऊ ॥ घोटै लाल कपास
के फूल के रस में सोऊ ॥ वृत कुमारी को काढ़ रस तासें
सब ये घोटि करि सीसी में कपरोटी करि तामें सब ये
रखि भरि ॥ ९ ॥ सीसी को मुंह मूंदि हंडिया में धरिये
॥ तीन दिना लगि आंच तरे हंडिया के करिये नय यान
समलाल जब टका एक लेइ बहक पूर लौंग अरु जायफल
पीपरि पल १ लेइ सब मृग मद मासे चार डार सब की बुक-
नी कर मासे २ तोल के पुड़िया सब की करि धरि ॥ पान-
साथ ये खाइ विषा सब गर्भन सावै ॥ थावर जंगम गरल
दरद कबहू नहिं पावै ॥ वर्ष दिना लगि खाय यह चन्द्रोदय
जन मति न मृत्यु जब सुमर नर ॥ अजर अमर बहु होइ
इति चन्द्रोदय ॥ अथ सर्प विष को उपचार ॥ दो०
दैव योग ते सांप हू काटै वाये मंत्र ॥ और औषधि कारण
छूट है ताते अरु ये जंत्र ॥ १२ ॥ भानु भानु वृष रासि के स्विरक

बीजतव एक पसोवाके निकटही अहि २ आवै विष खना
वा जल सौं पीवही वार द्वासो मूल॥ पीर जुते ही सांपके
तुरत करै निर्मूल॥१५॥ घृत मधु तीनो पीपरें मिरचैं आ
घादै नौन॥ याको खाये रहस कत तक्षक को विष कौन
छप्पय॥ अजैपाल की मींगी लाई दुगनी करवावौ॥ निंबु
वा को रस काढि एक वीस भावना दिवावौ॥ ताकी बांध
वी फेरि छोटी छोटी॥ सुखाइ घाम मधि धरै नहीं पतरी
नह मोटी॥ विस सानु के थूक मैं गोली तनक करै॥ पुनक
रहि जो नर जिय सुख पाय के सकल सांप के विष हरै॥
१६॥ अथ बिच्छू का उपचार॥ लाल घा घी हा-
रो निरखि ताके पात खवाय॥ बिच्छू काटो होय तौ
ताको विष मिट जाय॥१७॥ अजै पाल लै पीस कै
पानी सौं लगवाउ॥ बिच्छू विष सब तुरत ही विदा
करै यह भाउ॥१८॥ अथ बर्र विष उपचार॥
सैंधो सोचर मिरच ही सोंठि पान को रंग॥ लेप करै तो
मिटै चढाउ विष तन संग॥१९॥ अथ षनखजूरे
विष उपचार॥ मनसिल गेरू हरद के दै लेपन आय
कै दीया के तेल सौं खन खजूरो विष जाय॥ अथ कू
कर के विष का उपचार॥॥ पात मूल जर बेत के कूट
काथ कर वाय॥ करि सीतल तौ वेगही कूकर को विष
जाय॥ साले नर कै रज बीज पुरा पिसवाय के॥ विष
कूकर को मिटै यही औषधि आय॥२२॥ अथ मक
री के विष को उपचार॥ दोहा॥ हरदी दोउ मजीठ पु-
नि गज केसरि सुपतंग॥ सीतल जल सौं लेप करू-

मकरि विषभंग ॥ २३ ॥ अथ माद्रुर वाय ताको उपचार ॥ सीतल थल सीतल सलिले अरु सीतल उपचार ॥ हरत काज विष विषम कर सीतल सब सार ॥ २४ ॥ चौ० ॥ मोर पक्षको तामें ल्यावे ॥ तामधिकि चका मारि बनावे ॥ लेइ जहर मुदरा को नीको ॥ करे बीज की आदिमन है को ॥ ये सब पानी डारि धुवावे ॥ धोवे एक बिजोई यामें ॥ ताके पानी देह पिवावे ॥ विषके भांति के जंगम जाई ॥ २५ ॥ हरिया थया मिरच सुहागा ॥ ये तीनों लीजे सम भागा ॥ भाग लीजिये विष के दोई ॥ विष गिरि वज्रपात रस होई ॥ देव आदि दाली रस ल्यावे ॥ गोली तीन पीस बनवावे ॥ गोली मासे चार प्रमाना ॥ कै गाय मूत वह अनूपान ॥ खाय होइ जटा विष जोई ॥ उतर जाइ जासों विष सोई ॥ सब विष जाइ जहां लगि वाको ॥ कौन आई विष एते रहस कै ॥ २७ ॥ अथ क्षुद्र रोग तत्र दो यौवन पीडिका ॥ ज्यों सेर के पेट में काढ़ा बकुत बिथाई ॥ मुख में फोड़ा होत है जोवन पीठि को आई ॥ २८ ॥ बरने को कीक्वाथ मुख वासी घायल गाय ॥ जाती फल कांच रक्त मिरच जीवने फोरा जाइ ॥ २९ ॥ कुष्ठ रोग ॥ दोहा ॥ बाहु वगल और कंध पर जब स्याम पित्त को कोप ते पीर जुत रफोरा कच्छा नाम कट सिला जीत देवतरु ओटि लगावे नित्त ॥ वात पित्त कफ ते मिटे फोरा कच्छा मित्त ॥ ३० ॥ अथ बाइ के उपचार ॥ नवन देय वृत्त सों लगाइ जो मगन लगाऊं ॥ फूटे पायन के करत चलत महा सुख पाऊं ॥ सेंधो मधु घृत रलवा डार कटु तेल

॥ ताके वेंपन ते· मिटै वसन विवाई मूल ॥ अथ गुरु-मत्ता: अथ अट्ठाईस नक्षत्रों की रेखावली का दान

अ·	२	१७	१०	१९	भोजन	स्वा	१७	३	२०	२५	मदिरा
भ·	०	३२	२०	२६	घृतलं	वि	०	१	६१	३१	गोदान
कृ:	१	८	१२	१९	दधिघृ	अनु	८	१९	४	५	अन्नसोना
रो·	१०	११	१४	१७	घृतपात्र	ज्ये	११	४	३	१७	तैल लोहा
मृ·	१	२	११	२९	तंदुलह	मू·	०	३१	१८	२१	कृष्ण गौ
आ·	०	२१	२२	१०	श्वेतगौ	पू·	०	११	१२	२२	गुड़ तिल
पु·	७	१२	११	१७	गुड़ति	उ·	६	१०	२१	१७	भोजनदान
पु·	०	३०	६	१०	गौघृत	श्र	१२	२०	७	११	तंदुलदान
श्लेषा	६	३०	७	१४	वस्त्र	ध	६	२०	२५	१७	[illegible]
म·	६	५	११	१२	गौसोना	श	८	३०	२१	२६	वस्त्र श्वेत
पू·	१४	३०	७	२७	गौरूपी	पू	१०	२०	३०	२२	गौ रूपा
उ·	१४	३०	३०	७	गोभूमि	पू·	०	२	१९	२९	वस्त्र श्वेत
ह·	०	१०	८	७	गौ ति	उ	१०	२	२८	१९	हिरताय
चि	२०	३०	२०	२५	गोमूत्र	रे·	१०	६	६	२९	सुवर्ण
०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	० ० ०

अट्ठाईस नक्षत्रों का दान ॥
कहा है यथा शक्ति देय मिटै

दो०॥ दगत निकरि आवत गुदा वे पिन भीतर जाइ ॥ मी
लि गाय के दूध सौं वैग विकाने लाइ ॥ कटि पसरि की व
प गुदा नाम बंगटाउ ॥ मिटै गुदा को निकसवो नर आव
रस पाव ॥ ३५ ॥ सानी सोंटि द्रही वेन दही पिस लाय ॥

अलपानी नियाडारि के दून की कलक कराइ ॥३६॥घृ
त पचइ देन को करइ सिथारी दान नवार ॥ गुदाभंग पीड़ा
सहित सो यासों मिट जाय॥ ३७॥ अथ त्रिफला विधि॥
दोहा ॥ हर्र बहेरा आंवला भाग एक दुइ बार ॥ या क्रम
ते लीजै सदा याको यही विचार ॥३८॥ दूनी मिस्री डारि
के करि घृत मधु संयोग ॥ खाय जाय पर मेह अरु सोथ कै
ढ के रोग॥ ३९॥ अथ हरीत को जरगा ॥ चौ०॥ बाय बिडंग
उदर अग्नि बाढै ॥ पीसि खाय तौ मल को काढै॥ खाइ उ
से ई बंध तब करै ॥ भूंजी हर्र त्रिदोष यह हरै ॥४०॥ ग्रीष्म
काल गुरसंग में सेधो बरषा में॥ खांड संग ऋतु सरद सों
ठि हिमवंत महा में॥ पीपरि संग हर रितु शिशिर जवहिं त
हिं नृपराज बीरसित ताज हूमि तुवरि युत बासि संग खंग॥४१
अथ त्रिकुट दोहा ॥ सोंठि मिरच पीपरि मिलै सवनि कुट
वै जान॥ दीपन वर को ठाहर पीस हरपै थान॥ पंच कोलव
ट कटु ।दो०। चावर चितावर पीपरै सोंठि पीपरा मूल॥ पंच
कोल अफरा मिटै गुल्म पीर अरु सूल॥ ४३ पंचकोल लै एक
हि मिरच मिलै तब एक॥ पंच कोल अधिक गुन अग्नि बढ़ै सुबि
बेक ॥ ४४ सोंठि जोग॥ चौं० सोंठि भूंजि के सैंधो खाय॥ तौ पृत
दोष आम मिट जाय ॥ खाइ सोंठि जौ गुड़ के संग॥ मिटै
नौ विविध बात पर संग॥ सोंठि खाइ दूध में मेल॥ देइ
उदर ते आउ ढकेल ॥ मठा संग सोंठिये खाय॥ जारै आ
उ बहै सुख पाय ॥ अथ चातुरजात ॥ त्रिसुगंध तज
पत्रज लाइची त्रिसुगंध सो जान॥ मिलै नाग केसरि
जबै चातुर जाति सो जान ॥ ४६ ॥ लघु रोपो अरु ९

पित कफ उपजा करै रस रंग ॥ वीरजन हरकाफ दमिक सौं चा
तुरजात प्रसंग ॥ ४७ ॥ पंच क्षीर वृद्धि ॥ पर उमरी पीपरि र
बदरि पारा सुपारी और ॥ पाक सुआकर क्षीर चय सीतल
वनहर आद ॥ ४८ ॥ और बंधक या सौंव सील दोष मिट
जाय ॥ विर सुख कोउ कहि परा पाशि पर और ॥ पारास
पीपरि केठी रही बैद्य कहैं हैं और ॥ त्वचा क्षीर तरु पाव
रा मूल बन हर आदु ॥ और बंधक यामें बद्दरि और दोष
मिट जादु ॥ ५१ ॥ अथ दश मूल की विधि ॥ दोहा ॥ कटाई
दोऊ गोखरू अरु नीअरु सालोन ॥ पाउर बेर कुहेर अरु
सोनो पाटा रोन ५२ ॥ यह दश मूल कहावई याको क्वाथ
बनाय ॥ रोग प्रसूता सब मिटै बात प्रसूता जाय ॥ ५३ ॥ पं
च कोल की विधि ॥ सांभर पारी चूर मरो सेंधो सोंचर कांच
नोन एक दै तीन अरु चार कहे पुनि पांच ॥ ५४ ॥ ५
क्षुद्र क्षारक विधि ॥ दोहा ॥ जवा पार साजी बद्दरि
देइ बात पर क्षार ॥ क्षार जहां ओषधि कहें कहत सा
निरधारि ॥ ५५ ॥ अथ युक्ता युक्त कथनं ॥ पीपरि वाय
बिडंग पुनि धना सहत पग्र डार ॥ नई नई औषधि
अवै लीजि सकल विचार ॥ ५६ ॥ पीवने की विधि ॥
गुरु अरु करो सता बरी बासा कुहड़ा जानि ॥ अंस
गंध सौंफ पसारि नी पिया याही सों मानि ॥ ५७ ॥
अरिल ॥ अंग कहे नाहि होय तो मूल लगायो भागा क
हेउ नहीं तहां होय तहां सब जानियो ॥ परि हांदां जे
पाव कहा नहीं तो मारी को आनियो ॥ ५८ ॥ दोहा ॥
एक पाठ में बार है आवै औषधि मान ॥ दुह मात्रा ली

जिये तहां यही परमान ॥ दोहा ॥ चरिसा दिन जाइ को
औषधि कहिये स्वाद ॥ दीजो जाको मास दुइ औषधि
गुनि नहि जाइ ॥ ६१॥ चौपाई ॥ वरस दिना वीता जो वा
ही ॥ गुटका होय हीन गुन ताही ॥ चार मही ना पाछे
॥ घृत मा तेल हीन गुन आछे ॥ बरस दिना पीछे निक
साव ॥ गुन तेहीन औषधि भा पाव ॥ ज्यों ज्यों होय पुरानी
संत ॥ सीसा धातु रस त्यों गुनवंत ॥ दोहा कही जो औ
षधि पाठ महं अनहित रोग दिखाय ॥ तेही को हेत
बिचार के दीजै और मिलाइ ॥ ६२ ॥ मिलवा ना हि
स है जो तो डारैं चन्दन लाल ॥ बंशलोचन पूरे नोनी
सुर लै वह ख्याल ॥ ६४॥ खावै को औषधि करै तो अ
जवायन डारै चतुर डारै कछुन और ॥ ६५॥ खैवे को
मत दीजियो कारी जीरी जान ॥ कारी जीरी डारो ॰
ज्ञान ॥ ६६ ॥ खैवे को औषधि कहं बच तहां मत डा
रू ॥ बच की ठौर कुली जनहि लीजै यह निरधार
॥ ६७॥ नीम आदि को लीजिये खपरं आदि को सा
र ॥ पहिले परवर आदि दे दरिया आदि फल डारू
॥ ६८ ॥ मुक्ता फल की क्षार ले मुक्ता फल की सीप। सहित सुठे
र आचीन गुर सुन कर सुसमीप ॥ ६९॥ मिश्री शामितौ घाइ
ले खीले साठी धान ॥ दाख न मिल कुहेड़ फल तकले यही
प्रमान। तितरीक कफ़ मिलै नहां डारत रूसी बीज़ ॥ अमतु
वेत ना मिलै नौ चना धार कह दीज ॥ चंदन सहित मिलै
न तहां पत्री चंदन डारि ॥ या विधि कहदी जै ॥ स
कल गुक्ता नुक्त विचार ॥ अथ विरु धाहार

कथनै ॥ गुर विरुद्ध अहार है सोई गरल समान ॥ पावै ज्ञान को नृप वर वैद्य सुजान ॥७३॥ कछु दिन बीते कीन कुसल करत विरुद्धाहार ॥ छोड़ विरुद्ध हार तब कर भोजन सुविचार ॥७४॥ व्याधी हूँ भई मरणा है सब इन्द्री बल हीन ॥ करत विरुद्धाहार तब ते वर जेव नि हीन ॥७५॥ छप्पय ॥ कुरथी मदिरा संग ले बनफल बेल खवार ॥ चार मीन दधि मास सहित जानुनी बछाई ॥ दुग्ध दुष्ट कहि आदु वृन्द के संग पर हि जब हिं वाव हुष्ट सक्त बहुरि फेरि मठा दूर्रा संग जब हीं ॥ दोहा ॥ बीते ते दस घरी मूर दूध हो सुविकार ॥ बीस घरी बीते परे विष सम यह निरधार ॥७६॥ बिन औटे पंच दस घरी औटै बीस प्रमान अपक्व जल लगे मधुर वह तब लगि पथ्य प्रमान ॥ मीन करै जो कोउ प्रसंग ॥ ७८ ॥ साग जाहि पुनि मधु के संग दूध जो खाय ॥ वह जैसे सांप कहि दीजे दूध पिवाय तीतर लवा बटेर मृग मोर सकल बन जान ॥ मास सकल मैं संग कर भली भांति निदान ॥ ८० ॥ छप्पै ॥ सकल खटाई मांझ आकरो भलो बनावो ॥ सकल नोन तिन्ह मांझ नोन सेंधो मन भावो ॥ जैसे जो खाद्य सकल ताहि गुन दायक ॥ सकल मांझ कटु वर्ग सोंठ ते अधिक लायक ॥ तिक्त मांझ परवरस रस मधु मांझ खाउ बरसन सांथ दूध उत्तम है और साथ विकार ॥ दोहा ॥ मर मधुरता को सलिल मोह मास खाए ॥ मठा उक्ष हून सा घी घृत खांड कोन नाह ॥ दस दिन घृत में डारि के

कै लेपकासि पिढारि ॥ तौ वह विष सम जानिये दई
पचै पै मारि ॥ ८३ ॥ छप्पय ॥ मंड तेल सौं गोह लवा
तीतर कैकी ॥ गुरु मधु मंद रूप अमल संग मृग रीछ वि
वेकी और कपोत के मास तेल सरसों के ताके ॥ रांधे हो
ह विरुद्ध औगुन सुनिये याके ॥ भांति २ के मांस जब
रांधे सब एकत्र करि ॥ तब जानि लेउ याके औगुन पंडह
र वह जारि मरि ॥ १ ॥ जो हारियल को मास दार हरदी की ज
र में ॥ सो कुसुंभ को तेल मास न्योद्दा कै जानो ॥ मांस काक
रो को छेद करि खाइ सो कछू न हित ॥ मंदिरा सोरि त्यों अहि
त करुष कली को मास चित ॥ ८४ ॥ निंबुआ रस कपूर खी
र खिचरी जुत त्यौंही ॥ तेल साथ अफ़ीम मात बासी
अति होइ ॥ सुवार बरसौं सिद्ध मास बगुला को डा
रङ ॥ घृत करि सों विषवड्डारि मिलो दोष जुत जानै ॥
अति ॥ यह भांति वैद्य वर कहत यह यह विरुद्ध अह
रगति ॥ वमन विरेचन करमें ए ताने अति खाय ॥
खाय खरी सगार पिये के कर दव वताव दारिद उड़द की खाय
संग मूल कै तौ यह ॥ गुल्म मूल अरु घृत दूध अरु घृत अरद सा
ष गुरु ताके जो खाय जाय दुख पाय छीन होइ सुनि लेउ यह
भांति मांस अरु दूध नासे तृषा दुख दाई पीपर गुरु मधु संमदी
कुल्ह मानी सु खाय ॥ भुंजी घृत मा तेल मांस मछरी ब-
हां ॥ आसी सु खाय ॥ भुंजी घृत मा तेल मांस मछरी
बहां ॥ आसी दूध ताद् यह सीनी या पासी मठा संग
के पित्त बंग मिल बांता ते ॥ अब संग यह खाय दुख
अहार नर ॥ जानि बुझे तो कहि कुठए ॥ दो॰ दूध गवाइ

दूध खाइ के राति के या सोवै नहिं तथा॥ आयुर्बल सोये घटै दिन सोये ते पथ्य॥ और दुहिबो राति के दिन के साझ दुहाउ॥ राति दिना के दूध को इहि विधि भेद सुनाउ बरषा ऋतु के अंत में शिशिर माझ दधि खाहु॥ ग्रीषम शरद बसंत में नहीं भलो नहिं खाहु॥ इति श्री गोस्वामी जनार्दनभट्ट विरचिते वैद्यरत्ने पंचमो प्रकाशः॥५॥ दो०॥ एक टका भरि औषधी तहां सोरह टका प्रमान डारि चढ़ाइये है यह बात प्रमान॥१॥ हांडिया में औटे रहै टका दुइक भरि नीर॥ तबहुं क्वाथ उतारि के छान लेउ बलवीर॥२॥ सीत १ कषाय २ निब्यूह ३ अरु काढ़े ४ क्वाथ ५ सुसांच॥ या विधि पंडित कहत हैं क्वाथ नाम विधि पांच॥३॥ अथ अवलेह॥ औटि २ गाढ़ो करत क्वाथ आदि अवलेह॥ करत अवलेह यह पल भर खाउ हि साव रस मार खाइ थे वाहि चूरण मधु गुड़ डारि सम खांड दूनी मिलाय चूरण मधु गुड़ डारि के और खांड एहि विधि भेद॥ बताइ मांड पथ्य के विधि हे लिखये॥ चौ०॥ टका एक भरि चांवर निरधारै॥ चौदह टका भरि जल निरधारै॥ ऐसे औटि के मांड बनावै॥ जैसे दूद सीत न आवै॥ कूट छान दुगनी करवावै॥ चूकनी डारि मांड में प्यावै॥ सेंधो सोंधि तहां ले आवै॥ पांचल दीपन लघु सुवतावै॥ दली चावर भूतलेई सत देइ तनक तनक भुंजवावै काउ॥ तेहि का नाम बतावै भी सोंठि मिरच पीपरि लै हसि॥ सेंधो नोन धना पुनि दोऊ॥ भुंजी हींग मठा पुनि दोऊ॥ यह सब पीस मांड में॥१॥

मे डारे ॥ मोइ अष्टगुन नाम बिचारे ॥ जवर त्रिदोष
याते मिट जाई ॥ दिन दिन भूख बढै सुख पाई ॥
कर परंतु शोधन इहि भांति ॥ गुन बताये सकल सुहा
ति ॥ दो कोरे ये भूज चावर खील के करि पात पजो मंड
ग्राही ज्वर कफ वात के कों त्रिषी कासंड ॥ चौ ॥ एक
टका भरि मूग विदारी ॥ टका अठारह भरि जल डारी
॥ ताको पीठ बनावे गुनी ॥ डारे तनक सांवर सुनी ॥
मूग आंवरे को यह जूष ॥ भेदी बहुत लाव अति भूख
तृषा दाह कफ पित्त मिटावे ॥ सीत मंद भ्रम रहन न पा
वै स्लो ॥ मान्धाताच महीपतिः कृतयुगे लेकारभू
तो गतो सेतुर्येन मम हो दधौ विमदिता कासा दिशा शात
पाअन्ये चापि युधिष्ठिरः प्रतिमं वाण भावान सुस्तान भू
पते पते नव सुधरोन समती भुजान्व पानाच्छ पी ॥ १ ॥
दोहा उत्पति क्षीर समुद्र ते उडगण ते परिवार ॥ ते मह
देखे रोष भवन कौन मतिन पर हार ॥ २ ॥ उडगन धीरे वारे
नाय कौ वधीनाम मृत मय शरीरो कांत युक्तपि चंद्रः
भवति विकल मुत्ती मंडल प्राप्तिः भानुः परसद निले
ष्टिः कोन घनवन जाति । ३ । अथ वमन विधि । वरष
सरद बसत मे वमन विरेचन होइ ॥ करवावे जो वैद्य वसु
खी रहे नर सोइ । ८ चौपै । मकर कुंभ रितु सिसार हित
कफ संचय यह सुनी कफ यक्र यम सुरवा ऋतु हारि
कोरकर वाई परसी पातित चय ॥ कहो सर्द कन्या नु
ला पित्त कोप अत चपन कुमंत ॥ होइ वृश्चिक
चदर दोष मृदुल्या इम न चाटक कहै ॥ वलपतरूफ
अरु धीर ज है पादिल्या मम दोष नाहि कहै ॥ विष

रोग खिली पद रोग भयो ॥ अरू काटि विसर्प भजीरन भौ ॥ श्रम कास विमाद प्रमेह गयो ॥ अरू जर पनिस भेद अमास बयो ॥ उन्माद अपस्मार पित्त जहां ॥ रक्त अतीसार सुभात देह्रां ॥ अरू नाक पके बहे कान बहे ॥ तनु कासरू कोढ को पाक करे ॥ गल सोय जुड़ई को जेम जबै ॥ खल रेमा बात कर वितवै ॥ दोहा ॥ १ ॥ बासो परवर नीम के पान क्वाथ कर पीव ॥ पित होय तो वमन कर हुने रहे चिरजीव ॥ १ ॥ बहुत बात पीड़ा जबहि अरू जव कफ पीप कराय ॥ वमन काज कर मैनफल दूध साथ यह प्याय ॥ २ ॥ जोर अजीरन होय तो सेंधो ताते नीर ॥ वमन काज प्यावै चतुर दध जाद सा पीर ॥ ३ ॥ चौ० ॥ वमन काज यह औषध प्यावै ॥ कछु ऊंचे पर ताहि चढ़ावै ॥ अरु पालन केर अगारी डारि ॥ वमन करा वैद्य विचारि ॥ ४ ॥ अथ इतने जने कहे वमन करावै नहीं तिन के नाम कहत हैं ॥ छप्पे ॥ तिमिर लगत है जाहि गुल्म पुनि ताके जानौ ॥ उदर रोग होय जाय ताहि दुर्बल कहि जानो ॥ अतिहि वृद्ध नर होय बहुत मोटो गुरु भिव लिव ॥ पर आतुर कन दूषित बाल रुपो पहिये ॥ उदर बात करके कुपित नाव व्याधि व्यथा जन जानो ॥ ऐसी पुरुष नो बचावो नर वमन कराव कुवैद्य बर ५ ॥ दो० ॥ कफ अजीरन विषरह पन जो जानहु ॥ कछु कर कोइ तो जाके के क्वाथ सों वमन कहत सब कोइ फूटि पत्र कर रत ताको औषध वस्तु सों कहत हो ॥ दो० ॥ प्रात भोजन जल पान अति ताहि लम

त्रिय बेल ॥ वमन करावे तो एक दिन न लगावै तैल ॥ विरेचन विधि ॥ तेल लगा से काई के पेट वचन करवाई ॥ विरेचन फेरि देइ विधि यह विधि देइ बताई ॥ मृदु कहियत बहु पित्त नर मध्यम कफ तब होइ ॥ कोरि लाती या बात तुत कहत वैद्य सब को य ॥ अथ जिनको बिरेचन देउ तिन के नाम कहत हों ॥ घनाक्षरी छंद ॥ जीरन ज्वर वारो विष म ज्वर वारो वात रक्त भगंदर अरषा पांडु उदर अ रोचक हियरोग ॥ गुल्म प्रमेह ग्रंथी प्लीहा व्रण विद्र धि छर्दि कोढ विसूचिका है निवाह कान नाक मुख मुंड गुद लिंग ॥ और निरोग सोष कृम वात मूलम च घात नो यहि ॥ ऐसे रोग विचारि जाके अंग चतुर सुजान वैद्य विरेचन में देउ ताहि ॥ अथ अभि मत चूरण हरका ॥ मिरचे पीपर सोंठ हर्र हे हरी ॥ आवरा बहेरा लेउ लायची वाय विडंग अरु मोथ के करो प्रसंग ॥ पत्रज कूट ताहि में डारि ॥ टंक २ ये सब निरधार ॥ लेउ टंक चालीस निसोत ॥ अरु छ सटक मिश्री तब नावे ॥ सौरह मासे चूरण खाइ ॥ दिये रेचन सकल बताई ॥ अथ अभ यादि मोदक भार ॥ छप्पै ॥ हर्र मिरच अरु सोंठि आंवरा लीजिये ॥ पीपरि और बिड़ंग तज पत्रज दीजिये ॥ १ ॥ १ ये सब लेइ समान तिगुन दीजे निसो ते ॥ १ ॥ अठ गुन लेइ निसोत षट गुण मिश्री याते ॥ सब ले चूरन मधु में गो

ली बांधि बहु ॥ लेइ प्रात उठ वर्ष भरि चारि ॥ पीपरैं डारि तब ॥ दो० ॥ ज्यों ज्यों जल शीतल पिये त्यों त्यों लागै भार ॥ जब जल ताते पिये तब विभ्भार निरधार ॥ विषम ज्वर मंदाग्नि ता पांडु रोग अरु कास नसाइ ॥ अर्पूा भगंदर कोढ नार द्धे गुल्म और गलगंड सोई। उदर दाह भ्रम जोई ॥ छर्दि रोग अरु सीह विलाई ॥ दृग के रोग कान के रोग । अर्दि मान के सहै न जोग ॥ मूत्र कृच्छ अरु पथरी टरै ॥ पीर पेट की ताकी हरै । पेट पसुरिया की जो पीर ॥ ताहू के यह टरै न धीर । यह मोदक जो सदा नर खाय ॥ वेग न वृद्ध होइ न जाय ॥ याते गुन पावै यह ताने ॥ यह मोदक चरमाई माने ॥ अथ इच्छाभेदीरस ॥ छप्पै ॥ पारो मिरच सुहागा लावो ॥ सोंठ अरु गंधक मिलवावो ॥ चित्रक अरु जैपाल सों घोटि मुनो बद बंक । यह चूरण करि खाइ दोइ गुंजा भरि अद्भुत ॥ बढै योग सो असुरसीम पानी के संगयुत ॥ २ ॥ इच्छाभेदी रस सरस हरत सकल मल सम गुन ॥ हरत रोग अनेक यह सकल कहत गुन वैद्य जन ॥ अथ नाराचरस ॥ दोहा ॥ त्रिकुट सुहागा सोंठ ले गंधक अरु जैपाल ॥ पारो सबै मिलाय के करि एकत्र विशाल ॥ घृत मिश्री के संग नर मासे भर यह खाइ ॥ शीतल जल ऊपर पिये जितना पिया जाय ॥ उदर शुद्ध नीके करै यह कोई गुन आइ ॥ आव मूल अनाह ज्वर बल पुनि जाइ ॥ इति विरेचन ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

अथ तोल भेद ॥ दो० ॥ जानो जाहि औषध लखै
ताहि तोल परमान ॥ तासों क्रम से ही कहों तोल
को करत बखान ॥ १ ॥ तोल होय द्वै भांति की माग
ध और कलिंग ॥ मागध पुण्य कलिंग के ताको करत
प्रसंग ॥ २ ॥ चौ० कहिये प्रथम तीस परमान ॥ तिन
को चारि विसरेष जाने ॥ वह विसरेष दूसरा नाम
वही यह जावा अभिराम ॥ छेद झरोखा में जो ल
खावे ॥ तामधि सूरज किरन जो आवे ॥ तामधि उ
डत धूरि जो देखे ॥ वंशी वाको नाम विशेषै ॥ छः वं
शी की मरीचिका जानो ॥ छः मरीचि का राई मानो
राई तीनि की सरसों एक ॥ सो जव चारि की गुञ्ज
एक ॥ छः गुंजा को मासा जानो ॥ मासा फेरि नाम
दुइ मानो ॥ हेम एक है धन्या जानो ॥ मासा चार
सुनिय परमान ॥ धरती विषम टंक परमान ॥ ४
टांक दोय कोल पद लावे ॥ छः द्रम क्षुद्रम टंक कह
वे ॥ दुइ कोल को कर्ष कहावे ॥ पानी नाम क नो
म सो पावे ॥ यह अक्ष पिक तंदुक जानो ॥ बहुरि
पान तान बखानो ॥ बहुरि विडाल पद कहिये
ताही ॥ षोड़षिका पुनि मानो ताही ॥ वह के मध्य
हंस पद होई ॥ अरु सुवरन कवल ग्राह होई ॥ घटे
उखरद हमि कहिये बारव नाम ॥ ताहो करि ध
रिये दोय कर्ष है पल होत ॥ ताही सकुञ्चि अभीष्ट
पल गौसा दोय सुक्ति कर पल अभिराम ॥ शुक्ति
का अष्टक एक को नाम ॥ चातुर्थक कहिये ता
हिये ॥ बिल्व मकुञ्चित षोड़सा ताहि दुइ मष्टिक

और कुडव अंजलि ठहराव ॥ अंजलि दुहू की मान के कहो ॥ लीजे समुझ तोल है यही ॥ चारि टका भरि अर्द्ध पुराव ॥ आठ टका भरि पूरा ठहराव ॥ दुहू पुराव की प्रस्थ बखानो ॥ चारि प्रस्थ को आढक जानो ॥ आढक नाम सुनो करि हो भल ॥ भाजन केस पात्र चौसठि पल ॥ आढक चारि द्रोण कहि देई ॥ द्रोण नाम तेहू सुनि लेई ॥ नल्वन मण अल सकटावे ॥ घन उन्मान राशि मन भावे ॥ दोइ द्रोण को कुंभ कहावे ॥ सूर्प नाम बाहि पुनि आवे ॥ दुहू सूर्प की गोण कहावे ॥ गोणी चार कहावे खार ॥ तासों तोल इन मधि निरधार ॥ चार हजार टका भरि लेउ ॥ और खानि के ऊपर देउ ॥ राइ चारि को योग प्रमान ॥ जान लीजिये चतुर सुजान ॥ दोपह चारि टका भरि जासु ॥ भार कहत है मुनि जनि तासु ॥ सौ टका सा भरि जो होय ॥ तुला कहत तासों सब कोय यह विधि इहि सब तोल प्रमान ॥ ताकी कीन्हो सरस बखान ॥ अरिल ॥ मास १ टंक ४ सुकच्छ १६ पिल १९० चित ल्याइये ॥ कुडव १५६ प्रस्थ २६४ राशि २४८६ तोल प्रमान इति आनिये ॥ वरिहहूं सी अ तोलि चतुरगुन मान सो जानिये ॥ ५ ॥ ५ ॥

इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचिते भाषा वैद्य रत्ने पञ्चमो प्रकाशः ॥ ६ ॥ ५

अथ अजीरन कांड लिख्यते ॥ कटहर को अजीरण होय तो केला खाय ॥ केरा को अजीरन होय तो घाव खाय ॥ घृत को अजीरन सीयकोमड

पीवै मेथी का अजीरन होय तो नोन खाय नोन का अ
जीरन होय तो चावल का धोवन पीवै के वासी महेरी
खाय पापर के अजीरन में मीठा खाय सहन नेके कुआ
माटा लडुआ सहारी गो खाड पचवे को पीपरामूर
को अवलेह नरियर तारफ पचवे को चांवल धोवन है
दो०॥ होय अजीरन आंव को करिये दूध को पान ॥
पचे चिरोंजी हर्र सव यह है बात प्रमान ॥ महुवा
वेल खजूर अरु वेल फल चार ॥ नीम वीज सों यह पचे
के घृत सों यह विचार ॥ पीपर वर ऊमर वड़हरि जो
या के फल खाय ॥ और सिंघाड़ा आदि को सीतल
सलिल पियाय ॥ ३ ॥ चौ०॥ जवहिं अजीरन वडुभ
च वाई ॥ अजमोदा पीपर जव खाई ॥ साठी का जदही
को पानी ॥ मांस पचे तुस जल सों जानी ॥ दोहा ॥ १
गोंहू ककरा सों पचे उर्द मठा के संग ॥ चना पचे मूरा
न सों यह देखे यह रंग ॥ मूंग आंवरे सों अजमोदा सु
नु वारि ॥ उरद खांड़ सो पचत है कुलथी तेल विचारि
॥ सेवै तू त वदाम ही पिस्ता दाख विचारि ॥ इन को होय
अजीरनो लौंग करो उर धार ॥ ६॥ सामा पसवाई का कु
नी को हर मेथि वनाउ ॥ इन को होय अजीरनो तीनी रह
ही को प्याउ ॥ वहुत खाइ हररे कोई तो होय अजीर
न और ॥ ताहि वेल के पात सों रस पियाउ निचोर ॥ ७॥
सीतल जर नीर मिठाई काजै ॥ खिचरी को रोपी सिर
ताजै ॥ नीम मूल सोद उर हर मड ॥ पैसा कर सा मूंग
के मंघा ॥ दो०॥ गहन अचंभव खाइ के पिये मास स-
ज जाइ ॥ भूंजी मछरी मास को पचे पचे अचंभो खाइ ८

बेलकी तेरू बावरि के पार कारष की उतारि ॥ ताके
खाये कहत हीं सख साल नख वष जाइ ॥ सर सौ
वपुश्रा चिंच को होइ अजीरन जाइ ॥ जर औष
धि विष खपर की वैद पिवावे ताहि ॥ ११ ॥ परव
अंकुर बांस के बहुत करेला खाय ॥ सोऊ सोहि
काथ सौ तुरत बिदा ह्वै जाइ ॥ चौपाई ॥ मछु
री पचै आम फल खाय ॥ कछुवा जवाषार सेभ
इ ॥ नील कपी खग खाइ कपोतु ॥ कुस की डार-
सौं इन की भौत ॥ सूरन पचै जबै गुरु खाइ और
चांवल धोवन को प्याइ ॥ पचै बिडारू को टो खाये ॥
पचै कसेरू सोंठि चवाये ॥ दूध गाय या भैंस को
मठा पिये पचि जाय ॥ भैंस दूध सौं धोवई अरु ९
चूरन दधि खाय ॥ १५ ॥ सिखरन पचै त्रिकुट के
खाये ॥ जवाखार तेहि बताये ॥ ताही सों सिग
वान्हे जाय ॥ नोन पढाई दाईया पचै ॥ पचै ख-
टाई नोन हरर चौरूप सों ॥ चिकनाई रूष सों ९
खाइ ॥ औषधि यही परसपर जानों ॥ मुनिय
न कही बाचन पर मानों ॥ दोहा ॥ सत बेर ता
को करइ नोन नीर बुझाइ ॥ यह पानी पीवे तबै
नीर अजीरना जाइ ॥ सोने के नीर को होइ अ-
जीरन केरि ॥ चाटे मोषा सहत सत मुन जन बरनी
हेरि ॥ गुन जो अरुण कोइ कै पुनि सुनि ये ९
सब कोइ ॥ भली भांत जाने जु यह वह नर दु
खी न होइ ॥ १८ ॥ बीस प्रमेह क्यों न कहते
है अथ बीस प्रमेह ॥ रक्त प्रमेह वह मूत्र-

प्रमेह २ चिनिया प्रमेह ३ पिय प्रमेह ४ पाठा प्रमेह पित्त प्रमेह ६ सवज प्रमेह ७ लिलकट प्रमेह ८। लासा प्रमेह ९ पीच प्रमेह १० सवज प्रमेह ११ वहुसुधा प्रमेह १२ सी प्रमेह १३ अग्नि प्रमेह १४ रेत प्रमेह १५ सुर्ख प्रमेह १६ ऋरत्वातके असाध्य हैं॥ इति प्रमेह वर्णनम॥

इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचिते भाषा वैद्य रत्ने सप्तमो प्रकाशः॥७॥

अथ स्वयंवर चूरणम॥ दारवां का वक्कल १२ लिंतरीक १२ तज १२ इलायची १२ लोंग १२ कपूर १२ वंशलोचन १२ सोंठ १२ पीपर १२ मिरच १२ कंकोल १२ सहदेई अरडू की जर १२ नाग केसर १२ विधारा १२ तालीस पत्र १२ काला जीरा १२ सुफ़ेद जीरा १२ जायफल १२ जावित्री १२ कस्तूरी रत्ती १२ वारडा १२ आंवला १२ अजमोद १२ गुलशकरी १२ गुरच १२ तगर १२ धनिया १२ चंदन १२ पीपरा मूल १२ पुहकर मूल १२ अजवाइन १२ मिश्री धेला भर॥ इति चूरणम्॥

अथ अंजन॥

फुल्ली हरका बंद करने का॥

गेहूं लोंग कपूर बेहया हाद स्त्री के दूध सें रगड़े तो जाय जब चाहै तो लगावे नीकी होय॥

अथ तेल प्रसूति

तेल थरंड टका ४ काकड़ा सृंगी टका ४ अफ़ीम टका ४ शिम्रफ़ट टका ४ करिहारी टका ४ गोरोचन

टका ४ संभालू टका ५ तेल विधान से बनावै मस्-
ति रोग जाय ॥ इति तैल विधानम्

इन्द्री जुलाब

रवत चीनी १२ जवाखार १२ चूरन करि पुरियाती न करे और गाय के मठा संग पिये तो इन्द्री झार होय ॥

इति श्री गोस्वामी ज-
नार्दन भट्ट बिरचि
ते भाषा बैद्यरत्ने
अष्टम प्रकाश
सम्बत्
१९४५
शु
भ
म

सूचीपत्र



ज्ञानसूर्य्योदय

जिसमें बड़े २ प्रमाणों और सुबूतों और दलीलों
भली प्रकार सिद्ध किया है कि इस दुनियाँ को ब
नाने वाला कोई ईश्वर नहीं है
बल्कि अनादि से ऐसी ही
चली आती है
संसार का कर्ता कोई भी नहीं है इसका
हेडिंग (शीर्षक या अनवान) देखते ही
आप को इससे
नफरत
होगी

लेकिन इसके सुबूत देखने पर आप को नफरत
हुम दबा जायगी इस लिये एक दफे शुरू से आखीर
तक पढ़तो अवश्य लो मानना चाहे न मानना

मुअल्लिफ़ (कर्ता) ज्वालाप्रसाद एल.
पी. जे. बुंदेले तत्पुत्र परमेश्वरीलाल
निवासी कायमगंज

प्रथम बार २५० जि०) (मूल्य प्रति पु० ।) आना

क्षमा १

सब पाठक जनों से निवेदन है कि यदि इस पुस्तक में किसी स्थान पर
प्रकार की त्रुटि- भूल - गलती - तौहीन आदि होगई हो तो सेवक को सू
करें ताकि तबाहे सानी (द्वितीय बार छपने में) में उसकी दुरुस्ती क
जावे - बल्कि स्वयं सभाल लें तो मैं निहायत ही मशकूर और ममन
होऊंगा - लालता प्रसाद बुंदेला जैन कायम गंज -

प्रार्थना २

छपने में समय अधिक लग जाने के कारण हमारे पाठक महाशयों को
कुलता के साथ बाट देखना पड़ी उसकी क्षमा मांगता हूं -
लालताप्रसाद बुंदेला -

निवेदन ३

छपने ही की देरी के कारण इसकी कापी को शोध नहीं पाया जिससे
गलतियां हो गई हैं हमारे अज़ीज़ पाठक वृन्द उन को भी सभाल
तो मैं निहायतही धन्य वादित होऊंगा - लालता प्रसाद बुंदे

अर्ज़ ४

भूल में कानूनन कोई ना जायज़ बात छप गई हो तो दास को उस से
इत्तिलाय दें - ताकि उसकी भी दुरुस्ती करदी जावे -
लालता प्रसाद बुंदेला -

गुज़ारिश ५

इस पुस्तक को शुरू से आखीर तक (आधो पाति) एक दफे पढ़
और जहां तक हो सके इस के सुबूत और दलीलें ज़बानी या
करलें ॥

लालता प्रसाद बुंदेला

दीबाचा

मुझे इस बात का बड़ा भय है कि लोग इस पुस्तक के शीर्षक (हेडिंग) को देखते ही इससे घृणा करने लग जावें गे क्योंकि इस पुस्तक में ईश्वर का न होना सिद्ध किया गया है और सर्व पुरुषों के मन में ईश्वर मज़बूती के साथ जमा हुआ है - और अधिक तर डर इस कारण से है कि कि इस पुस्तक के पढ़ने वाले हिन्दुस्तानी ही होंगे - और यह लोग लकीर के फकीर प्रसिद्ध ही हैं - परंतु ऐ पाठक गणों ! मेरा यह लेख आप के सन्मुख ऐसा है - जैसा कि भारत में रेल जारी होने के प्रथम ही यह सुनाना कि एक ऐसी सवारी है जो हज़ारों मन बोझ और हज़ारों आदमियों को एक घंटे में सौमील ले जाती है और उसको कोई जानवर नहीं खींचता है आप से चलती है - या तार (टेलीग्राफ़) प्रचलित होने के पहिले यह खबर सुनाना कि एक पल के बहुत छोटे भाग एक लाख कोस खबर पहुंचाने वाला एक चिट्ठी रसां है तो आप को कैसा आश्चर्य्य होवेगा और उसको झूठा ठहिराओगे - लेकिन यह सब बातें आप को मालूम होगई हैं इससे आप का आश्चर्य्य जाता रहा - जिसबात को आप किसी समय में झूठ मानते और जिसका सुनना भी आप पसंद नहीं करते उसी से कितने बड़े लाभ आप उठा रहे हैं - इस जिन्दगी में आप ने इन से (रेल व तार व खुर्दबीन व बहिरा मेटर थरमा मेटर आदि) बड़े २ लाभ उठाये होंगे - अंगरेज़ों ने जो सैकड़ों कलें बनाई हैं - और इस समय सब से अधिक बुद्धिमान गिने जाते हैं इसका कारण यह है कि वे नई बातों की खोज में रहिते हैं - और नई बातों के तलाश करने

का शौक है और नई बात को सुनकर हिन्दुस्तानियों की तरह नहीं उछल पड़ते हैं बल्कि उसपर बहुत कुछ बिचार करते हैं - यदि वह बात ठीक मालूम होती है तो उसको मान लेने में किसी तरह उज्र नहीं करते - चाहे पहिले उसबात को वह न मानते हो - और चाहे उनके धर्म के भी वह बात बिरुद्ध हो लेकिन उनको ठीक मालूम होतो वह फौरन ग्रहण कर लेते हैं - सो ऐ मेरे बुद्धिमानो भारत वासियो इस पुस्तक को पढ़तो अवश्य लो मानना न मानना आप को इख्तयार है यह बात ठीक है कि आप को ईश्वर का कर्ता मानना बाल्य अवस्था ही से सिखाया गया है = और ईश्वर का कर्ता न होना अभी सुनोगे - मगर यह क्या ज़रूर है कि जो बात पहिले सुनी हो वह सत्य हो और पीछे सुनी हो वह असत्य हो - नहीं बल्कि बुद्धिमानों का यह काम है कि दोनों को परखें जो सच हो वह ग्रहण करें चाहे वह बात पहिले की हो चाहे अभी सुनी हो इसमें आप का कुछ बिगड़ता नहीं यदि ऐसा मानोगे तो बड़े लाभ की प्राप्ति होगी ।

हां इतना अवश्य आप को भय लगेगा कि ऐसा मानेंगे तो धर्म कर्म हमारा सर्व नष्ट होजावे गा - और कोई मत भी नहीं रहना ला मज़हबी आती है - मगर साहिबो मैं आप को यकीन दिलाता हूं कि इसको मानने से धर्म कर्म और मज़बूत होता है और नेक कर्म और धर्मात्मा बनना होता है और परमेश्वर को मानने की हालत में धर्म और नेक कर्मों में बड़ी खराबी आती है - और आ रही है - आमतौर पर इसबात का आश्चर्य होगा कि ईश्वर को न मानते हुए धर्म कर्म क्या हो सक्ता है परंतु यह बात ऐसी ही आश्चर्यान्वित है जैसी इस पुस्तक को पढ़ने से पहिले ईश्वर का नहोना आश्चर्यान्वित है जैसे छोटा बालक जब कुछ

बिगाड़ का काम करता है और कुछ दंगा फिसाद करता है तो उसके माता पिता उस बिगाड़ के काम से उसको हटाने के लिये उसको डराते हैं कि तू ऐसा काम करेगा तो लुल्लू या हौआ आकर तेरे नाक कान काट लेगा ऐसे ही बुरे कर्मों से बचाने के लिये यह परमेश्वर का भय दिलाना लुल्लू या हौऐ की तरह से झूठा है परंतु जैसा कि लुल्लू के झूठ होने और बुरे काम से जानकार होने पर वह बुरा काम छोड़ दिया जाता है इसी तरह ईश्वर के न होने से जानकार होकर शुभ और अशुभ कर्म की असलियत को जानकर और गुमराही (भटकने) और धोके से छुटकर आदमी धर्म की तरफ पहिले से अधिक तरक्की करेगा और यह तरक्की सच्ची होगी इस पुस्तक के दो हिस्से हैं - प्रथम हिस्से में यह सिद्ध किया है कि ईश्वर ने दुनिया नहीं बनाई और कहां से आई - और इसका काम किसतरह पर हो रहा है और दूसरे में यह सिद्ध किया है कि ईश्वर के मानने में क्या दोष हैं - और क्या २ मुश्किलें पेश आतीं हैं और आवा गमन क्या है - मरने के बाद आत्मा फिर शरीर पाती है :-

पाठक गणों ! से निवेदन है कि मुमकिन है कि किसी बात के प्रमाण और खंडन के विषय कुल दलीलें एकही स्थान पर न दी गई हों इस वास्ते इस पुस्तक को शुरू से आखीर तक अवश्य पढ़ले किसी एकही प्रमाण या दलील को पढ़कर अपनी सम्मति न स्थायें और कुल पुस्तक को पढ़ने के बाद निर्पक्षी हो कर कुछ इसपर विचार करें फिर जो राय हो उसको क़ायम करें अगर किसी साहब को यह प्रमाण मिथ्या सिद्धि हों तो मुझ को सूचित करें मैं उनका धन्य वादित हौऊंगा - क्योंकि मुझ को पक्ष से रहित होकर सत्य की खोज करना है ॥

लालता प्रसाद एल· पी· जे· स्थान
कायम गंज जिला फर्रुखाबाद
पश्चिमोत्तर देश

छोटी पुस्तक क्यों रची - इसलिये कि दोनों तरफ लोग लाभ
उठावें · छपाई कम लगे · छपाई में वक्त कम लगे · कागज़ क
म · पढ़ने में समय कम लगे · मूल्य कम · डाक महसूल कम
पोष्ट मैन को बोझ न उठाना पड़े - पाठकों को घंटों सिर दर्दी
न करना पड़े - मुखालिफों का दो २ ही बातों में मुंह बंद होजा
वे - ज़ियादा न बकना पड़े - पुस्तक भर में एक दलील भी अ
च्छी हाथ लग जावे तो दाम वसूल समझो सो इसमें तो एक
२ दलील और सबूत पुस्तक के मूल्य के बराबर है -
दाम वसूल समझना चाहिये - पुस्तक का मूल्य और आका
र देख घबड़ाना न चाहिये - इसके सबूतों और दलीलों
की प्रशंसा करनी चाहिये यदि बड़ी पुस्तक से रुचि होतो
चार आने के कोरे कागज़ इसकी पुश्त पर और अधिक लगाकर
सीलो आपका मतलब भी निकल जावे - पुस्तक की मोटा
ई नहीं देखना चाहिये उसके मज़मून पर गौर करना चाहिये
ऐसी उत्तम पुस्तक यदि आप इसको हस्त लिखत खरीदते तो
आप के पांच सात रुपये से कम नहीं व्यय होते - रुपयों का काम
आने देरहे हैं - हर जैनी को यह पुस्तक मगाना चाहिये - इस पवि
त्र पुस्तक से किसी भाई का भी घर खाली न रहना चाहिये - हाथों
हाथ बिक रही है शीघ्रताई से मगाओ नहीं तो द्वितीय बार छपने
की राह [illegible] पड़ेगी - मूल्य भी कुछ अधिक नहीं है मगाओ
[illegible] अच्छा देर मत करो - आठ आने की कोई बड़ी बात नहीं है

पुस्तक इस पते से मगाओ

लालताप्रसाद एल·पी·जे
(तत्पुत्र परमेश्वरी लाल (बुदेले) जैन)
स्थान कायम गंज
ज़िला फ़र्रुखाबाद
(पश्चिमोत्तर देश)

पहिला परिच्छेद

१ अध्याय

यह दुनियां कबसे है और किसतरह चलरही है

प्रकृति

मैंने संसार में मनुष्यों के मुख से चार चीज़ें अर्थात् आग[1] वायु[2] खाक[3] पानी[4] सुनी हैं और इन्हीं चारों से पृथ्वी गढ़ी गई है परंतु बिचार करने पर इसके बिरुद्ध पाया -

देखिये ! पानी जमकर वर्फ़ एक ठोस चीज़ बन जाती है वृक्ष पानी पीते हैं और उनकी लकड़ी बन जाती है पानी आग की गर्मी पाकर हवा होकर उड़जाता है दो प्रकार की हवा आक्सजन और हैड्रोजन के मिलाने से पानी बन जाता है और रांग चांदी सोना आदि आग की गर्मी से पिघल कर पानी बनजाते हैं पत्थर से पत्थर और लकड़ी से लकड़ी रगड़ने पर आग पैदा हो जाती है जहां तक खोज लगाते हैं इन चारों चीजों को एक दूसरे से हालत बदलते हुए देखते हैं इससे यह बात सिद्ध हुई कि चारों चीजें एक दूसरे से प्रथक •

हैं वल्कि एकही वस्तु की चार हालतें हैं कि कभी एक हालत हो जा ती है कभी दूसरी हालत कभी तीसरी इत्यादि जैसे एक सोने के चार आभूषण आरसी · कंगन · हार · लटकन हैं और इनमें से चाहें कि सी को गलाकर एक से दूसरा भूषण बना सक्ते हैं जैसे आरसी गला कर कंगन और कंगन गलाकर हार और हार गला कर लटकन इत्यादि किन्तु वास्तव्य में वस्तु एकही है एकही वस्तु की चार हालतें होसक्ती हैं और उस वस्तु का नाम लोगों ने प्रकृति रक्खा है इसलिये हम भी इसी नाम को पुकारेंगे इस प्रकृति को अजी ब २ शक्लों और सूरतों में हम बदलते हुए देखते हैं परंतु इसमें दो बातें अवश्य पाते हैं (१) यह कि यह प्रकृति जब बदलती है तो उसकी शक्ल अवश्य होती है यानी असलीयत नहीं होती (२) यह कि प्रकृति न कभी नई पैदा होती है और न कभी मिटती है बल्कि इस दुनियाँ में जितनी नई चीजें पैदा होती हैं वह नवी न नहीं पैदा होती हैं वल्कि प्रकृति की एक हालत से दूसरी हा लत होजाती है और वह ही नई चीज मालूम होने लगती है दुनियाँ की जिस वस्तु को दृष्टि फैला कर देखो हर जगह यही बा त पाई जावेगी जैसे कि वृक्ष कहां से आये मिट्टी पानी हवा बीज आदि से बनता है इनके बिना नहीं बन सक्ता है वही पें ड़ आग धुआं राख आदि की शक्ल में हो जाता है या गलकर मि ट्टी बन जाता है गरज़ कि बिना वस्तु के कोई नई वस्तु नहीं बन सक्ती अंगरेजों ने लकड़ी को तौल कर और उस स्थान की हवा को भी तौल कर जलाया है फिर जब लकड़ी जलगई तो फिर उसकी राख को तोला और जहां जलाई थी उस जगह की हवा को भी तोला तो कुछ भी न कम बढ़ न हुई बराबर ही पाया यानी जब राख तोली गई तो लकड़ी से कम हुई परंतु

जब हवा को तौला तो जियादा होगई उतनी ही ज़ियादा होगई जितनी लकड़ी की राख में कमी आई पस कम बढ़ कुछ नहीं हुआ बल्कि हालत बदल कर हवा की शक्ल में आगई एक ज़रा भी कोई चीज़ घटी बढ़ी नहीं दूसरी बात यह देखने में आती है प्रकृति को कोई सी चीज़ क्यों न बने कोई न कोई शक्ल उस वस्तु की अवश्य होगी यानी प्रकृति बिना शक्ल के नहीं रह सक्ती है और जब उसकी शक्ल है तो उसमें रंग भी अवश्य होगा और जब रंग शरीर आदि उसमें है तो उसका नाम भी अवश्य होगा ऐसे ही और अन्य गुण हैं कि उस में सदा होते हैं इससे यह सिद्ध हुआ कि प्रकृति न कभी पैदा होती है और न कभी मिटती है शक्ल (शरीर) रंग (वर्ण) नाम आदि उसके असली गुण हैं जो सदा उसके सथ रहिते हैं और कभी अलग नहीं होते - यानी प्रकृति अनादि है इसको किसी ने पैदा नहीं किया और न कोई मेट सक्ता है ॥

२ अध्याय

अजीव वस्तुओं (वे आत्मा) के गुण

दिया सलाई के रगड़ने से क्यों आग पैदा होती है यदि रगड़ने वाले ही में आग पैदा करने की शक्ति होती तो और चीज़ों मे भी उत्पन्न कर सक्ता था या जेब में पड़ी हुई दिया सलाई अजान में रगड़ पाकर जल उठती है इससे यह सिद्ध हुआ कि रगड़ने से दिया सलाई जलउठती है और मिट्टी में यह गुण है कि आग में पक कर बहुत कड़ी (सख़्त) होजाती है और लाल होकर फिर काली होजाती है - कागज़ को आग पर जला कर कोई सख़्त नहीं

कर सक्ता है एक लकड़ी को दूसरी लकड़ी पर रखकर ठोकें तो दोनों जुड़कर एक हो जावें गी - परंतु रितिया को रितिया में ठोकर नहीं जोड़ सक्ते हैं इसी प्रकार परीक्षा करने पर दुनियां की वस्तुओं में यह मालूम होता है कि इन वस्तुओं में यह गुण है कि इनमें खास कार्य्य वाई करने से खास हालत हो जाती है यानी खास वस्तु बनजाती है जैसा कि नीला और पीला रंग मिलाने से हरा रंग बन जाता है दुनियां में जितनी चीजें दिखाई देती हैं वह इसी तरह पर बनी हैं कि एक चीज़ में सदा उलटन पुलटन रहिता है और एक दूसरे से मिलती बिछुड़ती रहती है और इसमें यह गुण है कि इस तरह मिलने बिछुड़ने और उलटन पुलटन से एक नई और बिलकुल निराली तीसरी चीज़ बन जाती है मिश्री के कूज़े को देखो कि उसके पहिलू कैसे इकसां और दर्पण वत चमकीले होते हैं मगर उनके पहिलुओं को कोई नहीं बनाता और न उनको चमकीला बनाता है चाशनी करके प्याले में टेढ़ा कर के रख देने पर कुछ शीरा उसका टपक जाता है और बाकी वही प्याले में जमकर ऐसे पहिलू और तरफें उसमें बन जाती हैं जिनको होशियार से होशयार से कारीगर हाथ से नहीं बना सक्ता यानी इन चीज़ों में अजीब २ कारीगरी की हालत में होजाने के गुण हैं मिश्री के कूज़े पर तो आश्चर्य होता ही है लेकिन जब वृक्षोंपर दृष्ट दौड़ाई और उनके उत्पन्न होने की तर्कीब बिचारी तो सर्व आश्चर्य जाता रहिता है और यह समझा कि जैसे दो हवाओं के मिलने से पानी बनता है वैसे ही और भी अजीब २ हालतों में पैदा होने की तर्कीब को देखा तो मालूम हुआ कि उनमें यह गुण स्वयं ही मौजूद हैं ॥

पेड़ किसतरह उत्पन्न होता है किसी खास वृक्ष के बीज को उस की खासियत के मूजिब हवा पानी मिट्टी धूप मिलें तो पेड़ बनजाता

है उसमें डालियों से फल फूल पत्ते आदि अजीब कारी गरी यां हो जाती हैं और यह कारीगरियां उससे भी अधिक तर हैं जै सी कि मिश्री के कूज़े के टुकड़े में थीं - और जैसे कि वह टुकड़ हलवाई ने नहीं बनाया चाशनी को एक खास हालत में रखने से बनाये गये थे इसी तरह पेड़ के फल फूल पत्ते डाली भी कोई न हीं बनाता है बल्कि बीज को हवा पानी मिट्टी धूप उसकी खा सियत के माफ़िक़ मिलने से बन जाते हैं इन चीज़ों की खासिय त ही के वजह से ऐसी बारीक कारी गरी की चीज़ें बन जाती हैं जिसको होशियार से होशियार कारीगर नहीं बना सक्ता है पुरुष के शरीर में पेड़ों से भी अधिक कारीगरी पाई जाती है एक आंखही की कारीगरी को देख बुद्धि चकराती है और है रान होती है और कुल शरीर को देखकर तो अक्ल और भी चकराती है परंतु जब मनुष्य के शरीर की पैदायश को देखते हैं तो वह भी मिश्री के कूज़े और पेड़ की मानिंद मालूम होती है जैसा कि हर प्रकार के पेड़ को एक खास प्रकार की ज़मीन चाहि ये - जैसे बाज़े वृक्ष खाद से बढ़ते फूलते हैं बाज़े रेत में इसी तरह हर जानदार के बीज के वास्ते भी एक खास प्रकार का पेट चाहिये जिस में बह परवरिश अर्थात् पल कर तैयार होकर पैदा हो - और जैसे कि गले हुए या सड़े बीज या और प्रकार के खराब बीज से दरख़्त पैदा नहीं होता - इसी तरह पुरुष के भी खराब वीर्य्य से गर्भ स्थिति नहीं रहिता फिर जैसा कि खांड की चाशनी को एक खास तरह पर रखने से ही मिश्री का कूज़ा बन गया इसी तरह पुरुष का वीर्य्य भी पेट में (गर्भाशय में) एक खास तौर पर रक्खे जाने से बालक बनता है इन बातों के विचार करने से साफ़ मालूम हो गया कि दुनियां की चीज़ों में

यह खासियत है कि किसी खास तर्कीब में होने से या किसी खास चीज़ के मिलने से ऐसी चीजें पैदा होती हैं जिनके देखने से आति आश्चर्य होता है कि यह किसतरह से अई इससे यह सिद्ध हुआ कि सब कुछ आपही आप पैदा हो जाता है आदमी की करतूत से ईश्वर कुछ नहीं करने आता है

३ अध्याय

प्रकृतिका मिलना बिछुड़ना

जब बर्षा होती है तो भूमि की सारी धूल जोकि उसपर होती है जाती रहती है और रेत (रेग) दीख पड़ता है इसका क्या कारण है? धूलमें रेत और चिकनी मिट्टी मिली रहती है चिकनी मिट्टी में यह खासियत (स्वभाव) है कि पानी में घुल जाती है और रेग अर्थात् रेत नहीं घुलता इसलिये धूल में जितना रेत होता है वह तो भूम पर पड़ा रहता है और चिकनी मिट्टी पानी के साथ बहि जाती है ॥

पानी का यह स्वभाव है कि वह नीची तरफ़ को बहिता है इसलिये उसे जिसतरफ़ नीची जगह मिलती है बहिता चला जाता है आख़िर एक स्थान जहाँ नीचा होता है और जहाँ से बहिने को पानी निकलने को रस्ता नहीं मिलता है वहाँ ठहिर जाता है और वहाँ पर धूप की गर्मी से धीरे २ पानी सूख कर ऊपर चला जाता है यानी धुएं की शक्ल में होकर उड़ जाता है और चिकनी मिट्टी वहीं रह जाती है ऐसी जगह को तालाब या पोखर कहिते हैं

ज़मीं। पानी की इस कार्य्यवाही पर गौर करने से तो एक नई बात

मालूम ऊई यानी पानी बे जान (निर्जीव) ने अपने ही गुण और
स्वभाव से रेत और चिकनी मिट्टी को अलग २ कर दिया और अपने
साथ चिकनी मिट्टी को घोल लिया — अपने आपही रस्ता ढूंढता
ऊआ बहिता चला गया और मार्ग को नीचा बना दिया और तालाब में
आकर चिकनी मिट्टी जमा करदी और धूप एक बे जान वस्तु की खा
सियत से हवा होकर उड़गया इसी तरह बाज़ी दफे धूप की गर्मी से
छत ऊपर की तरफ से फटजाती है और उसमें दरारें होजाती हैं —
पानी जो बरसता है और चूंकि उसकी खासियत (स्वभाव) यह है
कि ढाल की तरफ को जाता है इस वास्ते उन दरारों में भरजाता है
और फिर वहां से ढाल (नीची) की तरफ को बहिता ऊआ और कु
छ रुकता ऊआ कड़ियों में (धन्नों) पऊंचता नीचे जा गिरता है
और कड़ियों को गलाकर बोदी अर्थात् खराब कर देता है और नी
चे गिरा देता है इसी तरह नदियों का पानी बीच की मिट्टी को तोड़ता
और हटाता ऊआ निकलता चला जाता है और उस मिट्टी को स-
मुंदर तक पऊंचा देता है दूसरे अध्याय में सिद्ध होचुका है कि दु
नियां की चीज़ों में ऐसी खासियत है कि वह एक खास तर्कीब में लाने
से या खास तौर पर इगनी वस्तु दूसरी वस्तु में मिलने से एक नई
वस्तु पैदा कर देती है अब हम को यह भी साबित (सिद्ध) होगया
कि पानी में ऐसी खासियत है कि वह खास वस्तुओं को किसी
खास विधि में कर दे या कुछ चीज़ों को खास तौर पर मिलादे या अलग
कर दे जिससे बिलकुल नई हालत पैदा होजावे इसी तरह अब
हवा पर दृष्टि डालते हैं तो उसकी भी यही कैफ़ियत पाते हैं हवा क
ही की वस्तु को उठाकर कहीं डाल देती है और फिर वही नई चीज़
दूसरी वस्तु से मिलकर नई हालत पैदा करती है जैसा कि हवा ने
किसी वृक्ष का बीज उड़कर नमी के स्थान पर डाल दे और वहां पर एक

वृक्ष निराला बिना बोये फल फूल पत्तों दार पैदा हो जावे या कहीं से आग की चिनगारी उड़ा कर लेजावे और किसी ग्राम में डाल दे और वह ग्राम बजाय मकानों के खाक का एक ढेर होजावे - यानी सब को जलाकर खाक में मिलादे - यह हवा मकानों और वृक्षों को गिरादेती है बादलों को उड़ाकर कहीं का कहीं ले जाती है ग़रज़ कि हवा भी पानी की तरह चीज़ों को मिलाने छुटाने का काम करती है और उनकी हालतों के बदलने और नई वस्तुओं के पैदा करने का कारण होती है इसी प्रकार आग भी सहस्त्रों प्रकार के काम आती है धूपही को देखिये जिसका वर्णन प्रथम हो चुका है कि तालाब में जब गदला पानी जमा हो जाता है तो धूप उस गदले पानी में से साफ़ २ पानी को हवा बनाकर उड़ा ले जाकर ऊपर जमा (इकट्ठा) कर देती है और जब आकाश में वे परमाणु एक दूसरे से मिल कर भारी हो जाते हों तो पानी बरस पड़ता है और कभी २ उसके ज़र्रे (परमाणु) बहुत से इकट्ठे हो जाते हैं तो वह ओले कहिलाते हैं और चिकनी मिट्टी को तालाब में छोड़ देती है इसी तरह यह धूप समुन्दर और अन्य २ स्थानों के पानी को भाप बनाकर ऊपर उड़ादेती है - जिसके बादल बनते हैं और नगरों में बसकर अजीब २ वृक्ष पौधे - फल - फूल आदि उत्पन्न करते हैं धूप की गर्मी से हवा फैल जाती है और वेग (आंधी) चलने का कारण होती है इसी लिये आँधी और बरसात गर्मी में बहुत होती है धूप बहुत से वृक्षों को पालती है और बहुतों को सुखा डालती है - इसी तरह मिट्टी भी बहुत से काम आती है हवा जिस बीज को कहीं से उड़ाकर मिट्टी में डाल देती है तो मिट्टी अगर उसको पानी मिलता है तो ख़ुद उस बीज की ख़ुराक बनकर वृक्ष बन जाता है - और यदि पानी नहीं मिलता और बीज ख़राब

है या मिट्टी खारी आदि होजाती है तो उस बीज को भी मिट्टी बना कर मिट्टी में मिलादेती है किसी स्थान की मिट्टी अगर ऊंची होती है तो पानी के चलने से रोक देती है ऐसे अवसर पर पानी और टीले का युद्ध होता है- पानी उस टीले में बैल के सींग की तरह टक्कर मार कर आगे जाना चाहता है और टीला उसको जाने से रोकता है और जैसे बैल का सींग लगने से घाव होजाता है ऐसा ही पानी की टक्कर से यह टीला कटकर बहि जाता है यदि यह बीला मज़बूत होता है तो पानी को रोक देता है और अगर कोई मनुष्य जंगल में मुंह खोले पड़ा होता है और कोई ज़हरीली मिट्टी उड़कर उसके मुंह में गिर पड़े तो वह मिट्टी पेट के अंदर जाकर तमाम पेट के कारखाने में गड़बड़ मचादेती है और तब हालत बद लने के कारण होती है- कि आत्मा शरीर से जुदी होकर उड़ जाती है तब मृत्यु कहलाती है ग़रज कि पानी हवा मिट्टी आग चारों चीज़ों पर ग़ौर करने से यह भले प्रकार सिद्ध होता है कि दुनियां की चीज़ों को मिलाने बिछुड़ाने और एक नई चीज़ पैदा करने की ताक़त इन चारों चीज़ों मे है और दूसरे अध्याय में सिद्ध हो चुका है कि चीज़ों में खास तरकीब होने से या ख़ास तौर पर मिलने से बिलकुल नई चीज़ें होजाया करती हैं इससे साफ़ तौर पर यह नतीज़ा निक ल आया कि यही चारों चीज़ें दुनियां की सब चीज़ें आप से आप पैदा करदेती हैं । कोई ईश्वर बनाने को नहीं आता है और यह चारों चीज़ें अनादि हैं । साइन्सदां (पदार्थ विद्या के जानने वाले) अच्छी तरह से जानते हैं कि पानी का बरसना · आंधी का चलना बादलों का गरजना · बिजली का तड़पना · कौंदे का लपकना · सर्दी गर्मी का होना · हवा का चलना · वृक्षों का उत्पन्न होना · चीजों का बनना और बिगड़ना · सूरज चांद सितारों का आकाश में एक दूसरे की

काशिश (आकर्षण) से हिलना रहना • ग्रहण का पड़ना • तारों का निकलना • सूरज का प्रकाश होना दिन और रात का होना अन्धकार और प्रकाश का होना आदि यह सब बातें आप से आप होती हैं इनको कोई ईश्वर या ख़ुदा बनाने बिगाड़ने नहीं आता या अपना दख़ल करने नहीं आता और जो साहब साइन्स को नहीं जानते वह यही कहते हैं कि मेह ईश्वर बरसाता है • आँधी ईश्वर चलाता है गर्मी ईश्वर कर देता है सर्दी ईश्वर कर देता है आदि तरह २ के संकल्प विकल्प पैदा करते हैं साइन्स को जानने वाले ख़ुद मान लेते हैं कि इसमें परमेश्वर की कोई करतूत नहीं है साइन्स का हाल मैं अपने मासिक पत्र में ख़ूब अच्छी तरह से करूंगा जो अब क़रीब ही (शीघ्र) प्रकाश करने वाला हूं और अन्य मतों की पुस्तकों की भी ख़ूब उधेड़ें और पड़तालें और ग़लतियां उक्त मासिक पत्र में की जावें गी जिन साहिबों को इस पत्र का ग्राहक बनना स्वीकार हो वो कार्ड द्वारा मुझे सूचित करें उनकी सेवा में नमूना भेजा जावेगा ॥ लालता प्रसाद एल पी • जे • स्थान क़ायम गंज ज़िला फ़र्रुखाबाद

४ अध्याय

जानदारों के नाम ॥

यह तो बार बार सिद्ध होचुका है कि किसी वस्तु की ख़ास तरकीब होने एक नई तासीर पैदा हुआ करती है आदमियों के काम क्या हैं बोलना हंसना • रोना • उठना • बैठना • चलना • फिरना • कूदना • भागना • आदि इनकी भी ख़ास २ तरकीब है इस वास्ते कामों में भी नई २ तासीर पैदा होती है मसलन सुस्त पड़ा रहने से आदमी कमज़ोर होजाता है व्यायम (वरज़िश) करने ताक़त आती है इसीतरह सच्चे पुरुष पर सब भरोसा करने लगते हैं कपटी से दूर

भागते हैं सत्यवादी का एतबार (विश्वास) होता है झूंठे का इत बार कोई नहीं करता इसी तरह हर प्रकार के काम अपनी २ ख़ासियत (स्वभाव व गुण) के बमूजिब असर पैदा करते हैं - अच्छी सुहबत (सत्संग) में रहिने से नेकी आती है बुरी संगति से बदी आती है पढ़ने से बुद्धि चैतन्य होती है बैल बकरी चराने या अकेला बैठे रहिने से बुद्धि जाती रहिती है अधिक अर्बी पढ़ने को ख़ासियत है कि लोग मौलवी कहैं संसकृत पढ़ने से लोग पंडित जी कहिने लगें हजामत का काम सीख लेने की यह ख़ासियत है कि अच्छे २ लोग सिर खोल कर आगे बैठें अगर कोई अमीर (धनवान) ही क्योंन हो लेकिन नादिहंद (उधार लेकर किसी के निबटाये ना) हो तो उसका यह फल है कि उसकी बात का कोई विश्वास नहीं करता उसको कोई एक पैसे की भी चीज़ उधार नहीं देता - और ब्यौहार के सच्चे को गरीब से गरीब को आधी एतक़ाद मिल जाता है ग़रज़ कि हर एक काम में अथक २ अजीब २ प्रकार के फल उत्पन्न करने की शक्ति है अलावह इसके पहिले अध्याय में ब्यान (वर्णन) हो चुका है कि जानदारों (जिसमें आत्मा हो) में सिवाय प्रकृति के आत्मा एक अलग चीज़ है चुनांचि हर काम जैसे शरीर के ऊपर की हालतों को तबदील बदल करता है और हर हालत की तबदीली से एक नया असर पैदा हुआ करता है इसवास्ते आत्मा की हालत में भी तबदीली होने से आत्मा को उसका असर भी उठाना पड़ता है बाज़े आदमी पैदायश ही से मक्कार (धूर्त) दग़ाबाज़ फरेबी - जाली - होते हैं और बाज़े इसके विरुद्ध होते हैं इसका कारण है कि पूर्व जन्मों का असर उनकी आत्मा पर पड़ता है - किसी वस्तु को खाओ उसका असर अवश्य पड़ेगा अच्छी वस्तु खाओगे तो अच्छा असर होगा बुरा

खाओगे बुरा असर होगा - इसी तरह आत्मा के कर्म आत्मापर अ-सर डालते हैं और भला बुरा नतीजा (फल) दिखाते हैं जैसा कि पहिले हाज़मा की चीज़ खाई उई के बाद कोई सक़ील वस्तु (जोजल्द हज़्म न हो) खाओ तो कुछ नुक़सान नहीं करती इसी तरह से पहिले के नेक कर्म आने वाले बुरे कर्मों के बुरे असर को ढांक सके हैं और पहिले के बुरे कर्म आने वाले अच्छे कर्मों को ढांक लेते हैं जैसे कि जिस औषधि में जो असर है खाने पर वही असर शरीर के अन्दर उत्पन्न करती है अपनी खासियत के बिरुद्ध नहीं करती इसी तरह आत्मा के कर्म भी अपनी २ खासियत के मुआफ़िक़ असर पैदा करते हैं देखिये गेहूं से गेहूं पैदा होते हैं चने नहीं होसके बाज़ बीज में यह खासियत है कि जल्दी उगता है बाज़ देर में इसी तरह किसी वृक्षमें छेमहीने में फल आताहै किसी में साल भर में किसी में पचास बर्ष में यही हालत कर्मों की है कि कोई आत्मा पर शीघ्र असर करता है कोई देरमें इस लिये एक जन्म के कर्म उस जन्म में भी असर पैदा कर सके हैं और अगले दूसरे तीसरे चौथे आदि जन्मों तक असर देते रहते हैं और फल दिखाते रहते हैं ईश्वर कुछ नहीं करने आता आपही करना आपही भरना होता है ईश्वर का कुछ दखल नहीं

५ अध्याय

दुनियां की कार्य्यवाई

जब मुझे यह बात सिद्ध होगई कि दुनियां की चीजें अपनी २ खासियत के बमूजिब दुनियां का काम करती हैं और नई नई हालतें पैदा करती हैं तब मुझे ख्याल उत्पा कि तमाम दुनियां का काम इसीतरह होता होगा इसवास्ते मैंने दुनियां के कामों पर भी

दृष्ट डाली -

यह बात सब जानते हैं गर्मी से पानी की भाफ बनकर ऊपर जाती है इसलिये धूप की गर्मी जो समुन्दर और नमी (गीली) की जगहों में पड़ती है उससे भाप उत्पन्न होती है और हलकी होने की वजह से ऊपर उड़ती है फिर चूंकि हवा हमेशा चलती रहिती है इस वास्ते हवा की वजह से भाप इधर उधर भी उड़जाती है और २ मुल्कों में पहुंच जाती है चुनाचि बादल (पयोधर) होता है और किसी तरफ की तेज़ हवा चलती है तो जिस तरफ़ हवा उड़कर जाती है बादल भी उसही तरफ़ उड़जाया करते हैं इस भाफ से जब इधर उधर उड़ने से किसी क़दर गर्मी कम हो जाती है तो मुश्किल से बादल दिखाई देते हैं और फिर ज़ियादा ठंडी होकर पानी बन जाती हैं और भारी होने के कारण हवा पर ठहिर नहीं सक्ती तो पृथ्वी पर गिर पड़ती है जिसको मेह बोलते हैं जल थल ऊंचे नीचे पहाड़ आदि जहां जहां यह बादल पहुंच जाते हैं वहां वहां पानी बरस पड़ता है पहाड़ों पर बरसा हुआ पानी खोलों और गारों में घुस जाता है और बाकी बहिजाता है जिससे सैकड़ों छोटे २ ग्रामों के घर बहिजाते हैं और गारों में भरा हुआ पानी हर वक्त निकलने की तदबीर करता है क्योंकि ढाल की तरफ़ बहिने की उसकी खासियत है इसी तरह पत्थर के जोड़ों को जिससे वह रुका हुआ हो ढीला करता रहिता है और निकलता रहिता है जिनको झरना कहते हैं इसी लिये दरिया हमेशा बहिते हैं जो कोई पहाड़ छोटा होता है या जिसकी खोल में पानी ज़ियादा नहीं भरता या निकल नहीं सक्ता है इस पहाड़ के दरिया किसी ऋतु में सूख भी जाते हैं और वर्षा ऋतु में फिर बहिने लग जाते हैं खोलों मेसे जो पानी निकलता है वह अपने साथ वह पत्थर वग़ैरः पहाड़ की चीज़े भी बहालाता है ज़मीन पर आकर

ढाल की तरफ़ बहिता है अगर राह में कोई रुकावट मिलती और
थोड़ी होती है तो साथही में बहा लेजाता है या अलग कर देता है
और अगर रुकावट मज़बूत होती है तो दूसरा रस्ता करलेता है
इसी सबब से दरिया टेढ़े तिरछे बहिते हैं इसी तरह ढाल को ढूं
ढता ऊआ घूमता घामता अगर राह ही में सूख न जावे तो समुन्दर
तक पहुंच जाता है और उसमें आ मिलता है जो पानी वर्षा का ज़
मीन पर पड़ता है वह कुछतो ज़मीन में घुस जाता है कहीं ज़्यादा
नीचे कहीं कम जैसी ज़मीन हो इस पानी के कुए बनते हैं और
इसही वजह से कोई कुआं ज़्यादा गहिरा और कोई कम गहिरा
होता है बाक़ी पानी बहिजाता है यह बात हर कोई जानता है
किपत्थर से पत्थर टक्कर खाने से आग निकलती है इसी तरह
पदार्थ विज्ञान से यह बात सिद्ध होती है कि बादल से बादल
टक्कर खाने से बिजली उत्पन्न होजाती है और ज़्यादा होने पर
दरख़्तों बग़ैरः को फूंक देती है बिजली की यह ख़ासियत है कि नोक
दार चीज़ पर या काली चीज़ पर ज़ियादा पड़ती है अंगरेज़ों ने यह
भी परीक्षा करली है कि जो कुछ ख़ासियतें आसमान की बिजली
में होती हैं वहही ख़ासियतें उनकी बनाई ऊई बिजली में हो
ती हैं यानी एक है घास परजो ओस पड़ती है अगर कोई सुबह
ही सुबह उस ओस को देखे जबकि हलकी किरन सूरज की उस
पर पड़ती है उसमें सात रंग चमकते ऊये दिखाई देते हैं इसी
तरह सूरज की किरन बादल पर पड़ने से धनुष दिखाई पड़ता है
इनसान जो कुछ इस्तेमाल (काम में लाता है) करता है और
जो कुछ ज़मीन पर पड़ा होता है वह धीरे २ मिट्टी में मिलजाता
है वर्षा का पानी कुल बह जाता है और बऊत कुछ मिट्टी भी
बहा ले आता है जिसमें सब क़िस्म की चीज़ें मिली ऊई होती हैं

यह दरिया का पानी समुन्दर में जाता है इसवास्ते मिट्टी भी ब
ऊत कुछ समुन्दर में चलीजाती है इसके अतिरिक्त दरिया का
पानी ऊंचे किनारों की मिट्टी को उखाड़ कर अपने में मिलाता रहिता
है वह मिट्टी भी उसके साथ समुन्दर में चली जाती है और समुन्द
र का पानी भी हमेशा किनारे की ज़मीन से टक्कर खाता रहिता है
और किनारे की मिट्टी को उखाड़ कर अपने में मिलाता रहिता है
इसी तरह दुनियां की हर तरह की वस्तुयें समुन्दर में चलीजाती
हैं समुन्दर में उसकी लहिरों की वजहसे कहीं पर बऊत गहिराव
रहिता है और कहीं बऊत बड़ा टीला रहिजाता है उस टीले तक
अगर कोई लहिर नहीं आती है तो पृथ्वी से आई ऊई मिट्टी उस
में मिलती रहिती है और होते २ वह टीला इतना बड़ा हो जाता है
कि पानी के ऊपर तक आजाता है जिसको टापू कहिने लगजाते हैं
यह टापू यदि ज़ियादा बड़ा हो जाता है तो जज़ीरा कहिलावे लग
ता है चुनांचे टापू और जज़ीरे समुन्दर में निकलते रहिते हैं और ज
ज़ीरे में अगर पानी की टक्कर लगने लगती है तो फिर पानी ही में
मिलजाता है नहीं तो बढते २ बऊत बड़ा मुल्क या द्वीप हो जाता है
फिर भी रेत का मजमुआ हो जाता है और यह मजमुआ यदि बऊत
ही बड़ा होजाता है तो पहाड़ कहिलाने लगता है समुन्दर में भी
इसी तरह पहाड़ बन जाते हैं जो टापू अब समुन्दर में पैदा होते हैं
उनमें अकसर पहाड़ भी होते हैं चूंकि यह जज़ीरे खुश्की से आये
ऊए मिट्टी से बनते हैं जिसमें सब क़िस्म की चीज़ें मिली ऊई होती
हैं इस वास्ते अब जो जज़ीरे निकलते हैं उनमें यह खासियत है
कि अगर उनको बऊत सा इकट्ठा बारीक पीस कर मिला दिया जावे
और पानी में घोल दिया जाय तो बाद सुखाने के किसी क़दर हर
एक चीज़ का अलग २ मजमुआ हो जावे गा इसी तरह समुन्दर

में कानें होजाते हैं मैने पहिले जिक्र किया था कि समुन्दर हमेशा खुश्की से टक्कर खाता रहिता है और किनारे को तोड़ता रहिता है यानी खुश्की की जगह समुन्दर होता रहिता है इसीतरह नये जज़ीरे जो बनते हैं वह समुन्दर की जगह खुश्की होते हैं ऐसे अमल के जारी रहिने से बहुत काल में समुन्दर की टक्कर की वजह से होते होते कुल खुश्की पर समुन्दर होजावेगा और जज़ीरा बढ़ते २ बहुत बड़ी खुश्की होजावे गी इन जज़ीरों में चूंकि कुल वह बातें पाई जाती हैं जो इसवक्त खुश्की पर मिलती हैं इस वास्ते यह सिद्ध होता है कि इस समय जो मुल्क और दीप हैं वह इसी तरह पर बने हैं जैसे कि अब जज़ीरे बनते हैं और ऐसी उलटन पुलटन हमेशा जारी रहिती है। रात और दिन का होना ऋतों का बदलना हर कोई जानता है और जज़ीरा बात है कि सूरज या ज़मीन की गर्दिश से पैदा होते हैं बाजे सूरज को फिरता हुआ ब्यान करते हैं बाजे ज़मीन को चूंकि इस लेख में इस बिरुद्धता से कुछ हर्ज नहीं है इस वास्ते इसकी हम बहिस नहीं करते हैं इस वक्त हवा का चलना सूरज की गर्मी की वजह से होता है चूंकि सूरज की गर्मी दुनियां के हर हिस्से (हर मात) में कम या बढ़ पड़ा करती है इसवास्ते हवा भी बदलती रहिती है गर्मी से हवा फैलती है और फैलने की वजह से हलकी होजाती है जिस जगह की हवा हलकी होकर ऊपर चली जाती है वहां पर दूसरे स्थान की हवा अपनी खासियत के बमूजिब दौड़ आती है इस हवा के आने से रास्ते में बहुत सी चीजें हिल जाती हैं ऐसे ही आंधी और तेज़ हवा भी चला करती है बाज़े काहिते हैं बे मरज़ी पत्ता नहीं हिलता हवा का चलना तो सूरज का काम है ईश्वर को क्यों बीच में घुसेड़ लेते हो पस सिद्ध है कि ईश्वर न हवा चलाता है न मेह बरसा

ता है न बिजली चमकाता है न कौंदा लपकाता है न बादल गरजाता है न आदमी पैदा करता है न जानवर बनाता न और कोई वस्तु बनाता है और न बिगाड़ता है बल्कि यह सब कारखाने अनादि से हैं एक की हालत बदली दूसरे से ग्रहण की ऐसे हैं ईश्वर की करतूत कुछ भी नहीं है ॥

६ अध्याय

दुनियाँ की हालत में विरुद्धता का कारण ॥

यह बात प्रथम ही प्रगट हो चुकी है कि हवा का चलना वर्षा का होना सर्दी गर्मी आदि का होना सूरज की वजह से होता है इसी तरह पर ज्योतिष को अच्छी प्रकार जानने वाले यह जान सके हैं कि प्रत्येक तारागण अपना असर दुनियां की चीज़ों पर डालता है किन्तु चाल प्रति तारे की एक दूसरे से विरुद्ध है यानी प्रथक है यदि किसी तालाब में एक ढेला फेंका जावे तो कुल तालाब का पानी गोल २ हल्कों ( ) में हिलने लगता है लेकिन यदि कई ढेले एक के बाद एक डाला जावे तो प्रति ढेला अपना दाइरा ( ) उत्पन्न करेगा और वह सब हल्के ( ) एक दूसरे से टक्कर खाकर बिलकुल बे तरतीब हो जावेंगे और तमाम पानी कहीं किसी तरह कहीं किसी तरह हिलने लगेगा इसीतरह सूर्य्य की गर्मी एक ही जगह नहीं पड़ती है बल्कि दुनियाँ के प्रत्येक प्रांत में पड़ती है इसवास्ते हवा की चाल भी बिलकुल बे तरतीब रहती है कभी किसी प्रकार कभी किसी प्रकार इसके अतिरिक्त कुल तारागण भी अपना २ असर हवा पर डालते हैं और उनकी चालें भी मुख्तलिफ़ (किसी की चाल कुछ किसी की कुछ) होती हैं इस वजह से भी हवा की चाल

हर समय मुख्तालिफ़ (विरुद्ध) होनी चाहिये और हवा बादलों को हरकत (हिलना) देती है इसवास्ते इनमें भी इख़्तलाफ (विरुद्धता) होना है ॥

कल्पना करो (फ़र्ज़ करो) कि एक स्थान पर चंद्रमा और तारा गणों के स्वभाव से एक प्रकार की ठंढी २ मंद २ पवन चल रही है या काली २ मतवाली लटों की सदृश घटायें छाई ऊई हों फुइयों फुइयों २ बर्षा होरही हो कदाचित किसी दूसरे तारागण की चाल इसी प्रकार आगई कि वह उस स्थान से इस बादल (पयोधर) और वायु आदि सब को हटादेवे और जब यह दूसरा सितारा हट जावे तो वहही हालत फिर होजावे गी यानी बर्षा और हवा फिर प्रारंभ होजावे गी ॥

ग़रज़ कि दुनियां के प्रत्येक प्रांत में मुख्तलिफ (विरुद्ध) हालत (दशा) होना चाहिये चुनान्चे ऐसा ही द्रष्टव्य है - किसी स्थान पर आंधी है कहीं बिलकुल नहीं किसी जगह बर्षा होरही है कहीं ज़रा भी नहीं किसी समय कुछ किसी समय कुछ होता है और ऐसा ही देखने में भी आता है चंद्रमा सूर्य्य पृथ्वी और अन्य २ तारागण आदि की चालें यद्यपि मुख्तलिफ (विरुद्ध) हैं परंतु बे क़ायदा नहीं हैं बल्कि हर एक किसी न किसी क़ायदे में घूमते हैं क्योंकि यदि इनकी गर्दिश (चक्कर) यानी घूमना कायदे में न होती तो पञ्चाग (पत्रे) पहिलेही से कदापि नहीं बन सके फलाने समय पर सूर्य्य फलाने स्थान पर निकले गा फलाने पर अस्त होगा - फलाने समय पर फलाना ग्रह निकले गा अस्त होगा आदि ऐसे पञ्चाग सहस्रों बर्ष प्रथम ही लोग बना सके हैं इसवास्ते चाल जब इन सितारों की क़ायदे में है तो हवा और बादल आदि की हालत यद्यपि मुख्तलिफ (विरुद्ध) और बेतरतीब है परंतु एक खास क़ायदे का फल है सिवाय हवा और बादल के सितारे दुनियां की

और अन्य वस्तुओं पर भी अपना असर डालते हैं इसवास्ते उनकी हालत भी मुखतालिफ (विरुद्ध) रहिती है - इससे सिद्ध हुआ तमाम दुनियां की वस्तुओं में विरुद्धता है - इसका मतलब आगे चलकर निकलैगा -

७ अध्याय

सूर्य चंद्रमा पृथ्वी और कुल तारागण अनादि हैं

यह बात सिद्ध होचुकी है कि दुनियां की हर वस्तु में एक खास गुण मौजूद है इसके विरुद्ध कोई काम कदापि नहीं होसक्ता - पस यह नहीं कहा जा सक्ता है कि दुनियां में किसी समय स्त्री पुरुष मौजूद न हो क्योंकि यदि किसी समय स्त्री पुरुष मौजूद नहोतो भविष्यत काल में आदमी पैदा नहीं हो सक्ता है इसलिये यह बात अवश्य मेव मानले नी पड़ेगी कि स्त्री औ पुरुष सदा काल से हैं

और जब स्त्री पुरुष अनादि हैं तो उनके रहिने का स्थान भी हमेशा से होना चाहिये तो यह भी अवश्य मानना पड़ेगी कि स्थान (पृथ्वी) भी अनादी ही है इसी तरह पुरुष बगैर: हवा - पानी - खुराक (खान पान) आदि के जी नहीं सक्ता है इसलिये यह बात भी अवश्य मानले ने पड़ेगी कि हवा - पानी खाने की वस्तुयें भी अनादि है -

पुरुष जो सांस भीतर से निकालता है वह खराब होती है और दोबारा यह हवा सांस लेने के लायक नहीं रहिती है प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है कि पुरुष की सांस की निकली हुई हवा खराब होती है इस लिये इसके साफ होने का द्वारा भी कोई होना चाहिये और यदि कोई द्वारा न होतो सब हवा खराब होजावे गी कितने ही काल में खराब क्यों न हो खराब अवश्य होजावेगी और आदमी फिर वह ही हवा

(खराब) अपने काम में लावे गा तो जीता नहीं रह सक्ता यानी सब मर जावेंगे इसवास्ते यह भी अवश्य मानना पड़ेगा कि सदा काल से ऐसा द्वार भी मौजूद है जिससे हवा साफ (वायुशुद्ध) होती है - सांइस से यह बात सिद्ध है कि पुरुष के सांस की निकली हुई खराब हवा वृक्ष (पेंड) अपने में मिला लेते हैं वृक्षों को यही खुराक है और साफ हवा वृक्ष वाहर उगल (निकाल) देते हैं जिसमें पुरुष सांस लेते हैं यानी वृक्ष हवा के साफ होने का एक द्वार है - इसलिये सिद्ध है कि पेंड अनादि से हैं -

इसके अतिरिक्त वृक्ष बीज से उत्पन्न होते हैं और बीज भी वृक्ष से उत्पन्न है इससे यह सिद्ध है कि वृक्ष अनादि से हैं और खाने पीने के काम में भी वृक्ष आते हैं और तरकारियां भी खाने के काममें आती है इसलिये सारी तरकारियां आलू· भिन्डी· कद्दू लौका· मूली आदि यह सर्व वस्तुएं अनादि हैं

इससे यह सिद्ध है कि सूरज·चांद· सितारे· हवा· पानी· वृक्ष· पृथ्वी आदि यह सर्व वस्तुएं अनादि हैं

प्रथम अध्याय में भी सिद्ध होचुका है कि परमाणु अनादि हैं और अब भी सिद्ध है कि सर्व वस्तुएं जोकि दुनियां पर मौजूद हैं अनादि हैं

अब कहिये साहब ! यह ईश्वर की करामात है कि क्या है काहे के लिये ईश्वर को भानमती (तमाशा करने वाला) बनाते हो जबर दस्ती ईश्वर के गले रीछ बन्दर नचाने को बांधे देते हो बेफायदा उसको कलंकित करते हो मुफ़्त का पाप सिर धरते हो पुरुष जो पानी पीता है वह कुछ पेशाब की राह कुछ पसीना बनकर बाहर निकल जाता है यानी खराब होजाता है यादि इस खराब पानी के साफ होने का द्वारा न होता तो कुल पानी एक समय में खराब होजावे गा इसलिये पानी के साफ होने का भी द्वारा अवश्य

होगा और होना चाहिये -
पानी को सूर्य की गर्मी भाप की शक्ल में ऊपर उड़ा लेजाती है और पानी में की मिली ऊई वस्तों को पृथ्वी ही पर छोड़ देती है और ऊपर जाकर इस भाप के बादल बनते हैं इसी लिये बादल (मेंह) का पानी साफ़ होता है इससे सिद्ध ऊआ कि पानी के साफ़ होने का द्वारा सूर्य्य है और इसके साफ़ करने का काम सूर्य ही करता है पस जब दुनियाँ हमेशा से है तो उसके लिये सूर्य्य भी हमेशा से है यह बात तो हर कोई मान लेगा कि सूर्य्य य़ा ज़मीन मेंसे एक चीज़ अवश्य घूमती है और वह किसी वस्तु पर टिकी (ठहिरी) हुई नहीं है बल्कि आकाश के बीच में लटकी ऊई हैं अब लोगों को यह भ्रम होगा कि बीच में कैसे हिलगे (लटके) ऊए हैं वह भ्रम भी आप का बऊत जल्दी रफ़ा ऊआ जाता है -
सांइसदां (पदार्थ विज्ञानी) इस बात को भले प्रकार जानते हैं कि सूर्य ज़मीन, सितारे आदि सब में आकर्षण शक्ति (खींचने के ताक़त) मौजूद है पस हर एक एक दूसरे को अपनी शक्ति से खींचे ऊए है और गिरने नहीं देता - और हमेशा चक्कर लगा रहिता है और सूर्य ज़मीन के ठहिरने के लिये दूसरे सितारों की भी आवश्यकता है इसलिये जबकि दुनियाँ अनादि है तो तमाम सूर्य, चांद, और सितारे भी उस के क़ायम रखने के लिये हमेशा से हैं यानी सब कुछ अनादि है -
आकर्षण शक्ति का हाल जिन्हों ने इतहास (हिन्द) पढ़ा होगा वह जान गये होंगे कि सोमनाथ के मंदिर पर जोकि गुजरात में है महमूद ग़ज़नवी ने सतरह चढ़ाइयाँ की थीं और उस मंदिर की मूर्ति जोकि चकमक पत्थर से बीच में लटकी ऊई थी किसी पर ठहिरी नहीं थी और न किसी में बंधी ऊई थी उसको देख महमूद बऊत आश्चर्य्य अन्वित ऊआ फिर उसको इसका भेद वहीं के पन्डों ने बतादिया कि चारों तरफ़ इस के चुम्बक पत्थर लगा ऊआ है उसी की कशिश से यह महा

देव नीचे नहीं गिरता है तब उसने पत्थर एक तरफ़ का उखाड़ा तब वह मूरत दूसरी तरफ़ जाकर चिपट गई और वह उसको लेगया और उसको तोड़ा तो उसमें बहुत कुछ जवाहरात आदि निकला आकर्षण शक्ति में ऐसी ताक़त होती है — इसका हाल अच्छी तरह जानना होतो हमारे समाचार पत्र के ग्राहक बनो जोकि दोसौ ग्राहक होजाने पर जारी किया जावे गा - एक २ कार्ड भेजकर अपना २ नाम ग्राहक मन्डली (ग्राहकों की लिस्ट) में लिखा दो जारी होने पर नमूना मुफ़ भेजूंगा पसंदी पर ग्राहक समझे जायेंगे देरी न करो

दूसरापरिच्छेद

ईश्वर का कर्त्ता आदि होना ना मुमकिन है जब यह बात सिद्ध होगई कि दुनियां अनादि है और इसकी कार्यवाई (कारवाई) चीजों की ख़ासियत यानी गुणों से ख़ुद बख़ुद ही हो रही है तो यह ख्याल ऊआकि दुनियां का कोई पैदा करने वाला ईश्वर नहीं है किंतु और लोगों का ख्याल इसके विरुद्ध है । इस लिये अवश्य है कि उनके कहिने और ख्यालों और विचारों पर भी गौर किया जावे — ईश्वर को मानने वाले कई प्रकार से बयान करते हैं कि ईश्वर ने दुनियां को इसतरह पर बनाया मुसल्मान और ईसाई यह कहिते हैं कि परमाणु अनादि से नहीं हैं बल्कि किसी समय पर ईश्वर ने उस को पैदाकिया है परंतु उनपर निम्न लिखित यह एतराज़ (शंकायें) पैदा होते हैं —

(१) प्रथम अध्याय में यह सिद्ध हो चुका है कि परमाणु न मिटते हैं और न नये पैदा होते हैं एक बस्तु बिगड़ कर दूसरी बस्तु का बनना यह एक हालत का बदलना है नई बस्तु कुछ नहीं पैदा होती है —

लोगों ने गलती से समझ लिया है कि इसको खुदाने बना दिया है नहीं २ वह वस्तुतो पहिले भी दूसरी सूरत में मौजूद थी

(२) एक धोखा लोगों ने बड़ा भारी खाया है कि कहते हैं कि ईश्वर सर्व शक्तिमान् है पहिले ईश्वर को सर्व शक्ति मानी भीतो सिद्ध कर लो तब यह कहिना कि उसने अपनी शक्ति से दुनियां को बनाया और तब सर्व शक्ति मानी की सुबूती काम में लाना

(३) प्रथम तो सिद्ध हो चुका है कि दुनियां के बंदोवस्त में किसी ईश्वर की आवश्यकता नहीं है अगर मान लिया जावे कि दुनियाँ के काम को ईश्वर ही चलाता है तो यह कहिना चाहिये कि दुनियां के कामों की शक्ति उसमें है नकि यहकि सर्व शक्ति मान है

(४) सर्व शक्ति मान होना उसका ठीक भी नहीं क्योंकि यदि मान लेंकि वह सर्व शक्ति मान है तो क्या वह अपने बराबर शक्ति वाला ईश्वर या अपने सेभी बड़ा ईश्वर बना सक्ता है या अपनेआप को मिटा सक्ता है इस काउत्तर यही होगा कि वह नामुमकिन बात है फिर सर्व शक्तिमान कहां रहा यदि सर्व शक्तिमान के यह अर्थ हैं कि मुमकिन काम करे और नामुमकिन काम करे तो सर्व शक्ति मान की दलील में क्यों पेश किया जाता है यदि कोई कहि बैठे कि वह अपने से बड़ा ईश्वर भी बना सक्ता है तो इसका उत्तर यह है कि ईश्वर का गुण मानते हो कि एक ईश्वर है । तो अब कई ईश्वर हुए जाते हैं इसलिये सर्व शक्ति मान ईश्वर नहीं है

(५) लोग कहिते हैं कि बगैर बनाये हुए कोई चीज़ कहां से आई यानी परमाणु को भी ईश्वर ने बनाया है परमाणु अनादि नहीं हैं तो इसका यह उत्तर है कि बगैर बनाये ईश्वर को क्यों अन मानते हो बगैर बनाये हुए ईश्वर कहां से आगया । इससे सिद्ध हुआ कि परमाणु अनादि हैं ।

(६) यदि मान लिया जावे कि ईश्वर में परमाणु पैदा करने की शक्ति है तो इसके पेश्तर (पहिले) किसने रोक रक्खा था यानी हमेशा से परमाणु क्यों नहीं पदा करता था और अबभी क्यों नहीं पैदा करता

(७) परमाणु पैदा करने के पहिले ईश्वर का रोकने वाला कोई न था तो अबतक उसने क्यों नहीं पैदा किया क्यों रुका रहा हमेशा से क्यों नहीं पैदा किया कोई भी उसका रोकने वाला नहीं था

(८) स्थान और समय भी अनादि हैं क्योंकि कहा जाता है कि एक वक्त वह था कि सिवा ईश्वर के सब जगह और कोई न था पस सिद्ध है कि वक्त और जगह अनादि है और यह कहिना ठीक नहीं कि सिवाइ ईश्वर के और कुछ नथा वक्त यानी समय और जगह यानी स्थान अनादि से उसके साथ हैं अगर कोई कहे कि इतनी बहुत जगह नहीं थी लेकिन यह तो अवश्य कहेंगे कि थोड़ो तो होगी जिसपर ईश्वर था ख्वाह वह आकाश ही क्योंन हो लेकिन जगह थी अवश्य - और अनादि से -

ईश्वर दुनियाँ नहीं पैदा करसक्ता है

(९) सातवें अध्याय में सिद्ध हो चुका है कि बिना स्त्री पुरुष के आदमी पैदा नहीं हो सक्ते - न कभी सुनने में आया - इसलिये आदमी अनादि से हैं

और यदि कोई इसके बिरुद्ध कहे कि बिना मा बाप के पैदा हो सक्ता है तो इस बात को वह ही सिद्ध कर के बतलाये क्योंकि असम्भव बात को कहिने वाला जो होता है तो सिद्ध करने के सुबूत का भार उसी के जिम्मे होना चाहिये — इस समय यदि कोई पुरुष यह आकर कहे कि फलानी जगह ईश्वर की शक्ति से बग़ैर मां बाप के पुत्र पैदा हुआ है तो कोई भी इस बात को न मानेगा और तिसपर सब लोग मानते हैं कि ईश्वर सर्व शक्ति मान है जब भी कोई

विश्वास नहीं करेगा - किसी समय में भी बगैर मात पिता के आदमी का पैदा होना सिद्ध हो नहीं हो सक्ता तो दुनियाँ के अनादि होने के बिरुद्ध कौन दलील कर सक्ता है और जब अनादि है तो अकीतम (किसी की बनाई हुई नहीं) भी अवश्य है - कियों कि जब बनाई जावेगी तो उसकी आदि (शुरू) हो सक्ती है और जब अनादि है तो इसका कोई बनाने वाला नहीं हो सक्ता इस लिये इसका कर्ता कोई भी नहीं है -

(१०) जबकि आदमी अनादि है तो उसके रहिने का स्थान यानी पृथ्वी भी अनादि है और पृथ्वी पर की सब वस्तुऐं भी अनादि हैं यानी सब कुछ अनादि है -

(११) ईश्वर को दुनियाँ पैदा करने की ज़रूरत क्या हुई इसके पैदा करने से इसका कुछ नफ़ा नहीं हो सक्ता और बग़ैर नफे के या बग़ैर अपनी ग़रज़ (प्रयोजन) के कोई काम किया नहीं जाता है जब ईश्वर को इसके पैदा करने की कुछ आवश्यकता नहीं कोई प्रयोजन नहीं तो यही कहा जावे गा कि ईश्वर ने नहीं बनाया -

(१२) खुशामद पंसदी का दोष तो उसमें होही नहीं सक्ता है कि ऐसे आदमी पैदा करूं जो मेरी प्रशंसा और तारीफ़ और खुशामद करते रहैं - और मैं खुश होऊं यदि यह ऐब लगा भी दिया जावे और यही ग़रज़ उसकी दुनियाँ पैदा करने की मानें तो साथ ही इसके यह मानना पड़ेगा कि दुनियाँ पैदा करने से पहिले वह खुश नहीं था - उस समय खुशामद कौन करता - इसके अतरिक्त दुनियां में उसके न मानने वाले भी हैं और बहुत से उसको बुराई भी देने लगते हैं जैसे अब मैं ही ऐब निकाल रहा हूं तो मुझ को क्यों पैदा किया ऐसे ही आदमी पैदा करता जो हमेशा उसकी प्रशंसा गाया करते -

(१३) बाज़े आदमियों में गाली खाने की आदत होती है और किसी

को छोड़ कर गाली सुनकर प्रसन्न होते हैं यदि यह बेहूदा (बुरी) आदत उसमें है कि उसने ऐसे आदमी बनाये कि उसकी बुराई करें तो ईश्वर दिल्लगी बाज़ हुआ लेकिन सब मतों की पुस्तकों में लिखा हुआ है कि परमेश्वर की बुराई न करो और उसकी बुराई करने में पाप है तो यातो सब मतों की पुस्तकें और सब मत झूठे हैं - या उसमें गाली खाने की आदत है - दोमें से एक बात अवश्य है - और वहतो सर्व ज्ञानी है वह तो जानता था यह आदमी हमारी बुराई करेंगे फिर उसने ऐसे आदमी क्यों बनाये जो उसकी बुराई करें - यातो वहसर्व ज्ञानी नहीं तब ऐसे आदमी बनाये या उसने बनाये नहीं दोमें से एक बात अवश्य है पस यह सिद्ध है कि उसने नहीं बनाये -

१४ - दुनियां में पाप बहुत होते हैं तो पाप भी उसी ने बनाये लेकिन सब मतों में पाप करने की मनाई है तों यातो वह मत झूठे हैं या ईश्वर ने आधी चीज़ बनाई आधी नहीं बनाई बुरी नहीं बनाई मगर वह आधी चीज़ नहीं बनाता है फिर यह क्यों लिखा है कि ईश्वर पाप के विरुद्ध है या सब मत झूठे या ईश्वर ने कुछ बनाया नहीं दोमें से एक बात अवश्य मानना पड़ेगी -

१५ - किसी कीर्तम वस्तु (बनी हुई वस्तु) के देखने से उसके कर्ता (बनाने वाला) की बुद्धी और ग़रज़ मालूम हो जाती है - पस जब पाप अधिक ता से हों तो यह फल निकलता है कि बनाने वाले की यह ग़रज़ है कि पाप बहुत हुआ करें तो या तो वह (ईश्वर) पाप कराता है या उसने दुनियां नहीं बनाई -

१६ - अगर यह कहा जावे कि दुनियां के बनाते समय उसकी यह ग़रज़ नहीं थी कि पाप हों - दुनियां पैदा होने के बाद यानी पीछे पाप होने लगे - तो इससे यह फल निकलता है कि उस समय वह अज्ञानी था लेकिन सर्व मतों की धर्म पुस्तकों में लिखा हुआ है

कि वह सर्व ज्ञानी है (सब कुछ जानने वाला) तो यातो सब मत झू
ठे हैं या वह अज्ञानी है दो मे से एक बात है -

१७ - यह बात सब जानते हैं कि जिस को काम अधिक करना पड़
ता है वह दुखी है और जिसको कम करना पड़ता है वह कम दु
खी है - और यह बात सब जानते हैं कि एक घर के काम से दो घर
का काम अधिक होता है और दो घर के से चार घर का और से आ
ठ का और आठ से सब दुनियाँ का काम बहुत ही अधिक हुआ
तो दुनियाँ के ऐसे बडे झगडे को उसने अपने जिम्मे करके अपने
आनंद में उसने क्यों खलल डाला -

और सर्व मतों की पुस्तकों मे तो वह मना करता है कि दुनियाँ के
झगडे से अलग हो ओ और आप उसी में फँसा रहे और हमसे क
हे कि इससे अलग हटो इस दुनियाँ को छोडो यह तो वही
मिसाल हुई "खुदरा फज़ीहत दीगरां नसीहत"

१८ - यदि तुम्हारा ही कहा मान लें कि दुनियां के पैदा करने से
ईश्वर को नफ़ा हुआ है तो बडे आश्चर्य की बात है कि उसने
दुनियाँ को एक समय पर (यानी एक खास वक़्त में) क्यों पैदा
किया हमेशा से उससे क्यों फ़ायदा न उठाया तो मानना पड़ता है
कि इससे पहिले वह अज्ञानी था या बनाने की शक्ति नहीं थी
दो में से एक बात अवश्य होगी -

१९ - किसी को अधिक दुख है किसी को कम कोई बद सूरत है
कोई खूब सूरत है - कोई माल दार है कोई ग़रीब है - कोई
काना है कोई अंधा है - आदि सब को एक सा रंग रूप
सुख दुख क्यों नहीं दिया कम बढ़ क्यों दिया क्या वह एक पर अ
धिक प्यार है दूसरे पर नहीं ऐसा क्यों यह उसका अन्याय यानी
बे इन्साफ़ी है यानी अन्यायी का दोष उसमें आता है -

२० - इस समय सैकड़ों मनुष्य और जानवर पशु पक्षी भोजन के लिये मारे जाते हैं - और बे कसूर सताये जाते हैं - और उन पर मुफ़ का जुल्म होता है और सरासर अन्याय होता है उनपर तो वह हत्यारा भी है ज़ालिम भी है अन्यायी भी है और बे कसूरों को सता भी है और जुल्म करने ही के लिये दुनियां को पैदा करता है फिर मज़हबी किताबों में क्यों मना करता है कि अन्याय मत करो बे कसूरों को न सताओ ऐसा मत करो वैसा मत करो - अब कौन सच्चा है ईश्वर या ईश्वर की बनाई हुई पुस्तकें किसका यक़ीन करें इन बातों से साफ़ मालूम होता है कि ईश्वर ने दुनियां नहीं बनाई - इन्साफ़ की ऐनक लगाकर देखना चाहिये पक्षपात और हट ग्राहिता को छोड़ कर देखो जैसा करना वैसा भरना आग को हाथ में लोगे तो जल जाये गा - पानी को लोगे तो नहीं जले गा तो क्या ईश्वर हाथ को जला देता है ! नहीं आग में ऐसा गुण है और उसका स्वभाव है जलाने का - आप से आप जल जाता है ईश्वर नहीं जलाने आता है -

२१. बाज़ आदमी ऐसा कहिते हैं - कि प्रकृति और ईश्वर दोनों ही अनादि हैं - परंतु प्रकृति की खास हालत उत्पन्न करना ईश्वर का काम है - ऐसे अवसर पर सोचने की बात है कि कोई वस्तु किसी ही हालत में क्यों न हो कोई न कोई गुण अवश्य उसमें होगा कोई गुणी बग़ैर गुण के होता ही नहीं है - यानी जब प्रकृति अनादि से है तो उसके गुण भी अनादि से हैं यानी गुणों को भी किसी ने पैदा नहीं किया भला वह इसके दुनियां के पैदा होने के पहिले प्रकृति अवश्य किसी न किसी हालत में होगी - अब दुनियां जिस चीज़ का नाम है वह क्या है - प्रकृति की खास हालत को दुनियां कहिते हैं - पस अब प्रकृति की एक खास हालत का नाम दुनिया है -

तो पहिले की हालत को भी दुनियां क्यों न कहें - यानी दुनियां को अनादि से क्यों न कहें -

(२२) बाज़े कहिते हैं कि परमेश्वर और प्रकृति दोनों अनादि हैं और परमेश्वर दुनियां को बनाता है और तोड़ता रहिता है ऐसा ही हमेशा करता रहिता है - और हमेशा करता रहेगा - परंतु ऐसे अवसर पर बड़ा आश्चर्य्य होता है कि अगर इस दुनियां से परमेश्वर को कुछ लाभ है - तो हमेशा तब उसको रक्खे और यदि हानि है तो मिटा कर क्यों उत्पन्न करता है या पहिली दफ़े हानि मालूम नहीं हुई थी तो बाद को मालूम होने पर तोड़ कर क्यों बनाता है - अनादि से यही सिल सिला रहिने की वजह से यह मालूम होता है कि पैदा करना और तोड़ना अपनी खुशी से नहीं करता है यदि अपनी खुशी से करता होता तो कभी न भी बनाता और कभी न भी तोड़ता - बल्कि यह मालूम होता है कि किसी क़ायदे के मुआफ़िक़ जिस क़ायदे को उसने नहीं बनाया है मजबूरन उसको ऐसा करना पड़ता है - क्योंकि हमेशा यानी अनादि का क़ायदा परमेश्वर का बनाया हुआ नहीं हो सक्ता -

(२३) हक़ीक़त में यह बात मालूम होती है कि दुनियां का कुल काम चीज़ों की खासियत (गुणों) से होता है और कुल चीज़ों के गुणों के संयोग (समूह) को क़ुदरत यानी शक्ति कहिते हैं यानी क़ायदे क़ुदरत से सब काम होते हैं - इस क़ायदे क़ुदरत ही का नाम बाज़े बुद्धि मानों ने ईश्वर रख दिया है - अब लोग उसको एक अलग ही चीज़ मानने लगे हैं -

दुनियां के काम में ईश्वर का कुछ दख़ल नहीं

(२४) यदि यह कहा जावे कि दुनियां का कुल काम ईश्वर करता है - तो चोरी - डाका - हराम - रन्डी बाज़ी आदि कुल पाप

के काम ईश्वर ही करता है - यद्यपि यह काम वह खुद नहीं करता - तथापि ऐसे काम करने की शक्ति वह ही देता है - और ऐसे काम करते इन्सों को बन्द नहीं करता -

(२५) लाखों स्त्रियां वेश्या के यहां उत्पन्न होती हैं और वहीपर बारिश (पलती) होती हैं और व्यभचार कराने की शिक्षा उनको दी जाती है - और लाखों आदमी आदमियों को खाजाते हैं तो यह सब कुछ ईश्वर ही तो कराता है - कि फलानी स्त्रियां रन्डी के यहां जाकर हराम कराना सीखें फलानी कौमें आदमी तक को खा जावें यह सब कुछ ईश्वर ही की करामात है -

(२६) इसके अतिरिक्त दुनियां के काम में बिलकुल बे तरतीवी है जिसको कुछ संक्षेप से नीचे लिखते हैं अगर यह कार खाई ईश्वर करता होता तो यह बेतर तीवी दुनियां के कामों में हरगिज़ न होती -

(अ) वर्षा जब होती है तो ऐसे स्थान पर होती है जहां पानी की बिलकुल ज़रूरत नहीं होती है - जैसे तालाब - नदी - समुन्दर - वगैर. में जहां कि पानी की बिलकुल ज़रूरत नहीं -

(ब) घास सड़क - दीवारों - छतों - आदि में पैदा होती है जहां घास सिवाय पैरों के नीचे मे रूदीं जाने के और किसी काम की नहीं

(ज) ऐसे पहाड़ों पर जहां आदमी का गुजर नहीं और न कभी कोई आदमी वहां पहुंचता है - वहां ऐसे २ उम्दा रंग बिरंगे. नीले - पीले - फूल पैदा होते हैं जो सिवाय सूखकर मिट्टी में मिलनेके और कुछ हाथ नहीं आता - और न कुछ फायदा पहुचता है -

(द) बहुत से खुदरौ (जो आप से आप उगे) वृक्ष और घास और बूटियां अगर पुरुष के मुफीद यानी लाभ दायक जंगल और बाग़ में पैदा भी होते हैं तो बहुत ही कम भाग उनका आदमी के काम

में आता है और अधिक भाग खराब जाता है यदि इसका पैदा करने वाला कोई तमीज़ दार होता तो जंगलों में उसी क़दर पैदा करता जितना काम में आता - और उसी समय पैदा करता जिस समय उसकी आवश्यकता होवे -

(म) कोठों पर घास पैदा करने की कोई वजह मालूम नहीं होती अगर कोई वजह भी है तो जिन छतों पर चूने का पलास्टर होता है उनपर क्यों नहीं उगाता

(ल) जो पुरुष बाल मुड़वाते हैं फिर उनके बाल उगाने की क्या वजह है - अगर पहिले कोई वजह भी होतो जबकि उसने मुड़वा डाले तो क्यों पैदा करता - जबकि हम जान लें कि अमुक पुरुष हमारा भोजन नहीं खायगा तो हम उसके सामने भोजन परोसें तो हम बिलकुल बेवकूफ हैं -

(म) अगर दुनियां का बन्दोबस्त वही करता है तो चोर क्यों बनाये और उसके रोकने को पहिरा दार क्यों बनाये - अगर चोरी कराना उसे पसंद होता तो अकेले चोर ही पैदा करता - या चोरी नपसंद है तो पहिरे ही पर पैदा करता - हाकिम क्यों क़ायम किये और फिर भी इन्त जाम नहीं होता - अगर चोरी को बुरा समझता है तो चोर क्यों पैदा किये - अगर चोरी अच्छी है तो पुलिस और हाकिम की कोई ज़रूरत नहीं - इन बातों से उसकी यह हालत मालूम होती है कि चोर से कहे चोरी कर और साह से कहे जाग

(२७) क्या दुनियां की कुल कार रवाई ईश्वर ही करता है तो पाखाना - पेशाब आदि सब वह ही उठाता है और धरता है जिस के कहिने में भी लज्जा आती है

(२८) इसी तरह दुनियां का कुल काम वह ही करता है तो मैं जो उसका खंडन कर रहा हूं तो वह भी परमेश्वर ही करता है यानी

अपना न होना वह आप ही सिद्ध करता है - यानी लोगों को धोखा देना चाहता है

११ अध्याय

यदि ईश्वर को दुनियां का इन्तिज़ाम करने वाला मानें तो आदमियों के कर्म कुछ नहीं हो सके -

(१) बाज़े आदमी ऐसा कहिते हैं दुनियां का कुल काम ईश्वर करता है - मगर आदमी अपने कर्म करने में स्वाधीन है और उसका फल भोगने में ईश्वर आधीन है - यानी फल ईश्वर देता है मगर जब इसपर ग़ौर किया जाता है तो यह मालूम होता है कि अगर ईश्वर को दुनियां का इन्तिज़ाम करने वाला माने तो आदमियों के कर्म कुछ भी हैं (वहतो ईश्वर ही कराता है) उसी के कर्म हैं)

(२) देखिये अगर खुदा दुनियां काम करता है तो कहीं का पानी कहीं ले जाता है किसी चीज़ को तोड़ना किसी को फोड़ना - कहीं गढ़ा बनाता कहीं टीला बनाता - ऐसे ही कुल काम आदमी भी करता है तो यह कहिना चाहिये कि आदमी भी एक छोटा ईश्वर है

(३) आदमी भी सर्व ज्ञानी तो है ही नहीं जो ईश्वर के इरादों का जानलें

कल्पना (फर्ज़) किया कि कोई घास खुदाने जंगल में किसी काम के लिये पैदा की है और आदमी उसको जाकर खोद लाया और अपने घोड़े को खिलाई - या ईश्वर ने जंगल में मिट्टी का टीला किसी काम के वास्ते बनाया और आदमी ने उसको खोद कर अपने यहां लाकर काम में लाया और घर बनाया -

तो खुदा का सरा करा कराया अकार्थ हुआ इससे यह सिद्ध होता है कि अगर मनुष्य के कर्म ईश्वर के कर्म नहीं हैं - तो आदमी खुदा का हर काम में मुकाबला करता है - और ईश्वर के किये हुए को बिलकुल खराब करता है*

(४) मां के पेट में जो बच्चा आता है उसकी सूरत - दिल - दिमाग - अकलमन्द - बेवक़ूफ़ - ईश्वर बनाता है - पस जब ईश्वर ने उसको इन्द्रियां और शक्ति दी तो उस शक्ति से वह जो कुछ कर्म करेगा तो वह कर्म आदमी के हुए या ईश्वर के -

(५) आदमी जो कुछ स्वाधीनता से खाता है तो उसके पेट में जाकर रस - रक्त - मास - हड्डी - मज्जा - वीर्य्य आदि कौन बनाता है अगर भोजन और पेट ही में यह गुण है कि वह आप ही ऐसा बना लेता है तो बात ही खतम हुई - इसी को तो हम सिद्ध करते हैं लेकिन ईश्वर को मानने वाले अवश्य यह कहेंगे कि पेट में घुस कर ईश्वर बना जाता है - पस जब वह शरीर के अन्दर काम की इसकदर चीज़ें पैदा करदे कि आदमी स्त्री को देख बेकाबू हो जावे और व्यभचार करे तो यह कर्म आदमी ने किया या काम की उन चीज़ों ने करवाया जिनको ईश्वर ने इकट्ठा कर रक्खे हैं - इसी तरह पर बुरे कर्म आदमी के किये हुए आदमी को स्वाधीनता से हुए या ईश्वर ने कराये - अवश्य ईश्वर ने कराये -

१२ अध्याय

कर्मों का फल ईश्वर नहीं देसक्ता यदि किसी प्रकार से यह मान भी लिया जबकि आदमी के कर्म ईश्वर के कर्म से प्रथक हैं -

नों आदमी के कर्मों का फल ईश्वर नहीं देसक्ता -
(३४) सज़ा इस गरज़ से दी जाती है कि फिर ऐसा काम यह न क
रे - और जो काम ना पसंद होगा उसी की सज़ा भी दी जाती है
मगर खुदा नौ पसंद काम होनेही क्यों देता है - बादशाह भी अ-
पने कानून के विरुद्ध काम नहीं होने देता है लेकिन बादशा
ह सर्व शक्तिमान नहीं है इससे लोग विरुद्ध काम करते हैं
तो क्या खुदा भी सर्व शक्तिमान नहीं है - और इतनी ताक़त भी
नहीं रखता कि विरुद्ध काम करने वालों को रोक सके हज़ारों
लोग बार २ बुरे काम करते हैं तो मालूम होता है कि खुदा कुछ
इन्तिज़ाम नहीं कर सक्ता -
(३५) सज़ा जबही कुछ असर किया करती है जबकि सज़ा पाने
वाले को बता दिया जावे कि तुझ को फलाने जुर्म की सज़ा यह
दी जाती है ताकि वह भय खावे कि अगर फिर ऐसा काम करे
गा तो यही सज़ा फिर होगी - परंतु यहां आदमी प्रति दिन सै
कड़ों मुसीबत और कष्ट उठाते हैं और कोई नहीं जानता कि यह
कष्ट फलाने कर्म की वजह से ईश्वर ने दिया -
(३६) कर्मों का फल क्या है ? किसी का शरीर बलवान किसी
का निर्बल - कोई खूबसूरत कोई बदसूरत - किसी का मग़ज़
तेज़ किसी का गुद्दल - किसी का खून साफ़ किसी का गन्दा
किसी को औलाद देना किसी को न देना - किसी को दौलत अ
धिक देना किसी को कम देना यानी कर्मों के मूजिब हमारे श-
रीर को बना दिया - यह एक ऐसी बात है जैसे हम मकान ब
नाने का सूत बूत नहीं जानते और राजगीरी से बिलकुल वाक़ि
फ़ कार नहीं - अब हम किसी राज को बुलावें और उसको मका
न बनाने का कुल मसाला ईंट गारा मिट्टी आदि देकर कहें कि

इसका मकान बना दो और वह मकान बनादेवे राजतो हमसे तनख्वाह लेगा और हमारा नौकर हुआ लेकिन खुदा को बनाने से क्या फायदा - यानी हमारी नौकरी करने से ईश्वर को क्या लाभ है ईश्वर हर समय सब पुरुषों की ताबे दारी में लगा रहिता है कि जैसा वे कर्म उपार्जन करें उसी के मुताबिक उसका फल देदें - राज तो स्वाधीन है कि जब चाहे तब हमारी नौकरी करे जब चाहे छोड़ दे लेकिन ईश्वर हमारे काम को नहीं छोड़ सक्ता क्योंकि कर्म तो हमारे इखितयारी है और उनका फल ईश्वर को अवश्य देना पड़ेगा - यानी ईश्वर हमारे आधीन है - और वे कौड़ी पैसे का गुलाम है - कैसा बुरा दूषण उसको लगता है इसलिये ईश्वर दुनियां का बनाने वाला नहीं है -

(३७) खुदा को कर्मों का फल देने वाला मानने में दया आदि सब मिटती है क्योंकि जब हम किसी दीन पुरुष को देखें और उसपर हम दया कर के उसकी आवश्यकता को मिटावें तो गोया ईश्वर की कार्य्यवाई को बुरा मान कर उसके बिरुद्ध करना है और कभी उसकी ज़रूरत जाती भी रहिती है यानी हमारी कोशिश से वह अच्छा होगया तो गोया ईश्वर से भी बढ़कर काम हमने किया और हम ईश्वर से भी बढ़ गये

(३८) कर्मों का फल देने वाला ईश्वर को मानने से वैदक यानी हकीमी भी रद्द होती है क्योंकि जब कोई पुरुष बीमार होता है तो यह कहा जाता है कि ईश्वर ने इसको ऐसाही फल दिया है इसकी दवा करना व्यर्थ है - लेकिन सैकड़ों पुरुष हम रोज़ देखते हैं दवा करने से भले चंगे हो जाते हैं तो गोया खुदा हमको बुरा फल देकर बीमार बनाता

है और हम उसको अच्छा करलेते हैं तो खुदा के काम में हमने दख़ल दिया और उसके बिरुद्ध किया - अगर कोई कहे कि दवाई से कुछ नहीं होता जो कुछ करता है सो ईश्वर ही करता है - तो उन से कहो कि डाक्टर और हकीम और वैद्य सब बेफ़ायदा हैं और तुमने अपनी उम्र में कभी किसी बीमारी का इलाज कराय और कोई दवा अपने काम में लाकर फ़ायदा उठाया कि नहीं जो पुरुष प्रत्यक्ष हकीमों और दवाइयों को छोड़ ईश्वर को झूठ मूठ में मानते हैं वे सीधी राह को छोड़ कांटों और गढ़ों में घुसते हैं -

(३९) अगर ऐसे अवसर पर यह कहा जावे कि जो कुछ हम किसी को दिया करते हैं सो ईश्वर ही हमसे दुखित मनुष्यों को हमारे हाथ से दिलाता है - तो हमारे दान का फल न रहा - दान आदि कोई वस्तु ही न रही इसी तरह खुदा किसी को कुछ माल दे हम उसको छीन सक्ते हैं अगर यह कहा जावे कि उसके कर्म ऐसे थे - कि उसका माल जाता रहे - तो जबकि कर्मों का फल ईश्वर देता है गोया ईश्वर ने माल छिनवाया यानी चोरी डाका लूट खसूट आदि कोई चीज़ नहीं क्योंकि यह काम तो ईश्वर करता है इसी तरह ईश्वर किसी क्वारी लड़की को पवित्र रखना चाहे बदमाश आदमी उस क्वारी से ज़बरदस्ती व्यभचार कर लेते हैं - यदि यह कहा जावे कि उस स्त्री के कर्म ऐसे थे जिससे उससे व्यभचार किया गया - या ईश्वर की मर्ज़ी ही ऐसी थी कि उस स्त्री के साथ ऐसी कार्य्यवाई होनी व्यभिचार आदि भी कोई पाप न हुए क्योंकि सारी कार्य्यवाई तो ईश्वर की है - गोया ईश्वर का फल दाता मानने से पाप पुन्य सब मिटते हैं - इससे सिद्ध है कि ईश्वर कर्मों का फल देनेवाला

नहीं है -

(३८) उदाहरण - देखिये एक आदमी जवान है बहुत सुन्दर है उसके पास मकान है - धन है - संपति - संतति आदि सबही कुछ है रातको चोर आये तमाम धन लूट लेगये - उसको और उसकी स्त्री बच्चो आदि सब को मार गये अगर यह कहा जावे कि उसकी किस्मत में ऐसा ही था यानी उनके कर्म्मों का फल यही था - तो चूंकि फल ईश्वर देता है यह कुल काम चोरसे ईश्वर ने कराये इस लिये हत्या करना - चोरी करना डांकाडालना आदि कोई बुरे काम नहीं और यदि चोर ने उसके कर्मों के विरुद्ध और ईश्वर की मर्ज़ी के विरुद्ध ऐसा काम किया तो ईश्वर कर्मों का फल देने वाला कब हुआ और उसमें फल देने की शक्ति भी नहीं हुई - इसके अतिरिक्त यदि ईश्वर चाहे कि उस पुरुष की हालत जैसी थी वैसी ही करदे तोभी नामुमकिन है क्योंकि जो लोग यह मानते हैं कि आदमी मर कर फिर पैदा नहीं होते तो ईसाइयों और मुसलमानों का ख़ुदा उसको जैसा का तैसा बनाही नहीं सक्ता - ख़ैर हिन्दुओं का ईश्वर जो आवागमन मानते हैं यह कर भी सक्ता है - कि किसी स्त्री पुरुष को खोज कर के मैथुन करा कर गर्भ रखावे - उसमें इस पुरुष को बालक की शक्ल में उत्पन्न करे इसी तरह उसके जुवान होने पर उसके लिये एक स्त्री जुवान तलाश करे - या उसके लिये स्त्री बनाकर उसकी शादी (विवाह) रचावे - किसी को गरीब करके उसको धनवान बनावे - दश बीस साल उसका पालन पोषण कर के उसकी वैसीही पुरानी हालत बनादे और जैसा का तैसा करदे - मगर यह पहली पुरानी हालत कहां हो सक्ती है - न वह समय रहा न वह लोग रहे न वह हवा रही

न वह आदमी रहे जिनसे उसका प्रेम था या बैर था उसकी जान पहिचान थी - इसके अति रिक्त यह मान भी लिया जावे कि पुरानी हालत हो सक्ती है तो नौ मास माता के उदर में रहकर उलटा लटकना खून पीना - बाल्यवस्था में नंगे फिरना और यह समय नादानी और अज्ञान की हालत में काटना - उसके कौन से कर्मों का फल है यह तो ईश्वर को मजबूरन चोर की ज्यादती करने के कारण उसको पुरानी हालत बनाने में बहुत ही झमेला और दिक्कत उठाना पड़ती है - ऐसी ही और इसी तरह पर सहस्रों कार रवाइयाँ ईश्वर को मजबूरन करना पड़ती हैं फिर ईश्वर में कर्मों का फल देने की शक्ति कैसे मानी जावे अथवा ईश्वर कर्मों का फल नहीं दे सक्ता है -

(४०) दंड इसलिये दिया जाता है कि लोग जुर्म न करें नकि जुर्म सिखाने को दंड मिलता है - मसलन कोई मैजिस्ट्रेट किसी मुजरिम को व्यभिचार - व डाका व चोरी आदि की शिक्षा देवे या और किसी प्रकार का बुरा काम उसको सिखावे तो क्या वह मैजिस्ट्रेट पागल खाना भेजने लायक नहीं होगा ? अवश्य होगा जबकि यह माना जावे कि पुरुष की यह हालत है वह ईश्वर ने उसके कर्मानुसार की - तो जो लड़की कि वेश्या के यहाँ उत्पन्न की गई और व्यभिचार कराने की शिक्षा उसको दी जाती है तो क्या ईश्वर ने उसको यह सज़ा दी कि वह हराम कर कर अपने को और दूसरों को और भी पाप में फसावे - इसी तरह जो लोग आदमी को मार कर खाजाते हैं तो उनको यह सज़ा मिली कि आदमियों को मार २ कर खाया करें जोकि बड़ा भारी पाप है - इन बातों से भली प्रकार सिद्धि है कि ईश्वर का यह काम नहीं है - नहीं तो परमेश्वर की भी बद्नामी

होना चाहिये जो मजिस्ट्रेट के लिये नियत की गई थी - यानी पागल खाने में भेजना चाहिये -

१३ अध्याय
यह दुनियां स्वप्न नहीं है-

बाज़े मता बलंम्बी यह मानते हैं कि सिवाय ईश्वर के और कुछ नहीं है यह दुनियां कोई वस्तु नहीं है बल्कि एक स्वप्न कैसा हिसाब है झूठी दिखाई देती है के कुछ भी नहीं जैसे स्वप्न में बड़े २ हाल देखने में आते हैं तैसेही यह दिखाई देती है (४१) जबकि सिवाय परमेश्वर के और कुछ नहीं है तो यह दुनियां भूल में किसको दिखाई देती है ईश्वर को जानने में ग़लती आगई है या सिवाय ईश्वर के और कोई वस्तु भी है जिसको यह दुनियां ग़लती से दीख पड़ती है - यदि यह ग़लती परमेश्वर की है - तो यह ग़लती क्यों उत्पन्न हुई और ग़लती उत्पन्न होने का कारण जुदाही ईश्वर से हुआ - यानी यह सिद्ध हुआ कि सिवाय परमेश्वर के और कुछ वस्तुभी है - यदि यह कहो कि गलती (भूल) सिवाय परमेश्वर के किसी अन्य की है तो प्रत्यक्ष ही सिवाय ईश्वर के और वस्तु भी सिद्ध होगई (४२) किसी वस्तु का ग़लत दिखाई देना ऐसे पुरुषों को जिन के ज्ञान में फ़र्क है - मुमकिन है - परंतु यह सारी चीज़ें प्रत्यक्ष दिखाई दे रही हैं तो कौन कहि सक्ता है कि यह स्वप्न है - यदि स्वप्न होता तो कोई बात एक समय में किसी को कुछ दिखाई देती और किसी को कुछ - जैसे दस आदमी बाजार में मकं च

तो सब को दूकाने ही क्यों दिखाई देती हैं - अकाही स्वप्न स
ब को नहीं दिखाई दिया करता है - इससे सिद्ध है कि
दुनियां स्वप्नवत नहीं है -

(४३) ग़लती उसी बस्तु में मालूम होती है जबकि वह ब
स्तु पहिले ठीक देख चुके हों स्वप्न में ऐसा होता है कि व
ह २ चीज़ें दिखाई देती हैं जिनको देखकर बहुत कुछ
आश्चर्य्य होता है - लेकिन ग़ोर करने की बात है कि स्वप्न
में वही चीज़ें दिखाई देती हैं जो जाग्रत हालत में देखी हुई
होती हैं - ख़ाह वह कभी की भी देखी हुई क्यों न हो -
देखी हुई अवश्य होती हैं - इससे सिद्ध है कि दुनियां स्वप्न
बत नहीं है -

(४४) जो जन्म का अंधा होगा उसको काले पीले हरे आदि रंग
की बस्तु स्वप्न में कभी दिखाई नहीं देंगे - जिस रीति से कानों
से सुनकर या हाथ से टटोल कर या और किसी तरह पर जिसको
वह जागते की हालत में देखता है वैसाही स्वप्न में भी उसको
मालूम होता है -

(४५) इन बातों से सिद्ध है कि दुनियां कोई चीज़ नहीं तो वह दि
खाई भी नहीं देसक्ती इसके अलावह इसके बहुत अच्छे २ सबू
त और दलीलें हमारे पास इसकी और मौजूद हैं - और अमरीका
देश के शहिर चिकागो में एक दफे इस बिषय में जैनियों से बहुत
कुछ बहिस हुई थी उस बहिस के सब प्रश्नोत्तर हमारे पास मौजूद
हैं जो क्रम २ अपने मासिक पत्र में दूंगा इस मासिक पत्र के दोसौ
ग्राहक हो जाने पर जारी किया जायगा ग्राहक मंडली में शीघ्र २ नाम
और साफ़ २ पता लिखाओ ताकि २०० ग्राहक हो जाने पर शीघ्र ही
जारी कर दिया जावे - एक अंक नमूने का सब के पास मुफ़्त भेजा जायगा

फ़सली भर ग्राहक समझे जायं गे- नाम शीघ्र २ लिखाओ -

आवागमन के विषय में वादविवाद

ईसाई - हम ब्रह्मन से पूछते हैं १ भाई तू बता कि तू विरहमन कैसे बना और तेरे कौन से कर्मों का फल तुझ को मिला तू अपने पिछले जन्म की खबर दे सक्ता है वह कुछ जवाब नहीं दे सक्ता अगर आवागमन होता तो पिछली याद होनी इसलिये आवागमन नहीं है -

उत्तर - यह प्रश्न आप का याद दाश्त के ऊपर है और याद रखना स्मरण शक्ति का काम है - यदि स्मरण शक्ति दुरुस्त बनी रहै तो पिछले जन्म की याद अच्छी तरह बनी रह सक्ती है - यह याद तो दूसरे जन्म की है की है पहिले इसी जन्म की याद - गर्भ की बचपन में बचपन की जवानी में जवानी की बुढापे में याद नहीं रहिती है तो दूसरे जन्म की याद रखना तो मुश्किल काम है - और योग साधन करने पर केवल ज्ञान उत्पन्न होने के पीछे सब कुछ याद हो जाती हैं - हमारी तुम्हारी बात तो दूसरी है तुम्हारे खुदा को भी तो याद नहीं थी कि आदमी को मैं पैदा तो करता हूं लेकिन यह तो गुनहगार (पापी) होजावे गा यानी उसके गुनहगार होने पर बहुत कुछ पछताया - और खुदाने कहा कि मुझको नहीं मालूम था कि यह गुनहगार होजावे गा नहीं मैं कभी नहीं इसको पैदा करता - और दूसरे खुदावन्द ईसूमसीह को भी तो यूहदा इसकूती को चेला करते समय नहीं याद थी कि यह मुझ को पकड़ा देगा तब मुझको फांसी (सलीब) होगी - अगर याद होती कभी भी उसको चेला नहीं करता - विदित होकि यूहदास्कूती एक पुरुष का

नाम है जिसको यूसु मसीह ने चेला किया था और इसी चेले ने यूहू दियों से मिलकर और तीस रु० रिशवत में लेकर यूसु मसीह को इस तर्कीब से पकड़ाया कि यूहूदियों से यह कहा कि मैं तुमको एक पहिचान अपने उस्ताद की बतलाता हूं नहीं तुम उसको पहिचान नहीं पाओगे उन्होंने कहा बताओ - तब बोला कि जिसको मैं चूमूं वहही मेरा उस्ताद ईसूमसीह है तब ऐसाही हुआ और मसीह जब पकड़ गया तो उसपर लोगों ने थूका और मुंहपर थपेड़े मारे और कांटों का ताज उसपर रक्खा और पिटवाया और सलीब में उसको जड़दिया उसके माथे और हाथ पैरों में कीलें ठोक दीं और जब वह मर गया - तो तुम्हारे खुदा तक को भी तो नहीं याद था कि हमको यह पकड़ा कर हमारी कुगति करायेगा तो हमको किसतरह याद रह सक्ती है - और वाज़े २ याद भी रखते हैं जिनका हाल नीचे लिखता हूं संवत् १९३३ विक्रमी में ग्राम कन्धा में मोहन लाल ठाकुर बन्दूक से मारागया और उसी साल मौज़ा ग़रीबका पुरा में जो गन्धा से ६ कोस की दूरी पर बस्ता है काशी राम के घर एक लड़का पैदा हुआ जब वह तीन बर्ष का हुआ एक दिन बन्दूक की आवाज़ सुनकर रोने लगा और बहुत डरा जब उस बालक से पूंछा तो उसने उत्तर दिया कि मैं कन्धा ग्राम का रहिने वाला मोहन लाल ठाकुर हूं मुझको हरवलबा ने बन्दूक से मार डाला था - जब यह बात हाकिम तक पहुंची तब उसको इज़हार लिये गये उसी तीन बर्ष के बालक ने हरवलबा को पहिचान लिया और जब मास फरवरी सन् १८८१ ई० में मुकद्दमा गवालियर आया तो वहां भी उस बालक ने वहूभी इज़हार दिये और मोहन लाल ठाकुर के भाई को देखकर कहा कि यह मेरा भाई है और कहा कि मैं सब कुछ पहिचानता हूं (एक समाचार पत्र) द्वितीय याद

और न वर्ग यूरयी रूसका एक शहिर है जोकि यूराल परबत के निकट बसता है अनुमान से आज तक उन्नीस वर्ष ऊई होंगी कि इबराहीम चारकू एक धन वान यूहदी उस शहिर का वाशिंदा ज्वर से बऊत कुछ पीड़ित था ता० २२ सितम्बर सन् १८७४ की आधी रात को उसे एक महा भयानक बिचार उत्पन्न ऊआ उस आदमी को घोर कष्ट ऊआ - हकीम भी आये उन्होंने पागल पन बताया किसी ने भूत बताया आदि गन्डे ताबीज़ और छूमंतर बऊत सारे ऊए कुछ न ऊआ कुछ समय के बाद देखते क्या हैं कि वह बीमार जोकि मौत के निकट हो रहा था अब अच्छी तरह से सास लेने लगा और उसने अपनी आंखें खोल दीं और आश्चर्य की निगाह से चारों ओर देखने लगा फिर वह आदमी जल्दी से सो गया - इसपर डाक्टर ने कहा कि इस समय उसका सो रहिना इस के लिये बऊत अच्छा है - प्राता काल तक वह डट कर खूब सोया उसके बच्चे और उसकी प्रय स्त्री उसके जगने की बाट देख रहे थे जगने पर उसकी प्राण प्यारी ने खुशी के कारण उसको गले लगाना चाहा लेकिन उस पुरुष ने इशारों से उसे हटादिया - और एक ऐसी बोली में वहां के आदमियों से कुछ मांगा जिसको कोई भी कुछ न समझ सका जानना चाहिये कि इबराहीम चारलू श्याम वर्ण - लम्बा डील - लम्बी दाढ़ी स्याह आंखें लम्बी नाक रखता था और अपनी बीमारी के पहिले वह इबरानी बोलीके सिवाय कुछ थोड़ी सी रूसी बोली भी जानता था - जोकि कम पढ़े ऊए यूहदी बोलते हैं - अब वह आदमी ऐसी बोली बोलने लगा - जिसको वहां कोई भी न समझता था - डाक्टर जो कि उसकी चिकित्सा को आया था उसने भी उसकी बोली न समझी जब कभी उसके बालक और उसकी प्राण प्यारी उसके पास

आते तो वह बुरी तरह से उनको ढकेल देता था - डाक्टरने यह राय दी कि ज्वर के अधिक होने के कारण यह पागल होगया है कुछ दिनों के बाद उसकी स्त्री ने अपने माता पिता को बुलवाया लेकिन उनके आने पर इब्राहीम ने उनको नहीं पहिचाना और न उनकी बोली समझ सका - और वह इसबात पर बड़त क्रोधित होता था कि मेरी बोली क्यों नहीं कोई समझता - एक सप्ताह के बाद वह बिछौने से उठा - और उसकी स्त्री ने उसको पहिनने को वह कपड़े दिये जोकि वह बीमारी से पहिले पहिना करता था रूसियों की आदत को देख कर वह बड़त हंसा वह बाहर दौड़ना चाहता था लेकिन लोग जल्दी से दरवाजा बन्द कर देते थे ताकि उसको सर्दी न लगजावे वह अपने कमरे में चलता लेकिन पग बड़त धीरे २ रखता और कुछ सोच २ कर देर २ के बाद पग उठाता था एक दर्पण के पास जाकर उसने अपनी शक्ल उसमें देखी और वहां ठहर गया और बड़ा हैरान ड़आ - अपनी बड़ी नाक और लम्बी डाढ़ी को छूता था और एकाएक हंस पड़ता था और अचानक एक गहिरे सोच में पड़ जाता था लोग इस बात से बड़त कुछ आश्चर्य करते थे - उसकी स्त्री और माता पिता बड़त ही तअज्जुब करते थे और कहिते थे कि अब यह इब्राहीम चारकू नहीं है बल्कि एक गैर आदमी होगया है लेकिन इब्राहीम के माथे पर दो काली लकीरें थीं जिस डाक्टर ने दो मास तक उसकी चिकित्सा की वह इन लकीरों को देख कर आश्चर्य किया करता था - इब्राहीम चारकू खिड़की से झांक कर आसपास के लोगों को देख कर बड़ा ही आश्चर्य करता था एक दिन उसने बाहर भाग जाने की बड़त कोशिश की लेकिन न भागने पाया अब तो बड़त नामी

डाक्टर उसके लिये इकट्ठे हुए उन्हों ने कहाकि यह लिखकर हमको कुछ बताइगा उसको काग़ज़ और क़लम दवात दी उस ने लेटन जवान में बहुत साफ़ अक्षरों में लिखकर डाक्टरों ने देखा डाक्टर ने पढ़ा लेकिन समझ न पाया कि क्या लिखा और सब आदमियों ने बहुत कुछ आश्चर्य किया कि इसने लेटन ज़बान कहाँ से सीख ली और इसको लेटन हरूफ़ कहां से आगये यह तो लेटन पढ़ाही नहीं था और जब कुछ समय इसी तरह पर व्यतीत हुआतो शहिर सेंटपीटरसबर्ग - के मेडीकल यूनीवर्स्टी में इबराहीम चारकू को लाये ज्यों हीं वहाँ के प्रोफ़ेसर आरलू साहब ने इबराहीम चारकू की बोली को सुना फौरन जान लिया कि यह अंगरेज़ी भाषा बोलता है अब तो इबराहीम बहुत प्रसन्न हुआ कि इसने तो मेरी बोली समझ ली अबतो बड़ी देर तक प्रोफेसर साहब और इबराहीम में बातें हुईं जब प्रोफेसर आरलू साहब ने पूछा कि तुम कौनहो तब उसने कहा कि मैं उत्तरी अमेरिका ब्रिटिश कोलम बिया के शहिर न्यूविस्ट मिनिस्टर का रहिने वाला हूं मेरी एक स्त्री है दो बालक हैं लेकिन खुदा जाने अमरीका से रूसमें मुझको कौन लाया मैं नहीं जानता कि किसतरह मेरा आना यहाँ हुआ - और मेरा नाम इबराहीम चारकू नहीं बल्कि इबराहीम दरहम है - और मैं यही चाहता हूं कि अमेरिका को अपने घर जाऊं - अब प्रोफेसर साहब ने कहाकि तुम लोग धोखा देते हो यह बड़ा अकल मन्द इंगलिश मेन अमेरिका का रहिने वाला है तुम लोग इसको चुरालाये हो इस बात की तहक़ीक़ात होना चाहिये पुलिस के द्वारा पास पड़ोस वालों से और वहाँ के डाक्टर से खूब तहक़ीक़ात हुई सब ने कहाकि

हम इसको बालक पने से जानते हैं कि यह इबराहीम चारकू ही है - तब डाक्टरों ने कहा कि इसकी आत्मा बदल गई है मगर कुछ दिनों के बाद सुबह को जो देखें तो चार पाई खाली इबराहीम चारकू नहीं - बहुत कुछ उसका खोज लगाया जार रूस (रूस का राजा) को भी खबर हुई लेकिन फिर वह नहीं मिला लोगों ने यह समझा कि यह पागल पुन में दरिया में डूबमरा ऐपीट कर बैठ रहे -

सन् १८७५ ई० के बसंत ऋतु में सेन्ट पीटरस बर्ग (रूस का शहिर) के प्रोफ़ेसर आरलू साहब एक अखबार पढ़ रहे थे उस अखबार में क्या देखते हैं - कि न्यू विस्ट मिनिस्टर में एक आश्चर्य्य आन्वित बात हुई है जिस खबर ने तमाम शहिर में हल चल मचादी है ता० २२ सितम्बर सन् १८७४ ई० के दिन उस शहिर का एक व्योपारी ज्वर से अति बीमार था और उसके जीने की उम्मेद नहीं थी तिसपर वह बचगया और भला चंगा हो गया लेकिन आश्चर्य्य की यह बात है कि बीमार जोकि एक ज़हीन अंगरेज़ था आपनी मादरी बोली भुला दी और ऐसी बोली बोलता था जिसको कोई भी न समझता था - आखिर को वहां के एक पुरुष ने कहाकि यह यूंदियों की एक गवारी बोली है वह बीमार बीमारी से पहिले एक मज़बूत पुरुष था अब बहुत पतला और कुबड़ा होगया है - और कहिता है कि यह स्त्री और बालक मेरे नहीं हैं लेकिन इस बात की ज़िद करता है कि मेरी स्त्री और बालक किसी दूसरी जगह हैं उस पुरुष को पागल समझते हैं - फिर कुछ दिनों बाद एक मुसाफिर आया जिसका चिहरा ठीक इबरानियों कैसा था वही मुसाफिर कहिता है कि इस स्त्री का मैं खाविन्द हूं और उस स्त्री से वह उस बोली में बोलता है जिस

में उसका पति उससे बोला करता था लेकिन उस मर्द के माता-पिता जोकि उसी शहिर में रहिते हैं इनकार करते हैं कि वह हमारा लड़का नहीं लेकिन वह बार २ यही कहिता है कि मैं इस स्त्री का पति हूं और इन्हीं मा बाप का पुत्र हूं - वह बेचारी स्त्री एक बड़े गम्भीर सोच में पड़ी है और कहिती है कि यह किसतरह से कहिता है कि यह मेरी स्त्री है - जब वह पूंछती है तो वह छुपी बातें जोकि सिवाय स्त्री पुरुष के कोई नहीं जानता कहिता है तब तो वह कहिती कि मेरा पति है लेकिन जब सूरत देखती तो कहिती कि मेरा पति नहीं है और यहूदी चेहरे का आदमी मेरापति कैसे होसक्ता है तब प्रोफेसर आरलू को उस पिछली बात की याद आई और कहाकि इनकी आत्मायें बदल गई हैं - और बड़ा हैरान हुआ और इस बात को देखने के लिये न्यूवेस्ट मिनिस्टर शहिर में गया तो वहां काला इबराहीम वहां पाया जिस को उसने छे मास पूर्व सेन्ट पीट रस बर्ग में देखा था - उसनें उस व्योपारी से रूसी बोली में पूछा कि तू कहां से आया है उसने उत्तर दिया कि मैं ओवन बर्ग से आया हूं और जबकि उसने उसकी औरत का नाम पूछा उसने उस यहूदी औरत का नाम लिया जिसने उसे अपना खाविंद कहा था - जोकि उस समय सेन्ट पीटरस बर्ग में थी जब उसने उससे पूंछा कि तेरा नाम क्या है - उसने उत्तर दिया कि यह लोग मेरा नाम इबराहीम दरहम कहिते हैं लेकिन असली मेरानाम इबराहीम चारकू है - प्रोफ़ेसर आरलू इस अजीब ख्याल से हैरान होगया उसने सोचा कि शरीर तो नहीं बदला है क्योंकि एक तो छोटा और मजबूत है और दूसरा पतला लम्बा और काले रंग का है और फिर न्यूविस्ट मिनिस्टर ओवन बर्ग से दो हज़ार

मील की दूरी पर है उसने कहा कि ज़रूर आवागमन हुआ है - और आत्मायें बदल गई हैं - यह याद रखना चाहिये कि २२ सितम्बर सन १८७४ को आधी रात के समय दोनों जिन्दगी और मौत के दर्मियान थे एक आदमी की आत्मा अवश्य दूसरे के शरीर में उड़कर दाखिल होगई - और इसी तरह एक पूरा आवागमन हुआ था और यह दोनों शहिर एक दूसरे के ठीक मुकाबिल हैं अगर एक मेख ज़मीन में ठोकी जाय तो वह ठीक वेस्ट मिनिस्टर में निकले गी - और दोनों शहिरों के दर्मियान ठीक ही १२ वजे का वक्त है - और जबकि ओवन बर्ग में आधी रात के १२ बजते हैं तो न्यूबिस्ट मिनिस्टर में दो पहिर दिनके १२ बजते हैं और जब यहां आधी रात होती है तो वहां दोपहिर होता है -

इसी तरह के आस पास के ग्रामों में याद रखने वाले बहुत से बालक पैदा हुआ करते हैं इसकी बावत आप बहुत कुछ जानते होंगे -

ईसाई - जानवरों में रूह (आत्मा) नहीं है सिर्फ जान है अगर रूह होती तो इन्सान (आदमी) हैवान (जानवर) में कुछ फ़र्क न होता -

उत्तर - यह तो खूब आपने सुनाई यह बचन आप का उन्मत्तों कैसा है जानवरों में रूह (आत्मा) नहीं है तो ऐसे २ आश्चर्य जनित काम बिना रूह के करते हैं शायद आप को इन की (जानवरों) चालाकियों से खबर नहीं लोमड़ी की चालाकियां बिल्ली की मक्कारियां - बगुले का ध्यान - तो सारे जहान में प्रसिद्ध है - शायद आपने सरकस कम्पनी का तमाशा नहीं देखा और न रीछ बन्दर नचाने वालोंका तमाशा देखा - और न आ

पने बिलायती चूहों (मूसे) का तमाशा देखा है - चूहों की चालाकी आप को सुनाता हूं - तमाशा करने वाले ने चूहे से कहा कि अपना पानी भरलो - चौका बरतन करलो - घर झाड़ बुहार डालो - झट २ सब काम करने लगी फिर उसने कह्याकि सास का पानी भरलो - झट चूतड़ फेर दिये और नहीं भरा - ऐसेही बहुत से जानवर हैं जो बडे चालाक होते हैं जिनकी चालाकी का कुछ थोड़ा सा हाल नीचे लिखता हूं -

बन्दरकी चालाकी ॥

१- अमरीका देश के शहेर न्यूयार्क में बन्दरों के पढाने के भी चार स्कूल हैं उनमें दोसौ बन्दर शिक्षा पाते हैं जब स्कूलमें बन्दर दाखिल होता है पहिले उसका नाम रक्खा जाता है फिर उसको बन्दूक चलाना वगैरः अनेक काम सिखाये जाते हैं

अज़ जैन पत्रिका नम्बर १६ लाहौर छटी साल
२८ फरवरी सन १६०२ सफा २ कालिम २
सतर १ से ६ तक

२- बन्दर की गवाही - मझगाव पुलिस कोर्ट में मजिस्ट्रेट बडी दुविधा में पडे दो आदमी एक बन्दर पर मेरा २ कहि झगडे हैं दोनों तरफ के गवाह पक्के हैं - मजिस्ट्रेट गड़बड़ी में पड़े आगे बिचारा बन्दर तो बुद्धिमान जानवर है डारविन के मुताबिक़ बन्दर ज़ाद है - सो फर्यादी से कहा कि तुम बन्दर का कुछ बुद्धि का खेल दिखाओ वह न दिखा सका किन्तु आसामी ने अनेक खेल दिखा कर तथा बन्दरी सलाम में साहब को खुशकर समझा दिया कि बन्दर मेरा है तब साहब ने बन्दर आसामी को दिलाया फर्यादी एक पुलिस मेन है -

अज़ जैन मित्र मुम्बई साल ३ पूस सन् १८५८
अंक ४ कालम २ सफ़ा ३ सतर १४ से २८ तक -

३- एक साहब अपने सफ़र के हालत में लिखते हैं कि घूमते २ एक दिन हमारा जाना जंगल में हुआ अकेली जान कोई दूसरा साथी न था इत्तिफ़ाक़न् बन्दरों का एक झुंड आया- और एक जगह पंचायत लगाकर बैठे हम उनका तमाशा देखने के वास्ते उनसे ज़रा दूर ठहिर गये - जो जंगली फल फूल वह लाये थे उन सब को कूट कर उन्हों ने लड्डु बनाये और सब बन्दरों को चार चार बांटे इसके बाद उनमें से एक बड़े बन्दर की आज्ञा से एक बन्दर चार लड्डु हमारे पास लाया हमने लेलिये जब खाये तो ऐसे लज़ीज़ और मज़ेदार और स्वाद मा'लूम हुए कि शहिरों की उम्दा मिठाई भी ऐसी स्वाद नहीं होती-

४- इसी तरह एक जगह बन्दरों के मारने के लिये भुने चनों में विष लगाकर डाले गये मगर जो बन्दर आता था उसे सूंघ कर खड़ा हो जाता था खाता न था सब के बाद एक बड़ा बन्दर आया और उसने भी सूंघा और सूंघ कर सब को वापिस लेगया सब जंगल से घास तोड़ लाये और आते ही घास को चनों पर मलकर खागये विषने कुछ असर नहीं किया- तहक़ीक़ात करने पर मालूम हुआ वह घास विषको दूर करने वाली थी -

५- बन्दर और जंगली और पहाड़ी कौए अदालतें क़ायम करके अपने मुजरिमों को सज़ा दिया करते हैं [illegible] और सारस और फ़िले मिंगोज़ (सुर्ख चिड़िया) भी अदालतें करती हैं - शटलेन्ड के टापुओं के कौए एक स्थान और समय अदालत के लिये नियत करते हैं औसी स्थान पर अदालत के दिन

जाते हैं और मुकद्दमे फ़ैसल करते हैं बाज़ी दफ़े एकही मुक़द्दमे की छान बीन में एक २ सप्ताह बीत जाता है जब अदालत बरखास्त होती है तो मुजरिम को वहीं मार डालते हैं लक़ लक़ - जिसतरह अक्सर स्त्रियां अपने आशिक़ से कहिती हैं कि मेरे पति का प्राण घात करो इसी प्रकार मादा लक़ २ भी अपने जवान चाहने वाले को पति के मारने पर आमादा करती है - बिना रूह के ऐसी चाला कियां हरगिज़ नहीं होसक्ती हैं

१ - कुत्तों के करतब - फ़रांस राज्य के पेरिस शहिर में कुत्तों की पुलिस बनाई जा रही है -

अज़ जैन पत्रिका नं० १६ साल ६
२८ फ़रवरी सन् १९०२ सफ़ा ३
कालम १ सतर ३ से ४ तक

२ - मंदरास शहिर में एक कुत्ते ने अपने मालिक के चार साल के बालक को जो तालाब में गिर पड़ा था डूबने से बचालिया -

अज़ जिया लाल प्रकाश उर्दू साल १६ नंबर ११
मास जनवरी सन् १९०२ सफ़ा ११ कालम १
सतर १७ से २० तक

३ - एक अंगरेज़ सैर को निकला कुत्ता साथ था जब वापिस आया तो कुत्ते को न पाया कपड़े उतारे तो जेब से कुछ काग़ज़ कमये वह अति आवश्यक थे उनकी तलाश की वह न मिले दूसरे या तीसरे फिर उसी राह से निकला देखा कि कुत्ता मरा पड़ा है जब उसकी लाश उठाई तो काग़ज़ उसके नीचे पाये गये गोया मालिक के काग़ज़ों के लिये कुत्ते ने अपनी प्रिय जान देदी -

४ - अख़बार रफ़ीक़ हिन्द लाहौर के सम्पादक सैयद

नादिर अली शाह अपने अखबार में लिखते हैं कि हमारे मुह्ल्ले में एक बूचा नाम का कुत्ता था उसमें बड़े गुण थे वह तमाम मुहल्ले की रखवाली करता था - मुहल्ले के जानवरों को बाहर नहीं जाने देता था और न बाहर के अन्दर आने देता था - वह बड़ा रुआब दार जनरल था उसकी एक आवाज़ पर तमाम कुत्ते इकट्ठे हो जाते थे और हर लड़ाई में चाहे कितनी ही संगीन क्यों न हो बगैर किसी पुरुष की सहायता के जीत आता था उसने दिन में एक दफ़े धोखा खाया - एक पुरुष गैर हाज़िर था उसका बैल एक चोर खोल कर लेगया और बूचा उस चोर के पीछे होलिया और ज़िला स्याल कोट में उसका घर देखकर चला आया - फिर बैल के मालिक को लेगया और बैल के पास पहुंचा दिया - उसका बैल मिलगया और बूचा हर लाश के साथ मरघट जाया करता था - बूचे की एक आदत यह थी कि मैले कपड़े पहिने हुओं पर बहुत हमला करता था और पुलिस के कानिशटबलों को बहुत तंग करता था और बड़ी सख्ती से उनपर हमला करता था - इसकी वजह यह मालूम होती है कि बूचे ने इनको चोरी करते हुए देखा होगा -

अज़ रहबर हिन्द उर्दू १४ अपरैल
सन् १८६२ ई०

कुत्ते मशाल लेकर चलते हैं दरिया में से गेंद उठा लाते हैं - शिकार खेलते हैं - कवाइद करते हैं - चोरी होने से बचाते हैं और मालिक की जान की हिफ़ाज़त करते हैं मालिक को पहिचानते हैं - और उनके बाल बच्चों की रखवाली करते हैं - रास्ता पहिचानते हैं गमी शादी राज़ी कुराज़ी

गुस्सा आदि सब इशारों को जानता है - मालिक से प्यार करते हैं शोक २ ऐसे २ गुण और चालाकियां होते इन्सों को बाज़े २ जैसे कि आप कहते हैं कि यह बग़ैर आत्मा के हैं शोक २ तो मैं जानता हूं - बाज़े २ आदमियों में भी आत्मा नहीं होती है - तबतो आदमी को बाज़े २ खा जाते हैं और यही वजह है कि सैकड़ों जानवर बग़ैर रूह के समझ कर क़तल किये जाते हैं -

५ - अद्भुत सर्प - एक महाशय ने उक्त अद्भुत सर्प देखा यह कहते हैं जब कोई आदमी उसे मारने जाता है तो सर्प टुकड़े होकर भाग जाते हैं - भय दूर होने पर वह सब टुकड़े अलग अलग सांप बनगये और सब जीते थे और वैसी ही शक्तिथी यह अद्भुत सर्प अजायब घर में रक्खा गया है -

अज़ जैन पत्रिका ६ साल नं० ६३ - १० अपरैल

सन् १९०२ सफ़ा ४ कालम १ सतर ९ से १८ तक

लाहौर स० बा ज्ञान चंद्र

ऐसे ही जिस जानवर पर दृष्ट दौड़ाओ - उसमें बड़ी चालाकियां दिखाई देती हैं - और मर्द से भी ज़ियादा बुद्धि रखते हैं बहुत से जानवरों की चालाकी का हाल मैं अपने मासिक पत्र में करूंगा जो अब हाल ही में जारी होने वाला है दोसौ ग्राहक रजिस्टर में नाम लिखा दें उनको नमूना भेजा जायगा स्वीकार और पसंद करने पर ग्राहक समझे जायंगे - और दोसौ से कम ग्राहक होंगे तब तक जारी नहीं किया जायगा इसलिये शीघ्र ही अपना २ नाम ग्राहकों की लिस्ट में लिखाओ - इस मासिक पत्र में कुल मत मतान्तरों की पुस्तकों की कलई खोली जावेगी जैसे ईसाई मुसल्मान - आरिया - बुद्ध - वैष्णव और धर्म समाजियों आदि की खूब कैफियत दिखाई जायगी शीघ्र

मी है - न दुर्गन्धी है - डेढ़ सप्ताह के अन्दर चाहें कैसी ही पुरानी दाद हो बिलकुल जड़ से जाती रहेगी और फिर कभी न होगी इस दवा को अवश्य आजमाओ - मगाओ ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाओ - मूल्य एक शीशी ॥) रु० मुफ़्त लेने वाले को ।) कादिक डाक महसूल के लिये भेजना चाहिये नहीं तो बैरंग में ॥) का भार उठाना पड़ेगा - बैरंग वापिस किसी भाई को न करना चाहिये नहीं तो यह बोझ हमपर पड़ेगा - दाद जाने पर ५) रु० ईमान के लेंगे

लोहे का तांबा बनाना

यह दवा बहुत उत्तम है चाहे किस लोहे की वस्तु पर ज़रा खटाई रगड़ो और फिर यह दवा मलदो तांबा मालूम होने लगेगा मूल्य फ़ी तोला ≡)

तांबे की चांदी करना

यह तर्कीब बहुत आसान है इस दवा का सफ़ूफ़ हमारे पास है (सफ़ूफ़ पिसी हुई दवा का नाम है) तांबे के बर्तन पर छल्ले आदि पर ज़रा खटाई पानी में घिसकर रगड़ दो और फिर यह सफ़ूफ़ दवा का रगड़ो चुटकी से रगड़ा जाता है एक दममें सब का सब तांबे से चांदी बन जाता है - और कोई पहिचान नहीं सक्ता - इस दवा को अवश्य मगाओ - मूल्य फ़ी तोला ॥)

नकद ५) रु० का ईनाम -

यह ईनाम उन्हीं भाइयों को मिलेगा जो एक क़ायदा हमसे खरीदेंगे - इस क़ायदे में तारिख से दिन और दिन से तारिखमालूम करने की बहुत सुगम तर्कीब है और चाहे किस सन इसवी

(भूत भविष्य वर्तमान) तीनों कालों के सनो की तारीख एक दममें जबानी ही हिसाब जोड़ लो स्लेट पेंसल की भी ज़रूरत नहीं - यानी किसी ने यह मालूम करना चाहा कि १० जून सन् १९०२ ई० को कौनसा दिन होगा या १० जून सं- १९०१ में कौन दिन था या १० जून सन् १९०३ को कौन दिन होगा कुछ यही तारीखें और महीने और सन् नहीं चाहे कि- स सन के चाहे किस महीने की चाहे कोई तारीख एक दमकी दम में हिसाब जोड़ लो - और मालूम करलो कि इसतारीख को यह दिन होगा - या इसदिन की यह तारीख होगी - इस कायदे का नाम अमूल्य कायदा है और मूल्य ।) है - सो ।) कायदे का मूल्य और ˘) चन्दे का और ˘) जिससे मनी आर्डर पांच रु० का किया जावे गा कुल ।˘) हमारे पास भेजदें - उनको कायदा तो छे आने के पहुंचते २ भेजा जायगा और रु० पर जिसके नाम की चिट्ठी निकले गी उसको भेजे जायंगे दोसौ चिट्ठी हमारे पास आजावे गी तब पांच रु० पर चिट्ठी डाली जावे गी - इससे शीघ्र २ चिट्ठी और ˘) का मनी आर्डर या टिकट भेजो

चेतना

अक्सर सुनने में आया है - और हमारा जाती अनुभव (तजरुबा) है कि डाक में जो टिकट भेजे जाते हैं सो मारे जाते हैं - इसलिये प्रथम तो लोगों को यह उचित है कि मनी आर्डर द्वारा दाम भेजे और मनी आर्डर न भेजा चाहें तो टिकट डाकखानेसे लाकर और एक लिफाफा लाकर चार या पांच दिन उसको अपने यहां रख छोड़ें तब चौथे या पांचवें दिन टिकट रखकर और लिफाफा अच्छी तरह से बन्द कर के भेजदें - और एक जवाबी कार्ड हमारे पास डालदो जिस के द्वारा आप को सूचित

करदें कि वसूल होगये - परंतु खर्च आप का टिकट भेजने में भी वह ही पड़ेगा और मनी आर्डर में भी वही पड़ेगा क्योंकि ）॥ जबाबी कार्ड ）॥ का लिफाफा ＝ कुल लगा और ＝ ही आना मनी आर्डर करने पर लगेगा पहिले ५) रु० पर दो आने लगते थे अब ५) रु० तक ＝ आना ही लगा करेगा मनी आर्डर करना बहुत अच्छा है सब तरह के पत्र व्यवहार नीचे लिखे पतेपर करो - पता - लालता प्रसाद एल · पी · जे·

स्थान कायम गंज ज़िला फ़र्रुखाबाद

पश्चिमोत्तर देश

मासिक पत्र

यह पत्र बहुत उत्तम होगा - इसमें हर मत की उधेड़ें और कलई खूब अच्छी तरह से दिखलाई जावे गी - और हर प्रकार की ख़बरें भी होंगी - व्योपार की वावत भी इसमें अच्छी २ तर्कीबें बतलाई जावें गी - और रु० पैदा करने की सबीलें और तदबीरें लिखी जावें गी और दूर २ देशान्तरों की सैर करने के लिये वहां के हालात लिखे जावें गे और दुनियां के प्रसिद्ध मनुष्यों के जीवन चरित्र लिखे जाया करें गे - कुछ दवाइयां भी छपा करेंगी - हिफ़्ज़ सेहत (आरोग्य रहने) के विषयमें अच्छी २ हिदायतें होंगी - कुछ नसीहतें भी हर पर्चे में छपा करें गी - आवा गमन है ईश्वर कर्ता नहीं - मांस भक्षण ठीक नहीं - पानी छान कर पीना - रात्रिभोजन त्याग - आदि हर विषयपर अच्छी २ दलीलें और सुबूत छपा करेंगे जैन धर्म समबन्धी और प्राचीन शास्त्रों का निचोड़ अकसर इसमें होगा - अलावह इसके चांदी सोन की पहिचान और तपाने आदि की तर्कीबें और चांदी के प

कार की होती है - सोना कितनी किस्म का होता है - आदि ऐसे ऐसे बहुत तर्कीबें इसमें छपा करें गी - मगर यह पत्र उस समय जारी होगा जब इसके २०० ग्राहक होजावें गे - और मूल्य पेशगी पहिला अंक पाते ही भेज देंगे उन को सेवा में भेजा जायगा नही तो दूसरा अंक नहीं भेजा जायगा - मूल्य वगैरः का हाल पहिले अंक में देख लेना पहिला अंक नमूने का मुफ़ भेजा जायगा पसंदी पर ग्राहक समझे जावेगे - इसलिये शीघ्र शीघ्र दोसौ ग्राहक अपना २ नाम लिखाओ - देरी न करो - लालता प्रसाद जैन क़ायम गंज (फ़र्रुखाबाद)

जादू

हर क़िस्म के जादू के खेल - जोकि बाज़ीगर किया करते हैं और लोगों को आश्चर्य में डालते हैं और माया के अजीब २ खेल हमारे पास तैयार मौजूद हैं जिस किसी को चाहिये नीचे लिखे मूल्य पर मगाओ -

१ बिना दामो का गुलाम

यह जादू एक धागे में पिरोया गया है - उसको हुक्म दोतो चलने लगे और हुक्म दो ठहिर जावे - इसको देख कर बहुत हैरानी होती है मूल्य ॥) और कोई खेल बनाने की तर्कीब पूछेगा तो ३) तर्कीब बताने का पेशगी लेलेंगे तब बतायेंगे

२ जादू के तीन लट्टू

यह दुहरी मज़बूत सुतली में तीनों लट्टू पिरोये गये हैं - एक सिरा सुतली का एक शख्स को पकड़ा दो दूसरा सिरा दूसरे को - फिर इनको खूब उसी सुतली से जकड़ दो और जकड़ने के बाद दोनों सिरे सुतलियों के दोनों आदमियों को पकड़ा दो - और मय जादू की छड़ी मारदो तो तीनो

लट्टुओं के छेद कटें गे और न सुतली की गांठियां खुलेगी न सुतली टूटे गी छड़ी मारते २ लट्टू नीचे गिर पड़ें गे -

मूल्य १॥) रु०

तर्कीब बतलाने का १) रु० खेल अपने घर बना लेने की तर्कीब का ४) रु०

३ जादू की लकड़ी

इस लकड़ी में तीन सूराख हैं सब को दिखा कर एक शख्श से कहो कि इसके बीच के सूराख में सींक डालो वह डालेगा तो ऊपर के में पड़ जावे गी और नीचे के में डालेगा तो बीच के सूराख में सींक लोगों को मालूम होती है अजीब हैरानी का खेल यह भी है - मूल्य ॥)
खेल बनाने की तर्कीब पूंछोगे पहिले एक रुपया भेजो तो पूंछो

४ जादू का लोटा

यह कभी पानी से भरता ही नहीं और भर जावे तो सब पानी फैला दो और खाली दिखला दो तब भी भरा ही रहेगा - एक फूंक जादू की मारने पर आप से आप भर जावे गा - मूल्य ३) तर्कीब का एक चेहरा शाही -

५ जादू की किताब

इसमें रंग बिरंगे अक्षर निकलते हैं कभी दिखाओ तो सब की सब किताब कोरी ही होगी कुछ नहीं लिखा होगा फिर दिखाओ तो सब किताब में हिन्दी लिखी हुई होगी और फिर दिखाओ तो सब एक एक वर्क में उर्दू लिख जावेगी हिन्दी गायब हो जावेगी फिर हिन्दी उर्दू गायब होकर रंगी आप से आप लिख जावे गी - और फिर दिखाओ तो कोरी की कोरी ही - मूल्य फी किताब ३) तर्कीब के भी ३) ही रु०

६ डक्क का मुतना

एक बर्तन में पानी भरा है और उसकी तली में सूराख है - उसको डक्क दो पानी उस नीचे के सूराख से गिरने लगेगा - और डक्क दो फ़ौरन बन्द हो जावेगा और उस सूराख से को ई उंगली भी नहीं लगाई जाती है - इसको देखकर लोग बहुत हंसते हैं - मूल्य ।।) तर्कीब खेल बनाने की पूछो तो १)

७ जादू के चने

भुने चनों मे पानी का छींटा देते ही किल्ले निकल आवें - यह बड़ा आश्चर्य का खेल है मूल्य ।) फ़ी चना पांच चनों का १)

तर्कीब चने बनाने की १)

८ बांस की पोंगिया

दो पोंगिया हैं उनमें धागा पिरोया हुआ है इसका धागा खींचो तो इसका खिंचता है और उसका खींचो तो इसका खिंचता है हैरत उत्पन्न करने वाला खेल है मूल्य १) बनानी तर्कीब ५) रु॰

जादू की पीक ९

कान की राह पानी पिलाओ और इस पीक से चूनड़ी की राह पानी निकालो बड़ी हंसी का खेल है - मूल्य ।।) तर्कीब १) में

जादू के ताश का खेल १

चारों पत्तों के इक्के ही रह जावें और इक्कों के खाली वर्क़ हो जावें और फिर पत्तों के पत्ते ही रहे - इनमें कोई पद वगैर: नहीं होता और न अधिक पत्ते होते हैं चार ही पत्तों में काम होता है मूल्य ।।) तर्कीब बनाने की पूछो तो १)

सब खेल लें तो ५) में और तर्कीब के ५) एक खेल की बाक़ी रहेगी -

४ मेमों के चारों बादशाह होजावें मूल्य ।।) तर्कीब ५) रु॰

(३) पत्ता निकालो [illegible] की नावे रकाबी [illegible] में उसकी भूल पर पता नहीं होता है और न दो पत्ते होते हैं

मूल्य ।) तर्कीब ।)

(४) दो मेम वो बादशाहों के खाली वर्क होजावे और फिर वहीं के वहीं मूल्य ।) तर्कीब ८)

५ उड़ने पत्ते

दो आदमियों के रूमाल के नीचे दो पत्ते सब को दिखाकर रखदो - और उनसे कहिदो कि इनको खूब मजबूती से दबाये रहिना इसका पत्ता इसमें आजावेगा और उसका इसमें

मूल्य ।) तर्कीब ८)

(६) एक बंडल मैंसे चाहे जहां से पत्ता खींचो उसको एक दम में बता देना - सिर्फ इसकी तर्कीब बताई जाती है ।)

इनके अलावह ताश के और जादू के बक्स से खेल हैं जो बाज़ीगर अकसर किया करते हैं वह सब मेरे पास हैं - गुंजायश न होने के कारण नहीं लिखे गये - ताश के यह छे खेल इकट्ठे लेने वाले को सब छेओ ८) में देंगे अगर तर्कीब पूछेंगे तो २) में अगर एक लेंगे या एक की तर्कीब पूछेंगे तो वही दाम लेंगे सब तरह का पत्र औहार खेल वगैर: का इसपते सेकरो - लालता प्रशाद एल·पी·जे·स्यान

कायमगंज ज़िला फर्रुखाबाद

पश्चिमोत्तरदेश समाप्त:

गुजारिश है

यह पुस्तक बहुत ही नायाब है - और अपने समय में बहुमोल है -
इसकी इशाअत (जारी होने के लिये) में सब जैनी भाइयों को तन १
मन २ धन ३ से कोशिश करना चाहिये - १ ईश्वर
इस पुस्तक में भले प्रकार जता दिया है कि इस संसार को ने नहीं
बनाया - बल्कि अनादि है - २
और माया मवनको भी अच्छी तरह दरशाया है - ३
मूल्य भी कुछ नहीं ७) ही रक्खा है इस पुस्तक की एक २ दलील ७)
की है - इस पवित्र पुस्तक से किसी जैनी भाई का भी घर खाली न
रहना चाहिये - ४
शीघ्र मंगाओ नहीं तो द्वितीय बार छपनेकी बाट
देखना पड़ैगी - हाथों हाथ पुस्तकें निकल रही हैं
पीछे करके अफसोस मलना पड़ैगी - ५

प्रार्थी

ज्वाला प्रसाद तनुज परमेश्वरी लाल
बुढेले - छोटी पैरवाला - जैन -
कायमगंज
जिला फर्रुखाबाद